शस्त्र-विदाई

(A FAREWELL TO ARMS—Ernest Hemingway)

अर्नेस्ट हेमिंग्वे
(नोबल-पुरस्कार-विजेता)

अनुवादक
पुरुषोत्तम दुबे, एम ए

पर्ल पब्लिकेशन्स (प्राइवेट) लिमिटेड, बम्बई-१

मूल्य एक रुपया

इस ग्रंथ के समस्त पात्र काल्पनिक हैं;
तथा सेना के विभिन्न दलों और
संगठनों के नाम भी वास्तविक नहीं है।

प्रथम खंड

१

उस वर्ष ग्रीष्म-ऋतुके अन्तिम दिनो मे हम एक देहात के घर मे रह रहे थे। वहाँ से, नदी के उस ओर का दृश्य तथा पहाड़ो मे विलीन हो जानेवाला मैदान साफ़ दिखाई देता था। सूर्य के प्रकाश मे सूखे और सफेद दिखने वाले ककड़ो तथा गोल-गोल चिकने पत्थरो से नदी का तल भरा हुआ था। उसका स्वच्छ-नीला जल तीव्र गति से बहता रहता। घर के निकट से नीचे सडक पर सैनिक टुकड़ियाँ निकल जाती और उनके चलने से उड़नेवाली धूल वृक्षो के पत्तो पर जम जाती। वृक्षो के तनो पर भी धूल जम गई थी। उस वर्ष समय के पहले ही पत्ते झड़ने लगे थे। सड़क से जानेवाली सैनिक टुकड़ियों को, उड़ती हुई धूल तथा हवा के झोके से हिलते हुए नीचे गिरनेवाले पत्तो को, हम देखा करत। सैनिकों के गुजर जाने के बाद सडक सूनी हो जाती—सिर्फ वृक्षो के पत्ते सर्वत्र बिखरे रहते।

मैदान फ़सलो से भरा था। उसमे कई फलो के भी बग़ीचे थे। मैदान के उस ओर नंगे और मटमैले पहाड़ खड़े थे। पहाड़ो मे लड़ाई हो रही थी और रात मे हम तोपो की चमक को देखा करते! अँधेरे मे यह चमक कडकती हुई बिजली-सी प्रतीत होती। किन्तु रातो मे ठढ रहती थी और तनिक आभास भी नहीं होता था कि तूफान आनेवाला है।

कभी कभी हम अँधेरे मे अपनी खिड़की के नीचे सैनिक टुकड़ियो के गुजरने तथा मोटर-ट्रैक्टरो द्वारा तोपो के खीची जाने की आवाज़ सुनते। रात मे सामानो को ढोकर ले जाने का काम खूब चलता। पीठ पर कसी हुई ज़ीन के दोनों ओर कारतूसों और बारूद से भरी पेटियाँ लादे खच्चर निकलते, सैनिको से लदी भूरे रंग की मोटर ट्रके होतीं और टाट से ढँकी हुई दूसरी ट्रके, जिनमे सामान भरे होते और जो धीरे-धीरे आगे बढ़ती। बड़ी बड़ी तोपे भी थी, जिन्हे ट्रैक्टर दिन मे खींच कर ले जाते। उनकी लम्बी नलियाँ हरी टहनियो से ढँकी रहती और ट्रैक्टरो पर हरे-हरे पत्तोवाली शाखाएँ तथा अगूर की बेले बिछी रहती। उत्तर की ओर,

घाटी के पार हमें अखरोट का वन तथा उसके पीछे नदी के इस किनारे, एक अन्य पहाड, दिखाई देता था। उस पहाड़ के आगे भी लडाई हुई थी, किंतु जीत हमारी नही हुई। पतझड में जब वर्षा हुई तो अखरोट के वृक्षो के सभी पत्ते गिर गए और उनकी शाखाएँ पत्र-विहीन हो गई तथा तने वर्षा के कारण काले पड़ गए। अंगूर की बेले बिलकुल सूख गई थी और उनके पत्ते भी झड गए थे। सारा गॉव पतझड़ के कारण गीला, भूरा और मृतप्राय दिखाई देता था। नदी पर कुहासा छाया रहता और पहाड पर बादल तैरते रहते। ट्रके सड़क पर कीचड़ उछालती निकल जातीं और इटालियन लबादे पहने सैनिक कीचड़ से लथपथ हो जाते, उनकी राइफले भीग जाती। उनके लबादो के भीतर कसे हुए पट्टों पर सामने की ओर कारतूसो से भरी चमड़े की दो पेटियॉ बँधी थी। ६.५ मिलीमीटर की लम्बी और पतली कारतूसो से भरी, चमडे की ये दो भूरी पेटियॉ उनके लबादे के नीचे आगे की ओर उभरी हुई थी और सड़क पर गुजरते वे सैनिक ऐसे प्रतीत होते, मानो उनके पेट मे छह महीने का बच्चा हो!

सड़क पर छोटी भूरी मोटरें, बडी तेजी से निकल जाती। साधारणतः इन मोटरो मे (ड्राइवर की बगल में) एक अफसर बैठा रहता। कुछ अफसर पीछे की सीट पर भी बैठे रहते। ये मोटरे तोप ढोनेवाली मोटरो से भी अधिक कीचड़ उछालती। यदि पीछे की सीटपर बैठे हुए अफ़सरो मे से एक अफसर छोटे कद का और दो सेनापतियोके बीच बैठा होता—इतने छोटे कद का कि, सिर्फ उसकी टोपी का ऊपरी हिस्सा और उसकी तग पीठ दिखाई देती, तो मोटरे और तेज़ दौड़ती। यदि मोटर की रफ्तार विशेष रूप से तेज होती, तो उसमें कदाचित् राजा बैठा रहता था। वह 'यूडाइन' मे रहता था और प्रायः प्रति दिन इसी प्रकार वहॉ की स्थिति का निरीक्षण करने आता था। स्थिति थी भी बहुत खराब।

जाडे का मौसम शुरू होते ही स्थायी रूप से वर्षा शुरू हो गई और उसी के साथ शुरू हो गया हैजा। किन्तु तुरन्त ही उसकी रोक-थाम की गई और अन्ततः सेना मे मात्र सात हजार सैनिको पर ही मृत्यु अपना मनहूस साया डाल सकी!

२

अगले वर्ष बहुत-सी लड़ाइयो में हमारी जीत हुई। घाटी के उस ओर जो पहाड़ था और उसके पास के उस स्थान पर, जहॉ अखरोट का जगल था,

हमारा अधिकार हो गया। मैदान के दक्षिण की ओर के पठार के लिए जो युद्ध हो रहा था, उसमे भी विजय का सेहरा हमारे ही सिर बँधा। अगस्त मे हम नदी पार कर गये और अब 'गोरीजिया' (एक इलाका) के एक घर मे रह रहे थे। घर के सामने ही चहारदीवारियो से घिरे हुए बगीचे मे फव्वारा और कई घनी –गहरी छाया वाले वृक्ष थे। एक ओर 'विस्टेरिया-वाइन-परपल' (लालरग के फूलोवाला एक पेड़) का भी पौधा था। युद्ध अब दूसरी पहाडियो मे चल रहा था, जो वहाँसे मील भर भी दूर नहीं थी। शहर बडा खूबसूरत था और घर भी सुन्दर मिला था। हमारे पीछे ही नदी बहती थी। शहर पर तो बडी खूबी से अधिकार कर लिया गया था, किन्तु उसके आगे के पर्वतो पर विजय प्राप्त न हो सकी थी। मै यह देखकर बडा प्रसन्न था कि आस्ट्रियनों ने शहर पर इतनी अधिक बमबारी नहीं की थी कि वह पूर्णरूपेण ध्वस्त हो जाय। युद्ध के कारण ही उन्होंने उसपर थोड़े-से बम बरसाये थे। ऐसा प्रतीत होता था कि, युद्ध बन्द हो जाने पर वे कदाचित पुनः वहाँ बसना चाहते थे। शहर में लोग अभी भी रहते थे और सडको पर के अस्पताल, कॉफे और तोपखाने मे पूर्व की तरह ही जीवन था। वहीं पर दो चकले भी थे। एक सैनिको के लिए और दूसरा अफ़सरो के लिए।

गरमी का मौसम खतम होते ही ठण्डी रातें आरम्भ हो गई। गत वर्ष, पतझड़ के समय हम देहात में थे, किन्तु इस वर्ष हमारी हिम–ऋतु गोरीजिया मे बीत रही थी। गोरीजिया में वस्तुतः अनेक विशेषताएँ थीं। शहर से दूर पहाड़ो मे चल रही लड़ाई, बम के गोलो की कहानी कहते हुए रेल के पुल, ध्वस्त लौह-खड और नदी के पास की नष्ट-भ्रष्ट सुरग जहाँ लडाई हुई थी, सब मिलकर एक अद्भुत दृश्य उपस्थित करते। शहर का चौक वृक्षो से घिरा हुआ था और वहाँ तक वृक्षो की लम्बी-सी कतार थी। नगर के विभिन्न अंचलो में बमबारी से नष्ट अनेक घर अभी भी अपने दुर्भाग्य की कहानी सुना रहे थे। उनकी ध्वस्त दीवारो के कारण भीतर का दृश्य स्पष्ट दिखाई दे जाता था। मकान के बगीचो मे और कभी कभी तो सड़को पर भी ईंट–पत्थरो के ढेर और प्लास्तर बिखरे नजर आते थे, फिर भी कार्सोपर सब काम पहले की तरह ही चल रहे थे। सड़को पर लडकियाँ स्वच्छन्दता से इधर उधर घूमती दिखाई देती थी। राजा भी अपनी मोटर मे निकल जाता। कभी–कभी लम्बी गर्दनवाला उसका ठिगना शरीर और बकरे की दाढी के समान घनी गुच्छेदार भूरी दाढी से आच्छादित उसका चेहरा दिखाई पड जाता और इन सबके बीच हिमपात—गत

वर्ष गाँव मे दिखाई देनेवाले हिमपात से बिलकुल निराला दिखाई देता था। उसका स्वरूप ही भिन्न था! युद्ध का रूप भी अब तक बदल चुका था।

शहर के उस ओर के पहाड़ का बलूत--वन नष्ट हो चुका था। ग्रीष्म-ऋतु मे जब हम शहर में आए थे, जगल बिलकुल हरा भरा था, किन्तु अब उसके स्थान पर वहाँ वृक्षो के ठूँठ, टूटे हुए तने तथा बीच-बीच मे कटे-फटे मैदान ही शेष रह गए थे। बर्फ गिरना बन्द होने के बाद, एक दिन जब मै उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ वह बलूत-वन था तो मैने देखा कि, बादल का एक टुकड़ा पहाड़ को ढँकता चला आ रहा है। वह बडी तेजी से बढ रहा था। शीघ्र ही, सूर्य फीका और पीला पड़ गया, प्रत्येक वस्तु भूरी दिखाई देने लगी, और आकाश बादलों से घिर गया। देखते ही देखते बादल, पहाड़ से नीचे उतर आया और हम अचानक उसमें घिर गए। वह और कुछ नही, बर्फ था। हवा के कारण, बर्फ़ तिरछा होकर गिर रहा था, सारा खाली मैदान बर्फ़ से ढँक गया और वृक्षो के ठूँठ बर्फ से ढँक कर उभर आए। हमारी बन्दूको पर भी बर्फ जम गया और खाइयो के पीछे बने शौचालयो तक जानेवाले रास्ते बर्फ़ में डूब गए।

बाद मे, जब मै नीचे शहर मे, अफसरो के लिये सुरक्षित चकले मे बैठा था, मैने बर्फ गिरते देखा। मै अपने एक मित्र के साथ बैठा था। सामने की मेज पर दो गिलास रखे हुए थे। हम 'आस्ती' (एक प्रकार की शराब) पीते हुए खिड़की से, बाहर देख रहे थे। धीरे-धीरे, किन्तु पर्याप्त मात्रा मे बर्फ गिरते देखकर हम समझ गए कि इस वर्ष अब युद्ध न हो सकेगा। अभी तक नदी के ऊपर की ओर के पहाडो पर हमारा अधिकार नहीं हुआ था। वस्तुतः उस ओर का एक भी पहाड़ हमारे कब्जे में नहीं आ पाया था। यह कार्य हमने अगले वर्ष के लिए छोड़ दिया था। तभी मेरे मित्र ने हमारे भोजन-गृह (मैस) से पादरी को निकलते हुए देखा। वह नर्म बर्फ़ मे, बडी सावधानी से सडक पर चला जा रहा था। मेरे मित्र ने उसका ध्यान अपनी ओर खीचने के लिए खिडकी थपथपाई। पादरी घूमा और हमे देखकर मुस्कराया। मेरे मित्र ने उसे भीतर आने का सकेत किया। किन्तु पादरी ने सिर हिला कर इनकार कर दिया और आगे बढ़ गया।

उस रात हमने मैदे की बनी मिठाई खाई। प्रत्येक व्यक्ति बडी तेजी से; किन्तु गम्भीरतापूर्वक खा रहा था। हम काँटे के जरिये मिठाई ऊपर उठाते, और जब उसके लच्छे अलग-अलग होकर झलने लगते; तब उसे मुँह में डाल लेते अथवा उसे एक साथ ही उठा-उठा कर मुँह मे रखते और निगल जाते। उसीके

साथ घास से ढँकी कुप्पी से हम शराब ढालकर पीते जाते थे। उस कुप्पी में एक गैलन शराब आती थी। शराब की कुप्पी धातु के बने हुए एक छीके से लटक रही थी। कुप्पी के ऊपरी हिस्से को हम अपनी तर्जनी से पकड़कर उसी हाथ मे थामे हुए गिलास मे शराब ढाल लेते। छाल से निकाली हुई, साफ लाल रग की शराब बडी आकर्षक दिखती थी। . .खाने–पीने के बाद कैप्टन ने वहीं, भोजनालय में पादरी को चिढाना शुरू कर दिया।

पादरी नौजवान था और बडी जल्दी शरमा जाता था। उसने हमारे समान ही वरदी पहन रखी थी। किन्तु उसके भूरे रंग के छोटे-से कोट की नई जेब पर गहरे लाल रग में मखमल का क्रॉस बना था। मुझे इटालियन भाषा अच्छी तरह नहीं आती, इससे कैप्टन टूटी-फूटी इटालियन मे बोल रहा था, जिससे मै सारी बाते ठीक-ठीक समझ सकूँ और कोई भी बात मुझसे समझने मे छूट न जाय।

"पादरी तो आज लडकियो के साथ–" कैप्टन ने पादरी और मेरी ओर देखते हुए बस इतना ही कहा। पादरी मुस्कराया और लजाते हुए उसने अपना सिर हिला दिया। कैप्टन अकसर उसे इसी तरह छेडा करता था।

"क्या यह सच नही है ?" वह बोला–"आज ही मैने पादरी को लडकियो के साथ देखा था।"

"ना", पादरी ने स्पष्ट इनकार कर दिया। दूसरे अफसर पादरी के इस प्रकार बेवकूफ बनाये जाने का आनन्द ले रहे थे।

"नहीं नहीं, पादरी लडकियो के साथ नहीं रहता–" कैप्टन ने कहना शुरू किया–"पादरी कभी लडकियो के साथ नहीं रहता।" उसने जैसे मुझे समझाया और मेरा गिलास लेकर मेरी ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए उसे भर दिया, किन्तु फिर भी पादरी को उसने अपनी ऑखो से ओझल नहीं होने दिया था।

"पादरी हर रात पॉच–पॉच लडकियो से घिरा रहता है।" और इसपर मेज के निकट बैठे सब लोग हँस पडे।

"कुछ समझे ? पादरी हर रात पॉच-पॉच लडकियो के साथ!" एक विशेष भाव-भगिमा के साथ वह जोर से हँस पड़ा। पादरी इसे एक मजाक मान मौन रह गया।

"पोप की इच्छा है कि युद्ध मे आस्ट्रियन लोगो की जीत हो।" मेजर ने कहा–"वह 'फ्रान्ज-जोसेफ' को प्यार करता है। पैसा भी तो वहीं से आता है। भाई, मै तो नास्तिक हूँ।"

"क्या तुमने 'ब्लैक पिग' नामक पुस्तक पढ़ी है?" लेफ्टिनेंट ने पूछा—"मैं तुम्हे उसकी एक प्रति ला दूँगा। उसी पुस्तक ने मेरे विश्वास की जड़े हिला दीं।"

"वह एक गन्दी और बेकार पुस्तक है।" पादरी बोला "निश्चय ही, उसे कोई पढ़ना पसन्द नहीं करता।"

"नहीं-नही, वह बड़ी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है—" लेफ्टिनेंट ने कहा—"उसमे तुम्हें इन पादरियो के बारे मे सबकुछ मालूम हो जायगा। तुम्हे वह पसन्द आयेगी।" वह मुझसे बोला। मै पादरी की ओर देखकर मुस्कराया और उत्तर मे, मोमबत्ती के प्रकाश के उस ओर से वह भी मुस्कराया। "तुम वह पुस्तक मत पढ़ना।" उसने कहा।

"मैं तुम्हे वह पुस्तक मँगवा दूँगा।" लेफ्टिनेंट बोला।

"सभी विचारक नास्तिक होते है।" मेजर ने कहा—"किन्तु मै आपस मे प्रेम और भाई-चारे की बात करनेवालो पर विश्वास नहीं करता।"

"मैं तो ऐसे लोगो पर, विश्वास करता हूँ।" लेफ्टिनेंट बोला—"इन लोगो की सस्था एक श्रेष्ठ सस्था है।" तभी कोई भीतर आया और ज्योंही द्वार खुला मैंने देख लिया कि बाहर बर्फ गिर रहा था।

"बर्फ गिरना शुरू हो गया है, इससे सम्भवतः हम अभी कहीं हमला नहीं करेंगे," मैंने कहा।

"बिलकुल नहीं"—मेजर बोला—"तुम चाहो, छुट्टी पर जा सकते हो। तुम्हे 'रोम', 'नेपल्स', या 'सिसिली'. ....जाना चाहिए।"

"इन्हे तो एमाल्फी जाना चाहिए"—लेफ्टिनेंट ने कहा—"मै तुम्हे, 'एमाल्फी' में, अपने परिवार के नाम चिट्ठियाँ लिखकर दे दूँगा। मेरे परिवार-वाले तुम्हे अपने बेटे की तरह प्यार करेंगे।"

"इन्हे 'पालेर्मो' जाना चाहिए।"

"नहीं, इनका तो 'काप्री' जाना ठीक रहेगा।"

"मै तो चाहता हूँ कि तुम 'अब्रूजी' जाओ और 'काप्राकोट्टा' मे मेरे घर के लोगो से मिलो।" पादरी बोला।

"जरा 'अब्रूजी'-जाने की उसकी बाते सुनो। वहाँ तो यहा से ज्यादा बर्फ़ गिरता है। अरे भाई, ये किसानों से मिलने के इच्छुक नहीं हैं। इन्हें तो सभ्यता और सस्कृति—के प्रतीक कहलानेवाली जगहो की सैर करने दो।"

"इन्हें तो अच्छी-अच्छी लड़कियाँ मिलनी चाहिए। मैं तुम्हें नेपल्स के

बहुत-से अड्डों के पते दे दूँगा। वहाँ तुम खूबसूरत युवा लडकियां और उनकी माताओं से मिल सकोगे। हाः-हाः-हाः-हाः।"

वह पादरी की ओर देखकर चिल्लाया,-"हर रात बेचारा अकेला पादरी और पॉच-पॉच लडकियॉ!" एक बार फिर सब लोग हँस पडे।

"तुम्हे फौरन छुट्टी ले लेनी चाहिए।" मेजर बोला।

"मै तो चाहता हूँ कि मै तुम्हारे साथ-साथ चलकर तुम्हें सब-कुछ दिखाऊँ-", लैफ्टिनेंट ने कहा।

"जब तुम वापस आओ, तो एक ग्रामोफोन लेते आना!"

"अच्छे-अच्छे नाच के रिकार्ड लाना।"

"'कारुसो' (एक गायक) के रिकार्ड लाना।"

"ना, कारुसो मत लाना। वह तो डकारता है।"

"क्या तुम्हारी इच्छा नही होती कि तुम भी उसकी तरह डकार सको?"

"वह डकारता है—बिलकुल सॉड की तरह डकारता है।"

"मै तो तुम्हे 'अब्रूजी' जाने की सलाह दूँगा—" पादरी बोला। बाक़ी लोग चिल्ला रहे थे। पादरी बोलता गया—"वहॉ शिकार का बड़ा आराम है। तुम्हे वहॉ के लोग पसन्द आयेंगे। और ठढ होते हुए भी वहॉ का मौसम बिलकुल साफ और सूखा है। तुम वहॉ मेरे परिवार के साथ ठहर सकते हो। मेरे पिता एक प्रसिद्ध शिकारी है।"

"चलो भाई!" कैप्टन ने कहा—चकला बन्द होने के पहले ही वहॉ पहुँचना है।"

"अच्छा नमस्ते।" मैंने पादरी से विदा ली।

"नमस्ते।" वह बोला।

३

जब मै मोर्चे पर वापस आया, तो हम उसी शहर मे रह रहे थे। आसपास के इलाके मे बहुत-सी तोपे आ गई थीं। अब तक वसन्त का मौसम भी आ गया था। खेत हरे-भरे दिखाई देते थे। अंगूर की बेलों पर नन्हीं-नन्हीं हरी कोंपलें आ रही थीं। सड़क के किनारो के पेड़ो मे छोटे-छोटे पत्ते निकल रहे थे और समुद्र की ओर से धीमी-धीमी हवा चला करती थी। मैंने शहर और

उसके निकट की पहाडी को देखा। पहाड़ी पर बना वह पुराना किला उन पहाड़ियो के बीच किसी प्याले मे रखा प्रतीत होता था। उस ओर के मटमैले भूरे पर्वतो के ढलानो पर थोडी-थोडी हरियाली छा रही थी। शहर मे पहले की अपेक्षा अधिक तोपे आ गई थी, कुछ नए अस्पताल बन गए थे, सडको पर अंग्रेज पुरुष और कभी कभी अंग्रेज स्त्रियॉ भी दिखाई दे जाती थीं और, कुछ और घर अपने विनाश की कहानी कह रहे थे। वातावरण मे गरमी थी और वसन्त के आगमन का स्पष्ट अनुभव हो रहा था। दीवारो पर बिखरी हुई धूप की गरमी से परेशान मै वृक्षो के बीच से गुजरनेवाली गली मे बढता गया। मैने देखा कि हम अभी उसी मकान मे रह रहे थे और वह बिलकुल वैसा ही था, जैसा मै उसे छोडकर गया था। दरवाजा खुला था और बाहर धूप मे बेंच पर एक सैनिक बैठा था। बग़ल के दरवाजे के निकट एक एम्बुलेंस खडी थी। भीतर घुसते ही मुझे अस्पताल तथा सगमरमर के फर्श की चिरपरिचित गध अनुभव हुई। सब-कुछ वैसा ही था, जैसा मै छोड़कर गया था, अन्तर इतना ही था कि अब वसन्त ऋतु आ गई थी। मैने बड़े कमरे के द्वार से भीतर झॉका। कमरे की खिड़कियॉ खुली थीं, सूर्य का प्रकाश अन्दर आ रहा था और मेजर अपने डेस्क के निकट बैठा था। उसने मुझे नहीं देखा और मै पल भर तक यह निश्चित नहीं कर पाया कि अन्दर जाकर अपने लौटने की सूचना दूॅ या ऊपर जाकर पहले नहा-धो लूॅ। अन्त मे, मैने पहले ऊपर जाना ही तय किया।

जिस कमरे मे मै अपने मित्र लेफ्टिनेंट 'रिनाल्डी' के साथ रहता था, बाहर के सदन से वह दिखाई देता था। खिड़की खुली थी, मेरे बिछौने पर कम्बल बिछे थे और मेरी वस्तुए दीवार पर लटक रही थीं। टीन के एक डिब्बे में, विषैली गैस से बचानेवाला मेरा 'गैसमास्क' लटक रहा था और मेरा लोहे का शिरस्त्राण उसी खॅूटी पर टॅगा हुआ था। बिस्तर के पैताने मेरा चौरस सन्दूक रखा था और उसपर मेरे जाड़े के दिनो के जूते रखे थे, जिनका चमड़ा तेल से चमक रहा था। दोनो बिस्तरो के ऊपर नीली अठपहलू नली और सुन्दर काली अखरोट की लकड़ी के कुन्देवाली और अॅधेरे मे भी निशाना लगानेवाली मेरी आस्ट्रियन बन्दूक लटक रही थी। तभी मुझे स्मरण हो आया कि मेरी दूरबीन सन्दूक मे बन्द है। दूसरे बिस्तर पर लेफ्टिनेंट 'रिनाल्डी' सो रहा था। जब उसने कमरे मे मेरी—खटपट की आवाज सुनी, तो जाग पड़ा और उठकर बैठ गया।

"अरे,!" वह बोला—"कहो दोस्त, कैसी बीती?"

"खूब मजे मे।"

हम दोनो ने हाथ मिलाए और उसने मेरे गले मे बाहे डालकर मुझे चूम लिया।
"ओफ!" मै चिल्लाया।
"तुम बडे गन्दे हो रहे हो।" उसने कहा "तुम्हे नहा-धो लेना चाहिए। पर पहले मुझे बताओ कि तुम कहाँ-कहाँ गए और तुमने क्या-क्या किया? सब कुछ विस्तार मे बताओ अभी!"
"मै हर जगह गया था-मिलान, फ्लोरेन्स, रोम, नेपल्स, विला-सान-जिओवान्नी, मॅसीन, ताओर्मिना . "
"तुम तो बिलकुल किसी समय-सारणी की तरह बता रहे हो। क्या तुम्हे कहीं किसी साहसपूर्ण कार्य का अवसर भी मिला?"
"हूँ-हूँ!"
"कहाँ?"
"मिलानो, फिरेन्ज, रोमा, नापोली . "
"बस बस, बहुत हुआ। सच-सच बताओ कि सब से सुन्दर मौका कहाँ मिला?"
"मिलान मे।"
"इसलिए कि वह तुम्हारा पहला मौका था। तुम्हारी उस लड़की से भेट कहाँ हुई? 'कोवा' मे! फिर तुम कहाँ गये? तुम्हें कैसा लगा? सारी बात मुझे अभी बताओ। क्या तुम उसके साथ रात भर रहे?"
"हाँ!"
"पर यह तो कोई खास बात नही है। अब तो यहाँ भी सुन्दर-सुन्दर लड़कियाँ है—बिलकुल नई, जो पहले कभी मोर्चे पर नही आई थी।"
"ताज्जुब है!"
"तुम्हे मुझपर विश्वास नहीं होता? आज ही तीसरे पहर चलकर हम उन्हे देखेगे। शहर मे अब कई खूबसूरत अंग्रेज लड़कियाँ है। मै तो कुमारी 'बर्कले' नाम की लडकी से प्रेम करने लगा हूँ! मै तुम्हे वहाँ ले चलूँगा। हो सकता है, मै कुमारी बर्कले से शादी कर लूँ।"
"अभी तो मुझे नहा–धो कर पहले अपने आने की सूचना देनी है। आज-कल किसीके पास कोई काम नहीं है क्या?"
"जबसे तुम गये हो, हम लोगो को हिम-रोग, हाथ-पैरो में बिवाई, पाडुरोग, सुजाक, अपनी ही हरकतो से मोल लिए हुए घाव, न्यूमोनिया इत्यादि रोगों को अपनाने के सिवा और कोई काम नहीं रह गया है। हर हफ्ते कोई न कोई पत्थर के टुकड़ो से घायल हो जाता है। पर जिनको वस्तुतः घायल कहते है, ऐसे बहुत

कम है। अगले सप्ताह युद्ध फिर प्रारम्भ होनेवाला है, कदाचित् नए सिरे से। सुनने में तो ऐसा ही आया है। तुम्हारे विचार से कुमारी बर्कले से मेरा विवाह करना उचित होगा—अभी नहीं, युद्ध के बाद।"

"क्यो नहीं?" बर्तन से पानी उँडेलते हुए मै बोला।

"आज रात तुम मुझे अपनी सारी कहानी सुनाना।" रिनाल्डी बोला।

"अब मुझे फिर सो जाना चाहिए, जिससे कुमारी बर्कले से मिलने के समय मै बिलकुल तरोताजा और सुन्दर नजर आऊँ।"

मैंने अपना फौजी कोट और कमीज उतारी, और बर्तन के ठडे पानी से जी भर कर नहाया। तौलिये से अपने शरीर को रगड़ रगड़ कर सुखाते हुए मै कमरे मे इधर-उधर तथा खिड़की के बाहर नजर दौडाता रहा। 'रिनाल्डी' आँखे बन्द किये अपने बिस्तर पर लेटा था। वह देखने मे खूबसूरत था, उस की आयु मेरे बराबर थी और 'एमाल्फी' का रहनेवाला था। उसे सर्जन बनने का शौक था और हम दोनो घनिष्ठ मित्र थे। मै उसकी तरफ देख ही रहा था, कि उसने आँखे खोल दी।

"क्या तुम्हारे पास कुछ पैसे है?"

"हाँ, हाँ।"

"मुझे पचास 'लिरे' उधार दे दो।"

मैंने अपने हाथ पोछे और दीवार पर टँगे हुए अपने फौजी कोट की भीतरी जेब से अपनी पाकेट-बुक निकाली। रिनाल्डी ने नोट लिये और बिस्तर से उठे बिना ही उन्हें मोड़ कर उसने अपने पायजामे की जेब मे रख लिया। वह मुस्कराया—, "मुझे कुमारी बर्कले के मन में यह बात जमा देनी चाहिए कि मैं काफ़ी धनी व्यक्ति हूँ। तुम मेरे एक महान और अच्छे दोस्त हो और आर्थिक-संरक्षक भी!"

"जहन्नुम मे जाओ तुम।" मैने कहा।

उस रात भोजनालय मे, मै पादरी के पास बैठा। मेरे 'अब्रूजी' न जाने के कारण वह बड़ा निराश और दुखी था। उसने अपने पिता को लिख दिया था कि मै वहाँ आ रहा हूँ और उन लोगो ने सब तैयारियाँ कर रखी थीं। वहाँ न जाने का मुझे भी उतना ही दुख था, जितना पादरी को। और मेरी समझ मे यह स्वय नहीं आ रहा था कि आखिर मै वहाँ क्यों नहीं गया। मैं स्वय भी तो वहाँ जाना चाहता था। मैंने पादरी को समझाने का प्रयास किया कि कैसे एक के बाद-एक घटनाएँ घटती गई और मै वहाँ न जा सका। अन्त में पादरी मान गया कि

मै सचमुच वहॉ जाना चाहता था। और तब करीब-करीब सारी बातें बन गईं। उस समय मैंने काफी शराब पी रखी थी और बाद में कॉफी और स्ट्रेगा (एक प्रकार की शराब) पी ली। नशे मे ही मैंने पादरी को समझाया कि किस प्रकार हम जो करना चाहते है, वह नहीं कर पाते। हम अपने इच्छानुसार कभी कोई कार्य कर ही नहीं पाते।

हम दोनो इधर बाते कर रहे थे और हमारे बाकी साथी आपस मे किसी बात पर बहस कर रहे थे। मैं 'अब्रूजी' जाना चाहता था। मै ऐसी किसी भी जगह नहीं गया था, जहॉ सडको पर बर्फ जमकर लोहे के समान सख्त हो जाती है, जहॉ काफी ठढ पड़ती है और मौसम बिलकुल सूखा होता है। जहॉ पाउडर के समान, सूखा बर्फ़ चारो ओर बिखरा रहता है, बर्फ़ मे खरगोशो के पद-चिह्न दिखाई देते हैं, जहॉ के किसान अपने हैट उतारकर आदर-सहित आप को बड़े आदमियो की तरह सम्बोधन करते हैं और जहॉ खूब शिकार खेला जा सकता है। मै ऐसे किसी स्थान पर नही गया था; किन्तु उन जगहो मे गया था जहॉ के कॉफीघर धूम्रपान से आच्छादित रहते थे, जहॉ रात में ऐसा प्रतीत होता था, मानो कमरा घूम रहा हो और जहॉ स्वयं को सतुलित रखने के लिए एकटक दीवार की ओर देखना पड़ता था। रात्रि मे शराब के नशे मे मदहोश बिस्तर पर पड़े-पड़े ऐसा लगने लगता था, जैसे ज़िन्दगी मे जो कुछ है, बस यही है। सुबह उठने पर एक विचित्र अनुभूति होती थी और यह भी पता नहीं रहता था कि रात किसके साथ गुजारी थी? अन्धकार मे लुकती-छुपती एक बनावटी दुनिया, जो इतनी उन्मादक थी कि अनजाने ही उसे पाने के लिए मचल उठता। रात्रि मे बेपरवाही रहती कि निश्चय ही, जो-कुछ है, यही है और बाकी कुछ नहीं—और फिर वही बेपरवाही। अचानक ही कभी जागरूकता आ जाती और एक चिन्ता-सी लिए-लिए सो जाता। कभी-कभी सारी रात सोचते-सोचते बीत जाती और सबेरा होने पर जो कुछ मस्ती अथवा बेपरवाही होती, सब दूर भाग जाती। प्रत्येक वस्तु एक तीखापन और कठोरता लिए हुए अपने वास्तविक रूप मे सामने आ जाती। कभी पैसो को लेकर कोई झगड़ा हो जाता, फिर भी बड़ा आनन्द आता था। सुस्वादु नाश्ता और भोजन तथा हर चीज बड़ी प्यारी-प्यारी और उष्णता प्रदान करती-सी लगती। कभी-कभी सारी रोचकता और सुन्दरता समाप्त हो जाती और बाहर सड़क पर निरुद्देश्य घूमने मे आनन्द आता; किन्तु हमेशा ही दूसरा दिन आता और फिर दूसरी रात। मैंने पादरी को वहॉ की रातो के बारे मे बताने की चेष्टा की। मैंने उसे यह भी

बताना चाहा कि वहाँ के रात और दिन मे क्या अन्तर होता है ओर जब तक कि दिन मे ठढ और मौसम साफ नहीं होता, रात किस प्रकार दिन से ज्यादा आनन्द दायक होती है। किन्तु मै ठीक-ठीक नहीं कह सका, जैसे मैं अभी नहीं कह पा रहा हूँ। पर अगर आपने इसका अनुभव किया है, तो आप समझ सकते है। पादरी के जीवन मे कभी ऐसा प्रसंग नहीं आया था, किन्तु वह इतना अवश्य समझ गया कि मै सचमुच अब्रूजी जाना चाहता था; पर जा नहीं सका। सो हमारी मित्रता कायम रही। बहुत-सी बातो मे हमारी रुचि एक थी; पर हमारे बीच अन्तर भी काफ़ी था। उसे बहुत-सी ऐसी बातें ज्ञात रहतीं, जो मै नहीं जानता था। इतना ही नहीं, जानकारी प्राप्त कर लेने पर भी मै उसे सदा भूल जाता था। किन्तु यह बात मुझे उस समय नहीं मालूम थी, बाद मे, अवश्य ही ज्ञात हो गई। इस बीच हम सब भोजनालय मे थे। खाना खत्म हो गया था और बहस चल रही थी। हम दोनो ने अपनी बाते बन्द कर दी और तभी कैप्टन चिल्लाया—"पादरी इन दिनो सुखी नहीं है। लड़कियों के अभाव में पादरी सुखी नहीं है।"

"मै बिलकुल सुखी हूँ।" पादरी बोला।

पर कैप्टन ने जैसे सुना ही नहीं। वह बोला—"पादरी सुखी नही है। पादरी चाहता है युद्ध मे आस्ट्रियन लोग जीत जायँ।" अन्य सभी मौन सुन रहे थे। पादरी ने अपना सिर हिलाया और कहा—"ना!"

"पादरी नहीं चाहता कि हम कभी हमला करे। क्या तुम नहीं चाहते कि हम कभी भी हमला न करे?"

"नहीं, यदि युद्ध हुआ, तो मेरी समझ से हमे अवश्य हमला करना चाहिए।"

"अवश्य हमला करना चाहिए, अथवा हमला करेंगे!"

पादरी ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

"उस बेचारे को अकेला छोड़ दो" मेजर ने कहा,—"वह बिलकुल ठीक है।"

"वह इस सम्बन्ध मे कुछ कर भी नहीं सकता।" कैप्टन बोला।

हम सब उठे और वहाँ से चल पड़े।

४

सबेरे पास के बगीचे के तोपखाने की आवाज ने मुझे जगा दिया। सूर्य का प्रकाश खिड़की से अन्दर आ रहा था। मै बिस्तर छोड़कर खिड़की के

निकट आ खडा हुआ और बाहर देखने लगा। मैने देखा कि ककडो से भरी पगडडियॉ भीग गई थी और घास ओस से तर हो गई थी। तोपे दो बार और दागी गई। उनके छूटने के साथ ही वायु का एक तीव्र झोका आता और खिडकी को जैसे झकझोरते हुए मेरे पायजामे के सामनेवाले भाग को फडफड़ा देता। तोपे यद्यपि दिखाई नहीं दे रही थी, फिर भी इतना स्पष्ट था कि वे इसी दिशा मे दागी जा रही थी। उनका वहॉ रहना कुछ कम कष्टप्रद नहीं था। फिर भी यह सतोप की बात थी कि तोपे बहुत बड़ी नहीं थी। ज्यो ही मैंने बगीचे की ओर दृष्टि दौड़ाई, त्यो ही सड़क पर एक ट्रक चालू होने की आवाज मुझे सुनाई दी। मै कपड़े पहनकर, नीचे पहुँचा और रसोईघर मे थोड़ी सी काफी पीने के बाद गैरेज की ओर चल पडा।

लम्बे ओसारे में बिलकुल पास-पास एक कतार में दस मोटरें खडी थीं। वे एम्बुलेसे थी, जिनका ऊपरी हिस्सा वजनी और आगे का भाग चपटा था। उनकी बनावट चलती-फिरती रेलगाड़ी के माल रखने के डिब्बे के समान थी और उन्हे भूरे रग से रग दिया गया था। बाहर के ऑगन मे कुछ कारीगर एक मोटर की मरम्मत कर रहे थे। तीन अन्य मोटरे ऊपर पहाड़ो मे मरहम-पट्टी के केन्द्रों में थी।

"क्या उस तोपखाने पर भी कभी बमबारी होती है?" मैने एक कारीगर से पूछा।

"नहीं, लेफ्टिनेंट साहब! उस छोटी पहाड़ी के कारण वह बिलकुल सुरक्षित है।"

"और क्या हाल है?"

"कुछ खास बुरा तो नहीं। यह गाड़ी बिलकुल बेकार है। हॉ, दूसरी गाडियॉ ठीक चलती हैं।" उसने काम बन्द कर दिया और मुस्कराया "आप छुट्टी पर थे क्या?"

"हॉ!"

उसने कुरते से अपने हाथ पोछे और दॉत निकालते हुए हॅसा—, "आप तो मजे मे रहे न?" वहॉ उपस्थित शेष व्यक्तियो ने भी दॉत निकाल दिये।

"बिलकुल मजे में।" मै बोला "इस मोटर मे क्या खराबी है?"

"बिलकुल बेकार है। एक के बाद-एक कुछ न कुछ खराबी होती ही रहती है इसमे।"

"अभी क्या खराबी है?"

"पहियो पर नये हाल चढाने हैं।"

मैंने उन्हे काम करते हुए छोड़ दिया। खुले हुए एंजिन तथा बेंच पर फैले हुए हिस्सो के कारण मोटर बिलकुल खाली ओर भद्दी-सी लग रही थी। वहॉ से ओसारे में पहुँचकर मैंने हरएक मोटर की गौर से देखभाल की। वे साधारणतया साफ थीं। उनमे से कुछ तो अभी-अभी धोई गई थीं और कुछ धूल से भरी थीं। मैंने उनके टायरो की अच्छी तरह जॉच की कि वे कहीं नुकीले पत्थरो से कट-फट तो नहीं गए हें। प्रत्येक चीज सही सलामत थी। वस्तुतः वहॉ चीजो की देखभाल के लिए मेरे रहने या न रहने से कोई अन्तर नहीं पडता था। यह तो मेरी कल्पना थी कि चाहे आवश्यक वस्तुऍ उपलब्ध हो या नहीं, किंतु मोटरो को अच्छी हालत मे रखना, घायलों और बीमारो को मरहम-पट्टी के स्थानो से निर्विघ्नतापूर्वक हटाना, पहाड़ी क्षेत्र से उन्हें उन स्थानो तक पहुँचाना, जहॉ से वे विभिन्न अस्पतालो मे पहुँचाये जाते थे, तथा उन्हे उनके निर्दिष्ट अस्पतालो तक पहुँचाना जिनके नाम उनके आवश्यक कागज-पत्रो पर लिखे रहते थे, बहुत–कुछ मेरे ऊपर निर्भर था। पर वास्तव मे, मेरे रहने या न रहने से कोई अन्तर नहीं आता था।

"मोटर के आवश्यक हिस्से (पार्ट्स) प्राप्त करने मे कोई कठिनाई तो नहीं हुई?" मैंने सार्जेंट–मैकेनिक (मोटर सुधारनेवाला सार्जंट) से पूछा।

"नही, साहब!"

"गैसोलीन अब कहॉ रखा जाता है?"

"वही, जहॉ पहले रखा जाता था।"

"अच्छा।" मैंने कहा और मकान में लौट गया। भोजनालय की मेज़ के निकट बैठकर मैंने एक प्याली काफ़ी और पी। जमाये हुए दूध से बनाई गई क़ाफी पीले भूरे रग की और बड़ी मीठी थी। खिड़की के बाहर वसन्त का सुन्दर प्रभात दृष्टिगोचर हो रहा था। नाक में कुछ—खुश्की सी महसूस होने लगी थी, जिसका मतलब था कि दिन मे काफी गरमी पड़नेवाली थी। उस दिन मै पहाडी क्षेत्र के विभिन्न सैनिक शिविरों मे अपने विभाग का निरीक्षण करता रहा और तीसरे पहर काफी विलम्ब से नगर मे लौटा।

जब तक मै बाहर था, सब-कुछ बड़े मजे मे चल रहा था। मैंने सुना कि हमला फिर शुरू होनेवाला है। हम लोग जिस टुकड़ी के साथ काम कर रहे थे, वह नदी के पास एक स्थान पर हमला करनेवाली थी। मेजर ने मुझसे कहा कि हमले के समय मैं सैनिक शिविरों का ध्यान रखूँ। उसने बतलाया कि

आक्रमणकारी टुकडी तग पहाडी दर्रे के ऊपरी तरफ से नदी पार करेगी और पहाडो मे इधर–उधर फैल जायेगी। मोटरो के पड़ाव नदी के अधिक से अधिक करीब होगे और उन्हे अच्छी तरह से संरक्षण मे रखा जायेगा। इन स्थानो का चुनाव यद्यपि पैदल सेना करनेवाली थी, परन्तु बाकी सारा कार्य हमे ही करना था। यह एक ऐसी बात थी, जो हमारे हृदय मे इस झूठी भावना को जन्म देती थी कि हम भी सैनिको की तरह ही सक्रिय सहयोग दे रहे है।

मेरा सारा शरीर धूल और गन्दगी से लथपथ था, इसलिए हाथ-मुँह धोने के लिए मै अपने कमरे मे पहुँचा। रिनाल्डी, ह्यूगो का अग्रेजी व्याकरण लेकर अपने बिस्तर पर बैठा था। वह कपड़े पहनकर तैयार था। उसने अपने काले जूते पहन रखे थे और उसके बाल चमक रहे थे।

"बहुत खूब!" मुझे देखते ही वह बोला, "तुम आज मेरे साथ मिस बर्कले से मिलने चलोगे न?"

"नहीं"

"नहीं भाई, आज तो तुम्हें मेरे साथ चलना ही पडेगा, जिससे मै उसपर अपना प्रभाव डाल सकूँ।"

"अच्छी बात है। थोडी देर ठहरो। मै जरा नहा धो लूँ।"

"हॉ हॉ, नहा धो-लो और जैसे हो, वैसे ही चलो।" विशेष बनाव-शृगार की जरूरत नहीं!"

मैंने स्नान किया, बाल सॅवारे ओर चलने के लिए तैयार हो गया।

"एक मिनट रुको," रिनाल्डी ने कहा, "चलने के पहले हम थोडी शराब पी ले, तो कैसा रहेगा!" उसने अपना सन्दूक खोलकर एक बोतल निकाली।

"स्ट्रेगा है?" मैने पूछा।

"नही, ग्रेपा!"

"कोई बात नही।"

उसने दो गिलासो मे शराब उँडेली। हमने हाथ बढाकर गिलासो को एक दूसरे से छुलाया और उन्हे खाली कर दिया। शराब बहुत तेज थी।

"और डालूँ?"

"डालो!" मैने कहा और हम लोगो ने दूसरी बार गिलास भर कर शराब पी। रिनाल्डी ने बोतल उठाकर रखी और हम सीढियो से नीचे उतर आए। शहर मे चलते हुए हमें काफी गरमी लग रही थी, किन्तु पश्चिम की ओर क्षितिज मे सूर्य धीरे धीरे विलीन होता जा रहा था और सब कुछ बडा सुहावना लगने

लगा था। अंग्रेजो का अस्पताल बडी विशाल इमारत में था, जिसे जर्मनो ने युद्ध के पहले बनवाया था। मिस बर्कले अस्पताल के बगीचे मे बैठी थी। उसके साथ दूसरी परिचारिका भी थी। वृक्षो के बीच से हमे उनकी सफेद पोशाक दिखाई दे गई। हम उसी ओर बढे। रिनाल्डी ने फौजी ढग से उसे नमस्कार किया। मैने भी फोजी ढग से नमस्कार किया, किन्तु कुछ विनम्रता के साथ।

"आपसे मिलकर बडी खुशी हुई—" मिस बर्कले ने कहा—

"किन्तु आप इटालियन तो नहीं हैं, क्यो?"

"नही तो।"

रिनाल्डी दूसरी परिचारिका से बाते कर रहा था। वे दोनो ही हँस रहे थे।

"कितनी अजीब बात है—" मिस बर्कले ने कहा—

"आप इटालियन सेना में हैं?"

"मै सेना मे नही, केवल उसके एम्बुलेन्स-विभाग मे हूँ।"

"यह भी कम विचित्र बात नहीं है। आप इसमे भर्ती ही क्यो हुए?"

"मै स्वय भी नहीं जानता।" मै बोला—

"हमेशा हर बात का कारण नहीं होता।"

"सच? मै तो ऐसे वातावरण मे पली हूँ, जहाँ मै यह सोचने पर बाध्य थी कि प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है।"

"यह तो बडी अच्छी बात है।"

"क्या हम इसी तरह की बाते करते रहेंगे?"

"नहीं, कोई जरूरी नहीं है।" मैने कहा।

"चलो, कुछ तो राहत मिली। है न?"

मिस बर्कले काफी लम्बी थी। मुझे वह परिचारिका की पोशाक पहने प्रतीत हुई। वह छरहरे शरीरवाली युवती थी। उसका रग गोरा और आँखे भूरी थीं। मुझे वह बडी सुन्दर लगी। उसके हाथ मे चमड़े से मढी हुई, बच्चो के खेलने के छोटे से कोड़े के समान, एक पतली-सी बेत की छड़ी थी।

"आपके हाथ मे, यह छडी कैसी है?" मैने पूछा।

"यह एक युवक की स्मृति है, जो गत वर्ष युद्ध मे मार डाला गया।"

"ओह, मुझे बहुत दुःख है।"

"बडा अच्छा युवक था वह। मेरी उससे शादी होनेवाली थी, किन्तु वह सोम्मे मे मार डाला गया।"

"वहाँ तो बड़ी भयानक लड़ाई हुई थी।"

"क्या आप वहाँ मौजूद थे?"

"नही।"

"मैने उस युद्ध के विषय मे सुना है।" उसने कहा "उसके समान भयंकर लडाई अभी तक यहाँ हुई ही नही है। उस युवक की माँ ने उसकी यह छडी मेरे पास भेज दी। सैन्य अधिकारियो ने उसकी अन्य वस्तुओ के साथ यह छडी भी लौटा दी थी।"

"क्या आप लोगो की सगाई बहुत पहले हो गई थी?"

"आठ साल पहले। हम साथ साथ युवा हुए।"

"फिर आपने उससे विवाह क्यो नही किया?"

"कह नही सकती क्यो" उसने कहा, "ऐसा न करके मैने सम्भवतः मूर्खता ही की। मै ऐसा कर सकती थी, किंतु मैने सोचा यह उसकी प्रगति के मार्ग मे बाधक होगा।"

"ओह!"

"क्या आपने किसी से प्रेम किया है?"

"नहीं तो—" मैने कहा।

हम एक बेंच पर बैठ गए। मैने उसकी ओर देखा।

"आपके बाल बडे खूबसूरत है।" मै बोला।

"आपको पसन्द हैं?"

"बहुत।"

"उसकी मृत्यु के बाद मै इन्हे कटवा डालना चाहती थी।"

"लेकिन क्यो?"

"मै उसके स्मृति—स्वरूप कुछ करना चाहती थी। मैने कभी किसी बात की परवाह नहीं की ओर मुझे जरा-सा आभास भर हो जाता, तो वह मुझसे सब-कुछ पा सकता था। उसके लिए मै अपना सर्वस्व लुटा सकती थी। मै उससे विवाह कर लेती या जो वह कहता, वही करती। अब मै यह सब महसूस कर रही हूँ। किन्तु उस वक्त मुझे कुछ मालूम नहीं था। वह भी युद्ध मे जाना चाहता था।" मै मौन रहा।

"हाँ, उस समय मुझे सचमुच ही किसी बात का ज्ञान नहीं था। मै सोचती थी कि यह सब उस के लिए घातक होगा। मुझे ऐसा आभास होता था कि कदाचित् वह यह भार नहीं उठा सकेगा और उसके बाद तो वह युद्ध मे मर ही गया। बस, कहानी खत्म हो गई।"

"मैं ऐसा कैसे कहूँ !"

"किंतु मैं जो कह रही हूँ। हाँ, कहानी खत्म हो गयी।"

हमने रिनाल्डी की ओर देखा। वह उस दूसरी परिचारिका से बातें करने में खोया था।

"उस युवती का नाम क्या है ?"

"फर्ग्यूसन, हेलेन फर्ग्यूसन। आपके मित्र डाक्टर हैं न ?"

"हाँ, वह बहुत कुशल डाक्टर है।"

"कितनी अच्छी बात है !" मोर्चे के इतने निकट योग्य व्यक्ति मुश्किल से ही मिलते हैं। यह स्थान मोर्चे के निकट है। है न ?"

"बिलकुल।"

"युद्ध का यह मोर्चा बिलकुल बेकार है; किन्तु जगह बड़ी अच्छी है। क्या आप लोग हमला करनेवाले हैं ?"

"हाँ।"

"तब हमें भी काम करना पड़ेगा। अभी तो कोई काम ही नहीं है।"

"क्या आप बहुत समय से परिचारिका का कार्य कर रही हैं।"

"हाँ, जब मैं पन्द्रह वर्ष की थी तभी से। जब वह युद्ध में शामिल हुआ था, तभी से मैंने भी यह जीवन अपनाया। मुझे याद है, उन दिनों मेरे मस्तिष्क में एक मूर्खतापूर्ण विचार मँडराया करता था कि मैं जिस अस्पताल में काम करूँगी, उसी अस्पताल में एक न एक दिन कदाचित् वह भी आ जाए,— किसी तलवार का घाव लेकर और सिर के चारों ओर पट्टी बाँधे अथवा अपने कन्धे में गोली खाए हुए—किसी चित्र के सदृश ही !"

"यह युद्ध का मोर्चा भी तो चित्र के सदृश ही है।" मैंने कहा।

"हाँ," उसने कहा "फ्रान्स का यथार्थ रूप लोग नहीं समझ पाते हैं। यदि वे समझ पाते, तो यह सब इसी तरह नहीं चलता रहता। वह तलवार का घाव लेकर नहीं आया। शत्रुओं ने उसे तोप से उड़ा दिया।" मैं इस बार भी मौन रहा।

"आपका क्या ख़्याल है ? क्या यह सदा इसी तरह चलता रहेगा।"

"नहीं।"

"पर यह बन्द कैसे होगा ?"

"कहीं न कहीं उनका मोर्चा अवश्य टूटेगा ही।"

"हम उनका मोर्चा तोड़ेंगे। हम फ्रांस में उनका मोर्चा तोड़ेंगे। सोम्मे

मे उन्होने जो नृशसता दिखाई थी, उसकी पुनरावृत्ति करते रहने पर भी उनका विनाश न हो यह कैसे सम्भव है।"

"किन्तु यहॉ वे पराजित नही होंगे?" मैने कहा।

"क्या आप सच ही ऐसा सोचते है?"

"हॉ, पिछली गर्मियो में वे बडी कुशलता से लडे थे।"

"फिर भी वे पराजित हो सकते हैं।" उसने कहा," कोई भी पराजित हो सकता है।"

"जर्मन भी!"

"नहीं"—उसने कहा—"मै ऐसा नहीं सोचती।"

हम उठकर रिनाल्डी और मिस फर्ग्यूसन के पास पहुँचे।

"आप इटली से प्रेम करती है?" रिनाल्डी ने मिस फर्ग्यूसन से अंग्रेजी में पूछा।

"बहुत!"

"मै समझा नहीं।" रिनाल्डी ने सिर हिलाते हुए कहा।

मैंने इटालियन मे अनुवाद करके उसे बताया। रिनाल्डी ने फिर सिर हिलाया।

"यह तो अच्छी बात नही है। आप इग्लैड से प्रेम करती है?"

"बहुत अधिक नहीं। मै स्कॉटिश हूॅ, समझे आप?"

रिनाल्डी ने अबूझ दृष्टि से मेरी ओर देखा।

"ये स्कॉटलैड की रहनेवाली है। इसीसे इन्हे इग्लैड की अपेक्षा स्कॉटलैड से अधिक प्रेम है।" मैंने इटालियन भाषा मे समझाया।

"किन्तु स्कॉटलैंड भी तो इग्लैड ही है?"

मैंने मिस फर्ग्यूसन के लिए इसका अनुवाद अंग्रेजी मे कर दिया।

"क्या कहा आपने? फिर तो कहिए।" मिस फर्ग्यूसन ने कहा।

"क्या ये सचमुच एक नहीं है?"

"ना, बिलकुल नहीं। हम अंग्रेजो को बिलकुल पसन्द नहीं करते।"

"अंग्रेजों को पसन्द नहीं करतीं! मिस बर्कले को भी नही?"

"ओह, यह और बात हे। मिस बर्कले कुछ अंशो मे स्कॉटिश भी है। आपको हर बात का इस तरह शाब्दिक अर्थ नही लेना चाहिए।"

थोडी देर बाद हम विदा लेकर चल पड़े। रास्ते मे रिनाल्डी ने कहा—"मिस बर्कले, मेरी अपेक्षा तुम्हें अधिक चाहती है, यह बिलकुल स्पष्ट है। किन्तु वह नन्हीं स्कॉटिश लडकी बहुत प्यारी है।"

"बहुत!" मैंने कहा। वास्तव में मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था—"तुम उसे पसन्द करते हो?"

"नहीं।" रिनाल्डी बोला।

५

दूसरे दिन तीसरे पहर मै फिर मिस बर्कले से मिलने गया। वह बगीचे मे नही थी, अतः मै अस्पताल की बगल के उस द्वार पर पहुँचा, जहाँ से घायलो और रोगियो को ढोनेवाली गाडियाँ आती-जाती रहती थी। अन्दर प्रवेश कर मै प्रमुख परिचारिका से मिला। उसने बतलाया कि मिस बर्कले ड्यूटी पर है। "युद्ध चल रहा है। आप जानते है न?"

"जी हाँ।" मैंने कहा।

"आप ही वह अमेरिकन हैं, जो इटालियन सेना में हैं?" उसने पूछा।

"जी हाँ, देवीजी।"

"पर आपने ऐसा क्यो किया? आप हमारी सेना में भर्ती क्यो नही हुए?"

"मै क्या बताऊँ?" मैंने कहा, "क्या मै अब भर्ती हो सकता हूँ?"

"ना, मुझे भय है कि अब आप ऐसा नहीं कर सकते। बताइए तो सही, आपने इटालियनो का साथ क्यो दिया?"

"क्यो कि मै इटली मे था।" मैंने कहा, "और मैं इटालियन मज़े मे बोल लेता हूँ।"

"ओह,—" उसने कहा, "मै भी इटालियन सीख रही हूँ, बडी सुन्दर भाषा है।"

"सुना है कि लोग दो सप्ताह मे ही इटालियन भाषा सीख सकते हैं।"

"ना, मै उसे दो सप्ताह मे नहीं सीख सकूँगी। महीनो से मै उसे सीख रही हूँ। यदि आप चाहे, तो सात बजे के बाद मिस बर्कले से मिल सकते हैं। उस समय तक उसकी ड्यूटी खत्म हो जाएगी। लेकिन देखिए, अपने साथ बहुत से इटालियनो को नहीं ले आइएगा।"

"क्या उनकी सुन्दर भाषा का आनन्द उठाने के लिए भी नही!"

"ना, और न उनकी सुन्दर वर्दियो को दिखलाने के लिए।"

"नमस्ते।" मैंने कहा।

"नमस्ते।"

मैने फौजी ढग से सलाम किया और बाहर निकल आया। बिना थोडी असुविधा का सामना किए विदेशियो से इटालियन ढग की अभ्यर्थना असम्भव थी। ऐसा प्रतीत होता था, मानो इटालियन अभ्यर्थना देश के बाहर व्यवहृत होने के लिए बनाई ही नहीं गई थी।

दिन-भर बडी गरमी रही। मै नदी के चढाव की ओर प्लावा के पुल के छोर पर जा पहुंचा। यहीं से हमला शुरू होनेवाला था। पिछले वर्ष हमारे लिए बहुत आगे बढना असम्भव सा हो गया था, क्योंकि नावो के पुल तक पहुँचने के लिए दर्रे से होकर केवल एक मार्ग था और उसपर प्रायः एक मील तक मशीनगनो से गोलियो की बौछारे हुआ करतीं—बम बरसते रहते। फिर वह मार्ग इतना चौड़ा भी नही था कि उनपर से हमले के लिए आवश्यक सामग्री और फ़ौज साथ-साथ ले जाई जा सके। आस्ट्रियन सेना सरलता से उस मार्ग को नष्टकर वहाँ मृत्यु का ताडव रचा सकती थी; किन्तु इटालियन सेना नदी पार कर गई थी ओर उस ओर के आस्ट्रियन इलाके मे काफी दूरी तक इधर-उधर फैल गई थी। उसने प्रायः डेढ मील तक अपना अधिकार जमा लिया था। वह बड़ी वाहियात जगह थी ओर आस्ट्रियनो को चाहिए था कि उसपर इटालियनो का कब्जा नहीं होने देते। मेरे विचार से आपस मे यह एक-दूसरे के प्रति सहनशीलता की भावना ही थी, जिसके कारण उस इलाके पर इटालियनो के लिए अधिकार करना सम्भव हो सका था, क्योकि नदी के ढाल की ओर कुछ ही दूरी पर बना एक दूसरा पुल अभी भी आस्ट्रियनो के हाथ मे था। इटालियन सैन्य-रेखा से कुछ ही गज के फासले पर, पहाड़ियो की ओर, ऊपरी भाग मे आस्ट्रियन खाइयाँ थी। वहाँ किसी समय एक छोटा सा शहर भी था; किन्तु अब वह बिलकुल तहस-नहस हो चुका था। वहीं रेलवे स्टेशन के बचे-खुचे चिह्न भी मौजूद थे। पूर्णतया विनष्ट एक पक्का पुल भी था, जो वहाँ कोई ओट न होने के कारण आसानी से दिखाई दे जाता था। शायद इसीसे उसे सुधारने की जरूरत नहीं समझी गई थी।

मै उस सँकरे मार्ग से नदी की ओर बढ गया। अपनी मोटर मैने पहाड़ी के नीचे ही घायलो की मरहमपट्टी करनेवाले पड़ाव पर छोड़ दी। पहाड के कारण सुरक्षित नावो के पुल को पार किया और ध्वस्त शहर तथा ढाल के किनारे बनी हुई खाइयो का चक्कर लगाने लगा। सब लोग खाइयो के तहखानों में छुपे थे। वहीं बहुत-से राकेट खड़े थे, जिससे टेलिफोन के तार कट जाने पर

उन्हें उड़ाकर या उनके द्वारा सकेत करके तोपखाने को सहायता के सन्देश भेजे जा सके। सर्वत्र शान्ति थी। काफी गरमी महसूस हो रही थी और चारों ओर गन्दगी बिखरी थी। मैंने तारों के उस ओर आस्ट्रियन पक्तियो पर नजर दौड़ाई। कही कोई दिखाई नहीं दिया। मैंने एक खाई मे अपनी जान-पहचान के एक कैप्टन के साथ शराब पी और पुल पार करते हुए, वापस आ गया।

पहाडो के बीच से नागिन-सी बल खाती, पुल तक पहुँचने के लिए, एक नई और चौड़ी सड़क बनकर तैयार हो रही थी। सडक तैयार होते ही हमला शुरू होनेवाला था। जगल के बीच से होकर नीचे के नुकीले चक्करदार मोडों तक सडक बन चुकी थी। हमारी योजना थी कि इस नई सड़क द्वारा युद्ध के सब उपकरण नीचे की ओर लाए जाएंगे और पुरानी सॅकरी सडक के जरियें खाली मोटरें, गाड़ियॉ, घायलो से लदी मोटरे तथा अन्य सामग्रियॉ, जिनकी जरूरत वहॉ समाप्त हो जाती थी, लौटाई जाएँगी। मरहमपट्टी का स्थान नदी के किनारे आस्ट्रियन सीमा मे, पहाडी की कोर के नीचे था। घायलो को स्ट्रेचरों पर लादकर, नावों का पुल पार करते हुए वहॉ से लाने ले जाने की व्यवस्था की गई थी। हमला शुरू होने के बाद भी यही व्यवस्था बनी रहनेवाली थी। मेरी अपनी समझ और अनुमान के अनुसार नई सडक पर, उस स्थान से, जहॉसे उसका समतल होना प्रारम्भ हुआ था, प्राय: एक मील तक, आस्ट्रियन लोग जब भी चाहते, बड़ी आसानी से बमबारी कर सकते थे। स्वभावतः इससे बड़ी असुविधा होने की आशंका थी। किन्तु मैंने एक ऐसा स्थान खोज निकाला था जहॉ एम्बुलेंसें उस अन्तिम खतरनाक हिस्से को पार करने के बाद सुरक्षित रूप से ठहराई जा सकती थी और नावो के पुल को पार करके वहॉ तक घायल सैनिक बेखटके पहुँचाए जा सकते थे। मेरी इच्छा तो नई सडक पर से ही मोटरे ले जाने की थी, किन्तु वह अभी तक तैयार ही नही हुई थी। सड़क चौड़ी और बडे अच्छे ढग से बनाई गई प्रतीत होती थी। वह काफी मजबूत नजर आ रही थी। पर्वत की ओर के जगल के खुले हिस्सों से जहॉ-तहॉ सडक दिखाई दे जाती थी। उसके मोड़ बडे सुन्दर और बरबस अपनी ओर खींचते-से लगते थे। मजबूत धातु के ब्रेको के कारण पत्थर की इस सडक पर से गुजरने के लिए, मोटरें बिलकुल उपयुक्त थीं। फिर नीचे की ओर आते समय तो वे खाली ही रहनेवाली थीं। मै सॅकरी सडक पर मोटर दौड़ाता हुआ वापस आया।

राह मे दो सतरियो ने मुझे थोडी देर के लिए रोक लिया। वहाँ एक बम गिरा था। जबतक मै वहाँ रुका रहा, सडक पर तीन बम और गिरे। वे वायु के तीखे झोके के समान सनसानाते हुए आए। एक तीव्र और कठोर चमक के साथ वे फट गए। भीषण धमाका हुआ, चकाचौंध सी पैदा हुई और फिर भूरे धुएँ का गुबार उठा, जो उडता हुआ सड़क को पार कर गया। सन्तरियो ने हाथ हिलाते हुए आगे बढने का सकेत किया। जहाँ गोले गिरे थे, उन स्थानो को पार करते समय मैंने विस्फोट से बनी हुई करारों का विशेष ध्यान रखा। उनसे बचते हुए जब मै आगे बढा तो मैने भयानक विस्फोटक पदार्थों, बम गिरने से चारो तरफ उड़ी हुई मिट्टी तथा पत्थरों, और हाल ही मे सड़क पर डाली गई गिट्टियो की गन्ध महसूस की। मै गोरीजिया लौट आया। वहाँ से अपने रहने की जगह पहुँचा और जैसा कि मै कह आया था, मिस बर्कले से मिलने की तैयारी की जो, उस वक्त, ड्यूटी पर थी।

जल्दी-जल्दी खाना खाकर मै उस इमारत मे पहुँचा, जहाँ अंग्रेजो का अस्पताल था। वह सचमुच बहुत बड़ा और रम्य स्थान था। उसके अहाते मे बड़े सुन्दर-सुन्दर वृक्ष थे। मिस बर्कले बगीचे मे एक बेंच पर बैठी थीं। मिस फर्ग्यूसन भी वहीं थी। मुझे देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की और थोड़ी देर बाद ही क्षमा माँगते हुए मिस फर्ग्यूसन वहाँ से चलने को तैयार हो गई।

"माफ कीजियेगा मै आप दोनो को अकेला ही छोड़े जाती हूँ" उसने कहा—"पर आप मेरे नही रहने पर भी अच्छी तरह बाते कर सकते हैं।"

"रुको हैलेन!" मिस बर्कले ने कहा!

"नहीं, मुझे जाना ही चाहिए। मुझे कुछ जरूरी पत्र लिखने हैं।

"नमस्ते," मैं बोला

"नमस्ते मि० हैनरी!"

"देखो, कोई ऐसी बात मत लिख देना, जो अधिकारियो को व्यर्थ ही उलझन मे डाल दे।"

"चिन्ता मत करो। मैं अपने पत्रो में केवल इतना ही लिखा करती हूँ कि हम कितनी लुभावनी जगह मे रहते हैं और इटालियन कितने बहादुर होते हैं!"

"तब तो वे तुम्हें तरह-तरह के उपहारो से पुरस्कृत करेगे।"

"यह तो बड़े मज़े की बात होगी। अच्छा नमस्ते कैथरीन!"

"थोड़ी देर बाद मै तुम से मिलूँगी।" मिस बर्कले ने कहा।

मिस फर्ग्यूसन अन्धकार में अदृश्य हो गई।

"बड़ी भली लड़की है।" मैने कहा।

"सचमुच, बहुत भली है। पारिचारिका है।"

"क्या आप परिचारिका नहीं है?"

"नहीं, मै जिस विभाग मे हूॅ, उसमे काम करनेवालो को वी० ए० डी० कहा जाता है। यद्यपि हमे बहुत मेहनत करनी पड़ती है, फिर भी हमपर विश्वास नहीं किया जाता।"

"लेकिन क्यों?"

"जब कोई काम नही होता, तब हमपर विश्वास नहीं किया जाता; किन्तु जब सचमुच काम का भार होता है, तब विश्वास करना ही पड़ता है।"

"दोनो मे अन्तर क्या है?"

"पारिचारिका एक डाक्टर के समान है। परिचारिका बनने में समय भी बहुत लगता है। वी० ए० डी० बनना, इस पद तक पहुॅचने के लिए सबसे सरल मार्ग है।"

"अच्छा!"

"इटालियन लोग यह नहीं चाहते थे कि स्त्रियॉ, मोर्चे के इतने निकट रहें। इसीसे हमलोगो के लिए विशेष व्यवस्था है। हम बाहर भी नही निकलतीं।"

"यद्यपि मै यहॉ आ सकता हूॅ।"

"अवश्य, हमें यहॉ किसीने छिपा कर थोड़े ही रखा है।"

"युद्ध की बाते हमें बन्द कर देनी चाहिए।"

"पर ऐसा करना तो बड़ा कठिन है। उसे छोड़ने की गुंजाइश ही कहॉ है।"

"कुछ भी हो, हमे उसके विषय में बाते नही करनी चाहिए।"

"अच्छी बात है।"

हमने ॲधेरे में एक-दूसरे की ओर देखा। मुझे वह बड़ी सुन्दर लगी। मैने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया। उसने कोई विरोध नहीं किया और मैने उसकी बॉह के नीचे से अपनी बॉह निकालकर उसकी कमर के गिर्द घेरा डाल दिया।

"ना" उसने विरोध दर्शाया। मैने अपनी बॉह नहीं हटाई।

"क्यो नहीं?"

"ना।"

"हाँ।" मैंने कहा। मैं उसका चुम्बन लेने के लिए आगे झुका और तभी एक जोर से तिलमिला देनेवाली चमक-सी महसूस हुई। उसने मेरे मुँह पर एक करारा तमाचा जड़ दिया था। वह कठोर चपत मेरी नाक और आँखो पर पड़ी और मेरी आँखो मे आँसू डबडबा आए। "मुझे बहुत अफसोस है।" उसने कहा। मुझे आशा की एक क्षीण किरण नजर आई।

"आपने जो किया, वह उचित ही था।"

"मुझे वस्तुतः बडा दुःख है।" वह बोली "परिचारिकाएँ शाम की छुट्टी लेकर जो रगरेलियाँ मनाती है, वह मुझे स्मरण हो आया और अपनी शाम का वह रूप सहन न कर सकी। आपको चोट पहुँचाने की मेरी इच्छा नहीं थी पर मैंने आपको चोट पहुँचाई। है न?"

वह अँधेरे मे मुझे देख रही थी। मै क्रोध मे भरा बैठा था; फिर भी शतरज के खेल की तरह आगे क्या होनेवाला है, इसे मै निश्चित रूप से जानता था।

"आपने बिलकुल ठीक किया।" मैंने कहा, "मुझे तनिक भी बुरा नही लगा।"

"बेचारा!"

"देखिये, मै आजतक बडे अटपटे ढंग से जिदगी बिताता आया हूँ। मैं कभी अग्रेजी मे बात तक नही करता। और फिर आप इतनी खूबसूरत है।" मैंने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"व्यर्थ की बातें करने की आवश्यकता नहीं। मैं कह चुकी हूँ कि मुझे वस्तुतः बड़ा दुख है। अच्छा हो, हम इसे यही छोड़ दे।"

"ठीक है।" मै बोला—"और हम युद्ध की बाते भी छोड़ चुके हैं।" वह हँस पड़ी। यह पहला ही मोका था, जब मैंने उसे हँसते हुए सुना। सो मै उसका मुँह निहारने लगा।

"आप बहुत भले हैं।" उसने कहा।

"नहीं, मै भला नहीं हूँ।"

"नहीं, आप सचमुच बहुत अच्छे हैं। यदि आप बुरा न माने, तो मै आप का चुम्बन ले लूँ।" मैंने उसकी आँखो मे झाँका, पहले की तरह अपनी बाँह से उसकी कमर का घेरा डाल उसे अपने आलिगन मे ले लिया और उसका चुम्बन लिया। एक तीव्र चुम्बन के साथ मैंने अपना बन्धन और मजबूत कर

दिया और उसके अधरो को खोलने का प्रयत्न किया। किन्तु उसके ओठ बिलकुल सटे हुए थे। मै अभी भी गुस्से मे था और ज्यो ही मैने उसे अपनी भुजाओ मे भरा, वह सिहर उठी। मैने उसे अपने से और सटा लिया। उसके दिल की धडकनें मुझे महसूस हो रही थी। उसके बद ओठ धीरे-धीरे खुल गए—उसका सिर मेरे हाथ पर आ टिका और मेरे कन्धे से लगकर वह सिसकियाँ भरने लगी।

"प्रियतम!" वह सिसकते हुए बोली, "तुम सदा मुझे प्यार करोगे! करोगे न?"

क्या बकवास है। मैने सोचा। मैने उसके बालो मे उँगलियाँ फिराई—उसके कधो को स्नेह से थपथपाया। वह रो रही थी।

"बोलो तुम मुझे प्यार करोगे—करोगे न?" उसने मेरी ओर देखते हुए कहा—, "क्योंकि हम बड़ी विचित्र जिन्दगी बिताने जा रहे हैं।"

कुछ देर बाद मै उसके साथ उस इमारत के द्वार तक आया। वह अन्दर चली गई और मै अपने मकान की ओर लौटा। सीढियाँ चढकर जब मै ऊपर अपने कमरे मे पहुँचा, तो रिनाल्डी बिस्तर पर लेटा था। उसने मेरी ओर देखा।

"तो मिस बर्कले के साथ तुम्हारी अच्छी निभ रही है?"

"हम दोनो मित्र बन चुके है।"

"तुम्हारा स्वभाव तो एक कामुक कुत्ते के समान है!"

मैं उसका मतलब समझ नही सका।

"क्या?" मैने पूछा

उसने मुझे मतलब बताया।

"और तुममे" मैने कहा "उस कुत्ते की सी प्रवृत्ति है, जो ..।"

"बस बस, बहुत हो चुका"—वह बोला—"थोड़ी देर मे ही हम अपमानजनक बातें करने लगेंगे।" वह हँस पड़ा।

"नमस्ते" मैने कहा।

"नमस्ते, नन्हें श्वान!"

मैंने उसकी जलती मोमबत्ती तकिया मार कर बुझादी और अँधेरे में ही अपने बिस्तर में घुस गया।

रिनाल्डी ने मोमबत्ती उठा ली—उसे जलाया और पढ़ने में मग्न हो गया।

६

दो दिनो के लिए मै अपने क्षेत्र के विभिन्न उपचार-स्थलो का निरीक्षण करने बाहर गया था। जब मै अपने ठहरने की जगह लौटा, तो बहुत देर हो गई थी, इसलिए दूसरे दिन शाम तक मै मिस बर्कले से नही मिल सका। जिस वक्त मै वहाँ पहुँचा, वह बगीचे मे नहीं थी। जबतक वह नीचे नही आई, मै अस्पताल के कार्यालय मे उसकी प्रतीक्षा करता रहा। जिस कमरे मे कार्यालय था, उसकी दीवारो के रंगीन खम्भों पर संगमर्मर की बहुत सी ऊर्ध्वकाय मूर्तियाँ थी। पास का हाल भी इसी प्रकार की मूर्तियो से सजा था। संगमर्मर की वे मूर्तियाँ बिलकुल एक-सी दिखाई देती थी। मूर्तियो मे हमेशा एक सूनापन होता है। तावे की मूर्तियाँ तो कुछ सजीव भी प्रतीत होती है, किंतु संगमर्मर की मूर्तिया सदैव कब्रगाह-सी उदासी लिये रहती है। यो तो 'पिसा' मे एक ऐसी कब्रगाह थी, जो बडी सुन्दर प्रतीत होती थी। हाँ, जिनोआ एक ऐसी जगह थी, जहाँ उदासी से भरे संगमर्मर की भरमार थी। यह इमारत पहले किसी धनी जर्मन का निवासस्थान थी। उसने इन मूर्तियो पर निश्चय ही काफी धन व्यय किया होगा। मुझे यह तो सोचकर आश्चर्य हो रहा था कि उन मूर्तियो को किसने बनाया होगा और उसे कितना धन मिला होगा! मैंने यह पता लगाने की चेष्टा भी की कि वे एक ही परिवार के सदस्यो की मूर्तियाँ थी अथवा अलग अलग परिवारो की। किंतु वे सब मूर्तिया एक प्रकार की और उच्च कोटि की थी। उनके विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन था।

मैं एक कुर्सी पर बैठ गया। मैंने अपनी टोपी उतारकर हाथ में ले ली। गोरीजिया में भी हमें लोहे के शिरस्त्राण पहनने का आदेश था; किन्तु वे बहुत कष्टदायक थे। एक ऐसे शहर में, जहाँ से नागरिक हटाए नहीं गए थे, ये शिरस्त्राण नाटकीय प्रतीत होते थे। जब मैं उपचार-केन्द्रो का निरीक्षण करने गया था, तब मैं भी लोहे का शिरस्त्राण पहनकर गया था और अपने साथ इंग्लैड का बना हुआ गैसमास्क लेता गया था। हमे हाल ही मे कुछ गैसमास्क मिलने लगे थे। वे सही माने मे मास्क थे। हमे एक स्वयचालित पिस्तौल भी रखनी पड़ती थी। डाक्टर और आरोग्य-विभाग के अन्य अधिकारियो को भी पिस्तौले रखनी पडती थी। कुर्सी के

पीछे की ओर मुझे अपनी पिस्तौल चुभती हुई-सी प्रतीत हुई। यदि कोई पिस्तौल नही रखता, तो उसे कानूनन गिरफ्तार किया जा सकता था। पर रिनाल्डी उसके स्थान पर कागजो से भरी एक चमड़े की पेटी बॉधे रहता था। मेरे पास सचमुच की पिस्तौल थी और जबतक मुझे उससे निशाना लगाने का मौका नही आया, तबतक मै स्वय को एक सच्चा निशानेबाज समझता रहा। मेरी पिस्तौल एस्ट्रा ७ ६५ कैलिबर की छोटी नलीवाली पिस्तौल थी और चलाए जाने पर इतने जोर से झटका लगता था कि किसी वस्तु पर निशाना बैठाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। मै उसे चलाने का अभ्यास करता रहा। लक्ष्य से बीम क़दम दूर से पिस्तौल को निशाने से कुछ नीचे झुकाते हुए मै उसकी हास्यास्पद नन्ही नली से लगनेवाले झटके पर काबू पाने का प्रयास करता। मेरा यह प्रयास उस समय तक चलता रहता, जबतक मेरी पिस्तौल की गोली अपने लक्ष्य-बिन्दु से एक गज की परिधि मे अपने निशाने पर नही जा लगती। और तब अचानक ही पिस्तौल लेकर चलना मुझे बडा हास्यास्पद लगने लगा। किन्तु शीघ्र ही मै यह सब भूल गया। फिर अपनी छोटी-सी पीठ से टकराकर फट-फट की आवाज करनेवाली उस पिस्तौल को लेकर चलने मे मेरे मन मे किसी प्रकार की भावना नहीं उठती थी। हॉ, जब किसी अंग्रेजी-भाषा भाषी सज्जन से भेट होती, तो अवश्य ही एक प्रकार की शर्म-सी महसूस होती।

मै अब कुर्सी मे जमकर बैठ गया। पीछे के डेस्क से एक अरदली मेरी ओर नापसन्दगी की नज़र से देख रहा था। मै सगमर्मर के फर्श, खम्भो पर बनी सगमर्मर की ऊर्ध्वकाय मूर्तियां और दीवारो पर खुदे हुए चित्रो की ओर देखता हुआ मिस बर्कले की प्रतीक्षा करता रहा। दीवारो पर खुदे हुए चित्र बुरे नहीं थे। ऊपरी रग और परते झडना आरम्भ होने के पहले भी दीवार पर खुदे हुए चित्र अवश्य ही सुन्दर रहे होगे।

मैंने हाल की ओर से कैथरीन बर्कले को आते देखा और उठकर खड़ा हो गया। मेरी ओर आते समय वह लम्बी तो नहीं, किन्तु बहुत आकर्षक लग रही थी।

"नमस्ते मि० हेनरी।" उसने कहा।

"कैसी हैं आप?" मैने पूछा। पीछे के डेस्क से अरदली हमारी बाते सुन रहा था।

"हम यहीं बैठे या बाहर बग़ीचे मे चले?"

"बाहर ही चले। वहॉ काफ़ी ठढक है।"

मै उसके पीछे-पीछे बगीचे की ओर चला और अरदली हमें पीछे से देखता रहा। जब हम ककर बिछे रास्ते पर पहुँच गए, तब उसने पूछा, "तुम कहाँ गए थे?"

"मै उपचार-केन्द्रो का निरीक्षण करने गया था।"

"क्या तुम मुझे दो-चार पक्तियाँ लिखकर भेज भी नहीं सकते थे?"

"नही!" मैने कहा—"इतनी सुविधा नही थी, फिर मैने सोचा, मै लौट तो रहा ही हूँ!"

"पर तुम्हे मुझे बताकर जाना चाहिए था, प्रियतम!"

अब हम रास्ता छोडकर वृक्षो के बीच से गुजर रहे थे। मैने रुककर उसका हाथ अपने हाथ मे लिया, और उसका चुम्बन ले लिया।

"क्या, यहाँ निकट में कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ हम जा सके?"

"नही" वह बोली—"हमें यही घूमना है। तुम मुझसे बहुत समय तक दूर रहे हो।"

"आज तो तीसरा दिन है और आज ही मै लौट आया हूँ।" उसने मेरी ओर देखा—"क्या सचमुच तुम मुझसे प्यार करते हो?"

"हाँ!"

"तुमने कहा था, तुम मुझे प्यार करते हो। कहा था न?"

"अवश्य!" मै झूठ बोला—"मै तुम्हे प्यार करता हूँ।" यद्यपि पहले मैने ऐसा नही कहा था।

"और तुम मुझे कैथरीन कहकर पुकारोगे?"

"कैथरीन!" मे फुसफुसाया। हम आगे बढ़ते गए और एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये।

"एक बार कहो तो, मै निशीथ-बेला में कैथरीन के पास लौट आया हूँ।"

"मै निशीथ-बेला मे कैथरीन के पास लौट आया हूँ।"

"ओह, प्रियतम! तुम लौट आये हो। लौट आये हो न?"

"हाँ, प्रिये!"

"मै, तुम्हे इतना प्रेम करती हूँ, इतना कि...। अब तुम कभी मुझसे दूर नहीं जाओगे न?"

"नहीं, मैं जब भी जाऊँगा, लोट आया करूँगा।"

"ओह, मै तुम्हे बहुत प्यार करती हूँ। अपना हाथ फिर से मेरे हाथ में दे दो, प्रियतम!"

"मैने उसे हटाया ही कहॉ है!" मैने उसे पकड कर अपनी ओर घुमा लिया, जिससे जब मैने उसका चुम्बन लिया, मै उसके मुख को देख रहा था। उसके दोनो नेत्र मुँदे हुए थे। उन मुँदे हुए नेत्रो को मैने चूम लिया। मुझे ऐसा लगा, जैसे वह कदाचित् कुछ पागल-सी हो गई थी। यदि ऐसा था, तो भी कोई बात नही थी। मै किन नई परिस्थितियो मे प्रवेश कर रहा था, इसकी मुझे किचित् भी परवाह नही थी। अफसरो के उस चकले मे, जहॉ दूसरे अफसरो के साथ सीढिया चढते समय लडकियॉ चारो ओर लिपट जाती थी, और अपना प्रेम जताने की चेष्टा मे अफसरो की टोपियॉ पीछे खिसकाकर पहन लेती थीं, प्रतिदिन सन्ध्या समय जाने की अपेक्षा, यह बधन कही अधिक प्रिय था। मै जानता था कि मै कैथरीन बर्कले से रत्तीभर भी प्रेम नही करता था और न ऐसा करने का मेरा कोई विचार ही था। यह तो ब्रिज (तॉश का एक खेल) की भॉति एक खेल था, जिसमे पत्ते खेलने की अपेक्षा बाते अधिक की जातीं हैं। ब्रिज के खेल की भॉति मुझे यह दर्शाना पड रहा था कि जो खेल खेला जा रहा है, वह पैसे कमाने अथवा दॉव जीतने के लिए ही खेला जा रहा है। दॉव क्या है, इसका हम मे से किसी ने भी उल्लेख नहीं किया था और मेरे हक मे यह अच्छा ही था।

"मै चाहता हूँ कि कोई ऐसा स्थान होता, जहॉ हम लोग एकात रूप से थोडा समय व्यतीत कर सकते।" मैने कहा। खडे-खडे बडी देर तक प्यार जताने की पौरुष-जन्य कठिनाई का अब मै अनुभव कर रहा था।

"ना, यहॉ कोई ऐसा स्थान नही है।" इधर-उधर देखकर वापस आते हुए वह बोली।

"तो थोड़ी देर के लिए हम वहॉ सामने ही बैठ जाएँ।"

हम दोनो पत्थर की सपाट बेन्च पर बैठ गये। मैने कैथरीन बर्कले का हाथ अपने हाथ मे ले लिया। उसने अपनी कमर के चारो ओर अपनी बॉह का घेरा डालने से मुझे रोक दिया।

"क्या तुम बहुत थक गये हो?" उसने प्रश्न किया।

"नहीं तो!"

वह नीचे घास की ओर देखने लगी।

"हम जो यह खेल खेल रहे हैं, वह बिलकुल वाहियात है। है न?"

"कौन-सा खेल?"

"बेवकूफ मत बनो।"

"मै जान-बूझकर बेवकूफ बनना पसद भी नही करता।"

"तुम बहुत अच्छे हो!" उसने कहा—"और तुम जितनी अच्छी तरह खेलना जानते हो, उतनी ही कुशलता से खेल भी रहे हो, किन्तु यह खेल बड़ा वाहियात है।"

"क्या तुम हमेशा दूसरो के मन की बाते जान लेती हो?"

"हमेशा नहीं, पर तुम्हारे मन की बाते जानती हूँ। तुम्हे यह बताने की जरूरत नही है कि तुम मुझ से प्रेम करते हो। आज शाम के लिए तुम्हारा प्यार खत्म हो गया। क्या तुम और किसी विषय पर बाते करना पसद करोगे?"

"पर मै तुम्हे वस्तुतः प्यार करता हूँ।"

"जब झूठ बोलने की जरूरत नही है, तब हमे झूठ नहीं बोलना चाहिए। मैने अभी-अभी थोडी देर तक एक बडे सुन्दर नाटक का आनंद उठाया है और अब मै पूर्णतः स्वस्थ हूँ। मैं न तो पागल ही हूँ और न ही मैने अपना सतुलन खोया है—समझे! कभी-कभी केवल कुछ क्षणो के लिए ही ऐसा हो जाता है।"

मैने उसका हाथ दबाते हुए कहा—"कैथरीन—मेरी प्राण!"

"अब यह बड़ा हास्यास्पद प्रतीत होता है—कैथरीन। तुम तो उसका शुद्ध उच्चारण भी नहीं कर सकते। फिर भी तुम बड़े अच्छे हो—बहुत ही अच्छे!"

"यही पादरी भी कहता था।"

"सच ही, तुम बहुत अच्छे हो। और तुम आते रहोगे और मुझसे मिलते भी रहोगे?"

"अवश्य!"

"और देखो, तुम्हें यह दुहराने की आवश्यकता नहीं है कि तुम मुझसे प्रेम करते हो। कुछ समय के लिए इस सब का अन्त हो चुका है।" वह खड़ी हो गयी। उसने अपना हाथ छुडा लिया और कहा—"नमस्ते।"

मैने उसका चुम्बन लेना चाहा।

"नही—" वह बोली—"मै बेहद थक गयी हूँ।"

"फिर भी, तुम ही मेरा चुम्बन ले लो।" मैने कहा।

"मैं बहुत थक चुकी हूँ—प्रियतम!"

"नही, तुम मेरा चुम्बन लो।"

"क्या तुम्हारी यह बड़ी तीव्र इच्छा है?"

"हाँ।"

हमने एक-दूसरे का चुम्बन लिया और तत्काल वह अलग हो गयी—"नहीं प्रियतम—नही। नमस्ते।" हम दोनो दरवाजे तक साथ-साथ आये। मैंने उसे द्वार मे प्रवेश—करते और हॉल से गुजरते देखा। जब वह चलनी थी, तो मुझे बड़ी प्रिय लगती थी। वह हॉल पार करती हुई ओझल हो गई। मै अपने मकान की ओर मुडा। रात गरम थी और पर्वतो मे युद्ध की काफी तैयारियाँ थी। सॉन जेब्राइली पर दिखायी देनेवाली काली तोपो की चमक देखता हुआ मै आगे बढता गया।

'विला रोस्सा' नामक मकान के सामने आकर मै रुक गया। किवाड़ बन्द हो चुके थे, किन्तु भीतर अभी भी चहल-पहल थी। कोई गाना भी गा रहा था। मै आगे बढ़ गया। अपने कमरे मे मै कपडे उतार ही रहा था कि रिनाल्डी आ गया।

"आ-हा!" उसने कहा, "खेल कुछ अच्छी तरह नहीं चल रहा है। तुम बहुत परेशान दीख रहे हो, दोस्त!"

"तुम कहॉ गये थे?"

"विला-रोस्सा मे। बडा आध्यात्मिक कार्यक्रम था, दोस्त! हम सबने मिल कर गाने गाये। तुम कहॉ गये थे?"

"उस अंग्रेज युवती से मिलने।"

"ईश्वर को धन्यवाद कि मै उस अंग्रेज़ युवती से दूर ही रहा!"

• ७ •

अगले दिन तीसरे पहर को मै प्रथम पहाडी उपचार-केन्द्र का निरीक्षण करके वापस आ गया। लौटते समय मैंने अपनी मोटर 'स्मिस्टामेंटो' मे खडी की, जहॉ परिचय-पत्र तथा उनसे सम्बन्धित विभिन्न अस्पतालो के कागजात के आधार पर घायलो और बीमारो को अलग-अलग समूहो में बॉटा जाता था। मै मोटर चला रहा था, इसलिए मोटर मे ही बेठा रहा। ड्राइवर कागजात लेकर अंदर गया। वातावरण मे गर्मी थी, आकाश चमकीला और नीला था और धूल से भरी हुई सड़क सफ़ेद नजर आ रही थी। मै फिएट (मोटर) की ऊँची आरामदेह सीट पर बेफिक्र बैठा हुआ था। किसी प्रकार की चिंता नहीं थी। ठीक उसी समय पास ही से, सड़क पर एक सैन्य-दल गुजरा। मै उसे जाते हुए देखता रहा।

सैनिक गरमी के मारे पसीने मे लथपथ थे। कुछ तो अपने लोहे का शिरस्त्राण पहने हुए थे, किन्तु बहुत-से सैनिकों के शिरस्त्राण उनकी गठरियो से बँधे झूल रहे थे। बहुत-से शिरस्त्राण बहुत बड़े थे और जिन्होने इन्हें पहन रखा था, उनके कान लगभग ढॅक से गये थे। अफसरो मे से प्रत्येक ने शिरस्त्राण पहन रखा था, जो उनके सिर पर अच्छी तरह बैठ जाता था।

मैंने अफसरो को उनके कालर पर लगी लाल और सफ़ेद पट्टियो के निशान से पहचान लिया। सैन्य-दल के गुजर जाने के बडी देर बाद कुछ छिटपुट सैनिक निकले, जो अपनी टुकड़ी के साथ चलने मे समर्थ न होने के कारण पीछे छूट गए थे। वे पसीने मे लथपथ, धूल मे सने और थके हुए थे। कुछ की दशा काफी खराब दिखाई दे रही थी। सबसे अंत मे एक ऐसा सैनिक निकला, जो लगडाकर चल रहा था। चलते-चलते थककर वह रुक गया और सड़क के किनारे बैठ गया। मै मोटर से उतरकर उसके पास पहुँचा।

"क्या बात है?"

उसने मेरी ओर देखा और उठकर खडा हो गया।

"कुछ नहीं, मै जा रहा हूँ।" उसने कहा।

"क्या तकलीफ है तुम्हें?"

"—युद्ध!"

"तुम्हारे पैर को क्या हो गया?"

"पैर को तो कुछ नहीं हुआ, आत उतर गई है।"

"तुम मोटर मे क्यो नहीं जाते?" मैने पूछा—"अस्पताल क्यो नहीं चले जाते?"

"अधिकारी वर्ग ने मुझे जाने नहीं दिया। लैफ्टिनेट कहता था कि मैने जानबूझकर पट्टी (आत उतरने पर बॉधी जानेवाली पट्टी) नीचे खिसका दी है।"

"जरा मुझे देखने तो दो।"

"वह भीतरी हिस्से मे है।"

"कौन-से भाग मे है?"

"यहाँ।"

मैने उसे हाथ से छुआ।

"खॉसो।" मैने कहा।

"मुझे डर है कि खॉसने से तकलीफ बढ़ जाएगी। सबेरे की अपेक्षा अब वह बढ़कर दुगुनी हो गयी है।"

"बैठ जाओ।" मैने कहा—"इन घायलो से संबधित कागजपत्र मिलते ही मै तुम्हे अपने साथ ले जाऊँगा और तुम्हारे स्वास्थ्य-अधिकारियो के पास पहुँचा दूँगा।"

"मेडिकल अफसर तो यही कहेगा कि मैंने जानबूझकर ऐसा किया है।"

"वे तुम्हारा कुछ नही कर सकते।" मै बोला—"यह घाव का मामला नहीं है। यह रोग तो तुम्हे पहले से ही है। है न?"

"लेकिन, पट्टी तो मैंने कहीं खो दी।"

"तुम्हे अस्पताल भेज दिया जायेगा।"

"क्या मै यहाँ नही रह सकता, लैफ्टिनेण्ट साहब?"

"नही, मेरे पास तुम्हारे कागजात नहीं है।"

ड्राइवर, मोटर मे बैठे हुए घायलो से संबधित कागजपत्र लेकर द्वार से निकलता हुआ मेरी ओर बढा।

उसने कहा—"१०५-वें के लिए चार और १३२-वें के लिए दो।" ये नदी के उस पार स्थित अस्पतालो के नम्बर थे।

"तुम मोटर चलाओ।" मैने कहा और रोगी-सैनिक को मोटर में चढ़ने मे सहायता करने लगा।"

"आप अंग्रेजी बोल लेते है?" उसने पूछा।

"हाँ, हाँ, क्यो नहीं।" मैने उत्तर दिया।

"इस राक्षसी युद्ध के विषय मे आपके क्या विचार हैं?"

"यह बिलकुल वाहियात है।"

"वाहियात, ईश्वर कसम! बिलकुल वाहियात है!"

"क्या तुम कभी अमेरिका के किसी प्रदेश मे थे?"

"हाँ, पिट्सबर्ग मे। मै जानता हूँ, आप अमरीकी हैं।"

"क्या मै काफी अच्छी इटालियन नहीं बोल लेता?"

"पर मुझे मालूम है कि आप अमरीकी हैं।"

"तो यह दूसरा भी अमरीकी है।" ड्राइवर रोगग्रस्त सैनिक को देखकर इटालियन भाषा मे बड़बड़ाया।

"लपटन साहब (लैफ्टिनेण्ट), क्या आपके लिए मुझे मेरे सैन्यदल मे पहुँचाना आवश्यक है?"

"हाँ।"

"कप्तान (कैप्टन) डाक्टर को मालूम था कि मेरी आत उतर गई है; इस-

लिए मैंने उस बदजात पट्टी को उतार कर फेंक दिया, जिससे मेरा रोग बढ जाएँ और मुझे फिर से युद्ध मे वापस न जाना पड़े।"

"अच्छा, तो यह बात है!"

"क्या आप मुझे और कहीं नही ले जा सकते?"

"यदि तुम युद्ध-स्थल के पास होते, तो मै तुम्हें प्रथम उपचार-केन्द्र पर ले जाता, किन्तु युद्ध-स्थान से इतनी दूर यहाँ, तुमसे सबंधित कागजपत्रो के बिना तुम्हे भर्ती नही किया जा सकता।"

"यदि मै वापस अपने दल में जाऊँगा, तो वहाँ मेरी शल्य-चिकित्सा की जायगी और मेरे स्वस्थ हो जाने पर मुझे हमेशा के लिए अपनी टुकड़ी के साथ युद्ध मे भेज दिया जाएगा।"

मै सोच मे पड़ गया।

"आप हमेशा ही तो लड़ाई पर नही रहना चाहेगे। बोलिये, रहना चाहेगे?" उसने पूछा।

"नहीं।"

"हे भगवान! कितना राक्षसी युद्ध है यह!"

"सुनो," मै बोला—"तुम मोटर से उतरकर इस सडक पर गिर पड़ो और अपने सिर पर एक गूमड़ा पैदा कर लो। जब मै उधर से लौटूंगा, तो तुम्हें उठाकर अस्पताल ले चलूँगा। लो, हम यही सड़क के इस बगल, अपनी मोटर रोक देते है।" हम सड़क के किनारे रुक गये। मैने उसे नीचे उतरने मे सहायता दी।

"मै बिलकुल इसी स्थान पर रहूँगा, लेफ्टिनेण्ट साहब," वह बोला।

"अच्छा, तब तक के लिए बिदा।" मैने कहा और हम लोग चल दिये। एक मील बाद हमे वही सैन्य-दल मिला। उसे पीछे छोडकर हम आगे बढ गये और हमने नदी पार कर ली। नदी बर्फीले पानी पर छाये हुए कुहासे से ढँकी थी और पुल के नीचे लगे पीपो से होकर उसका पानी तीव्र गति से बह रहा था। मैदान पार करके घायलो को दोनो अस्पतालों मे पहुँचाने के लिए हम नदी के पार की सडक पर आगे बढ़ते गये।

लौटते समय अपनी खाली मोटर दौड़ाते हुए मै पिट्सबर्ग-निवासी उस सैनिक की ओर चला। राहमें, सबसे पहले उसी सैन्य-दल से भेट हुई। सैनिक पहले की अपेक्षा अधिक गरमी महसूस कर रहे थे और बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे। उनके बाद पिछड़े हुए सैनिक मिले। बाद मे, हमे सड़क के किनारे

खड़ी हुई रोगियो को ढोने वाली एक घोडागाडी दिखाई दी। हमने देखा कि दो आदमी उस रोगी सैनिक को गाड़ी मे ले जाने के लिए उठा रहे थे। वे उसी के लिए अपने दल से वापस आये थे। उस रोगी सैनिक ने मुझे देखकर अपना सिर हिलाया। उसका शिरस्त्राण नीचे गिर गया था और बालो की रेखा से नीचे उसके ललाट से खून बह रहा था। उसकी नाक का चमड़ा छिल गया था और खून से लथपथ भाग पर तथा बालो मे धूल जम गई थी।

"लेफ्टिनेण्ट साहब, इस गूमडे को देखिये।" वह चिल्लाया—"अब कुछ नहीं हो सकता। ये मुझे लेने आये हैं।"

जब मै अपने ठहरने की जगह लौटा, तो पॉच बज चुके थे। मैं, मोटर-गाडियॉ धोने के स्थान पर, नहाने पहुॅचा। कमरे मे वापस आकर पायजामा और गजी पहन, एक खुली खिडकी के सामने बैठकर मैंने अपनी रिपोर्ट लिखी। अगले दो दिनो में हमला शुरू होनेवाला था और मुझे अपनी मोटरे लेकर प्लावा पहुॅचना था। कई दिनो से मैने अपने देशवासियो को पत्र नही लिखे थे, पर अब मुझे पत्र लिखने की जरूरत महसूस हो रही थी। किन्तु मै इस काम को इतने दिनो तक टालता आया था कि अब लिखना प्रायः असम्भव था। यो तो लिखने-योग्य कुछ था भी नहीं। मैंने सेना मे प्राप्य युद्ध-क्षेत्रीय कार्ड लेकर एक-दो पत्र भेज दिए। "मै अच्छी तरह हूॅ।" इस वाक्य को छोडकर उनमे की शेष सभी बाते काट दी। "परिचितो को इन पत्रो से संतोष हो जाना चाहिये"—मैंने सोचा—"ये पोस्ट कार्ड अमेरिका वालो के लिए एक अनोखापन लिये होगे—इतना ही नहीं, ये उन्हें रहस्यपूर्ण भी प्रतीत होगे।" यह क्षेत्र भी एक विचित्र और रहस्यपूर्ण युद्ध-क्षेत्र था; किन्तु जहॉ तक मेरा अनुमान था, आस्ट्रियनो के साथ होनेवाले अन्य युद्धो की तुलना में, इस क्षेत्र का युद्ध सुचारु रूप से सञ्चालित तथा अधिक उग्र रूप धारण किये था। आस्ट्रियन सेना का जन्म तो केवल नेपोलियन को विजेता बनाने के लिए ही हुआ था; वह चाहे कोई भी नेपोलियन क्यों न हो! मै चाहता था कि हमारे साथ भी कोई नेपोलियन होता। किन्तु उसके स्थान पर हमारे साथ था इल्-जॅनरेल—कॅडोर्ना—मोटा और ऐश्वर्यशाली और विक्टोरियो इॅमॅनुएल, जो देखने में नाटा था, जिसकी लम्बी और पतली गर्दन थी और बकरे-सी दाढी! आगे, दाहिनी दिशा मे आओस्टा का ड्यूक था। हो सकता है कि एक महान सेनापति के लिए उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो; किन्तु वह एक साधारण व्यक्ति की तरह ही नजर आता था। अधिकाश व्यक्ति उसका राजा बनना

अधिक पसन्द करते। राजा-जैसा ही वह लगता भी था। वह रिश्ते में राजा का चाचा था और तृतीय सैन्य-दल का सेनापति भी। हम लोग द्वितीय सैन्य-दल मे थे। तृतीय सैन्य-दल के साथ कुछ अंग्रेजी तोपखाने थे। उस दल के दो तोप-चालको से मै मिलान मे मिल चुका था। वे बड़े भले थे और हम लोगों ने आनंदपूर्वक एक साथ सन्ध्या व्यतीत की थी। वे बडे भरे-पूरे शरीर के, किन्तु लजीले और व्यग्र स्वभाव वाले थे। जो-कुछ होता, उसकी वे दोनो एक साथ तारीफ करते। मेरी इच्छा होती थी कि मै भी अंग्रेजो के साथ रहता। उनके साथ रहना बड़ा सरल होता। फिर भी उनके साथ रहकर कदाचित् युद्ध मे मै मारा जाता। रोगियो और घायलों को ढोने और उनका उपचार करने के इस कार्य मे नहीं—या कदाचित् इसी काम को करते हुए—कौन जाने! यदा-कदा रोगियो और घायलो को ढोनेवाली मोटरों के अंग्रेज चालक भी मारे गए थे। खैर, मै जानता था कि मै मारा नहीं जाऊँगा। कम-से-कम इस युद्ध मे तो नहीं। इसे मुझसे कुछ लेना-देना नहीं था। मेरे लिए तो यह चलचित्र के परदे पर दिखाई देने वाले युद्ध से अधिक खतरनाक नहीं मालूम होता था। तो भी मै ईश्वर से प्रार्थना करता था कि यह समाप्त हो जाय तो अच्छा। मै सोचता था कि कदाचित् आगामी ग्रीष्म ऋतु मे युद्ध खत्म हो जाएगा। शायद आस्ट्रियन लोग हिम्मत हार जायें। वे अन्य युद्धो मे सदा हिम्मत हारते आए थे। किन्तु इस युद्ध मे तो न जाने उन्हे क्या हो गया था! हर व्यक्ति यही कहता था कि फ्रान्स मे लड़ाई शुरू हो गई है। रिनाल्डी ने बताया कि फ्रासीसियो ने विद्रोह कर दिया था और पेरिस मे सेना पहुँच गई थी। मैने उससे पूछा कि क्या हुआ, तो उसने बताया कि अधिकारियो ने उन्हे रोक दिया। मै आस्ट्रिया जाना चाहता था, किन्तु एक सैनिक के रूप मे नही। मै कृष्णवन की सैर करना चाहता था—हार्ज पर्वतो मे घूमना चाहता था। पर ये हार्ज पर्वत थे कहा? कारपैथिन पर्वतो मे युद्ध हो रहा था। पर मै वहाँ नहीं जाना चाहता था, यद्यपि वहाँ जाना शायद ठीक होता। यदि युद्ध नही होता, तो मै स्पेन भी जा सकता था। विचार-धारा टूटी। सूर्य पश्चिम मे ढल रहा था, और दिन-भर की उमस कम होती जा रही थी। शाम को खाना खाने के बाद मैने कैथरीन बर्कले से मिलने का निश्चय किया। मै उसका अभाव बुरी तरह महसूस कर रहा था। मेरे मन मे यह प्रबल इच्छा उठी कि काश! मै उसके साथ मिलान मे होता। मेरी इच्छा हो रही थी कि मै कैथरीन बर्कले के साथ कोवा में खाना खाऊँ—तपती साँझ मे उसके साथ वाया मॉन्जोनी की सैर करूँ।

फिर नहर के किनारे-किनारे चक्कर काटते हुए होटल पहुँचूँ। शायद वह राजी हो जाए। कदाचित् वह ऐसा अभिनय करे कि मैं ही उसका वह प्रेमी युवक हूँ, जो युद्ध मे मारा गया है। फिर जब मै और कैथरीन होटल के प्रवेश-द्वार के निकट पहुँचेंगे, तो हमें देखकर दरबान अपनी टोपी उतार कर हमारे प्रति सम्मान प्रदर्शित करेगा। मै होटल के क्लर्क के डेस्क के पास खड़ा होकर उससे कमरे की चाबी माँगूँगा और कैथरीन 'एलीवेटर' (ऊपर ले जानेवाला यन्त्र—लिफ्ट) के समीप मेरी प्रतीक्षा करती रहेगी। फिर हम एलीवेटर में सवार होगे। एलीवेटर हर मजिल पर एक 'खट्' की आवाज करते हुए धीरे-धीरे ऊपर उठेगा। अन्त मे, वह मंजिल भी आएगी, जहाँ हम उतरेंगे। एलीवेटर ले जानेवाला लड़का द्वार खोलेगा और एक ओर खड़ा हो जायगा। कैथरीन लिफ्ट से बाहर निकलेगी फिर मै उतरूँगा। हम दोनो हॉल से होते हुए अपने कमरे के सामने पहुँचेगे। मै द्वार मे चाबी डालकर उसे खोलूँगा। भीतर पहुँचकर मैं टेलीफोन उठाऊँगा और होटलवालो से बर्फ से भरे हुए चादी के पात्र में काप्री बिआन्को (एक प्रकार की शराब) की एक बोतल भेजने के लिए कहूँगा। और तब गलियारे मे, चॉदी के पात्र के भीतर हिलते हुए बर्फ के टुकड़ो के टकराने की आवाज सुनायी देगी। थोडी देर बाद ही खानसामा द्वार खटखटायेगा और मै बद दरवाजे के बाहर ही उसे छोड जाने के लिए कहूँगा; क्योकि असहनीय गरमी के कारण हमारे शरीर पर कपड़े नहीं होगे। खिडकी खुली रहेगी और घरो की छतो पर अबाबील (एक पक्षी) उड़ती रहेगी। बाद मे जब अंधेरा हो जायेगा और हम खिड़की के निकट खडे होंगे, तब घरो के ऊपर और पास ही वृक्षो पर छोटी-छोटी चमगादड़े चक्कर काटती हुई दिखाई देगी। हम काप्री का आनद लेंगे, द्वार बन्द होगा और गरमी के कारण हमारे शरीर पर सिर्फ एक चादर होगी। सारी रात हमारी होगी। मिलान की उस गरम रात मे हम रात-भर एक-दूसरे के प्यार मे डूबे रहेगे। ऐसा होना ही चाहिए! मैने तय किया कि जल्दी-जल्दी खाना खाकर मै कैथरीन बर्कले से मिलने जाऊँगा।

भोजनालय मे खूब बाते चल रही थी। मैंने थोड़ी शराब पी; क्योकि आज की रात बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। आज की रात बिना शराब पीये हम एक दूसरे के भाई नही समझे जाते। मै पादरी से आयरलैंड के आर्चबिशप के विषय मे बाते करता रहा। मुझे ज्ञात हुआ कि वह एक कुलीन पुरुष था जिसे अन्यायो का शिकार होना पड़ा था। उन अन्यायो के सम्बन्ध मे मुझे कुछ भी मालूम नहीं था, किन्तु एक अमरीकी होने के नाते अप्रत्यक्ष रूप से मै भी उसके लिए

उत्तरदायी था। पादरी से बातें करते हुए मैंने इस सबंध मे अपनी जानकारी का अभिनय किया। इतनी देर तक अन्याय के कारणो की इतनी सुन्दर व्याख्या सुनने के बाद यह समझते हुए कि, वह और कुछ नहीं, गलतफहमी थी, इस सबध मे अपनी अनभिज्ञता दर्शाना मेरी अशिष्टता ही होती। मेरी समझ से आयरलैड का आर्चबिशप बडा सुन्दर नाम था और वह मिनीसोटा का रहने वाला था, मिनीसोटा स्वयं भी बड़ा प्रिय नाम था—आयरलैड आव मिनीसोटा, आयरलैड आव विसकॉन्सिन, आयरलैंड आव मिचिगन! किन्तु इसके सुन्दर लगने का कारण यह था कि आयरलैड का उच्चारण आयलैड द्वीप या टापू की तरह होता था। पर नहीं—यही कारण नहीं था। उस सौंदर्य में और भी कुछ निहित था। "हॉ, फादर (धर्मपिता)! . यह सच है, फादर! . पर फादर, शायद ...! . नही फादर!....सम्भव है, हॅा फादर! आप मुझसे इस सम्बन्ध मे अधिक जानते है, फादर!"

पादरी अच्छा आदमी था, पर मद-बुद्धि था। अधिकारी गण अच्छे नहीं थे और वे भी मूढ़ थे। राजा अच्छा था; पर वह जड था। शराब खराब थी, किन्तु उसमे वह जडता नही थी। उसमे इतनी तेजी थी कि पीने वाले के दातो की चमक नष्ट हो जाती थी और तालू मे विचित्र तरह की चिकनाहट आ जाती थी।

"और पादरी को जेल मे बन्द कर दिया गया था—" रोक्का ने कहा—"उसके पास तीन प्रतिशत ब्याजवाले बॉड (तमस्सुक) पाये गये थे। यह फ्रास की बात है। यहॉ तो उसे गिरफ्तार ही नहीं करते। पॉच प्रतिशत ब्याजवाले बॉण्ड के विषय मे तो वह साफ मुकर गया। यह घटना बेजिअर्स की है। उस समय मैं वही था। जब मैने समाचारपत्र मे इस सम्बन्ध मे पढा, तो मै जेलखाने पहुॅचा और अधिकारियो से प्रार्थना की कि मै पादरी से मिलना चाहता हूॅ। यह तब तक बिलकुल स्पष्ट हो गया था कि उसने बॉण्ड चुराये थे।"

"मै नहीं मानता—तुम्हारे एक शब्द पर भी मुझे विश्वास नहीं है।" रिनाल्डी बोला।

"जैसी तुम्हारी इच्छा—" रोक्का ने उत्तर दिया—"किन्तु, मै यह घटना तो अपने पादरी के लिए सुना रहा हूॅ। यह बडी जानने लायक बात है। ये पादरी हैं, इसलिए इसकी महत्ता स्वीकार करेगे।"

पादरी मुस्कराया। "कहते चलो"—उसने कहा—"मै सुन रहा हूॅ।"

"यह सच है कि कुछ बॉण्ड के विषय मे निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सका; किन्तु तीन प्रतिशतवाले सभी बॉण्ड पादरी के ही थे। इतना ही नहीं,

कुछ स्थानीय लिखित बॉण्ड भी उसके पास मिले। मुझे अभी स्मरण नहीं आ रहा है कि, वे क्या थे। हॉ, तो मैं जेलखाने पहुॅचा। जरा ध्यान से सुनना, यही इस कहानी की मुख्य बात है—मै पादरी की कोठरी के सामने जाकर खडा हो गया और इस तरह बोला, मानो मै उसके सामने अपने पापो को स्वीकार करने जा रहा था, "पिता, मुझे क्षमा कर, क्योकि तूने पाप किया है।"

प्रत्येक व्यक्ति बड़े जोर से हॅस पडा।

"और उसने क्या कहा ?" पादरी ने पूछा। किन्तु रोक्का ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और मुझे इस मजाक के सबंध मे बताने लगा—"तुम इसका अर्थ समझते हो–है न ?" ऐसा लगा, जैसे उसका अर्थ समझ मे आ जाता, तो वह बडा सुन्दर मजाक था। मेरे गिलास मे लोगो ने थोडी शराब और डाल दी और मैंने उन्हे एक ऐसे अंग्रेज सैनिक की कथा सुनाई, जिसे स्नान करने के फव्वारे के नीचे बैठा दिया गया था। इसके बाद मेजर ने ग्यारह चेकोस्लोवाक (चेकोस्लोवाकिया-निवासी) और हंगेरियन नायक की कहानी सुनाई। थोडी और शराब पीने पर मैंने उस जॉकी (घुड़दौड़ में घोड़ा दौडानेवाला सवार) की कथा सुनाई, जिसे एक पेनी मिला था। मेजर ने कहा कि इटली मे किसी ड्यूक की पत्नी के विषय मे एक ऐसी ही कथा प्रचलित थी कि वह रात को सो नही सकती थी। इसी समय पादरी उठ कर चल दिया। मैंने एक और कथा सुनाई कि कैसे एक बार एक घूम-घूम कर सामान बेचनेवाला व्यक्ति पॉच बजे सवेरे, जब उत्तर-पश्चिम की ठण्ढी हवा चल रही थी, अपने व्यापार के लिए मार्सेल्स पहुॅचा। तभी मेजर ने कहा कि उसने सुना है, मैं खूब पी सकता हूॅ। मैंने इनकार कर दिया। उसने कहा कि उसने जो-कुछ सुना था, वह बिल्कुल सच है और बाक्कूस (यूनानियो का मद्य-देवता) की शपथ हम लोग इसकी जॉच करेंगे, यह सच है या नहीं! "नही, बाक्कूस नही—" मैंने कहा—"बाक्कूस नहीं !" "हॉ बाक्कूस—" उसने कहा। निश्चय हुआ कि मुझे बास्सी–फिलिप्पो–विसेन्जा, के साथ कप के बदले कप और गिलास के बदले गिलास भर-भर कर शराब पीनी होगी। बास्सी बोला—"नहीं, यह कोई जॉच का तरीका नहीं है; क्योंकि मैंने पहले ही उससे दुगुनी शराब पी रखी है।" मैंने कहा, "नही, वह सफेद झूठ बोल रहा है। बाक्कूस हो या न हों; किन्तु मै यह कह सकता हूॅ कि फिलिप्पो–विसेन्जा–बास्सी अथवा बास्सी–फ़िलिप्पो–विसेन्ज़ा ने शाम मे एक बूद भी शराब नहीं पी है। और हॉ, इस व्यक्ति का नाम क्या है?" वह बोला—"तुम्हारा नाम फ्रेडरिको एनरिको है या एनरिको फ्रेडरिको ?" मैंने कहा—

"देखो, हममे से जो सबसे अधिक पियेगा। उसी की जीत मानी जायेगी।" मेजर ने हमे पात्रो मे लाल शराब देना प्रारम्भ किया। शराब के इन दौरों की आधी राह मे ही मैने महसूस किया कि मै ज्यादा और नही पी सकूँगा। मुझे स्मरण हो आया कि मुझे कही जाना था।

"बास्सी जीता" —मै बोला—"वह मुझसे अधिक शराब पी सकता है। मुझे अब जाना है।"

"उसे सचमुच जाना है।" रिनाल्डी ने कहा, "उसने किसी को मिलने का समय दिया है। मुझे मालूम है।"

"हॉ, मुझे जाना है।"

"दूसरी रात सही—" बास्सी बोला—"उस रात, जब तुम स्वयं को अधिक समर्थ अनुभव करो।" उसने मेरा कन्धा थपथपाया। मेज पर मोमबत्तिया जल रही थी। सभी अफसर बडे प्रसन्न थे। "अच्छा नमस्ते, दोस्तो!" मैने कहा।

रिनाल्डी मेरे साथ बाहर आया। हम लोग दरवाजे से निकल करके सड़क पर खड़े हो गए और वह बोला—"तुम्हे वहॉ इस प्रकार नशे की हालत मे नहीं जाना चाहिए।"

"मै नशे में नहीं हूँ, रिनाल्डी, सच!"

"तुम कुछ कॉफी चबा लो, तो अच्छा है!"

"क्या बकवास है!"

"नही दोस्त, मै अभी लेकर आता हूँ। तब तक तुम यहीं टहलो!" कुछ क्षणो बाद वह मुट्ठी भर कॉफी के भुने हुए बीज लेकर लौट आया।

"इन्हे चबा जाओ दोस्त और ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।"

"बाक्कूस!" मै बोला।

"मै तुम्हारे साथ कुछ दूर तक चलूँगा।"

"विश्वास करो! मै बिलकुल ठीक हूँ।"

हम दोनो साथ ही शहर के बीच चलते गये और मै कॉफी चबाता रहा। उस फाटक पर, जहॉसे अंग्रेजो के अस्पताल तक रास्ता जाता था, रिनाल्डी ने मुझसे विदा ली। "नमस्ते।" मैने कहा "तुम भी अंदर क्यो नहीं आते?" उसने सिर हिलाते हुए कहा—"नहीं, मै सीधे सादे सुख-साधन ही अधिक पसन्द करता हूँ।"

"कॉफी के बीजो के लिए धन्यवाद!"

"यह तो कुछ नहीं है, दोस्त, कुछ नहीं!"

मैं अस्पताल के मार्ग पर चल पडा। एक कतार से खड़े सरो के वृक्षों की छायाएँ गहरी और स्पष्ट थी। मैने पीछे मुडकर देखा, तो रिनाल्डी खडा हुआ मुझे देख रहा था। मैने उसकी ओर हाथ हिलाया।

अस्पताल के अतिथि-कक्ष मे बैठकर मै कैथरीन बर्कले की प्रतीक्षा करने लगा। हॉल की ओर से कोई आ रहा था। मै खड़ा हो गया, किन्तु वह कैथरीन नही, मिस फर्ग्यूसन थी।

"हॅलो!" उसने कहा,—"कैथरीन को बहुत दुःख है कि वह आज शाम को आप से मिलने मे असमर्थ है। यही कहने के लिए उसने मुझे भेजा है।"

"मुझे बहुत अफसोस है। मै आशा करता हूँ कि वह बीमार नही है।"

"नही, पर वह पूर्णतः स्वस्थ भी नहीं है।"

"क्या आप उससे कह देगी, मुझे यह सुनकर कितना दुःख हुआ?"

"अवश्य, अवश्य!"

"आपका क्या विचार है? क्या कल उससे मिलने आया जा सकता है?"

"हॉ, आप आ सकते है।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद!" मैने कहा—"अच्छा, नमस्ते।"

मै द्वार के बाहर आया और अचानक ही मुझे गहरे एकाकीपन और सूनेपन का आभास हुआ। मैने कैथरीन से मिलने-जुलने को कभी महत्त्व नहीं दिया था। शराब के नशे मे तो मैं यहॉ आना भी करीब-करीब भूल गया था। किन्तु अभी, जब उससे मुलाकात नही हो सकी, मुझे लगा, जैसे उसके अभाव में मेरा जीवन सूना और व्यर्थ है।

• ८ •

दूसरे दिन तीसरे पहर हम लोगो ने सुना कि उस रात नदी के पास हमला शुरू होने वाला है और हमे वहॉ चार एम्बुलेंस लेकर पहुँचाना है। यद्यपि इस विषय मे निश्चित रूप से किसी को कुछ पता नही था; तथापि सभी इस ढग से बातें कर रहे थे, जैसे उन्हें सब-कुछ ज्ञात हो! मैं पहली मोटर पर सवार था और ज्योही हम ब्रिटिश अस्पताल के फाटक के पास से निकले, मैंने ड्राइवर से मोटर रोकने के लिए कहा। दूसरी मोटरे भी रुक गयीं। मैं नीचे उतरा और दूसरी मोटरों के ड्राइवरों को आदेश दिया कि वे आगे चले और कोरमन्स जाने वाली

राह जहॉ से निकलती है, वहॉ तक यदि हम उनसे न आ मिले, तो वे वहीं हमारी प्रतीक्षा करें। मै तेजी से सड़क पार करता हुआ अतिथि-कक्ष मे पहुँचा और वहॉ मैने मिस बर्कले के विषय मे पूछा।

"वह ड्यूटी पर है।"

"क्या मै उससे पल-भर के लिए मिल सकता हूँ?"

अर्दली कैथरीन को बुलाने गया और उसी के साथ वह आ गयी।

"मै यह पूछने के लिए आया हूँ कि अब तुम्हारी तबीयत कैसी है? मुझे मालूम हुआ कि तुम ड्यूटी पर हो; फिर भी इसीलिए मैने तुमसे मिलने की इच्छा प्रकट की।"

"मै अब पूर्ण स्वस्थ हूँ।" वह बोली,—"मेरे खयाल से कल अधिक गरमी के कारण ही मेरी तबीयत खराब हो गई थी।"

"मुझे जाना है।"

"मै तुम्हारे साथ मिनिट भर के लिए बाहर चल सकती हूँ।"

बाहर आने पर मैने पूछा—"अब तो तुम बिलकुल ठीक हो न?"

"हॉ, प्रियतम! क्या तुम आज रात को आओगे?"

"नही, मै तो इसी समय प्लावा के एक प्रदर्शन मे भाग लेने जा रहा हूँ।"

"प्रदर्शन!"

"हॉ, वहॉ जो-कुछ होने जा रहा है, वह मेरी समझ से तो एक प्रदर्शन ही है।"

"और तुम लौट आओगे न?"

"हॉ, कल।"

उसने अपने गले में से कुछ खोला और मेरे हाथ पर रख दिया। "ये सन्त एन्थोनी हैं। इन्हे ले जाओ। और हॉ, कल रात मुझसे अवश्य मिलना।"

"तुम तो कॅथोलिक नही हो न?"

"नही" उसने कहा—"किन्तु मैने सुना है कि सन्त एन्थोनी का पास मे होना बड़ा लाभदायक होता है।"

"तुम्हारी खातिर मै इसे सम्हालकर रखूँगा। अच्छा अब, विदा।"

"नहीं, विदा नही।" उसने कहा।

"अच्छी बात है।"

"समझदारी से काम लेना—अपना ध्यान रखना। नहीं—नही, तुम यहॉ मेरा चुम्बन नही ले सकते।" मेरी ऑखो मे झॉकते हुए वह बोली।

"अच्छी बात है।" मैने कहा।

विदा होते हुए मैने पीछे मुडकर देखा। वह सीढियो पर खडी थी। उसने अपना हाथ हिलाया। मैने अपने हाथ का चुम्बन लेकर हवा मे उसकी ओर उछाल दिया। उसने फिर अपना हाथ हिलाया। धीरे-धीरे मै सडक पार करते हुए अस्पताल की सीमा से बाहर निकल आया। एम्बुलेन्स मे मेरे बैठते ही हम लोग चल पडे। सन्त एन्थोनी धातु की बनी एक सफेद डिबिया मे बन्द थे। मैने डिबिया खोलकर चेन-सहित उन्हे अपनी हथेली पर उलट लिया।

"सन्त एन्थोनी?" ड्राइवर ने पूछा।

"हॉ।"

"मेरे पास भी हैं।" कहते हुए उसने स्टीयरिग व्हील पर से अपना दाहिना हाथ हटाया और अपने फौजी कोट के बटन खोलते हुए कमीज के भीतर से उन्हें निकाल कर बोला—"देखिये।"

मैने अपने सन्त एन्थोनी को सोने की पतली साकल-सहित डिब्बी मे बन्द कर दिया और उसे अपने वक्ष के पास की जेब मे रख दिया।

"आप इसे पहनते नहीं?"

"नही।"

"इसे पहनना अच्छा रहेगा। इसीलिए तो यह बनाया गया है।"

"अच्छी बात है।" मैने कहा और सोने की साकल के खटके को खोला—साकल अपने गले मे डाल ली और खटका बन्द कर दिया। सत एन्थोनी मेरी वर्दी के ऊपर लटकने लगे। मैने अपने कोट के बटन खोले, कमीज का कालर खोला और साकल को कमीज के भीतर डाल लिया। मोटर मे जाते हुए, मुझे अपने वक्ष पर लटकते, धातु की डिब्बी में बन्द उस सन्त की उपस्थिति का भान होता रहा। किन्तु धीरे-धीरे मै उसे भूल गया। युद्ध मे मेरे घायल होने के बाद फिर उस का कोई पता न लगा। कदाचित् वह किसी उपचार-केन्द्र में किसी व्यक्ति के हाथ लग गया।

जब हम पुल पर पहुँचे तो हमने अपनी मोटर की गति बढा दी। कुछ समय बाद ही, हमे सड़क के निचले भाग में आगे बढती हुई अन्य मोटरो के पहियो से उडती हुई धूल दिखाई दी। आडी-टेढी घुमावदार सड़क पर हमने तीन मोटरे देखी, जो बहुत छोटी नजर आती थी। उनके गतिमान पहियों से उड़ने वाली धूल आसपास के वृक्षो को स्पर्श करती हुई चली जा रही थी। हम लोगो ने उन्हे जा पकड़ा, पीछे छोड दिया और पहाडियो के बीच ऊपर चढ़ती हुई सडक पर घूम गए। रक्षक के रूप मे मोटर चलाना कष्टदायक नही होता, बशर्ते कि

आप सबसे आगे वाली मोटर मे हो। मै अपनी सीट पर आराम से बैठ गया और आस-पास के इलाके पर नजर दौडाने लगा। हम नदी के किनारे के पास की निचली पहाड़ियो के बीच से गुजर रहे थे। रास्ता ज्यो-ज्यो ऊपर चढता जाता था, त्यो-त्यो उत्तर की ओर काफी दूरी पर स्थित ऊँचे-ऊँचे पर्वत स्पष्ट होते जाते थे। उनके शिखर अभी तक हिमाच्छादित थे। मैने पीछे मुड़कर देखा। तीनो मोटरे चढ़ाई चढ़ रहीं थीं। धूल से बचाव के लिए उनके बीच पर्याप्त अन्तर था। थोड़ी दूर जाने पर हमें लदे हुए खच्चरों की एक लम्बी कतार मिली। उनके चालक लाल फैज (झब्बेदार तुर्की टोपी) टोपियाँ लगाए हुए उनकी बगल मे चल रहे थे। वे सब इटालियन निशानेबाज थे।

खच्चरो की कतार के आगे सडक बिलकुल सूनी थी। पहाड़ियो को पार करते हुए हम आगे बढ़ते गये और एक लम्बी पहाड़ी की ढलान से नीचे उतरते हुए एक नदी की घाटी मे पहुँच गए। मार्ग के दोनो ओर वृक्ष थे। दाहिनी ओर की वृक्ष-पंक्ति के बीच से मुझे नदी दिखाई दे गयी—स्वच्छ जल से भरी हुई—तीव्र, उथली नदी। नदी बहुत नीचे थी। उसकी सॅकरी पतली धार के दोनो ओर ककड़-पत्थर और रेत का फैलाव था। कहीं-कही उसके कंकरीले तल पर फैले हुए पानी मे एक अद्भुत चमक थी। किनारे के समीप ही मैने कुछ गहरे जलाशय देखे। उनका जल आकाश-जैसा नीलवर्ण था। बीच-बीच में मुझे नदी के ऊपर, उन स्थानो पर, जहाँसे हमारी सड़क से निकले हुए अन्य रास्ते जाते थे, पत्थर के वृत्तखण्डो पर निर्मित पुल दिखाई दिए। तब हम लोगो ने कृषको के पत्थर के बने हुए घरो को पार किया। खेतो मे खडे उन घरो की दक्षिणी दीवारों तथा खेतो की नीची पथरीली दीवारो से सटे, किसी लम्बी मोमबत्ती की लौ के समान विभिन्न शाखाओवाले नाशपाती के वृक्ष झूम रहे थे। सड़क बड़ी दूर तक घाटी के बीच दौड़ती चली गयी थी। एक मोड के साथ हमने पुनः पहाड़ियों पर चढना प्रारम्भ किया। अखरोट के बनो मे आगे-पीछे की ओर चक्कर काटती हुई सड़क बिलकुल सीधी ऊपर चढती गई। और अन्त मे एक पर्वतपृष्ठ पर पहुँचकर ही समतल हुई। वृक्षो के झुरमुट से मै नीचे की ओर देख सकता था। मैने नीचे—बहुत नीचे—दो देशो की सेनाओं को विभक्त करने वाली नदी की दूरस्थ रेखा को देखा और साथ ही उस सूर्य को देखा, जो नदी के वक्ष पर चमक रहा था। पर्वत-पृष्ठ के शीर्ष का अनुसरण करते हुए ऊबड़-खाबड नवीन सैन्यपथ पर हम लोग बढते गए। मेरी दृष्टि उत्तर दिशा मे स्थित दो पर्वत-मालाओ पर जा अटकी। हिम रेखा तक हरित-श्यामल तथा उसके

बाद श्वेत रंग में रगी हुई वे पर्वत-पक्तियाँ सूर्यकिरणो का स्पर्श पा बड़ी आकर्षक प्रतीत हो रही थी। ज्यो-ज्यो हम पर्वत-पृष्ठ पर ऊपर की ओर बढते गए, मुझे तीसरी पर्वत-माला दिखाई दी—हिमाच्छादित, उच्चतर पर्वत-माला—जो खडिया के समान शुभ्र-श्वेत थी और जिसके ऊपर कुछ ऐसे विचित्र समतल मैदान थे, जिन्हे देखकर आभास होता था, मानो किसीने उस पर्वत पर हल चलाया हो। इन सबसे बडी दूर—सबसे परे—कुछ और शैलशिखर खड़े थे। वे इतने दूर थे कि उन्हे देखकर यह कहना वस्तुतः कठिन था कि मैंने उन्हे सचमुच देखा था। वे सब पर्वत आस्ट्रियनो के अधिकार मे थे और उनके समान हमारे पास कुछ भी नहीं था। आगे चलने पर सड़क की दाहिनी ओर एक वृत्ताकार मोड था, जहाँ से नीचे देखने पर मै वृक्षो के बीच नीचे की ओर लुढकती हुई सड़क को स्पष्ट देख सकता था। इस राह पर सैनिक-टुकडियाँ जा रही थी—भारवाहक मोटरे तथा पहाड़ी तोपो से लदे टट्टू भी रेंग रहे थे। रास्ते की एक ओर से मोटर दौड़ाते हुए हम ढाल पर से नीचे की ओर बढते गए। नीचे झाँकने पर मुझे काफी निचली सतह पर नदी दिखाई दी। उसी के साथ मैंने किनारे से सटाकर बिछाए गए स्लीपरो की कतार तथा उनपर डाली हुई रेल की पटरिया देखी। वह पुराना पुल भी दिखायी दे गया, जिस पर होकर रेल की पटरिया नदी के दूसरी ओर चली गयी थी। इनसे परे, नदी से दूर, एक पहाडी की छाँह मे, उस नन्हे नगर के टूटे-फूटे ध्वस्त घर दिखाई दे रहे दे, जिस पर हमे अधिकार करना था।

जब हम नीचे उतरे, तब शाम का अंधेरा घिरने लगा था। हम नदी की बगल से जाने वाली बडी सड़क पर मुड़ गये और आगे बढ़ते गये।

• ९ •

सड़क पर बडी भीड थी। उसके दोनो ओर अनाज के पौधो के सूखे डढलो से बनी टट्टियाँ और पुआल (सूखी घास) की चटाइयाँ लगी थी। ऊपर भी चटाइयाँ लगा दी गयी थी। उनके बीच से निकलते समय ऐसा प्रतीत होता था मानो हम किसी सर्कस अथवा किसी देशी गाँव के प्रवेश-द्वार से गुजर रहे हो। चटाइयो से ढँकी उस सुरग को हमने धीरे-धीरे पार किया और उस खुले क्षेत्र मे आये, जहाँ रेल्वे स्टेशन था। यहाँ पर सड़क, नदी के किनारे की सतह से

नीची थी और नदी के किनारे की जमीन मे भीतर-ही-भीतर खोदकर खाइयॉ बना ली गई थी, जिनमे पैदल सेना छिपी हुई थी। इन खाइयो का सबध सडक से भी था। अंधेरा बढता जा रहा था। हम अपनी राह तय करते जाते थे। नदी के किनारे चलते-चलते मैने ऊपर की ओर देखा। निशा के ऑचल में मुँह छिपाने की तैयारी करते हुए सूर्य के ठीक सामने कृष्णवर्ण पहाडियो के ऊपर शत्रु की गतिविधि का निरीक्षण करनेवाले आस्ट्रियन-यान दिखाई दे रहे थे। हमने एक ईंट के भट्ठे से कुछ आगे अपनी मोटरें रोक दी। भट्ठियो और कुछ गहरी खाइयो को आवश्यक सामग्री से सजाकर उपचार-केन्द्रो का रूप दे दिया गया था। वहॉ के तीनो डाक्टरो से मै परिचित था। मैने मेजर से बातचीत की। उसने मुझे बताया कि जब युद्ध प्रारम्भ हो जायेगा और हमारी एम्बुलेन्स घायलो से भर जायेंगी, तब हम वापस उस चटाइयो से ढॅके हुए मार्ग से होकर पर्वत-पृष्ठ के साथवाले मुख्य-पथ तक जायेंगे, जहॉ एक अड्डे पर, घायलो को अन्यत्र ले जाने के लिए दूसरी मोटरें तैयार रहेंगी। मेजर को यह उम्मीद थी कि रास्ता साफ रहेगा और हमें वहॉ तक जाने मे कोई असुविधा नही होगी। यह सारी हलचल एक ही रास्ते पर थी। रास्ता भलीभॉति ढॅक दिया गया था; क्योकि नदी के उस पार स्थित आस्ट्रियन उसे स्पष्ट देख सकते थे। ईंट के इस भट्ठे मे हम लोग, नदी-तट के कारण, बन्दूको और मशीनगनो की मार से सुरक्षित थे। नदी के ऊपर एक टूटा-फूटा पुल था। बमबारी प्रारम्भ होने पर एक और पुल बनाया जाने वाला था और कुछ सैनिक ऊपर की ओर, नदी के मोड के उथले जल से होकर नदी पार करने वाले थे। मेजर एक ठिगना व्यक्ति था। उसकी मूँछे ऊपर की ओर उठी हुई थीं। वह लीबिया के युद्ध मे भाग ले चुका था, जहॉ लड़ते-लड़ते वह बुरी तरह आहत हो चुका था। वीरता दिखाने के पुरस्कार-स्वरूप उसे दो पट्टिया मिली थी जिन्हें वह अपने फौजी कोट पर लगाए हुए था। उसने कहा कि यदि कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया, तो वह मुझे पुरस्कार दिलवायेगा। मैने उसकी इस उदारता के लिए उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा, मुझे पूर्ण आशा है कि हमारा काम निर्विघ्न समाप्त हो जायेगा। मैने उससे पूछा कि क्या कही ऐसी बड़ी और सुरक्षित खाई है, जहॉ एम्बुलेस के ड्राइवर ठहराये जा सकें। उसने वैसा स्थान दिखाने के लिए मेरे साथ एक सैनिक भेजा। सैनिक हमे एक खाई तक ले गया, जो बहुत अच्छी थी। ड्राइवरो को वह बड़ी पसन्द आई। मैने उन्हें वहीं छोड़ दिया। मेजरवाली खाई में वापस जाने पर, उसने अपने अन्य दो

अफसरों के साथ, मुझे शराब पीने के लिए आमंत्रित किया। हमने बड़े प्रेम के साथ रम (शराब) पी। बाहर अंधेरा घना हो रहा था। मैंने पूछा कि हमला कब शुरू होने वाला है। "अधेरा कुछ और बढते ही," उसने उत्तर दिया। वहाँ से मै फिर ड्राइवरो के पास पहुँचा। वे खाई मे बैठे हुए गप्पे लगा रहे थे। ज्यो ही मै पहुँचा, त्यो ही वे सब चुप हो गए। मैंने उनमें से प्रत्येक को सिगरेट का एक डिब्बा दिया। वे शिथिलतापूर्वक बाधे गये, मेसीडोनिया सिगरेटो के डिब्बे थे। उनसे तम्बाखू गिरती थी और उन्हे पीने के पहले, उनके दोनो छोरो को मोड देना पड़ता था। मॅनेरा ने अपना लाइटर जलाया और उसे सब लोगों की ओर बढा दिया। उसके लाइटर का आकार फिएट् मोटर के रेडिएटर यत्र के समान था। मैंने उन्हे मेजर के साथ हुई बातचीत कह सुनाई।

"जब हम आ रहे थे, तब हमे वह अड्डा क्यो नहीं दिखाई दिया?" पास्सिनी ने पूछा।

"वह, जहा से हम मुड़े थे, वहाँ से कुछ दूरी पर था।"

"वह सडक तो फिर गन्दगी से भर जाएगी।" मॅनेरा बोला

"शत्रु अपने बमो से हमारे चिथड़े-चिथड़े कर देगे।"

"हो सकता है।"

"लेफ्टिनेंट साहब, खाने-पीने का क्या इंतजाम है? हमला शुरू होने पर हमे खाने का मौका नहीं मिलेगा।"

"मैं अभी जाकर देखता हूँ।" मैंने कहा।

"हमारे संबध मे क्या आदेश है? हम यहीं ठहरे या बाहर जाकर इधर उधर घूम आये?"

"यहीं ठहरना बेहतर होगा।"

मैं मेजर की खाई मे गया। उसने बताया कि मोर्चे का रसोईघर तो काफी दूर पडेगा। ड्राइवर यहीं आ जायेगे और अपने लिए भूना हुआ मास ले लेंगे। यदि उनके पास खाने-पीने के बर्तन न हो, तो हम उधार दे देगे। जहॉ तक मुझे मालूम था, उनके पास बर्तन थे। मै लौटकर डाइवरो के पास पहुँचा और उनसे कहा कि रसोईघर से खाना आते ही उन्हे मिल जायेगा। मॅनेरा ने कहा—"आशा है, बंमबारी शुरू होने के पहले ही खाना आ जायेगा।" वे सब कारीगर थे और युद्ध से घृणा करते थे।

मै मोटरो का निरीक्षण करने तथा अन्य गतिविधियो की टोह लेने के लिए बाहर गया। थोड़ी देर बाद खाई में लौटकर मै उन ड्राइवरो के पास बैठ

गया। हम सब लोग दीवार से पीठ टिकाकर जमीन पर बैठ गये और धूम्रपान करने लगे। बाहर बिलकुल अंधेरा-सा हो चुका था। खाई के भीतर की मिट्टी गर्म और सूखी थी, इसलिए मैंने दीवार से अपने कंधे टिका दिए, और पीठ के सहारे आराम से बैठ गया।

"हमला करने के लिए कौन-सी टुकड़ी जा रही है?" गावुज्जी ने पूछा।

"इटालियन निशानेबाज।"

"सभी इटालियन निशानेबाज है?"

"मेरा तो यही अनुमान है।"

"बडे पैमाने पर हमला करने के लिए तो यहॉ पर्याप्त सेना भी नहीं है।"

"ऐसा कदाचित् इसलिए किया गया है, जिससे शत्रु को पता न लग सके कि वस्तुतः आक्रमण कहॉ से होनेवाला है।"

"क्या इटालियन निशानेबाजो को मालूम है कि असली आक्रमण कौन करेगा?"

"मै तो ऐसा नही समझता।"

"वे सचमुच नही जानते—" मॅनेरा बोला "यदि उन्हे मालूम हो जाए तो वे हमला ही नहीं करेगे!"

"नही, वे हमला अवश्य करेगे" पास्सिनीने कहा—"ये इटालियन निशानेबाज बड़े मूर्ख होते है।"

"वे बड़े बहादुर होते है और उनमें पर्याप्त अनुशासन भी होता हैं—" मै बोला।

"नाप की दृष्टि से वे निस्सन्देह चौड़ी छातीवाले तथा भरे-पूरे शरीर वाले होते हैं—पर होते है बिलकूल मूर्ख।"

"नही जी, वे तो बडे लम्बे होते है!" मॅनेरा ने कहा। यह वास्तव में एक मजाक था। सब हॅस पड़े।

"लेफ्टिनेट साहब! जब उन्होने आक्रमण करने से इनकार कर दिया था और उनके दल के प्रत्येक दसवें आदमी को गोली से उडा दिया गया था, तब आप वहॉ थे?"

"नही।"

"यह बिलकुल सच है। उन सबको कतार मे खडा कर दिया गया और उनमे से हर दसवे सैनिक को बाहर खीच कर गोली मार दी गयी। कारबाइन—(छोटी बन्दूक) दल के सैनिको ने उन्हे गोली मारी थी।"

"छिः, कारबाइन दल के सैनिक!" पारिसनी ने कहा और फर्श पर थूक दिया—"पर वे प्रथम सैन्यदल के पैदल सैनिक, सब–के–सब छः फुट से ऊचे और उन्होने हमला करने से इनकार कर दिया!"

"यदि हर व्यक्ति इसी प्रकार आक्रमण करने से इनकार कर दे, तो युद्ध ही न हो।" मॅनेरा बोला।

"किन्तु, इन प्रथम सैन्य दल के पैदल सैनिको के साथ यह बात नहीं थी। वे डरते थे। सभी अफसर बडे उच्च परिवार से सम्बन्धित थे।"

"सुना है, कुछ अफसर अकेले ही आगे बढ गए थे।"

"किन्तु, एक सारजेण्ट ने उन अफसरो मे से दो को, जो इनकार करने वाले सैनिको का साथ नही दे रहे थे, गोली मार दी थी।"

"कुछ सैनिक भी तो उनका साथ न देकर अलग हो गए थे।"

"जो अलग हो गए थे, उन्हे उस समय कतार मे नहीं खडा किया गया, जब हर दसवे सैनिक को गोली मारी गई।"

"कारबाइन-दल के सैनिको द्वारा गोली मारे जानेवालो मे एक मेरे शहर का निवासी था।" पास्सिनी बोला—"वह लम्बा चौडा और भरे-पूरे शरीरवाला एक चुस्त युवक था और उस सैन्य-दल के बिलकुल उपयुक्त था। वह सदा रोम मे घूमता रहता—हमेशा लडकियो के साथ ही रहता। कारबाइन–दल के सैनिको के साथ भी बहुधा दिखाई दे जाता।" वह हॅसा। "अब बेचारे के घर के सामने एक सङ्गीनधारी पहरेदार खडा कर दिया गया हे और उसके परिवारवालो से किसी को मिलने की इजाजत नही हे। उसके पिता को सभी नागरिक–अधिकारो से वंचित कर दिया गया है। वह मतदान तक मे शामिल नही हो सकता। कानून भी उसकी रक्षा नही करता। कोई भी उनकी सम्पत्ति उनसे छीन सकता है।"

"जो-कुछ उनके परिवारों के साथ हो रहा है, यदि वैसा न हो तो कोई भी सैनिक स्वेच्छा से आक्रमण करने के लिए तैयार न होगा।"

"क्यो नही, आल्पिनी सैनिक अवश्य तैयार होगे। विक्टर इमैनुअल के (व्ही. ई.) सैनिक भी पीछे हटने वाले नही है—कुछ इटालियन निशानेबाज भी नही रुकेंगे।"

"ये इटालियन निशानेबाज भी पीठ दिखा चुके हैं और अब उसे ढॅकने का प्रयत्न करते है।"

"आपको हमे इस प्रकार की बाते करने की स्वच्छंदता नही देनी चाहिए, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"अमर रहे सेना, बने रहे सैन्यदल !" पास्सिनी ने व्यग्यपूर्वक कहा।

"मुझे मालूम है, तुम लोग कैसी बाते किया करते हो।" मैंने उत्तर दिया—"किन्तु जब तक तुम मोटर अच्छी तरह चलाते हो, शिष्ट व्यवहार करते हो—"

"—और इस तरह खुलेआम बाते नहीं करते कि दूसरे अफसर सुन सके—" मॅनेरा ने वाक्य पूरा किया।

"मेरे विचार से अब हमे इस युद्ध का किसी प्रकार अन्त कर देना चाहिए—" मैंने कहा—"किन्तु यदि केवल एक पक्ष ने लड़ना बन्द कर दिया, तो इसका अन्त नहीं होने वाला है। यदि हम लड़ना बन्द कर दे, तब तो परिणाम और भी बुरा होगा।"

"और बुरा परिणाम क्या हो सकता है।" पास्सिनी ने आदरपूर्वक कहा—" विश्व मे युद्ध से बुरी अन्य कोई वस्तु नही है।"

"पराजय, युद्ध से भी बुरी है।"

"मै इस पर विश्वास नही करता।"

पास्सिनी पुनः सम्मान सहित बोला—"आखिर पराजय है क्या? हमारा घर लौट जाना ही तो?"

"नही, इतना ही नहीं! पराजय के बाद विजेता तुम्हारे पीछे लग जाते हैं और तुम्हारी बहू-बेटियो का अपहरण कर लेते है।"

"मुझे विश्वास नही होता।" पास्सिनी ने कहा— "वे सबके साथ तो ऐसा नही कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति—को स्वय अपने घर की रक्षा करनी चाहिए। उसे चाहिए कि अपनी बहू-बेटियो को घर मे सुरक्षित रखे।"

"पर वे तुम्हे फॉसी पर चढा देते है। वे आते है और तुम्हे फिर से सेना में भर्ती होने के लिए बाध्य करते है—वह भी एम्बुलेस विभाग मे नहीं, पैदल सेना मे।"

"वे सबको फॉसी पर नहीं चढ़ा सकते।"

"एक बाहरी राष्ट्र किसी व्यक्ति को स्वय उसके अपने देश मे सैनिक बनने पर बाध्य नही कर सकता।" मॅनेरा ने कहा।

"पहली लडाई के समय ही सब सैनिक भाग खड़े होगे।"

"चेकोज (चेक जाति के लोग) के समान।"

"मेरी समझ से, पराजित होना क्या होता है, यह तुम्हे नहीं मालूम, तभी तुम सोचते हो कि हार उतनी बुरी नहीं होती।"

"लपटन साहब," पास्सिनी बोला, "जब आप हमे बोलने को मजबूर करते

है, तो सुनिये। संसार मे युद्ध के समान बुरा और कुछ नहीं होता। हम, एम्बुलेन्स सेना मे काम करनेवालो को वस्तुतः इस का तनिक भी अनुभव नही होता कि युद्ध कितना भयावह होता है। और जब मनुष्यो को युद्ध की इस भयावहता का अनुभव होता है, तब वे चाह कर भी इसका अन्त करने का कोई रास्ता नही खोज पाते, क्योकि उस समय वे सब उन्मत्त हो जाते है–एकदम पागल। ऐसे भी व्यक्ति होते है जो कभी अनुभव ही नही करते—और कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते है, जो अपने अधिकारी-वर्ग से डरते है—उनसे भय खाते है। इन्ही मनुष्यो द्वारा तो युद्ध का निर्माण होता है।"

"मै जानता हूँ कि यह बुरा है और हमे इसका अन्त अवश्य करना चाहिए।"

"इसका अन्त नहीं होता। युद्ध का भी कहीं अन्त होता है?"

"अवश्य होता है।"

पास्सिनी ने इनकार मे अपना सिर हिलाया।

"केवल विजय-प्राप्ति से ही युद्ध नहीं जीता जाता। हमारे, सॉन जेब्राइले पर अधिकार कर लेने से ही क्या होता है? यदि कार्सो, मान्फाल्कोन तथा ट्रीस्ट पर ही विजय प्राप्त हो गई, तो उससे क्या? तब—उसके बाद? क्या स्थिति होगी हमारी? क्या आपने आज उन दूरस्थ पर्वतो को देखा था? क्या आप समझते है कि हम उन सब पर्वतो पर भी अधिकार कर लेगे? हॉ, यदि आस्ट्रियन सेना लड़ना बन्द कर दे, तो ऐसा होना सम्भव है। किसी एक पक्ष को युद्ध बन्द करना ही चाहिए। हम ही क्यो लडाई बन्द नही कर देते? यदि वे (आस्ट्रियन) इटली मे घुस भी आये, तो कुछ काल बाद ऊब कर लौट जायेगे। उनका अपना देश है–अपना घर है। किन्तु नहीं, इसके बजाय हो रहा है युद्ध।"

"तुम तो एक कुशल वक्ता हो।"

"हममे सोचने की शक्ति है—हम पढते भी है। हम कोई किसान मजदूर नही है। हम कारीगर है—यन्त्रो से उलझने वाले। किन्तु आज किसान-मजदूर भी युद्ध मे विश्वास नही करते। हर व्यक्ति युद्ध से घृणा करता है।"

"प्रत्येक देश मे एक ऐसा वर्ग रहता है, जो उसे अपने अधिकार मे रखता है। वह वर्ग वस्तुत. बड़ा मूर्ख होता है–बुद्धिहीन। वह न तो कुछ समझता है और न समझ ही सकता है। और उसी के कारण युद्ध भी होता है।"

"और वह वर्ग, युद्ध से पैसे भी खूब बनाता है।"

"बहुत-से लोग ऐसा नहीं करते—" पास्सिनी ने कहा—"वे वास्तव में पहले दर्जे के मूर्ख होते है। वे सिर्फ मूर्खतावश ही युद्ध छेड़ते है—अन्य किसी उद्देश्य से नही।"

"हमे चुप हो जाना चाहिए।" मॅनेरा बोला—"हम बहुत बातें करते है, लेफ्टिनेण्ट साहब के सामने भी।"

"ये ऐसी बाते पसन्द करते है।" पास्सिनी ने कहा—"हम इन्हें अपने पक्ष मे कर लेगे—इनके विचार बदल डालेगे।"

"पर अब हम चुप हो जायें, तो अच्छा है।" मॅनेरा ने कहा।

"क्या अब भी हमे खाना मिल सकेगा, साहब?" गावुज्जी ने पूछा।

"मै जाकर देखता हूँ।" मैने कहा। गोर्डिनी खड़ा हो गया और मेरे साथ ही बाहर आ गया।

"क्या मेरे योग्य कोई कार्य है, लेफ्टिनेंट साहब? क्या मै आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?" वह चारो ड्राइवरो मे सबसे अधिक शात स्वभाव का था।

"यदि तुम चाहो, तो मेरे साथ चल सकते हो।" मै बोला—"हम देखेंगे, क्या हो सकता है।"

बाहर बिलकुल अंधेरा छा चुका था। सर्चलाइट से निकलती हुई प्रकाश-रश्मियॉ उसे विदीर्ण करती हुई इधर-उधर घूम रही थी। उस मोर्चे पर तोप ढोनेवाली गाडियो के ऊपर बडे-बड़े सर्चलाइट बिठाये गए थे। रात मे सडक पर चलते समय कभी कभी, सैन्य-व्यूह के पीछे, उससे बिल्कुल सटी हुई, सर्चलाइटवाली गाडियॉ देखी जा सकती थी। ये गाडियॉ सड़क से कुछ हटकर खडी रहती थी और वहीं से एक अधिकारी प्रकाश किरणो को विभिन्न दिशाओ मे संचालित करता था। इन प्रकाश-किरणो से जनसमूह भयभीत हो उठता था। हमने ईट के भट्ठे को पार किया और प्रमुख उपचार-केन्द्र के निकट पहुँचकर रुक गए। केन्द्र के प्रवेशद्वार को वृक्षो की कुछ हरी शाखाओ द्वारा थोड़ा ढॅक दिया गया था। उन शाखाओं के धूप मे सूखे हुए पत्ते रात्रि के घने अन्धकार मे हवा के झोंको का स्पर्श पा खडखड़ा उठते थे। भीतर प्रकाश हो रहा था। मेजर एक सन्दूक पर बैठा टेलिफोन पर बातें कर रहा था। सेना के उपचार-विभाग के एक केप्टन ने बतलाया कि आक्रमण का समय एक घण्टा और बढ़ा दिया गया है। उसने मेरी ओर कॉग्नेक (शराब) का एक गिलास बढाया। मैने लकडी की मेजो पर दृष्टि दौडाई तथा प्रकाश मे चमचमाते हुए औजारो, विभिन्न बर्तनो और डाटलगी शीशियो को देखा।

गोर्डिनो मेरे पीछे खड़ा था। मेजर टेलिफोन पर अपनी वार्ता समाप्त कर वहाँ से उठा। "आक्रमण अभी ही प्रारम्भ होने वाला है।" उसने कहा—"उसका समय फिर एक घण्टा पीछे कर दिया गया है।"

मैंने बाहर की ओर झाँका। सर्वत्र अंधेरा छाया हुआ था और उसके बीच हमारे पीछे की ओर के पर्वतो पर आस्ट्रियन सर्चलाइट का प्रकाश घूम रहा था। क्षणभर सब-कुछ शान्त—निःशब्द रहा और तब अचानक ही पीछे की ओर की सब तोपे एक साथ गरज उठी। बमबारी प्रारम्भ हो गयी थी।

"सेवोइया से हमला हो रहा है।" मेजर बडबडाया।

"मै खाने के विषय मे पूछने आया था।" मैंने कहा, पर मेजर ने सुना नहीं। मैंने अपना कथन दुहराया।

"खाना आया ही नहीं।"

इतने मे बाहर ईट के भट्ठे के पास एक बडा बम गिरा। एक दूसरा धमाका हुआ और उसके भीषण विस्फोट मे हमे ईट और मलबे के भडभड़ाकर गिरने की क्षीण आवाज सुनाई दी।

"यहाँ, खाने के लिए कुछ नहीं है?"

"हमारे पास थोडी-सी 'मेकरोनी' (पश्चिमी देशो मे प्रचलित एक प्रकार का खाद्य पदार्थ) है।" मेजर बोला।

"जो-कुछ मिल सकेगा, मै वही ले जाऊँगा।"

मेजर ने एक अर्दली को आदेश दिया। वह पीछे की ओर जाकर आँखो से ओझल हो गया और एक बर्तन मे बिलकुल ठंढी 'मेकरोनी' ले आया। मैंने वह बर्तन गोर्डिनी को दे दिया।

"क्या आपके पास कुछ पनीर होगा?"

मेजर ने कुढ़ते हुए फिर आदेश दिया। अर्दली एक बार पुनः भीतर की ओर जाकर गायब हो गया और सफेद पनीर का एक चौथाई टुकड़ा लेकर लौट आया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" मै बोला।

"अच्छा हो, यदि आप लोग अभी बाहर न जाएँ।"

इतने ही मे बाहर प्रवेश-द्वार के निकट किसी चीज के नीचे रखने की आवाज सुनाई दी। उन दो मनुष्यो मे से, जो उसे वहाँ तक लाए थे, एक ने अन्दर झाँका।

"उसे भीतर ले आओ।" मेजर ने कहा—"तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम चाहते हो कि हम बाहर आयें और उसे वहाँ से ले आयें?"

टिकठी ढोनेवाले उन दोनो व्यक्तियो ने उस आहत व्यक्ति को कधो के नीचे हाथ डाल कर और पैर पकडकर उठाया और उसे भीतर ले आए।

"इसका कोट खोल दो।" मेजर ने आज्ञा दी।

उसने महीन जालीदार कपड़े से चिमटे का एक छोर पकड़कर उठा लिया। दोनो कैप्टनो ने अपने कोट उतार दिए। "तुम दोनो बाहर जाओ—" मेजर ने टिकठी ढोनेवाले उन दोनो व्यक्तियो से कहा।

"चलो।" मै गोर्डिनी से बोला।

"जब तक यह बमबारी खत्म न हो जाए आप लोगो का यहीं ठहरना उचित है।" मेजर ने पीछे मुड़ कर कहा।

"मेरे आदमी भूखे है।" मैने उत्तर दिया।

"जैसी आपकी इच्छा।"

बाहर आकर हम लोगो ने ईट के भट्ठे के बीच भागना आरम्भ किया। नदी-किनारे के पास हमसे थोडी दूरपर एक गोला गिरा। उसके बाद एक और गोला गिरा। जब तक वह तीव्र वेग से अचानक ही हमारे निकट नहीं आ गया, तब तक हमे उसका पता नहीं चल सका। हम दोनो धरती पर लेट गये और एक तीव्र प्रकाश और बम-विस्फोट तथा उसकी तीखी गध के बीच हमने उसके उड़ते हुए टुकड़ो की झनझनाहट और नीचे गिरती हुई ईटो की भडभड़ाहट सुनी। गोर्डिनी उठा और खाई की ओर भागा। मै भी पनीर के टुकड़े को पकड़े हुए उसके पीछे-पीछे दौड़ा। पनीर की चिकनी ऊपरी सतह ईटों की धूल से भर गई थी। खाई मे पहुँचकर मैने देखा कि तीनो ड्राइवर दीवार से टिके हुए सिगरेट पी रहे थे।

"लो, देश के नौनिहालो!" मै बोला।

"मोटरो का क्या हाल है?" मॅनेरा ने पूछा।

"ठीक है वे।"

"क्या उन्होने (मेजर आदि ने) आपको यहाँ आते समय बमबारी का भय दिखाया था, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"तुम्हारा अनुमान बिलकुल सच है।" मैने कहा।

मैने अपना चाकू निकाला, उसे खोला, उसके फाल को पोछा और उससे पनीर की ऊपरी धूलभरी सतह काटकर फेक दी। गावुज्जी ने मेकरोनी से भरा बरतन मेरी ओर बढा दिया।

"खाना शुरू कीजिए, साहब!"

"नहीं—" मैने कहा—"इसे नीचे रख दो। हम सब साथ ही खाएंगे।"

"किन्तु हमारे पास काटे तो नहीं हैं।"

"क्या मुसीबत है!" मैंने अंग्रेजी मे कहा।

मैंने पनीर के टुकडे किये और उन्हे मिठाइयों पर रख दिया।

"बैठो और खाना शुरू करो—" मैंने कहा। वे आसपास बैठकर मेरी प्रतीक्षा करने लगे। मैंने अंगूठे और उँगलियो से एक 'मेकरोनी' पकड़कर उसे ऊपर उठाया। एक गुच्छा अलग होकर मेरे हाथ मे आ गया।

"थोड़ा और ऊपर उठाइए, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

मैंने उसे हाथ की पूरी ऊँचाई तक ऊपर उठाया और आपस मे लिपटे हुए रेशे अलग-अलग हो गये। मैंने उन्हे नीचे लाते हुए मुँह मे रख लिया। चूसते हुए उनके किनारो को तोड़ा और चबाने लगा। फिर मैंने पनीर का एक टुकड़ा लेकर उसे चबाया और उस पर एक घूँट शराब पी। 'मेकरोनी' का स्वाद जग खाई हुई किसी धातु के समान लगा। मैंने सारा खाना पास्सिनी की ओर बढा दिया।

"यह तो बिलकुल वाहियात है!" उसने कहा—"यह बहुत दिनो पहले की बनी है। मैंने इसे मोटर मे भी खाया था।"

वे सब खा रहे थे। वे सिर को पीछे लटकाये और अपनी ठुड्डियाँ बर्तन से सटाये उसे चूस रहे थे। मैंने एक और ग्रास लिया, थोड़ा पनीर खाया और एक घूट शराब और पी। इसी समय बाहर कोई ऐसी वस्तु गिरी, जिसने धरती को कँपा दिया।

"चार सौ बीस नम्बर की तोप का गोला!" गाबुज्जी बोला।

"यहाँ पहाडो में चार सौ बीस नम्बर की तोपे नही है।" मैंने कहा।

"उनके पास तो बडी-बडी स्कोडा तोपे हैं। मैंने उनके मुँह देखे हैं।"

"तीन सौ पच्चीस नम्बर की तोपे!"

हम लोग खाते रहे। अचानक खाँसने का-सा स्वर सुनाई दिया, रेल के इंजन के चलने का-सा तीव्र शोर हुआ और फिर एक विस्फोट की आवाज आयी, जिसने धरती को फिर हिला दिया।

"यह कोई गहरी खाई नहीं है।" पास्सिनी ने कहा।

"वह खाइयो पर फेका जाने वाला भारी गोला था।" मैंने कहा।

"जी, हा।"

मैंने अपने पनीर के टुकड़े का आखिरी हिस्सा मुँह में रखा और कुछ और शराब पी ली। फिर एक स्वर उठा। वही पहले खाँसने की-सी आवाज, सू—सू—सू

का स्वर और एक चकाचौंध करने वाली चमक—जैसे किसी भाफ की भट्ठी का द्वार खोल दिया गया हो। गगनभेदी स्वर के साथ एक चमक उठी, जो धीरे-धीरे श्वेत से लाल रग में परिणत होकर हवा के तीव्र झोको के साथ बढती गई। मैने सॉस लेने का प्रयत्न किया, किन्तु सॉस जैसे बाहर आना ही नहीं चाहती थी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मै सशरीर उस खाई से बाहर भागा जा रहा हूँ और मेरा शरीर वायु के झोको के साथ दूर-बड़ी दूर-तक उड़ता जा रहा है।

मै अपने-आप ही बड़ी तेजी के साथ बाहर भागा। मुझे लगा कि मै मर चुका हूँ, यद्यपि मै यह जानता था कि स्वयं को मृत समझना मेरी भूल है। और तब मुझे भास हुआ कि मै तैर रहा हूँ, किन्तु आगे बढ़ने की अपेक्षा मै पीछे की ओर लुढकता गया। मैने सॉस ली और अपने-आपे मे आ गया।

धरती फट गई थी और मेरे सिर के सामने लकड़ी की एक टूटी-फूटी धरन पड़ी थी। मैने सिर को एक झटका दिया। किसी के रोने की आवाज मुझे सुनायी दी। मुझे ऐसा लगा, जैसे कोई चीख रहा था। मैने हिलने की चेष्टा की, पर हिल न सका। नदी के उस पार और उसके तट पर मशीनगनो और राइफलो से निकली हुई गोलियो की आवाज सुनायी पड रही थी। इन सबके बीच एक भीषण बौछार हुई और मैने रात्रि के समय शत्रु की गतिविधि का पता लगाने के लिए छोड़े जाने वाले तारो-जैसे श्वेत प्रकाशयुक्त गोलो को ऊपर की ओर उठते देखा। गोले ऊपर जाकर फूट जाते और श्वेत किरणो के साथ छितराकर वायु मे तैरने लगते। साथ ही कुछ राकेट भी ऊपर जाते हुए दिखाई दिए और बमो का विस्फोट सुनाई पड़ा। क्षणभर मे सब-कुछ हो गया। इसके बाद ही मैने अपने बिलकुल पास किसी को कराहते सुना—"मॉ रीऽऽ! ओ, मॉ मर गया!" मैने अपने शरीर को मोड़-माड कर अंततः अपनी टागो को इधर-उधर खिसकाया, पीछे की ओर मुड़ा और उस व्यक्ति को स्पर्श किया। वह पास्सिनी था। जब मैने उसे छुआ, तो वह बड़े जोर से चीखा। उसके पैर मेरी ओर थे। अंधकार और प्रकाश के बीच मैने देखा कि उसके दोनो पैर घुटने के ऊपर से बिलकुल चूर-चूर हो गये थे। उसकी एक टॉग तो बिलकुल कट गई थी और दूसरी स्नायुओ तथा पायजामे से उलझ कर अटकी हुई थी। शेप भाग एक झटके के साथ खिचकर एक ओर छिटक गया था और ऐसा मालूम होता था, जैसे उसका अन्य अवयवो से कोई सम्बन्ध ही नहीं हो। पास्सिनी अपने हाथ को चबाते हुए कराहा—"हाय मॉ! अरी मॉ, री! भगवान

बचाओ! बचाओ मुझे! यीसू मुझे मौत दे दे! मेरी जान ले ले, मसीहा! माँ री, मर गया! ओ माँ, आह! हाय! हे पवित्र वात्सल्यमयी मरियम, मुझे उठा ले माँ! बन्द करो। अरे, बन्द करो, बन्द कर दो यह सब! ईसा, मरियम, बन्द करो, बन्द करो माँ! ओह! ओह! आह!" उसका हृदय-द्रावक प्रलाप धीरे-धीरे क्षीण होता गया। एक घुटन के साथ वह सिसका—"माँ, माँ री, अरी माँ!" और तब अचानक वह चुप होकर अपनी बाँह चबाने लगा। उसकी टाँग का कटा हुआ भाग खिचकर और लटक गया। "टिकठी!" मैंने अपनी दोनो हथेलियो को सटाकर मुँह के निकट लाते हुए जोर से हाँक लगाई—"अरे कोई है? टिकठी लाओ–टिकठी!" पट्टी बाँधकर पास्सिनी की टाँगो का रक्त-स्राव बन्द करने की इच्छा से मैंने उसके और पास पहुँचने का प्रयत्न किया; किन्तु मैं हिल भी न सका। दूसरी बार कोशिश करने पर मेरे पैर कुछ खिसके। अपनी भुजाओ तथा कुहनियो के सहारे मै थोड़ा और पीछे की ओर खिसकने मे समर्थ हुआ। पास्सिनी अब बिलकुल चुप हो गया था। मैंने उसके निकट पहुँच कर अपना फौजी कोट खोला और कमीज के छोर को फाड़ने की कोशिश की। पर वह फट नहीं रहा था, अतः मैंने उसकी किनारी को दाँतो से फाड़ने की कोशिश की। तभी मुझे उसके पैरो की पट्टियो का ध्यान आया। मेरे पैरो मे ऊनी मोजे थे, किन्तु पास्सिनी पट्टियाँ बाधता था। सभी ड्राइवर पट्टियाँ बाँधते थे। पर पास्सिनी का तो अब एक ही टाँग बच गयी थी। मैंने उसी टाँग की पट्टी खोलना प्रारम्भ किया, किन्तु तभी मुझे ऐसा लगा कि अब कुछ करने की जरूरत नहीं है। अभागा पास्सिनी सदा के लिए अपनी यातना से मुक्ति पा चुका था। मैंने उसके हृदय के धड़कन की जाँच की, साँसो को देखा—ना, कहीं कोई स्पदन नही। वह सचमुच मर चुका था। पर दूसरे तीन एम्बुलेन्स ड्राइवर कहाँ थे? उनका भी पता लगाना था। मै सीधा बैठ गया। ज्योही मै बैठा, त्योही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मेरे सिर के भीतर कोई ऐसी वस्तु चक्कर काट रही है, जो किसी गुड़िया के नेत्रो की गोलियो के समान भारी है तथा जो मेरी आँखो की पुतलियो को भीतर की ओर बड़ी बेदर्दी के साथ घसीट रही है। मेरी टाँगे गर्म और गीली लग रही थीं। मेरे जूते भी गीले हो रहे थे और उनके भीतरी भाग काफी गर्म थे। मै जानता था कि मुझे चोट लगी है। मैंने आगे की ओर झुककर अपने घुटने पर हाथ रखा। पर घुटना तो अपने स्थान पर था ही नहीं। मेरा हाथ भीतर तक धँसता चला गया और मैंने देखा कि घुटना पिडली मे घुस गया था। मैंने कमीज से अपने हाथ पोंछ लिये।

उसी समय हवा में तैरता हुआ एक प्रकाश–पुंज बहुत धीमी गति से नीचे उतरा। उसके उजाले मे मैने अपनी टॉग देखी और काफी भयभीत हो गया। "हे ईश्वर!" मै चिल्लाया—"मुझे किसी तरह इस नरक से निकाल!" मै जानता था कि वहॉ कम-से-कम तीन व्यक्ति और थे। एम्बुलेस ड्राइवरो की संख्या चार थी। पास्सिनी मर चुका था, पर तीन तो अभी और थे। इतने मे किसी ने मुझे कधो के नीचे से पकड़कर उठाया। एक दूसरे व्यक्ति ने मेरे पैर पकड़े।

"तीन व्यक्ति यहॉ और होगे।" मै बोला—"एक मर चुका है।"

"मै मॅनेरा हूॅ। हम लोग टिकठी ढूॅढ रहे थे, पर मिली ही नही। आप कैसे हैं, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"गोर्डिनी और गावुज्जी कहॉ है?"

"गोर्डिनी, चिकित्सा-केन्द्रपर पट्टियॉ बॅधवा रहा है। गावुज्जी ने आपके पैर पकड़ रखे हैं। मेरी गर्दन को मजबूती से पकड़ लीजिए साहब! क्या आप बुरी तरह आहत हुए है?"

"हॉ, टॉग बुरी तरह जख्मी हो गई हैं। गोर्डिनी की कैसी हालत है?"

"अच्छा है। हमारे ऊपर खाइयो मे फेका जाने वाला भारी गोला गिरा था।"

"बेचारा पास्सिनी मर गया।"

"जी हॉ, वह मर गया।"

तभी हमारे समीप ही एक गोला गिरा। वे दोनो जमीन पर लेट गये और उन्होने मुझे भी नीचे पटक दिया। "मुझे बहुत अफसोस है, लेफ्टिनेण्ट साहब!" मॅनेरा बोला—"आप मेरी गर्दन थामे रहियेगा।"

"और तुमने मुझे फिर गिरा दिया तो!"

"हम डर गये थे, इसीलिए ऐसा हो गया।"

"तुम दोनों घायल नहीं हुए हो न?"

"अधिक नही, थोड़ी-सी चोट अवश्य लगी है।"

"क्या गोर्डिनी मोटर चला सकेगा?"

"कह नहीं सकता।"

चिकित्सा-केन्द्र तक पहॅुचने से पहले उन्होने मुझे एक बार फिर नीचे पटक दिया।

"सुअर के बच्चो!" मै चिल्लाया।

"मुझे बड़ा अफसोस है, साहब!" मॅनेरा ने कहा।

"अब ऐसा नहीं होगा।"

चिकित्सा-केन्द्र के बाहर, अंधेरे में, हममें से बहुत-से घायल व्यक्ति जमीन

पर डाल दिए गए। वहाँ से उन्हें भीतर ले जाया जा रहा था। किसी घायल को भीतर ले जाते समय या भीतर से बाहर लाते वक्त जब परदा उठता था, तो उस क्षणिक प्रकाश मे मुझे कमरे के अंदर का दृश्य दिखायी दे जाता था। मृत सैनिक एक ओर हटा कर रख दिए गए थे। डाक्टर अपनी कमीज की बाँहों को कन्धो तक चढाये घायलो की देख-भाल मे व्यस्त थे। उनके हाथ कसाइयो की भाँति रक्त से लाल पड़ गये थे। वहाँ पर्याप्त टिकठियाँ भी नहीं थी। कुछ घायल जोर-जोर से चीख रहे थे; किन्तु बहुत-से शात पड़े थे। उपचार-केन्द्र के द्वार पर लगी हुई डालियो के पत्ते हवा के झोकों से हिल-डुल रहे थे। जैसे-जैसे रात घनी होती जा रही थी, ठण्ढ भी बढती जा रही थी। टिकठी-वाहक लगातार आ रहे थे। वे अपनी टिकठियो को नीचे रखकर घायलों को उतारते और खाली टिकठी लेकर दूसरे घायलो को लाने के लिए लौट जाते। यही क्रम लगातार चल रहा था। ज्योही मुझे चिकित्सा-केन्द्र पहुँचाया गया, त्योही मॅनेरा चिकित्सा-विभाग के एक सार्जेट को मेरे पास ले आया और उसने मेरी दोनों टाँगो पर पट्टी बाध दी। सार्जेट ने मुझे बताया कि घाव मे काफी धूल और मिट्टी भर जाने से अधिक रक्तस्राव नही हो पाया था। उसने यह भी कहा कि सम्भव हुआ, तो मुझे वहाँ से शीघ्र ही अन्यत्र ले जाया जाएगा। फिर वह भीतर चला गया। "गोर्डिनी मोटर नही चला सकता।" मॅनेरा मेरे निकट आकर बोला—"उसका कधा बिलकुल कुचल गया है और उसका सिर भी जख्मी हो गया है। यद्यपि उसकी हालत बहुत खराब नहीं है; किन्तु कन्धा अकड़ गया है। वह वहाँ ईट की दीवार के पास बैठा है।"

मॅनेरा और गावुज्जी घायलो के एक-एक दल को लेकर चले गये। वे बहुत बुरी तरह जख्मी नही हुए थे और अभी भी मजे में मोटर चला सकते थे। अग्रेज सैनिक अपने साथ तीन एम्बुलेन्स लेकर आए थे। प्रत्येक एम्बुलेन्स के साथ दो व्यक्ति थे। गोर्डिनी उनमे से एक ड्राइवर को मेरे पास ले आया। गोर्डिनी के शरीर में जैसे खून रह ही नही गया था। वह बिलकुल सफेद पड़ गया था और बीमार लग रहा था।

वह अंग्रेज ड्राइवर मेरे ऊपर झुका।

"क्या आप बुरी तरह आहत हो गये हैं?" उसने पूछा। वह एक भरा-पूरा व्यक्ति था और लोहे के फ्रेमवाला चश्मा पहने था।

"हाँ, टाँगो में काफी चोट आयी है।" मैंने उत्तर दिया।

"मै आशा करता हूँ कि वह घातक नही है। क्या आप सिगरेट पीना पसंद करेंगे?"

"धन्यवाद।"

"मैने सुना है कि आप को अपने दो ड्राइवरो से भी हाथ धोना पडा है।"

"जी हॉ, एक तो मारा गया और दूसरा, जो आपको यहॉ ले आया है, बिलकुल बेकार हो चुका है।"

"कितने दुर्भाग्य की बात है! यदि आपकी इच्छा हो, तो आपकी गाडियॉ हम ले जायें।"

"यही मै भी आपसे पूछने वाला था।"

"हम उनका पूरा खयाल रखेंगे और उन्हे २०६ नम्बर के बगले मे पहुँचा देगे। ठीक है न?"

"बिलकुल!"

"वह बड़ा आकर्षक स्थान है। मैने आपको वहॉ देखा था। लोग कहते हैं कि आप अमरीकी हैं।"

"जी हॉ।"

"मै अंग्रेज हूँ।"

"अच्छा!"

"जी हॉ, अंग्रेज। आप क्या समझे—मै इटालियन हूँ? हॉ, हमारी एक टुकड़ी के साथ कुछ इटालियन भी हैं।"

"यदि आप गाड़ियॉ ले जाएँ, तो बड़ा अच्छा हो।" मैने कहा।

"हम उनकी पूरी देख-भाल करेंगे।" वह सीधा होते हुए बोला—"आपका यह साथी मुझे आपसे मिलाने के लिए बड़ा व्यग्र था।" उसने गोर्डिनी का कंधा थपथपाते हुए कहा। गोर्डिनी मुस्कराया। अंग्रेज सैनिक धारा-प्रवाह तथा विशुद्ध इटालियन भाषा मे बोला—"अब हर बात की व्यवस्था हो गई है। मै तुम्हारे लैफ्टिनेण्ट महोदय से भी मिल चुका। हम दोनो मोटरे ले जायेंगे। तुम कोई चिन्ता मत करो।" और वह बड़बैड़ाया—"आपको यहॉ से शीघ्र ही छुटकारा दिलाने के लिए मुझे कुछ करना चाहिए। मै यहॉ के अधिकारियों से मिलता हूँ। हम लोग आपको अपने साथ ही ले जाएँगे।"

वह घायलों के बीच सावधानी से कदम रखता हुआ भीतर की ओर चला गया। मैने कमरे के दरवाजे पर पड़े कम्बल को जरा-सा हटते हुए देखा। प्रकाश की एक किरण-सी बाहर निकली और वह भीतर चला गया।

"वह आपकी पूरी देखभाल करेगा, साहब!" गोर्डिनी बोला।

"तुम्हारा क्या हाल है, फ्रेको ?"

"मै बिलकुल ठीक हूँ, साहब!" वह मेरे पास बैठते हुए बोला। क्षण भर बाद कमरे के दरवाजे का वह कम्बल का परदा हटा और उसमे से दो व्यक्ति टिकठी लेकर बाहर आये। उनके पीछे वही भरे-पूरे शरीरवाला अंग्रेज था। वह उन्हे लेकर मेरे पास आया।

"ये ही वे अमरीकी लैफ्टिनेण्ट है।" उसने इटालियन भाषा में कहा।

"मै कुछ देर बाद जाना पसंद करूँगा।" मै बोला—"यहाँ मुझसे भी अधिक घायल व्यक्ति पडे है। मै तो फिर भी अच्छा हूँ।"

"आइये, आइये।" उसने कहा—"व्यर्थ ही नेता मत बनिये।" और तब उसने इटालियन भाषा मे उन व्यक्तियो को आदेश दिया—"देखना, इनके पैरो का खयाल रखना। सावधानी से उठाना। इनके पैरो मे बड़ी चोट आयी है। ये राष्ट्रपति विल्सन के धर्मपुत्र हैं।" उन्होने मुझे उठा लिया और घावों पर पट्टियाँ बाँधनेवाले कक्ष मे ले गये। भीतर मेजो पर आहत सैनिक लेटे थे और उनकी शल्य-क्रियाएँ चल रही थी। नाटे कदवाले मेजर ने हम लोगो की ओर कुछ क्रुद्ध दृष्टि से देखा। उसने मुझे पहचान लिया और अपने हाथ का चिमटा मेरी ओर हिलाया।

"क्यो, ठीक तो है न ?" वह बोला।

"हाँ, ठीक ही है।" मैने कहा।

उस लम्बे-चौडे अंग्रेज ने इटालियन भाषा में कहा—"मैं इन्हें भीतर लिवा लाया हूँ। ये अमरीकी राजदूत के इकलौते बेटे है। ये उस समय तक यहीं रहेंगे, जब तक आप पहले के आहत सैनिको से निबट कर इनकी चिकित्सा के लिए तैयार न हो जाएँ। उसके बाद मै इन्हे आहत सैनिकों की पहली मोटर मे अपने साथ ले जाऊँगा।" मेरे ऊपर झुकते हुए उसने कहा—"मै इनके उच्च अधिकारी से मिलकर आपके आवश्यक काग़जात तैयार करवाता हूँ, जिससे सब कुछ जल्दी निबट जाये।" वह द्वार से बाहर निकलने के लिए झुका और वहाँ से चला गया। मेजर अपना काम समाप्त कर चिमटे को अब एक बर्तन में डाल रहा था। मेरी आँखे उसी ओर लगी रहीं। अब वह पट्टियाँ बाँध रहा था। काम समाप्त हो जाने पर टिकठी ढोनेवालों ने आहत सैनिक को मेज़ पर से उठा लिया।

"मैं इन अमरीकी लैफ्टिनेन्ट महोदय को देखता हूँ।" एक कैप्टन ने कहा।

मै मेज पर लिटा दिया गया। वह बड़ी सख्त और फिसलन-भरी थी। उससे एक तीखी गन्ध उठ रही थी—कई प्रकार की मिली-जुली गन्ध—रासायनिक द्रव्यो तथा रक्त की तीव्र गन्ध। उन लोगो ने मेरा पतलून उतारा और कैप्टन ने मेरे घावो का परीक्षण करते हुए उस विभाग के सहायक अधिकारी को विवरण लिखवाना आरम्भ किया—"बायी तथा दाहिनी जॉघों पर, बाये और दाहिने घुटने पर तथा दाहिने पैर पर एक-दूसरे से सटे हुए अनेक बाहरी घाव। दाहिने घुटने और पैर पर गहरे घाव। खोपडी फट कर टुकडे-टुकडे हो गयी है।" घाव की गहराई का पता लगाने के लिए उसने सलाई डाली—"कष्ट तो नहीं हो रहा है?" वह बोला। "ओह! बड़ी तकलीफ है।" मै कराहा। "सम्भवतः खोपडी की हड्डियॉ टूट गयी है। ये घाव इन्हें अपना फ़र्ज निभाते हुए लगे हैं। ऐसा विवरण आपके हक मे सहायक होगा। सैन्य-न्यायालय अब आपके इन घावो को जान-बूझ कर पैदा किये हुए कह कर आपको किसी प्रकार का दड नही दे सकता।" उसने मुझसे कहा।

"क्या आप ब्राण्डी पीना पसद करेगे? हॉ, आपको इतने सारे घाव कैसे लगे? कैसे हुआ यह सब आखिर? आप क्या कर रहे थे? आत्महत्या करने की कोशिश तो नहीं कर रहे थे?" अपने साथी की ओर मुड कर वह बोला—"जरा बदन की ऐठन दूर करनेवाला द्रव पदार्थ तो ले आइये। हॉ, इनके दोनो पैरो पर क्रास का चिह्न लगा दीजिए। बस ठीक है। धन्यवाद! अब इसे थोड़ा साफ़ करके धो डालता हूँ और फिर पट्टी बॉध देता हूँ। आपका रक्त बहुत जल्दी जमकर सूखते लगता है। सुन्दर-बहुत सुन्दर।" उसने मुझसे कहा।

सहायक अधिकारी ने विवरणपत्रो से सिर उठाते हुए मुझसे पूछा—"आपको किस चीज से ये घाव लगे?" कैप्टन बोला—"कौन-सी चीज थी वह, जिसने आपको जख्मी किया?"

ऑखे बंद किये-किये मैने उत्तर दिया—"खाइयों पर बरसाया जानेवाला एक बड़ा-सा बम था वह।"

कैप्टन अपना काम कर रहा था। मुझे असह्य तकलीफ़ हो रही थी। अपना काम करते हुए उसने मुझसे पूछा—"क्या आप ऐसा निश्चित रूप से कह सकते है?"

शान्तिपूर्वक लेटे रहने का प्रयत्न करते हुए तथा मॉस काटे जाते समय अपने पेट मे एक कपकपी-सी अनुभव करते हुए मैने उत्तर दिया—"मेरा तो ऐसा ही अनुमान है।"

कैप्टन डाक्टर जैसे किसी शोध-कार्य मे व्यस्त था। वह मेरे जख्मो की जॉच करता हुआ बोला—"हॉ, शुत्रद्वारा खाइयो पर फेंके गये भारी गोलो के टुकड़े। यदि आपको आपत्ति न हो, तो मै सलाई भीतर डालकर पता लगाऊँ, यद्यपि यह आवश्यक नही है। मै इन सब बातो को बडे सुन्दर ढग से रंगकर प्रस्तुत कर दूँगा—क्या यह चुभता है? ठीक है—पर बाद मे आपको जो पीड़ा होगी, उसके सामने तो यह चुभन कुछ भी नहीं है। पीडा तो अभी वस्तुतः आरम्भ ही नहीं हुई है—अरे, इनके लिए एक गिलास ब्राण्डी लाओ—वह इनका दर्द कुछ कम कर देगी। यदि आपके घावों में खराबी पैदा न हुई, तो आपके लिए चिंतित होने का कोई कारण नहीं है और आजकल तो बहुत कम घाव भयकर रूप धारण करते है। आपके सिर की क्या हालत है?"

"अच्छी नहीं, बड़ी पीड़ा हो रही है—भारी-भारी-सा लग रहा है।" मैंने उत्तर दिया।

"तब तो अधिक मात्रा मे ब्राण्डी न पीना ही आपके लिए अच्छा है। अगर आपकी हड्डी टूटी है, तो फिर आपके शरीर को गरम बनाए रखना उतना जरूरी नही है। यहॉ कैसा लग रहा है?"

मै पसीने-पसीने हो गया।

"ओह!" मेरे मुँह से निकल पडा।

"मेरा अनुमान है, आपकी हड्डी सचमुच टूट गई है। मै आपकी खोपड़ी पर पट्टी बॉध देता हूँ। अपने को बहादुर बताने के लिए कहीं अपने सिर को इधर-उधर झटकने का दुस्साहस मत कर बैठियेगा।" उसने पट्टी बॉध दी। ऐसा करते समय उसके हाथ बड़ी कुशलता से चल रहे थे और वह अपने अभ्यस्त हाथो से पट्टी बड़ी मजबूती और इतमीनान से बॉध रहा था। "अच्छा, भाग्य आपका साथ दे। फ्रास अमर रहे!" उसने फ्रेन्च भाषा मे कहा।

"ये अमरीकी है।" एक दूसरा कैप्टन बोला।

"मेरे खयाल से आपने इन्हें फ्रासीसी बताया था। ये फ्रेंच बोलते भी है।" कैप्टन बोला—"मै इन्हे पहले से जानता हूँ और मै सदा यही समझता रहा कि ये फ्रेन्च हैं।"

उसने कॉग्नेक (शराब) का आधा गिलास खाली कर दिया। "जरा कोई तगडी चीज लाओ, भाई! वह, बदन की ऐठन दूर करने वाला द्रव पदार्थ थोड़ा और मँगवा लो।" उसने अपने साथी से कहा। फिर अपना हाथ हिलाते हुए उसने मुझसे विदा ली। मुझे वहॉ से हटा दिया गया। बाहर ले जाए जाते समय मैंने

अपने मुख पर द्वार पर लटकते हुए कम्बल के एक छोर का स्पर्श अनुभव किया। दरवाजे से बाहर आते ही सहायक सार्जेंट उस स्थान पर आकर, जहाँ मुझे लिटाया गया था, मेरे ऊपर झुक गया। "आपका नाम?" उसने नम्रता-पूर्वक पूछा—"पिता का नाम? उपनाम? आपका ओहदा? जन्मस्थान? वर्ग? सेना का नाम?.." और अन्य बहुत-सी बाते। "आपको जो चोट लगी है, उसके लिए मुझे बहुत दुःख है, लैफ्टिनेण्ट! मुझे विश्वास है कि अब आपको थोडा आराम होगा। मै शीघ्र ही आपको अंग्रेजी एम्बुलेन्स के साथ यहाँ से भेज रहा हूँ।"

"मै बिलकुल ठीक हूँ," मैंने कहा—"आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!" जिस पीड़ा के विषय मे मेजर ने सकेत किया था, वह अब शुरू हो गई थी और जो-कुछ हो रहा था, वह अब बिलकुल नीरस और प्रसगहीन लग रहा था। कुछ ही देर बाद अग्रेज़ी एम्बुलेन्स आ पहुँची। मुझे टिकठी पर लिटाकर मोटर के भीतर रख दिया गया। मेरी टिकठी की बगल में एक दूसरी टिकठी रखी थी, जिस पर कोई और लेटा हुआ था। पट्टियो से बाहर झाँकती हुई उसकी मोम-जैसी नाक मुझे दिखाई दे रही थी। वह बड़े जोर-जोर से साँस ले रहा था। वहाँ और भी टिकठियाँ रखी थी, जिन्हें उठाकर ऊपर के झूलों मे सरका दिया गया था। ऊँचे कद का वही परिचित अंग्रेज़ ड्राइवर चक्कर लगाते हुए आया और उसने भीतर झाँका। "मै मोटर पूरी सावधानी से ले जाऊँगा।" उसने मुझे आश्वासन दिया—"मुझे आशा है कि आपको पूरा-पूरा आराम मिलेगा।" मुझे एजिन के चलने की आवाज सुनायी दी, फिर मुझे ऐसा लगा कि वह अपने आगे की सीट पर बैठ चुका है। उसने ब्रेक ढीले किये, 'क्लच' दबाया और हम चल पड़े। मै चुपचाप लेटा रहा। मेरा दर्द बढता जा रहा था।

एम्बुलेन्स चढाई चढने लगी। अन्य सवारियों के बीच वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। कभी-कभी वह रुक जाती, कभी किसी मोड़ पर पीछे हो जाती। अन्त मे, हम काफी तेजी से चढाई चढ़ने लगे। तभी मुझे कोई वस्तु टपकती-सी प्रतीत हुई। पहले वह धीरे-धीरे गिर रही थी, फिर नियमित रूप से गिरने लगी और अन्त में एक धारा के रूप मे टप-टप की आवाज के साथ गिरने लगी। मैने ड्राइवर को पुकारा। उसने मोटर खड़ी कर दी और अपनी सीट के पीछे की ओर बने छिद्र से भीतर की ओर झाँका।

"क्या बात है?"

"मेरे ऊपरवाली टिकठी मे लेटे हुए व्यक्ति का रक्त-स्राव हो रहा है।"

"हम, चढाई की ऊपरी सतह से अब अधिक दूर नहीं हैं। मै अकेला टिकठी बाहर नहीं निकाल सकूँगा।" उसने मोटर चला दी। रक्त की धार बहती रही। अंधेरे में मै यह भी नही देख सका कि वह मेरे सिर के ठीक ऊपर लगे हुए तिरपाल से ही गिर रही थी। मैंने एक ओर सरकने का प्रयत्न किया, जिससे वह मेरे ऊपर न गिरे। ऊपर से गिरने वाला रक्त जहॉ-जहॉ मेरे कमीज के भीतर प्रवेश कर चुका था, वहॉ-वहॉ मुझे गर्म और चिपचिपा लग रहा था। रक्त से भीग जाने के कारण मेरा शरीर ठढा हो गया। टॉगो के जख्मो के कारण मै स्वय को भी अस्वस्थ पा रहा था। पर थोडी देर बाद टिकठी से गिरने वाली रक्त-धार धीमी पड गई। धीरे-धीरे रक्त का वह प्रवाह पुनः बूदो की टपटपाहट मे बदल गया। टिकठी पर लेटा हुआ व्यक्ति ज्यो-ज्यो अधिक आराम से लेटने की चेष्टा करता, त्यो-त्यों मुझे तिरपाल के हिलने-डुलने की आवाज़ और उसकी खडखडाट सुनाई देती।

"अब कैसा है वह?" अग्रेज ड्राइवर ने पीछे की ओर मुड़कर पूछा—"हम चोटी के बिलकुल करीब पहुँच चुके हैं।"

"मेरा अनुमान है कि वह मर चुका है।" मैंने जवाब दिया।

सूर्यास्त के पश्चात्, जिस प्रकार हिमखण्ड से जल-बूदें टपकती हैं, उसी प्रकार अब अत्यन्त धीमी गति से रक्त की बूदे गिर रही थी। मोटर चढाई पर शिखर की ओर बढ़ती जा रही थी और उस गहन निशा में मोटर के भीतर मैं काफ़ी ठण्ढ महसूस कर रहा था। शिखर के पडाव पर पहुँच कर लोगो ने वह टिकठी बाहर निकाल ली और उसके स्थान पर दूसरी रख दी। फिर हम वहॉ से आगे चल दिये।

. १० .

युद्धक्षेत्रीय अस्पताल के वार्ड मे मुझे सूचना दी गई कि तीसरे पहर मुझसे कोई मिलने आ रहा है। उस दिन बडी गर्मी थी और कमरे में बहुत-सी मक्खियॉ चक्कर काट रही थी। मेरे अर्दली ने एक कागज की पट्टियॉ काटकर उन्हें एक लकडी से बॉध दिया और वह उनसे मक्खियॉ भगाने लगा। मै लेटा लेटा उनका छत पर बैठना देखता रहा। जब अर्दली मक्खियॉ उड़ाते-उड़ाते सो गया, तो वे फिर नीचे उतर आई। मै उन्हें उड़ाता रहा और अन्त मे, हारकर उनसे बचने के लिए अपने चेहरे को दोनो हाथों से ढॅक कर सो गया। बड़ी

गर्मी पड़ रही थी। जब मैं सोकर उठा, तो मेरी टॉगो में खुजलाहट पैदा हो गयी थी। मैने अर्दली को जगाया। उसने उठकर मेरी पट्टियो पर खनिज-जल ढालना शुरू किया और स्वभावतः ही मेरा बिस्तर गीला और ठण्ढा हो गया।

वार्ड मे, हम लोगो मे से जो जागते रहते थे, वे आपस मे खूब जोर-ज़ोर से बातें करते थे। हॉ, तीसरे पहर अवश्य ही शाति रहती। प्रातःकाल एक डाक्टर और तीन परिचारक (मेल नर्स) वार्ड का चक्कर लगाते हुए एक-एक कर प्रत्येक रोगी के पास आते, उसे बिस्तर से उठाते और उपचार-कक्ष मे ले जाते। उधर हमारे घावो की पट्टियॉ बदली जातीं और इधर बिस्तर झाड़कर फिर से लगा दिये जाते। पट्टियॉ बदलवाने के लिए जाना वस्तुतः बडा कष्टदायक था। कई दिनो तक तो मुझे यह भी मालूम न हुआ कि, आहतों को हटाये बिना भी उनके बिस्तर झाड़े और बदले जा सकते थे।

मेरे अर्दली ने जल ढालना बंद कर दिया। मेरा बिछौना ठण्ढा और बडा सुखद प्रतीत हुआ। मैने अर्दली से पैर के तलवे का वह स्थान खुजलाने के लिए कहा, जहॉ खुजलाहट हो रही थी। इतने में ही एक डाक्टर रिनाल्डी को लेकर मेरे पास आया। रिनाल्डी लगभग दौड़कर मेरे पास आया, बिस्तर पर झुका और उसने मेरा चुम्बन ले लिया। मैने देखा कि वह दस्ताने पहने था।

"कैसी तबीयत है दोस्त ? कैसा लग रहा है ? देखो, मै तुम्हारे लिए यह लेता आया हूँ।" उसके हाथ में कॉग्नेक (शराब) की बोतल थी। अर्दली उसके लिए एक कुर्सी उठा लाया और वह बैठ गया।

"तुम्हारे लिए एक शुभ समाचार भी लाया हूँ मैं। तुम्हे पुरस्कार मिलेगा। तुम्हें रजत-पदक दिलाने के प्रयत्न हो रहे हैं; किन्तु कदाचित् ताम्र-पदक ही मिले।"

"लेकिन क्यो ?"

"तुम्हें गहरे घाव जो लगे हैं। लोगो का कहना है, यदि तुम यह प्रमाणित कर सको कि तुमने कोई वीरतापूर्ण कार्य किया है, तो तुम्हे रजत-पदक भी मिल सकता है। अन्यथा ताम्र-पदक ही मिलेगा। मुझे सचसच बताओ, क्या हुआ था? ये घाव कैसे लगे तुम्हे ? क्या तुमने कोई साहसपूर्ण कार्य किया था ?"

"नही—" मैने उत्तर दिया— "जब हम पनीर का आनद ले रहे थे, तब हमारे ऊपर बम आ गिरा।"

"मजाक छोड़ो। तुमने उसके पहले या बाद में कोई-न-कोई बहादुरी का काम अवश्य किया होगा। ज़रा अच्छी तरह याद करो।"

"मैने कुछ भी नही किया।"

"क्या तुम किसी आहत व्यक्ति को अपनी पीठ पर लादकर नहीं ले गये? गोर्डिनी का कहना है कि तुमने बहुत-से व्यक्तियो को अपनी पीठ पर लाद लाद कर पहुँचाया। किन्तु तुम्हारे पहले पड़ाव का मेजर डाक्टर कहता है कि यह सर्वथा असम्भव है और पुरस्कार के प्रस्ताव-पत्र पर उसके हस्ताक्षर जरूरी है।"

"मैने सचमुच ही किसीको अपनी पीठ पर लादकर नही पहुचाया। मै तो हिल भी नहीं सकता था।"

"तो उससे क्या होता है।" रिनाल्डी बोला।

उसने अपने दस्ताने उतार दिये।

"मेरे खयाल से हम लोग तुम्हे रजत-पदक दिलवा सकते हैं। क्या तुमने अन्य सैनिको का उपचार होने से पूर्व अपना उपचार कराना अस्वीकार नहीं कर दिया था?"

"हॉ, पर अधिक दृढ़ता के साथ नहीं!"

"कोई बात नही। जरा देखो तो, तुम कितनी बुरी तरह घायल हुए हो। हमेशा सबसे अगली पक्ति मे जाने की इच्छा प्रकट करके तुमने अपने जिस वीरतापूर्ण चरित्र का परिचय दिया है, उस पर भी गौर करो। आक्रमण भी तो सफल रहा।"

"क्या हमारी सेना ने बिना किसी विशेष कठिनाई के नदी पार कर ली?"

"बड़ी सफलतापूर्वक। शत्रु के करीब हजार सैनिक बन्दी बना लिये गये है। फ़ौजी गजट मे इसका विस्तृत विवरण दिया गया है। तुमने नहीं देखा?"

"नहीं तो।"

"मै तुम्हे वह गजट लाकर दिखाऊँगा। हमारा यह अप्रत्याशित और भीषण आक्रमण पूर्णतः सफल रहा।"

"और क्या हालचाल है।"

"सब ठीक है। हम बड़े मजे मे हैं। प्रत्येक व्यक्ति को तुम पर गर्व है। पर यह सब कैसे हुआ, मुझे विस्तार से बताओ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हे रजत-पदक अवश्य मिलेगा, चलो, शुरू करो—पूरी घटना सुनाओ, मुझे एक-एक बात बताओ।" वह कुछ रुका और सोचने लगा—"हो सकता है, तुम्हें अंग्रेजी-पदक भी मिल जाये। वहॉ कोई अंग्रेज भी तो था। मै जाकर उससे मिलूँगा और पूछूँगा कि क्या वह तुम्हारे लिये सिफारिश कर सकता है? उसे इस विषय में कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिए। क्या तुम्हें बहुत तकलीफ होती है?

लो, कुछ शराब पी लो। अर्दली, डाट खोलने के लिए एक पेच तो ले आओ। काश! तुम देखते कि शल्यक्रिया मे मैने करीब दस फुट छोटी आत निकलवाने मे कैसी कुशलता दिखायी थी और अब मै अपने काम मे पहले की अपेक्षा कही योग्य हो गया हूँ। उसका पूरा विवरण मैने "लैन्सेट" (एक पत्र) के लिए लिख छोडा है। तुम मेरे लिए उसका अनुवाद कर देना और मै उसे "लैन्सेट" मे भेज दूँगा। मै दिनोदिन अपने काम मे अधिक होशियार होता जा रहा हूँ। कहो दोस्त, कैसा लग रहा है तुम्हें? वह पेच कहॉ गया, डाट खोलने का? तुम इतने बहादुर और शान्त प्रकृति के हो कि मै यह भूल जाता हूँ कि, तुम बीमार हो।" वह अपने दस्तानो को बिस्तर की कोर पर झटकारते हुए बोला।

"यह रहा डाट खोलने का पेच, लैफ्टिनेण्ट साहब!" अर्दली ने कहा।

"बोतल खोलो और एक गिलास ले आओ।" उसने अर्दली से कहा—"लो, इसे पी जाओ दोस्त! तुम्हारे सिर की हालत कैसी है? मैने तुम्हारे कागजात देखे थे। तुम्हारी कोई हड्डी नही टूटी है। पहले पडाव का वह मेजर तो बिलकुल कसाई है—सूअर काटने वाला! उसे क्या मालूम? मै तुम्हारी चिकित्सा करूँगा और तुम्हें कोई कष्ट नहीं होने दूँगा। मै कभी किसी को तकलीफ नहीं पहुँचाता। बिना कोई तकलीफ़ पहुँचाये उपचार करना ही मै अब तक सीखता रहता हूँ। प्रति दिन मै अपना काम निर्विघ्नतापूर्वक और अधिकाधिक अच्छे ढंग से करता जा रहा हूँ। इतना अधिक बोलने के लिए माफ करना, मेरे दोस्त! तुम्हे इस तरह घायल देखकर मेरे दुःख की सीमा नहीं है। लो, इसे पी लो। बडी अच्छी है यह। पन्द्रह लिरे खर्च हुए हैं इसके लिए। अच्छी होनी ही चाहिए। पॉच तारा छाप शराब है यह। यहॉ से जाने पर मै उस अंग्रेज़ से मिलूँगा। वह तुम्हे अंग्रेजी-पदक दिलायेगा।"

"अंग्रेजी-पदक इतनी आसानी से नही मिलते।"

"तुम बडे भोले हो। मै मध्यस्थ अधिकारी को भेजूँगा। वह इन अंग्रेजों से अच्छी तरह निबट सकता है।"

"क्या तुम मिस बर्कले से मिले थे?"

"मै उसे यहॉ ले आऊँगा। मै अभी जाकर उसे ले आता हूँ।"

"नहीं, तुम मत जाओ।" मै बोला—"मुझे गोरीजिया के विषय मे बतलाओ। लड़कियॉ कैसी हैं?"

"वहॉ अब कोई लड़की ही नही है। गत दो सप्ताह से अधिकारियों ने

"तुम पादरी से तो हँसी-मजाक कर सकते हो।"

"ओह, वह पादरी! मै उसका मजाक बनानेवालो मे नही हूँ। उसकी हँसी कैप्टन उड़ाया करता है। मैं तो उसे पसन्द करता हूँ। यदि पादरी हो, तो उसी के समान! वह तुम्हे देखने आने वाला है। मिलने से पहले बडी बडी तैयारियॉ करने का उसका कुछ स्वभाव है।"

"मै भी उसे पसन्द करता हूँ।"

"यह तो मै पहले से ही जानता था। कभी-कभी मै सोचता हूँ कि तुम दोनो एक ही धातु के बने हो।"

"नहीं, तुम ऐसा नही कह सकते!"

"पर, मै सचमुच कभी-कभी ऐसा सोचता हूँ। एन्कोना ब्रिगेड के प्रथम सैन्यदल के व्यक्तियों के समान ही तुम दोनो मे भी समानता है।"

"जहन्नुम में जाओ तुम!"

वह खडा हो गया और अपने दस्ताने पहनने लगा।

"मुझे तुम्हें चिढाना बडा अच्छा लगता है, मेरे दोस्त! तुम्हारा वह पादरी, तुम्हारी वह अंग्रेज लड़की और तुम। तुम तो सचमुच भीतर से बिलकुल मेरी तरह हो।"

"नहीं, मैं तुम्हारी तरह नही हूँ।"

"सच, हम दोनों एक-से हैं। तुम बिलकुल इटालियन हो—हू-ब-हू इटालियनो की तरह। ऊपर से आग और धुऑ और हृदय मे कुछ नहीं—बिलकुल साफ-स्वच्छ। तुम अमरीकी हो, यह तो तुम्हारा दिखावा-मात्र है। असल में, हम दोनो एक-से हैं—बिलकुल भाई और एक-दूसरे से स्नेह भी करते हैं।"

"मेरे वहॉ नहीं रहने पर दूसरो के साथ मैत्री बनाये रहना!" मैंने कहा।

"मै मिस बर्कले को भेज देता हूँ। तुम मुझसे दूर और उसके निकट रहना अधिक पसद करते हो। उसके साथ तुम इस समय की अपेक्षा अधिक निर्दोष और आकर्षक भी लगते हो।"

"ओह, भाड में जाओ तुम!"

"मैं भेज दूँगा उसे। तुम्हारी उस सुन्दर, शान्तिमयी देवी को—उस अंग्रेज देवी को। हे परमात्मा, उस-जैसी औरत का, सिवा उसकी पूजा करने के, आदमी और करेगा भी क्या? एक अंग्रेज स्त्री और भला किस काम के योग्य होती है?"

"तुम एक मूर्ख इटालियन हो।"

"क्या कहा तुमने?"

"मूर्ख इटालियन।"

"और तुम महामूर्ख हो—एक अमरीकी गधे हो।"

"तुम मूर्ख हो—जड़—निर्बुद्धि!" मैने देखा कि वह शब्द उसके हृदय को लग गया है, फिर भी मै बोलता रहा—"अज्ञानी, अनुभवहीन और अनुभवहीनता के कारण जड़बुद्धि।"

"क्या सचमुच? सुनो, मै तुम्हारी इन सुन्दर स्त्रियो के विषय मे—तुम्हारी देवियो के विषय मे तुम्हें कुछ बताता हूँ। एक सामान्य स्त्री से और एक ऐसी लडकी से, जो हमेशा अच्छा व्यवहार करती आई है, सम्बन्ध स्थापित करने के बीच केवल एक ही अन्तर है। और वह अन्तर यह है कि ऐसी लडकी से सम्बन्ध रखना सदा दुखदाई होता है। बस, मै इतना ही जानता हूँ।" उसने अपने दस्तानो को बिस्तर पर झटकारा—"और तुम कभी यह जान भी नही पाते कि वह लड़की उस सम्बन्ध को सचमुच पसद करेगी भी या नहीं!"

"नाराज मत होओ।"

"मै नाराज नहीं हूँ। मै तो तुम्हे केवल बता रहा हूँ दोस्त, और वह भी तुम्हारी भलाई के लिए—तुम्हे तकलीफ़ो से बचाने के लिए।"

"क्या दोनो मे, बस, यही एक अंतर है?"

"हॉ, किन्तु तुम्हारे जैसे लाखो मूर्ख इसे नही जानते।"

"तो मुझे बताकर तुमने बडी दया दिखाई।"

"हम आपस में लड़ेंगे नहीं, दोस्त! मै तुम्हे बहुत प्यार करता हूँ।"

"किन्तु मूर्ख मत बनो।"

"नहीं, मै तुम्हारे समान ही बुद्धिमान बनूँगा।"

"मुझ पर क्रोध मत करो, दोस्त! हँसो। लो, शराब पियो।"

"मुझे अब चल देना चाहिए। सच!"

"तुम, बड़े भले लड़के हो!"

"देखा तुमने। भीतर से हम दोनो एक-से हैं। हम युद्ध-बन्धु हैं—आपस में भाई-भाई। लो, मेरा चुम्बन लो। अच्छा, विदा।"

"तुम बिलकुल मोम-दिल हो।"

"नहीं, मेरा दिल कुछ अधिक प्यार-भरा है।"

मैंने अनुभव किया कि उसकी सॉस मेरे मुख का स्पर्श कर रही है। "विदा,

मित्र! मैं तुम्हें देखने शीघ्र ही फिर आऊँगा।" उसने साँस छोड़ते हुए कहा—"यदि तुम्हारी इच्छा नही है, तो मै तुम्हारा चुम्बन नही लूँगा। तुम्हारी उस अंग्रेज बाला को ही भेज दूँगा। अच्छा, विदा दोस्त! कॉग्नेक बिस्तर के नीचे रखी है। बस, जल्दी से अच्छे हो जाओ!"

और वह चला गया।

• ११ •

पादरी गोधूलि-बेला मे आया। उसके आने से पहले मेरे लिए सूप लाया जा चुका था। मै उसे पी चुका था और कटोरे वहाँ से हटाये जा चुके थे। मै उस कमरे मे लगी बिस्तरो की पक्तियो तथा सान्ध्य समीर का स्पर्श पा धीमी गति से हिलने वाले वृक्षो की फुनगियो को देखते हुए अपने पलंग पर लेटा था। खिडकी से वायु के झोके आ रहे थे। सॉझ होने के साथ ही वातावरण मे भी नमी व्याप्त हो गयी थी। मक्खियॉ अब छत पर तथा बिजली के लट्टुओ पर जमकर बैठ चुकी थीं। रात मे जब कोई भीतर लाया जाता अथवा कोई और काम होता, तभी बत्तियॉ जलाई जातीं। गोधूलि के बाद अंधकार का आना और उसका फिर वही बने रहना मुझे स्फूर्तिजनक बना देता और मै स्वयं को बहुत युवा अनुभव करने लगता। अधेरा बने रहने का अर्थ था जल्दी से रात का खाना खाकर नीद की गोद मे स्वय को सौप देना—बेफिक्र और निश्चित! तभी अर्दली बिस्तरो के बीच मे आकर खडा हो गया। उसके साथ कोई और व्यक्ति भी था। वह पादरी था। छोटा-सा, सॉवले मुखवाला, घबराया हुआ सा पादरी मेरे सामने आया।

"कैसी तबीयत है?" उसने पूछा और मेरे बिस्तर के निकट फर्श पर कई छोटे-छोटे पैकेट रख दिये।

"ठीक हूँ, धर्मपिता!"

रिनाल्डी के लिए जो कुर्सी लाई गई थी, उसी पर वह बैठ गया और बड़ी आकुलता के साथ खिड़की से बाहर देखने लगा। और तभी गौर से देखने पर मुझे लगा कि वह बहुत थका-थका नज़र आ रहा था।

"मै घड़ी-भर ही ठहर सकता हूँ।" वह बोला—"काफ़ी देर हो गई है।"

"नहीं, ऐसी तो कोई देर नहीं हुई है। भोजनालय के क्या हाल हैं?"

वह मुस्कराया—"मै अभी भी वहाँ हँसी का कारण बना हुआ हूँ।" उसके स्वर मे भी थकान स्पष्ट थी।

"ईश्वर को धन्यवाद कि वहाँ सब लोग अच्छी तरह से हैं।"

"मुझे बडी खुशी है कि तुम अच्छी तरह हो" उसने कहा—"निश्चय ही तुम्हे यहाँ कोई विशेष कष्ट नही होगा।" वह बहुत थका हुआ लग रहा था। मै उसे इस प्रकार थका हुआ देखने का आदी नहीं था।

"नहीं, ऐसी कोई तकलीफ नहीं है।"

"वहाँ भोजनालय मे मुझे तुम्हारी अनुपस्थिति बहुत खलती हे।"

"काश, मै वहाँ होता! मुझे आपके साथ बातचीत करने मे हमेशा ही बड़ा आनन्द आता है।"

"मै तुम्हारे लिए कुछ छोटी-मोटी चीजे लाया हूँ।" वह बोला। उसने नीचे रखे पैकेट उठाये—"यह मच्छरदानी है। यह 'वरमाउथ' की (शराब) बोतल है। तुम्हे 'वरमाउथ' अच्छी लगती है न? ये अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाएँ हैं।"

"कृपया इन्हे खोलिए।"

वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उन्हें खोल डाला। मैंने मच्छरदानी अपने हाथों मे ले ली। वह मेरे देखने के लिए शराब की बोतल अपने हाथ में उठाये रहा और देख लेने पर उसे उसने बिस्तर के बगल मे, फर्श पर रख दिया। मैंने कुछ अंग्रेजी पत्र अपने हाथ मे लिये। उन्हे खिड़की से आते हुए धुँधले प्रकाश की ओर घुमाकर मैंने उनके शीर्षक पढे। पत्र का नाम था—'विश्व-समाचार'।

"दूसरे पत्र सचित्र हैं।" उसने कहा।

"इन्हे पढ़कर मुझे सचमुच बड़ी प्रसन्नता होगी। आपने इन्हें कहाँ से प्राप्त किया?"

"ये सब मैंने मेस्त्रे से मँगाए है। और पत्र भी आने वाले हैं।"

"आपने यहाँ आकर बडी कृपा की, धर्मपिता! क्या आप एक गिलास 'वरमाउथ' पीयेंगे?"

"धन्यवाद! तुम रख लो उसे। वह तुम्हारे लिए ही है।"

"नही, एक गिलास तो लीजिए।"

"अच्छी बात है। तब मै तुम्हारे लिए कुछ और बोतले भेज दूँगा।"

अर्दली गिलास ले आया। उसने बोतल खोली। किन्तु ऐसा करते समय उसका कॉर्क बीच से टूट गया और उसे भीतर ठेल देना पडा। मैंने देखा कि पादरी को यह कुछ बुरा लगा; किन्तु उसने कहा—"चलो, ठीक है। कोई बात नही।"

"आपके स्वास्थ्य के लिए, धर्मपिता!"

"तुम्हारे स्वास्थ्य-सुधार के लिए।"

इसके बाद वह हाथ मे गिलास लिए रहा। हम दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। पहले कभी-कभी हम आपस मे बाते किया करते थे। हम दोनों अच्छे मित्र भी थे, पर आज न जाने क्यो, बाते करना कठिन प्रतीत हो रहा था।

"क्या बात है, धर्मपिता! आप बहुत थके हुए लग रहे हैं।"

"मै थक गया हूँ; परन्तु मुझे इस का कोई अधिकार नही है।"

"गरमी भी तो काफ़ी है।"

"नहीं, अभी तो वसंत ही है। असल में, मै बड़ी खिन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।"

"आप युद्ध से तग आ गए हैं।"

"नही, किन्तु मैं युद्ध से घृणा अवश्य करता हूँ।"

"मै भी इसे पसद नहीं करता।" मैने कहा। वह अपना सिर हिलाते हुए खिड़की के बाहर देखने लगा।

"तुम बुरा तो नहीं मान गये! वस्तुतः तुम मेरा मतलब नहीं समझ पाये। पर तुम्हें मुझे क्षमा कर देना चाहिए। मै जानता हूँ कि तुम घायल हो।"

"वह तो दुर्घटना-मात्र है।"

"फिर भी, घायल होने पर भी, तुम नहीं समझ पा रहे हो। यह मै कह सकता हूँ। मै स्वय भी निश्चित रूप से समझ रहा हूँ, ऐसा नही कह सकता, किन्तु मेरे मन मे कुछ खटकता अवश्य है।"

"जब मै आहत हुआ था, तब हम लोग युद्ध के विषय में ही बाते कर रहे थे। पास्सिनी इस सम्बन्ध मे अपने विचार प्रकट कर रहा था।"

पादरी ने गिलास नीचे रख दिया। वह कुछ और सोच रहा था।

"मै उन्हें (सैनिको को) पहचानता हूँ, क्योकि मै स्वय उन्हीं जैसा हूँ।" वह बोला।

"फिर भी आप उनसे अलग हैं।"

"किन्तु वास्तव में, मै उन्ही जैसा हूँ।"

"अफ़सर लोग इन बातो को नहीं समझते।"

"कुछ अफ़सर अवश्य समझते हैं। कई अफ़सर तो बड़े कोमल हृदय के होते हैं। युद्ध उन्हे हमसे भी अधिक बुरा लगता है।"

"ऐसे व्यक्ति का स्वभाव बहुधा दूसरो से भिन्न होता है।"

"शिक्षा या सम्पत्ति ही किसी के अफ़सर बनने की योग्यता का मापदण्ड

नहीं है। इनसे परे कुछ और भी होता है। पास्सिनी जैसे मनुष्य यदि शिक्षित या सम्पत्तिशाली होते तो भी वे अफसर नहीं बनना चाहते! मै स्वय अफ़सर बनना नहीं चाहूँगा।"

"आपका पद तो अफसर का है ही। मै भी एक अफसर हूँ।"

"नही, मै सचमुच अफसरो-जैसा नही हूँ। तुम तो इटालियन भी नहीं हो, विदेशी हो। तुम साधारण मनुष्यो की अपेक्षा अफसरो के अधिक निकट हो।"

"दोनो मे अन्तर क्या है?"

"मैं आसानी से नहीं समझा सकता। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो युद्ध का निर्माण करते हैं। इस देश मे उन जैसे बहुत-से व्यक्ति मौजूद हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते है, जो लड़ाई नहीं चाहते।"

"किन्तु पहले वर्ग के मनुष्य उन्हें लड़ने के लिए बाध्य कर देते है!"

"हॉ।"

"और मेरे जैसे आदमी उन्हे सहायता देते है?"

"तुम विदेशी हो—एक देशभक्त!"

"और वे, जो युद्ध नही चाहते—वे क्या हैं? क्या वे युद्ध को रोक सकते है?"

"यह मै नहीं कह सकता।"

वह फिर खिड़की से बाहर देखने लगा। मै उसके मुख को बड़े गौर से देख रहा था।

"क्या शान्ति के वे समर्थक कभी युद्ध रोकने में सफल भी हुए है।"

"एक तो वे ऐसी घटनाओं को सगठित होकर नहीं रोकते और जब वे सगठित हो जाते हैं, तो उनके नेता उन्हे दूसरो के हाथ बेच देते हैं।"

"यह तो बहुत बुरी बात है।"

"इसमे निराश होने की जरूरत नहीं है। किन्तु हॉ, कभी-कभी मुझे भी आशा का कोई कूल-किनारा नही दिखाई देता। मै सदा आशावादी बने रहने का प्रयत्न करता हूँ, पर कभी-कभी वैसा नहीं कर पाता।"

"हो सकता है, युद्ध खत्म हो जाए।"

"मैं भी ऐसी ही आशा करता हूँ।"

"तब आप क्या करेंगे?"

"यदि सम्भव हुआ, तो मै अब्रूजी लौट जाऊँगा।" उसका सॉवला मुख अचानक एक अपूर्व सुख की अनुभूति से चमक उठा।

"क्या अब्रूजी आपको पसद है ?"

"बहुत !"

"तब वहाँ आपको चले जाना चाहिए।"

"मुझे वास्तव में, बडी प्रसन्नता होगी। काश, मैं वहाँ रह सकता—ईश्वर की आराधना कर सकता—उसकी भक्ति और उसकी सेवा में अपने दिन गुजार सकता!"

"और लोगो का सम्मान प्राप्त कर सकता।" मैंने कहा।

"हाँ; सम्मान प्राप्त कर सकता। क्यों नहीं ?"

"अवश्य ही, कोई कारण नहीं कि ऐसा न हो!"

"खैर, उससे क्या बनता-बिगड़ता है। किन्तु मेरी जन्मभूमि के लोग इतना समझते हैं कि मनुष्य ईश्वर से प्रेम कर सकता है और भगवान् से प्रेम करना कोई मजाक उड़ाने की चीज तो नहीं है।"

"मै समझता हूँ।"

उसने मेरी ओर देखा और मुस्कराया।

"तुम समझते हो, फिर भी ईश्वर से प्रेम नही करते ?"

"नहीं।"

"तुम उससे बिलकुल प्रेम नहीं करते ?" उसने पूछा।

"मै कभी-कभी रात मे उससे भयभीत अवश्य हो उठता हूँ।"

"तुम्हे ईश्वर से प्रेम करना चाहिए।"

"मै इस तरह प्रेम नहीं किया करता।"

"नहीं—" उसने कहा—"तुम प्रेम करते हो। जिसके विषय मे तुम मुझसे कई बार रात मे बाते कर चुके हो, उससे प्रेम करते हो। पर वह सच्चा प्रेम नहीं है। वह तो केवल वासना है—मोह है। जब तुम प्रेम करते हो, तो अपने प्रेम-पात्र के लिए बहुत-कुछ करना चाहते हो—बलिदान, त्याग, सेवा या इसी प्रकार की अन्य कोई चीज!"

"मै प्रेम ही नही करता।"

"एक दिन करोगे। मै जानता हूँ कि कभी न-कभी तुम प्रेम करोगे। और तब तुम जीवन में सुखी रहोगे।"

"मै तो आज भी सुखी हूँ। मै सदा सुखी रहा हूँ।"

"किन्तु ईश्वर—प्रेम से उत्पन्न सुख एक निराली वस्तु है। वैसा सुख जब तक तुम्हे प्राप्त नहीं होता, तब तक तुम यह नही जान सकते कि वह क्या होता है।"

"खैर—" मै बोला—"यदि वह सुख मुझे कभी प्राप्त हुआ, तो मै आपको बताऊँगा।"

"मै कहीं बैठता हूॅ, तो काफ़ी देर तक बैठ जाता हूॅ और बहुत बाते किया करता हूॅ।" वह सचमुच चिंतित प्रतीत हो रहा था कि उसे बडी देर हो गई थी।

"बैठिए न। अभी से मत जाइए। स्त्रियो से प्रेम करने के विषय मे आपके क्या विचार हैं? यदि मै किसी स्त्री से सच्चा प्रेम करूॅ, तो क्या वह ईश्वर से प्रेम करने के समान ही होगा?"

"इस बारे मे मै कुछ नही जानता। मैने कभी किसी स्त्री से प्रेम नहीं किया।"

"अपनी मॉ से भी नही?"

"हॉ, अपनी मॉ से मैने अवश्य प्यार किया होगा।"

"क्या आप शुरू से ही ईश्वर से प्यार करते रहे हैं?"

"हॉ, मै जब बच्चा था, तभी से।"

"ओह!" मैने कहा। मेरी समझ मे नहीं आ रहा था कि मै क्या कहूॅ। "आप बड़े अच्छे लड़के है!" मेरे मुॅह से निकल पड़ा।

"हूॅ तो मैं लड़का ही।" उसने उत्तर दिया—"किन्तु तुम मुझे धर्मपिता कहकर पुकारते हो।"

"केवल विनम्रतावश!"

वह मुस्कराया।

"मुझे अब चल देना चाहिए, सच!" उसने कहा—"यदि मै तुम्हारी कोई सहायता कर सकूॅ, तो मुझे बताओ।"

"इसी तरह कभी-कभी मिलने-जुलने के लिए आते रहियेगा।"

"मै भोजनालय में सबके पास तुम्हारी शुभकामनाऍ पहुॅचा दूॅगा।"

"आपके इन सुन्दर उपहारो के लिए धन्यवाद।"

"नहीं, नहीं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं।"

"फिर कभी आएइगा।"

"जरूर—जरूर। अच्छा, अब विदा दो।" उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर थपथपाया।

"विदा!" मैने स्थानीय बोली में कहा।

"ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।" उसने दुहराया।

कमरे में अंधेरा छाया था। मेरे पैरो की ओर, बिस्तर के पास ही, अर्दली बैठा हुआ था। वह उठा और पादरी को पहुॅचाने के लिए बाहर तक गया।

मै पादरी को बहुत चाहता था। मुझे विश्वास था कि वह कभी न-कभी अब्रूजी अवश्य लौट जायेगा। भोजनालय मे वह बिलकुल नरक का जीवन बिता रहा था, और उस स्थिति में भी वह प्रसन्न था। अपने जन्मस्थान मे उसका जीवन कैसा होगा, इसकी कल्पना मैने कर ली थी। उसने मुझे बताया था कि काप्रा-कोट्टा मे, शहर के नीचे की ओर, एक नदी बहती थी, जहॉ ट्राउट नामक सुन्दर मछलियो की भरमार थी। वहॉ रात में बासुरी बजाने की मनाही थी। जब वहॉ के युवक–प्रेमी सान्ध्यगीत गाते, तो वे बासुरी नहीं बजाते थे। मैने पादरी से इसका कारण पूछा था। उसने बताया था कि युवतियो के लिए रात की निस्तब्धता में बासुरी का हृदयग्राही स्वर सुनाई देना अच्छा नहीं माना जाता था। अब्रूजी के किसान, लोगो को डॉन (स्पेन का एक सम्मानसूचक शब्द) कहकर सम्बोधित करते थे और जब वे मिलते थे, तो सम्मान में अपना टोप उतार लेते थे। पादरी का पिता रोज शिकार खेलने का आदी था और जब भी शिकार पा जाता, भोजन करने के लिए किसानो के घरो मे ठहरा करता था। पादरी–परिवार के लोग सदा आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। यदि वहॉ कोई परदेशी शिकार खेलने के लिए जाता था, तो उसे इस बात का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना पडता था कि वह ग़लत निशाना मारने के अपराध मे कभी गिरफ्तार नही हुआ है। ग्रॉन-सास्सो-द'तालिया (पर्वत का नाम) पर खूब भालू थे; किन्तु वह बहुत दूर था। एक्विला वहॉ का एक सुन्दर नगर था। गरमी मे वहॉ की राते ठण्डी होती थी। अब्रूजी का वसन्त इटली-भर मे सबसे सुन्दर माना जाता था। किन्तु वहॉ का सबसे प्रबल आकर्षक था—अखरोट के बनो से होकर बहने वाला एक सुन्दर झरना। वहॉ के पक्षी भी बडे अच्छे थे, क्योकि वे अगूरो से ही अपना पेट भरते थे! किसी यात्री को वहॉ भोजन साथ ले जाने की आवश्यकता नही पडती थी; क्योकि वहॉ के किसान अतिथि का बडा सम्मान करते थे और आदरपूर्वक अपने घर खाना खिलाते थे।

यही सब सोचता-सोचता कुछ देर बाद मै सो गया।

• १२ •

कमरा लम्बा था। दाहिने हाथ की ओर उसमे खिडकियॉ थी। उसके अंतिम छोर पर एक दरवाजा था, जो मरहमपट्टी वाले कमरे से सम्बन्धित था। मेरी

पंक्ति में जितने पलंग थे, उन के मुँह खिडकियो की ओर थे। बिस्तरो की दूसरी पक्ति खिडकियो के नीचे थी। उनके मुँह दीवार की ओर थे। बाई ओर करवट लेकर लेटने पर मरहमपट्टी के कमरे का दरवाजा देखा जा सकता था। दूसरे छोर पर एक दूसरा दरवाजा था। उस तरफ से कभी-कभी लोग भीतर आया करते थे। किसी रोगी के मरते समय उसके पलग के आसपास पर्दा डाल दिया जाता था, जिससे मरने वाले व्यक्ति को कोई देख न सके। पर्दे के नीचे की ओर फर्श पर केवल डॉक्टरो और परिचारको के जूते तथा उनके पैरो की पट्टियॉ ही दिखाई देती थी। कभी-कभी कुछ फुसफुसाहट भी सुनाई दे जाती थी। और तब उस परदे के पीछे से पादरी बाहर आता। परिचारक (मेल नर्स) पर्दे से बाहर निकलते और फिर पर्दे के भीतर चले जाते। कुछ समय बाद वे मृत व्यक्ति को कम्बल से ढॉक कर बाहर लाते हुए दिखाई देते। वे उसे लेकर बिस्तरो के बीच के रास्ते से निकल जाते। कोई आता, पर्दे को मोड़ता और वहॉ से हटा ले जाता।

उस दिन प्रातःकाल वार्ड के अधिकारी ने, जो एक मेजर थीं, मुझसे पूछा कि क्या मुझमे इतनी शक्ति है, जो मै अगले दिन ही यात्रा कर सकूं। मैंने उसे बताया कि मै वैसा कर सकता हूँ। उसने मुझे कहा कि अगले दिन सबेरे ही मुझे जहाज पर चढ़ा दिया जायेगा। उसने मुझे यह भी समझाया कि अधिक गर्मी पड़ना प्रारम्भ होने के पहले ही मेरा यात्रा करना ठीक रहेगा।

जब हमे मरहमपट्टी वाले कमरे मे ले जाने के लिए बिस्तरो पर से उठाया जाता, तब हम खिड़की से बाहर का दृश्य अच्छी तरह देख सकते थे। बगीचे मे हमे हाल ही मे बनी हुई कब्रे दिखाई देतीं। उस ओर खुलने वाले द्वार के बाहर एक सैनिक बैठा रहता और उन क़ब्रो पर क्रॉस बनाया करता। क्रॉस बनाने के बाद वह उन कब्रो पर, उद्यान-भूमि की उस गोद मे सोये हुए उन मृतको के नाम, उनके ओहदे और उनकी सैन्य टुकड़ियो के विवरण अंकित कर देता। इसके सिवा वह वार्ड के रोगियो के सन्देश लाने-ले जाने का कार्य भी करता था। अपने फुरसत के समय मे उसने एक खाली आस्ट्रियन कारतूस से मेरे लिए सिगरेट जलाने का एक लाइटर बना दिया था। वहॉ के डाक्टर बड़े अच्छे और बहुत ही योग्य थे। वे सब मुझे मिलान भेजने के लिए उत्सुक थे। मिलान मे एक्स-रे की अधिक सुविधाएँ प्राप्त थी। वहॉ शल्य-क्रिया होने के बाद मै यान्त्रिक-चिकित्सा भी करा सकता था। मै स्वय भी मिलान जाना चाहता था। अधिकारी-वर्ग यह चाहता था कि यथासम्भव हम सब आहत

सैनिक शीघ्र अच्छे होकर युद्ध पर वापस आ जाएँ; क्योकि आक्रमण आरम्भ होने पर स्वभावतः ही उन्हे आदमियो की जरूरत पड़नेवाली थी।

मोर्चे के उस अस्पताल को छोडने से पहले, रात मे, हमारे भोजनालय के मेजर के साथ रिनाल्डी मुझे देखने आया। उन दोनो ने बताया कि मुझे मिलान मे बने एक नये अमरीकी अस्पताल मे भेजा जा रहा है। अमेरिका से कुछ चिकित्सक आने वाले थे। वह अस्पताल उनके लिए तथा इटालियन सेना मे काम करने वाले अन्य अमरीकी सैनिको के लिए खोला गया था। रेड-क्रास-दल मे भी बहुत-से अमरीकी थे। अमेरिका ने जर्मनी के विरुद्ध तो युद्ध की घोषणा कर दी थी; किन्तु आस्ट्रिया के विरुद्ध नहीं।

इटालियनो को यह विश्वास था कि अमेरिका, आस्ट्रिया के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा करेगा, इसलिए वे किसी भी अमरीकी के आने पर, चाहे वह रेड-क्रास-दल का ही क्यों न हो, बड़े उत्तेजित हो जाते थे।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि राष्ट्रपति विल्सन आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करेगे ?" रिनाल्डी और मेजर ने मुझसे पूछा।

"केवल कुछ ही दिनो की देर है।" मैंने उत्तर दिया। हमारी आस्ट्रिया से कौन-सी शत्रुता थी, यह मै स्वयं नहीं जानता था, किन्तु जब जर्मनी से युद्ध छिड़ गया था, तो आस्ट्रिया के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा करना तर्कसंगत प्रतीत होता था। उन्होंने पूछा कि क्या अमेरिका तुर्किस्तान से भी युद्ध छेड़ेगा ?

"यह जरा सदेहास्पद है।" मैने उत्तर दिया—"तुर्किस्तान तो अपने हाथ की चीज है।"

किन्तु उन दोनो ने मेरे इस मजाक का इतना बुरा अर्थ लगाया और इतने शकालु हो उठे कि मुझे कहना पड़ा—"हाँ, कदाचित् तुर्किस्तान पर भी हमला बोल दिया जाए।"

"और बल्गेरिया पर ?"

हम लोग अब तक कई गिलास ब्राण्डी पी चुके थे। नशे की खुमारी में ही मैं बोला—"हाँ, सचमुच, बल्गेरिया पर भी और जापान पर भी।"

"पर जापान तो इग्लैण्ड का मित्र है।" वे बोले—"और इन अंग्रेजो पर विश्वास नही किया जा सकता।"

"जापानी हवाई द्वीप लेना चाहते है।" मैने कहा।

"हवाई द्वीप कहाँ है?"

"प्रशान्त-महासागर में।"

"जापानी लोग उसे क्यों लेना चाहते हैं?"

"वास्तव मे, वे उसे लेना नही चाहते।" मै बोला—"यह सब कोरी गप्प है। जापानी लोग बडे भले व्यक्ति होते है-नन्हे कद के, नृत्य-प्रिय और गुलाबी नशा लानेवाली शराब के शौकीन!"

"फ्रान्सीसियो की तरह।" मेजर बोला।

"फ्रेन्च लोगो से हमे नाइस और सेवोइआ प्रदेश मिल जाएँगे। कॉर्सिका और एड्रिआटिक समुद्र के किनारे के इलाके भी प्राप्त हो जाएँगे।" रिनाल्डी ने कहा।

"इटली, रोम का खोया वैभव पुनः प्राप्त कर लेगा।" मेजर बोला।

"मुझे रोम पसन्द नहीं है।" मैंने कहा—"रोम बहुत गर्म स्थान है और यहाँ पिस्सुओ की भरमार है।"

"तुम्हे रोम अच्छा नही लगता?"

"हाँ-हाँ, मै रोम से प्यार करता हूँ। रोम सभी राष्ट्रो की जननी है। मै रोमुलस द्वारा टाइबर का स्तनपान करना कभी नहीं भूल सकूँगा।"

"क्या?"

"कुछ नही।"

"चलो, हम आज की रात रोम चले और फिर कभी वापस न आयें।"

"रोम बड़ा सुन्दर शहर है।" मेजर ने कहा।

"रोम सब राष्ट्रो की माता है—सब राष्ट्रो का पिता।" मै बोला।

"रोमा शब्द स्त्रीलिंग है।" रिनाल्डी ने विरोध किया—"रोम माँ हो सकता है—बाप नहीं।"

"तब बाप कौन है? क्या पवित्र-प्रेतात्मा?"

"अपमानजनक बाते मत करो!"

"अपमानजनक बाते नहीं कर रहा हूँ। सच बात जानना चाहता हूँ।"

"तुम शराब के नशे में हो, दोस्त!"

"किसने मुझे इतनी शराब पिला दी?"

"मैने—" मेजर बोला—"तुम्हे मैंने बहुत शराब पिलाई है; क्योकि मै तुमसे स्नेह करता हूँ, क्योकि अमरीका युद्ध मे हमारे साथ है।"

"शुरू से आखिर तक साथ है—पूरी तरह साथ है।" मैंने कहा।

"तुम सबेरे चले जाओगे, मेरे दोस्त।" रिनाल्डी ने कहा।

"हाँ, रोम जाऊँगा।" मैं बोला।

"रोम नहीं, मिलान।"

"मिलान जाओगे, मिलान। स्फटिक-भवन, कोबा, कॉम्पारी, बिफ्फी और गॅलेरिया जैसे सुन्दर स्थलो को देखोगे तुम। भाग्यवान् हो, दोस्त!" मेजर बोला।

"मै ग्रॉन-इतालिया जाऊँगा।" मैने कहा—"ग्रॉन-इतालिया, जहॉ मै जॉर्ज (एक परिचित खानसामा) से पैसे उधार ले सकूँगा।"

"तुम स्काला जाओगे, स्काला!" रिनाल्डी बोला।

"हॉ, अब जाऊँगा, प्रति रात्रि।" मैने कहा।

"रोज रात को वहॉ जाने लायक पैसे ही नहीं होगे तुम्हारे पास।" मेजर बोला।

"वहॉ का प्रवेश-शुल्क सचमुच बहुत अधिक है। मै एक काम करूँगा। अपने पितामह के नाम पर एक दर्शनी हुण्डी लिख दूँगा।" मैं बोला।

"क्या लिख दोगे?"

"दर्शनी हुण्डी। मेरे पितामह को उसका भुगतान करना पडेगा, अन्यथा मुझे जेल जाना पडेगा। बैंकवाले कनिगह्म महोदय मेरे लिए ऐसी व्यवस्था कर दिया करते हैं। मै दर्शनी हुण्डियो पर ही तो जीवित रहा रहा हूँ। क्या एक पितामह अपने देशभक्त पोते को, जो इटली को जीवित रखने के लिए अपने प्राणो की बाजी लगा रहा है, कभी जेल जाते देख सकता है?"

"जियो, अमरीकी गैरीबाल्डी, जियो!" रिनाल्डी बोला।

"जीती रहें मेरी दर्शनी–हुण्डियॉ।" मैने कहा।

"हमे अब चुप हो जाना चाहिए।" मेजर ने कहा—"हमसे चुप रहने के लिए पहले भी कई बार कहा जा चुका है। क्या तुम कल सचमुच जा रहे हो, फेडेरिको?"

"यह एक अमरीकी अस्पताल मे जा रहा है। सच!" रिनाल्डी बोला—"सुन्दर नर्सों के बीच। युद्ध-क्षेत्र के दाढीवाले परिचारको (मेल नर्स) के समान वहॉ परिचारिकाऍ नही होगी।"

"हॉ, हॉ, मै जानता हूँ। यह अमरीकी अस्पताल में जा रहा है।" मेजर बोला।

"मुझे उनकी दाढियो से कुछ लेना-देना नहीं है।" मैने कहा—"यदि कोई दाढी रखना चाहे, तो रखे। हमे उससे भला क्या करना है। आप क्यों नहीं बढ़ाते दाढी, मेजर महोदय?"

"पर वह गैसमास्क मे नहीं आ सकती।"

"आ सकती है। गैसमास्क में कुछ भी समा सकता है। मैं तो उसमें एक बार उलटी भी कर चुका हूँ।"

"इतने जोर से मत बोलो, दोस्त!" रिनाल्डी बोला—"हम सब लोग जानते हैं कि तुम मोर्चे पर हो आए हो। लेकिन मेरे भोले दोस्त, जब तुम यहाँ से चले जाओगे, तब मेरा क्या होगा? मै क्या करूँगा?"

"यह निरी भावुकता है।" मेजर बोला—"हमे अब चल देना चाहिए।"

"सुनो, तुम्हारे लिए मेरे पास एक अद्भुत खबर है। वही अंग्रेज युवती—जानते हो न? अरे, वही अंग्रेज लड़की, जिससे मिलने तुम रोज रात को उसके अस्पताल जाया करते थे। वह भी मिलान जा रही है। अपनी एक और सहेली के साथ वह अमरीकी अस्पताल मे काम करने जा रही है। अमेरिका से अभी परिचारिकाएँ आई नहीं है। मै आज उनके दल के प्रमुख से मिला था। मोर्चे पर यहाँ आवश्यकता से अधिक परिचारिकाएँ हैं। उनमे से कुछ वापस भेजी जा रही है। क्यो दोस्त, खबर पसन्द आई?"

"ठीक है।"

"ठीक क्यो न हो? तुम एक बड़े नगर मे रहने जा रहे हो और वहाँ तुम्हे अपने आलिंगन मे बाँधने के लिए तुम्हारे साथ तुम्हारी वह अंग्रेज लड़की भी होगी। वाह री किस्मत! मै कभी घायल क्यों नहीं होता?"

"शायद कभी तुम भी घायल हो जाओ।" मैने उत्तर दिया।

"चलो भाई, अब चले"—मेजर बोला। "हम शराब पीकर शोर मचा रहे है और बेचारे फेडेरिको की शाति में विघ्न डाल रहे हैं।"

"बैठो न, अभी से जाने की क्या जल्दी है!"

"नहीं, अब हमे जाना ही चाहिए। अच्छा, नमस्ते। भाग्य तुम्हारा साथ दे, तुम्हारी कामनाएँ पूरी हो!"

"नमस्ते।"

"नमस्ते। जल्दी लौटना दोस्त!" रिनाल्डी ने मेरा चुम्बन लेते हुए कहा—"तुम्हारे शरीर से जन्तु-विनाशक औषध की गन्ध आ रही है। अच्छा, विदा मेरे मित्र!"

"नमस्ते। अनेक शुभकामनाएँ।"

मेजर ने मेरा कन्धा थपथपाया। वे पंजो की उँगलियो पर चलते हुए, जिससे शोर न हो, चुपचाप बाहर चले गए। मैंने अनुभव किया कि मै गहरे नशे मे हूँ, लेकिन शीघ्र ही मुझे नींद आ गई।

अगले दिन सवेरे हम लोग मिलान के लिए रवाना हो गये और अड़तालीस घण्टे बाद वहाँ पहुँचे। हमारी यह यात्रा बड़ी खराब रही। मेस्त्रे के इसी तरफ, एक स्थान पर हमारी गाडी बड़ी देर तक बगल की लाइन पर खडी कर दी गई और बच्चे आ-आकर डिब्बो के भीतर झाँकने लगे। मैंने एक लडके से एक बोतल कॉग्नेक (शराब) लाने के लिए कहा। किन्तु लौटकर उसने बतलाया कि वहाँ केवल ग्रेप्पा शराब मिल सकती थी। "तो वही ले आओ—" मै बोला। जब वह उसे ले आया, तो मैंने बाकी पैसे उसे ही दे दिये। मैंने और मेरे पास बैठे हुए व्यक्ति ने मिलकर शराब पी और फिर सो गये। विसेन्जा पार करने पर मेरी नींद खुली। उठने पर मेरी तबीयत बडी खराब महसूस हो रही थी। मै फर्श पर लेटा रहा। किन्तु इसमें घबराने की कोई बात नही थी, क्योंकि मेरी बगल का व्यक्ति पहले कई बार बीमार होकर इसी प्रकार फ़र्श पर लेटा रहता था और जानता था कि उससे कुछ होता नहीं है। थोडी देर बाद मुझे बडे जोरों की प्यास मालूम हुई और धीरे-धीरे वह असह्य हो उठी। अतः वेरोना स्टेशन के बाहर, यार्ड मे जब गाड़ी रुकी, तो उसके एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर मारने वाले एक सैनिक को मैंने बुलाया। उसने मुझे पीने के लिए पानी ला दिया। मैंने नशे मे चूर अपने दूसरे साथी जॉर्जेट्टी को उठाया और उसे भी थोड़ा पानी देने लगा। उसने मुझसे अपने कंधे पर पानी डालने के लिए कहा और फिर सो गया। मैंने सैनिक को एक पेनी इनाम देना चाहा, किन्तु उसने लेने से बिलकुल इनकार कर दिया। उल्टे वह मेरे लिए एक बढ़िया संतरा ले आया। मै उसे चूसकर उसकी छूंछे बाहर थूकते हुए उस सैनिक को देखता रहा, जो अब एक माल के डिब्बे के सामने एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहरा दे रहा था। थोड़ी देर बाद हमारी गाड़ी एक झटके के साथ वहाँ से चल पड़ी।

द्वितीय खण्ड

. १३ .

हम सबेरे के धुँधलके में मिलान पहुँचे। वहाँ हमें माल—गोदाम में उतारा गया। एक एम्बुलेन्स मुझे अमरीकी अस्पताल ले गई। मै टिकठी पर लेटा था, अतः मोटर में जाते समय मुझे यह नही मालूम हो सका कि हम लोग शहर के किस भाग से गुजर रहे थे। किन्तु जब टिकठी उतारी गई, तो मुझे एक बाज़ार दिखाई दिया। सामने ही मैने शराब की एक खुली हुई दुकान देखी, जिसमे एक लडकी झाड लगा रही थी। सड़क पर पानी छिड़का जा रहा था और उसमे से सुबह की सोंधी गध उठ रही थी। टिकठी ढोनेवाले मुझे नीचे छोडकर भीतर गये। वे जब लौटे, तो उनके साथ एक दरबान भी बाहर आया। उसके मुख पर भूरी-भूरी मूँछे थी। वह दरबान की टोपी लगाए था और पूरी बाँहो वाली कमीज पहने था। टिकठी लिफ्ट के भीतर नही जा रही थी; अतः सब लोग विचार करने लगे कि मुझे ऊपर कैसे ले जाया जाये—टिकठी पर से उतारकर लिफ्ट में अथवा टिकठी-समेत सीढियो पर होकर। मैं उन्हें आपस मे बहस करते हुए सुनता रहा। अन्त मे उन्होने मुझे लिफ्ट द्वारा ही ले जाने का निश्चय किया और मै टिकठी पर से उतार लिया गया।

"आहिस्ते!" मैंने कहा—"सावधानी से ले चलो!"

हम लिफ्ट में समा नहीं रहे थे। मेरी टाँगे मोडनी पड़ी और उसके साथ ही उनमे बड़े जोर का दर्द होने लगा। "जरा टाँगे सीधी कर दो।" मै बोला।

"कैसे सीधी करें, लैफ्टिनेण्ट महोदय! यहाँ जगह तो है ही नहीं।" जिस व्यक्ति ने उत्तर दिया, वह मुझे अपनी बाँहों मे लपेटे था और मेरी बाँह उसके गले से लिपटी थी। लहसुन और लाल शराब की गध से भरी हुई उसकी साँस सीधे मेरे मुँह पर पड़ रही थी।

"ज़रा सभ्यतापूर्ण व्यवहार कीजिए।" दूसरा व्यक्ति बोला।

"कुतिया के बच्चे! क्या मै असभ्य बाते कर रहा हूँ?"

"मै कहता हूँ, जरा सभ्यता से पेश आइए।" वह व्यक्ति बोला, जो मेरे पैर पकड़े था।

मैंने लिफ्ट के द्वार बंद होते हुए देखे। उसकी जाली बन्द हुई और लिफ्टमैन ने चौथी मजिल का बटन दबाया। दरबान कुछ चितित दिखाई दे रहा था। लिफ्ट धीमी गति से ऊपर उठने लगा।

"वजन अधिक हो गया है क्या?" मैंने उस लहसुन की गधवाले आदमी से पूछा।

"नही।" वह बोला। उसका मुँह पसीने से तर हो रहा था और वह गुरगुरा रहा था। लिफ्ट स्थिर गति से ऊपर उठता हुआ अन्त मे खड़ा हो गया। जिस व्यक्ति ने मेरे पैर पकड़ रखे थे, उसने लिफ्ट का दरवाज़ा खोला और हम बाहर निकल आये। हम अब एक बरामदे मे थे। उसमें पीतल की मूठवाले बहुत-से दरवाजे थे। पैरो की ओर से मुझे सँभालनेवाले व्यक्ति ने एक बटन दबाकर घण्टी बजाई। दरवाजे के भीतर बजती हुई घण्टी का स्वर हमें सुनाई दिया; किन्तु कोई बाहर नही निकला। तभी सीढियो पर से दरबान ऊपर आया।

"कहाँ हैं ये लोग?" टिकठी ढोनेवालों ने उससे पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।" दरबान बोला—"वे सब नीचे की मज़िल पर सोते हैं।"

"किसी को बुला दो, जार।"

दरबान ने घण्टी बजाई और फिर द्वार खटखटाया। कोई उत्तर न मिलने पर वह द्वार खोलकर भीतर चला गया। जब वह बाहर निकला, तो उसके साथ चश्मा लगाए हुए एक अधेड़-सी औरत थी। उसके केश खुले हुए थे, आधे झड़ चुके थे और वह एक परिचारिका के कपड़े पहने थी।

"मै समझ नहीं सकती—" वह बोली—"मै इटालियन भाषा नहीं समझ सकती।"

"मैं अंग्रेजी जानता हूँ।" मै बोला—"ये लोग मुझे यहाँ किसी कमरे मे पहुँचाने के लिए आए हैं।"

"अभी कोई कमरा तैयार नहीं है। हमें यहाँ किसी रोगी के आने की सूचना नहीं मिली है।" अपने खुले केशो का जूड़ा बाँधते हुए उसने मेरी ओर घूरकर देखा।

"इन्हें कोई भी ऐसा कमरा बता दीजिये, जहाँ ये लोग मुझे पहुँचा सके।"

"यह कैसे हो सकता है।" वह बोली—"यहाँ किसी को पता ही नही है कि कोई रोगी आने वाला है। मैं आपको हर किसी कमरे में तो नही पहुँचा सकती।"

"कोई भी कमरा काम देगा।" मैने कहा और दरबान को इटालियन भाषा मे आदेश दिया "देखो, कोई कमरा खाली है क्या?"

"सभी कमरे खाली पडे है।" दरबान ने उत्तर दिया—"आप ही पहले रोगी है, जो यहॉ लाये गए है।" उसने अपनी टोपी हाथ मे पकड़ते हुए उस औरत की ओर देखा।

"ईश्वर के लिए, दया करके, मुझे किसी कमरे में पहुँचाइए।" टॉगो के लगातार झुके रहने के कारण दर्द बढ़ता जा रहा था। दरबान दरवाजे मे घुसा। सफ़ेद-केशोवाली वह परिचारिका भी उसके पीछे-पीछे चल दी। दरबान शीघ्र ही लौट आया। "मेरे पीछे आइए" वह बोला। एक लम्बा दालान पार करते हुए वे मुझे एक कमरे मे ले गए। कमरे की खिड़कियो पर पर्दे डाल दिए गए थे। वह नये फर्नीचर की गध से महक रहा था। उसमें एक पलग पड़ा था। कपडे रखने की एक आलमारी भी थी, जिसमे एक बड़ा दर्पण लगा था। उन्होने मुझे पलग पर लिटा दिया। "मै चादर नही बिछा सकती।" परिचारिका ने कहा—"सब चादरें ताले मे बन्द है।"

मै उससे कुछ न बोला। "मेरी जेब में पैसे है—" मैने दरबान से कहा—"बटन लगे हुए नीचे की जेब मे।" दरबान ने पैसे निकाले। अपनी-अपनी टोपियॉ हाथो मे लिए दोनो टिकठी ढोनेवाले मेरे बिस्तर की बगल मे खडे थे। "इनमे से प्रत्येक को पॉच-पॉच लायर दे दो और पॉच तुम स्वयं रख लो। दूसरी जेब मे मेरे विषय के काग़जात हैं। उन्हे निकालकर परिचारिका को दे दो।" मैने दरबान को आदेश दिया।

टिकठी वाहकों ने फ़ौजी ढग से सलाम करते हुए मुझे धन्यवाद दिया। मैने उनसे विदा ली और कहा—"तुम्हे बहुत-बहुत धन्यवाद!" उन्होने मुझे फिर फ़ौजी ढग से सलाम किया और चले गये।

"उन काग़जात मे—" मैने परिचारिका से कहा—"मेरी बीमारी और उसकी अभी तक क्या चिकित्सा हुई है, इस विषय का पूरा विवरण है।"

परिचारिका ने उन्हे उठाया और अपने चश्मे के भीतर से उन्हें देखना आरम्भ किया। सिर्फ़ तीन ही काग़ज थे, जो मुडे हुए थे। "समझ मे नहीं आता, मै क्या करूँ।" उसने कहा—"मै इटालियन नहीं पढ सकती। डाक्टर के आदेश बिना मैं कुछ कर भी नहीं सकती।" वह रोने लगी और उसी अवस्था में उसने उन कागजात को अपने लबादे की जेब में रख लिया। "आप अमरीकी हैं?" रोते-रोते ही उसने पूछा।

"जी हॉ। कृपया आप उन काग़ज़ात को पलंग के पास की मेज़ पर रख दीजिये।"

कमरा धुँधला और ठण्डा था। बिस्तर पर लेटे हुए मै कमरे की दूसरी ओर स्थित उस बड़े दर्पण को तो देख सकता था, किन्तु उसमें जो छाया पड़ रही थी, उसे नही देख पाता था। दरबान पलंग के पास ही खड़ा था। देखने मे वह बड़ा सुन्दर था और कोमल हृदय और अच्छे स्वभाव का प्रतीत होता था।

"तुम जा सकते हो।" मैने उससे कहा। "और आप भी नर्स।" मैंने परिचारिका से कहा—"हॉ, आपका नाम क्या है?"

"श्रीमती वॉकर।"

"आप जा सकती है, श्रीमती वॉकर। मै अब सोना पसद करूँगा।"

मै वहॉ अकेला रह गया। कमरा ठंढा था और उसके वातावरण मे अस्पताल-जैसी कोई गन्ध नहीं थी। गद्दा मोटा और काफ़ी आरामदेह था। मै उस पर बिना हिले-डुले पड़ा रहा। दर्द धीरे-धीरे कम होता जा रहा था, अतः मै अब कुछ आराम का अनुभव कर रहा था। थोडी देर बाद मुझे प्यास लगी और मैंने पानी पीना चाहा। बिस्तर के पास ही मुझे घण्टी की डोरी लटकती दिखायी दी। मैंने घण्टी बजाई, किन्तु कोई आया नहीं। निराश होकर मै बिना पानी पिये ही सो गया।

जब मै सोकर उठा, तो मैंने चारो ओर दृष्टि दौडाई। खिडकियो के रोशन-दानो से कुछ प्रकाश-किरणें कमरे मे घुस आयी थी। तभी मेरी नजर सूनी दीवारों और दो कुर्सियो पर पड़ी। गन्दी पट्टियो मे लिपटी हुई मेरी टॉगें बिछौने मे बिलकुल सीधी और लम्बी होकर जैसे चिपक गयी थीं। बड़ी सावधानी से मै उन्हे हिलने-डुलने से बचाता रहा। मुझे ज़ोर की प्यास लगी थी। मैंने घण्टी की डोरी तक हाथ बढाया और घटी बजायी। तुरन्त ही मुझे द्वार खुलने का शब्द सुनाई दिया और मैंने एक परिचारिका को कमरे के भीतर आते देखा। वह जवान और सुन्दर प्रतीत हो रही थी। "सुप्रभात" मै बोला। "सुप्रभात!" कहते हुए वह पलग के समीप आ गयी—"हम अभी तक डाक्टर को यहॉ बुलाने मे समर्थ नहीं हो सके हैं। वह लेक-कोमो गया है। किसी को इस बात का पता ही नहीं था कि यहॉ कोई रोगी भी आने वाला है। खैर, आपको क्या तकलीफ है?"

"मैं युद्धक्षेत्र मे आहत हो गया हूॅ—मेरे पैरों तथा सिर मे कई घाव लगे हैं।"

"आपका नाम क्या है ?"

"हेनरी---फ्रेडरिक हेनरी !"

"अभी मै आपको नहला देती हूँ। पर पट्टियाँ बदलने के विषय मे डाक्टर के आने तक कुछ नही किया जा सकता।"

"क्या मिस बर्कले यहाँ है ?"

"नही, यहाँ इस नाम का कोई नही है।"

"जब मै यहाँ आया था, तब जो परिचारिका मेरे सामने रोई थी, वह कौन थी ?" यह परिचारिका हँस पड़ी—"वह श्रीमती वॉकर है। वह रात की ड्यूटी पर थी और सो गई थी। असल मे उसे तनिक भी आशा नहीं थी कि कोई आने वाला है।"

बाते करते-करते वह मेरे कपड़े भी उतारती जा रही थी। पट्टियो के सिवा उसने मेरे शेष कपडे उतार दिये और मेरे शरीर को बड़े हौले-हौले और सावधानी से पानी से धोकर पोछ डाला। शरीर धुलने पर मुझे बड़ा अच्छा लगा। मेरे सिर पर पट्टी बँधी थी। उसने उसके किनारे-किनारे भी मेरा सारा सिर धो दिया।

"आप कहाँ घायल हुए थे ?"

"प्लावा के उत्तर की ओर, इसोन्जो पर।"

"वह कहाँ है ?"

"गोरीजिया के उत्तर मे।"

मैने देखा कि वह उनमे से एक स्थान का भी नाम नहीं जानती थी।

"क्या आपको बहुत दर्द होता है ?"

"अभी तो अधिक नहीं है।"

उसने मेरे मुँह में ज्वरमापक-यंत्र रखा।

"इटालियन लोग इसे बाँह के नीचे, काँख मे रखते हैं।"

"बोलिये मत।"

उसने ज्वरमापक-यत्र बाहर निकला और उसे पढ़कर झटकार दिया।

"कितना तापमान है ?"

"आपको यह जानने का अधिकार नहीं है।"

"फिर भी, बतलाइए तो सही।"

"करीब-करीब सामान्य है।"

"मुझे कभी ज्वर नहीं रहता। मेरी टाँगो में भी पुराना लोहा भरा पड़ा है"

" क्या मतलब ? "

" यही कि उनमें खाई में फेके गए बम के टुकड़े, पुराने पेच, पलगो की कमानियाँ और बहुत-सी अन्य वस्तुएँ घँस गई हैं। "

उसने अपना सिर हिलाया और मुस्करा पड़ी—" यदि आपकी टॉगो मे कोई बाहरी वस्तु होती, तो उसके कारण सूजन आ जाती और आपको बुखार होता। "

" ठीक है। " मै बोला—" देखे, क्या निकलता है पैरो से। "

वह कमरे से बाहर गई और सुबह वाली उस अधेड परिचारिका को लेकर लौट आई। उन दोनो ने मुझे उठाए बिना ही बिस्तर साफ किया। यह सब मेरे लिए बिलकुल नया था। और वह कुछ इस आरामदेह ढग से किया गया था कि मै उसकी प्रशसा किये बिना नहीं रह सका।

" यहाँ का अधिकारी कौन है ? "

" मिस वॉन कॅम्पेन। "

" कितनी परिचारिकाएँ हैं यहाँ ? "

" केवल हम दोनो। "

" क्या और नहीं आयेंगी ? "

" कुछ और आनेवाली हैं। "

" वे यहाँ कब पहुँचेगी ? "

" कह नही सकती। बीमार होते हुए भी आप बहुत-से प्रश्न पूछ रहे हैं। "

" मै बीमार नही हूँ—घायल हूँ। " मैने कहा।

उन्होने मेरा बिस्तर साफ-सुथरा बना दिया। साफ और धुली हुई चादर पर लेटे-लेटे मैने एक चादर ओढ़ भी ली। श्रीमती वॉकर बाहर जाकर एक पायजामा और जैकेट ले आई। उसने मुझे वह पहना दिया। साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर मुझे बड़ा आराम अनुभव हुआ।

" आप मुझ पर बड़ी कृपालु हैं। " मैने कृतज्ञता प्रकट की। मिस गेज नामक नर्स खिसियानी-सी हँसी हँस दी।

" क्या मुझे, पीने के लिए थोडा पानी मिल सकता है ? " मैने पूछा।

" क्यों नहीं। उसके बाद आप प्रातःकालीन जलपान करेगे। "

" नहीं, मुझे जलपान नहीं चाहिए। क्या आप कृपा कर ये खिड़कियाँ खुलवा सकती हैं ? "

कमरे मे धुँधला-सा प्रकाश छाया था। जब खिड़कियाँ खोल दी गई, तो सूर्य

का तीव्र प्रकाश चारो ओर फैल गया। मैने खिड़की से बाहर की ओर देखा। घरो की खपरैल से ढॅकी छतें और आकाश की ओर सिर उठाये उनकी चिमनियॉ चमक रहीं थीं। मैने खपरैल की उन छतो को देखा। बगुले के समान श्वेत बादल और गहरा नीला आकाश भी दिखाई दे गया।

"क्या आपको इस बात का पता नही है कि दूसरी परिचारिकाएँ कब आने वाली हैं?"

"क्यो? क्या हम लोग आपकी अच्छी तरह देख-भाल नही करती?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नही है। आप लोग सचमुच बड़ी उदार है।"

"क्या आप प्रातःक्रिया से निवृत्त होने के लिए शौचपात्र (बेडपैन) का उपयोग करेंगे?"

"मै प्रयत्न करूँगा।"

उन्होने मुझे उठने मे सहायता दी और हाथो का सहारा दिया; किन्तु कोई लाभ न हुआ। उसके बाद मै बिस्तर पर लेटकर खुले हुए दरवाजे से बरामदे की ओर देखने लगा।

"डाक्टर यहॉ कब आने वाला है?"

"लेक-कोमो से लौटने पर। हमने टेलिफोन द्वारा उससे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया है।"

"क्या यहॉ और डाक्टर नही है?"

"इस अस्पताल का डाक्टर वही है।"

मिस गेज एक बर्तन मे पानी और एक गिलास ले आई। मैने तीन गिलास पानी पिया। फिर वे वहॉ से चली गई। मै थोड़ी देर तक खिड़की से बाहर देखता रहा और पुनः सो गया। उठने पर मैंने थोडा खाना खाया। तीसरे पहर अस्पताल की सुपरिन्टेडेंट मिस वॉन केम्पेन मुझे देखने मेरे कमरे में आई। न तो उसने मुझे पसन्द किया और न ही वह मुझे अच्छी लगी। वह ठिगनी और बहुत शकालु स्वभाव की औरत थी। जिस पद पर वह थी, उसके वह सर्वथा अयोग्य थी। उसने मुझसे कई प्रश्न पूछे और मुझे ऐसा आभास हुआ कि मेरा इटालियन सेना के साथ होना उसे बड़ा अपमानजनक प्रतीत हुआ।

"क्या मै भोजन के साथ शराब पी सकता हूँ?" मैने उससे पूछा।

यदि डाक्टर ने बताया तो।"

तो क्या उसके पहले मै नहीं पी सकता?"

एक बूँद भी नहीं।"

"आखिर आप उसे कब तक बुला रही है?"

"हम लोगो ने लेक-कोमो में उसे टेलीफोन किया है।" कहते हुए वह बाहर चली गई और कुछ ही क्षणो बाद मिस गेज कमरे मे आयी।

"आपने मिस वान केम्पेन से इतना अभद्र व्यवहार क्यो किया?" मेरे लिए कुछ काम करते हुए उसने बडी चतुराई से मुझसे पूछा।

"अभद्र व्यवहार करने का मेरा इरादा बिलकुल नही था। पर वह भी तो क्रोध मे लाल-पीली हो रही थी।"

"वह बता रही थी कि आप उसके साथ बडी अकड़ और अशिष्टता से पेश आए।"

"नहीं, मैंने ऐसा कुछ नही किया। किन्तु आप ही बताइए कि बिना डाक्टर के अस्पताल चलाने का क्या अर्थ है?"

"नहीं, डाक्टर आ रहा है। उसे लेक-कोमो में टेलिफोन कर दिया गया है।"

"वहॉ जाकर वह क्या करता है? झील में तैरता है?"

"नहीं-नहीं, वहॉ उसका रुग्णालय (क्लिनिक) है।"

"तब दूसरा डाक्टर क्यो नहीं रखा जाता?"

"चुप! चुप! ऐसा नहीं कहते। धीरज रखिये, वह अभी आ जायेगा।"

मैंने उससे दरबान को बुला देने के लिए कहा। जब वह आया, तो मैंने इटालियन भाषा मे उससे शराब की दुकान पर से सिन्जानो (एक शराब) और किआटी नामक लाल इटालियन शराब की बोतलें और कुछ सन्ध्याकालीन समाचारपत्र लाने के लिए कहा। वह गया और एक समाचारपत्र में लपेटकर उन्हें ले आया। कमरे मे आकर उसने उन पर लपेटा हुआ काग़ज निकाल दिया। मैंने उससे बोतल का डाट खोलकर शराब की दोनो बोतलें बिस्तर के नीचे रख कर चले जाने के लिए कहा। अब मै वहॉ अकेला था। बिस्तर पर पडे-पड़े मै थोडी देर तक समाचारपत्र पढ़ता रहा। मैंने युद्ध-क्षेत्र के समाचार पढ़े, मृत अफसरो तथा उन्हे मिले हुए पुरस्कारो के बारे में पढा। फिर मेरा हाथ बिस्तर के नीचे पहुँचा और मैंने सिन्जानो की बोतल उठा ली। बोतल मैंने अपने पेट पर सीधी खड़ी कर दी, ठण्डे-ठण्डे गिलास को भी पेट पर टिका लिया और एक-एक घूँट गले के नीचे उतारने लगा। शराब पीते हुए मै बोतल को पेट पर टिका कर उसकी पेंदी से वृत्त बनाता रहा और कमरे से बाहर, मकान की छतो पर धीरे-धीरे बढते हुए अन्धकार के आवरण को देखता रहा। छतों के आसपास चिड़ियॉ चक्कर काट रही थी। कुछ ऊपर उल्लू उड़ रहे थे। यही सब

देखते हुए धीरे-धीरे मैं सिन्जानो की बोतल खाली करता गया। इसी बीच मिस गेज अपने हाथ मे अण्डा मिली हुई कुछ गरम बीअर से भरा गिलास लेकर आई। मैने उसे अन्दर आते देखकर अपनी शराब की बोतल चुपके से पलग की दूसरी ओर खिसका दी।

"मिस वान केम्पेन ने इसमे कुछ शरी (शराब) भी डलवा दी है।" वह बोली—"आपको उनके सामने इतना मुँहफट नही होना चाहिए था। वे अब युवती नहीं हैं और फिर इस अस्पताल की इतनी बडी जिम्मेदारी भी तो उन्हीं पर है। श्रीमती वॉकर काफी बूढी है और उनके किसी काम लायक नही है।"

"वह बडी अच्छी स्त्री है।" मैने कहा—"कृपया उसे मेरी ओर से धन्यवाद दे दीजिएगा।"

"मैं अभी आपके लिए रात का भोजन लाती हूँ।"

"कोई बात नही।" मैने कहा—"मुझे भूख नही लगी है।"

पर वह भोजन की थाली ले आई और उसे पलग के पास की मेज पर रख दिया। मैने उसे धन्यवाद देते हुए थोड़ा-सा खाना खाया। बाहर अंधेरा छा गया था। आकाश मे शत्रु की गतिविधि का पता लगाने के लिए सर्चलाइट अपनी प्रकाश-किरणे फेक रहा था। कुछ देर तक उन्हे देखते रहने के बाद मै सो गया। मुझे गहरी नीद आयी। बीच मे केवल एक ही बार मै उठा। वह भी इसलिए कि मैने एक भयावह स्वप्न देखा था। डर के कारण मै पसीने मे बिलकुल भीग गया था। किन्तु मैने उस स्वप्न को भूलने का प्रयत्न किया और थोड़ी देर मे ही गाढी नीद में डूब गया। प्रातःकाल का प्रकाश फैलने से बहुत पहले ही मेरी आँखे खुल गई। मुझे मुर्गे की बाग भी सुनाई दी। अनिद्रित अवस्था में ही मै प्रकाश होने तक अपने बिस्तर पर पडा रहा। मुझे बहुत थकावट महसूस हो रही थी, अतः जब दिन का प्रकाश अच्छी तरह फैल रहा था, तब उठने के बदले मै फिर सो गया।

१४

जब मैं जागा, तो सूर्य का प्रखर प्रकाश सर्वत्र फैल चुका था। क्षणभर के लिए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मै मोर्चे पर हूँ। मैने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही अपनी टाँगे फैलाई और उनमे दर्द होने लगा। मैने सिर घुमा कर उन्हे देखा।

वे अभी भी गन्दी पट्टियो मे लिपटी थीं। किन्तु उन्हे देखकर मुझे याद आ गया कि मै कहाँ हूँ। मैंने घण्टी की डोरी खीची और बाहर बरामदे मे बजती हुई घण्टी की घनघनाहट के साथ ही, मुझे किसी के जूतो के रबर के तलो की आवाज कमरे के निकट आती हुई सुनाई दी। वह मिस गेज थी। सूर्य के तीव्र प्रकाश मे वह रात की अपेक्षा कुछ अधिक उम्र की लग रही थी और उतनी सुन्दर भी नही दीख रही थी।

"नमस्ते!" उसने कहा—"आपकी रात तो अच्छी तरह बीती न?"

"जी हाँ, धन्यवाद!" मैंने उत्तर दिया—"क्या यहाँ कोई नाई मिल सकता है?"

"मै आपको देखने आई थी, किन्तु उस समय आप बिस्तर मे इसे लेकर सोए पड़े थे।"

उसने आलमारी खोलकर उसमें से सिन्जानो (शराब) की बोतल निकाली। वह करीब-करीब खाली थी। "मैंने बिस्तर के नीचे से दूसरी बोतल भी निकाल कर वही रख दी है।" उसने कहा—"आपने मुझसे गिलास क्यो नहीं माँग लिया?"

"मैंने सोचा, शायद आप मुझे शराब न पीने दें।"

"मै भी आपके साथ थोड़ी पी लेती।"

"आप बड़ी भली युवती है।"

"आपके लिए अकेले-ही-अकेले शराब पीना ठीक नहीं है।" वह बोली—"आपको ऐसा नही करना चाहिए।"

"अच्छी बात है।"

"आपकी मित्र मिस बर्कले आ गई है।" उसने कहा।

"सच?"

"हाँ, पर मुझे वह अच्छी नही लगती।"

"आप उसे पसन्द करने लगेंगी। वह बड़ी अच्छी लड़की है।"

उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"मुझे आशा है कि वह एक अच्छी लडकी सिद्ध होगी। क्या आप जरा इस ओर हटेंगे? हाँ, बस। मै आपको नाश्ते के लिए तैयार कर देती हूँ।"

उसने गरम पानी मे साबुन मिलाया और कपडा भिगोकर मेरे शरीर को पोंछना शुरू किया। "अपने कंधे जरा ऊपर रखिए।" वह बोली—"हाँ, बस!"

"क्या नाश्ता करने के पहले कोई नाई मिल सकता है?"

"मै दरबान को उसे बुलाने के लिए भेज देती हूँ।" वह बाहर जाकर फिर लौट आई। "वह उसे बुलाने गया है" उसने कहा। और अपने हाथ के कपड़े को पानी के बर्तन मे डुबाया।

थोडी देर मे ही दरबान के साथ नाई आ गया। उसकी आयु पचास वर्ष के आसपास थी। उसकी मूँछे ऊपर की ओर मुडी हुई थी। मेरा शरीर पोछने का काम खत्म हो गया था, अतः मिस गेज चली गई। नाई ने मेरी दाढी पर साबुन लगाया और दाढी बनाना आरम्भ किया। वह बड़ा गम्भीर दिखाई देता था और गुमसुम बैठा हुआ था।

"क्या बात है? तुम इस तरह गुमसुम क्यो हो? क्या तुम कोई खबर नही जानते?" मैंने उसे प्रोत्साहन दिया।

"कैसी खबर?"

"कोई भी। शहर की ही कोई खबर!"

"यह युद्ध का समय है।" वह बोला—"हर स्थान पर शत्रु के कान लगे रहते हैं।"

मैंने अपना सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

"कृपया अपना चेहरा स्थिर रखिए।" कहते हुए वह फिर अपने काम में लग गया।

"मै आपको कुछ नही बताऊँगा।" वह बोला।

"पर तुम्हें हो क्या गया है?" मैंने पूछा।

"मै इटालियन हूँ और मै अपने शत्रु से कभी बात नही करता।"

मैंने उससे बात करने का विचार छोड़ दिया। यदि वह सनकी था, तो जितनी जल्दी उसके छुरे के नीचे से मेरी गर्दन छूट जाती, उतना ही अच्छा था। बीच मे एक बार मैंने उसकी ओर दोस्ती की नजरों से देखा। "सँभलिए!" उसने कहा—"छुरा बड़ा तेज है।"

दाढ़ी बन जाने पर मैंने उसका मेहनताना चुकाया और इनाम के रूप मे आधा लिरा अधिक दिया, किन्तु उसने उसे वापस कर दिया।

"नही, मै नही लूँगा। मोर्चे पर नहीं हूँ, तो क्या हुआ; पर हूँ तो इटालियन ही।"

"तब जाओ, भागो यहाँ से!"

"यदि आपकी आज्ञा हो, तो।" उसने बड़ी विनम्रता से कहा और एक समाचारपत्र के टुकड़े मे अपना छुरा लपेट कर चला गया। जाते हुए उसने बिस्तर के पास की मेज पर, उसे दिए गए तांबे के पॉच सिक्के रख दिये।

मैने घण्टी बजाई। मिस गेज भीतर आई। "क्या आप मेहरबानी कर के दरबान को बुलाने का कष्ट करेंगी?"

"अभी लीजिये।"

दरबान आया। मैने देखा कि वह अपनी हँसी दबाने का प्रयत्न कर रहा था।

"यह नाई कुछ सनकी है क्या?"

"नही साहब! उसे थोड़ी ग़लतफहमी हो गई थी। वह कोई भी बात अच्छी तरह नही समझता। जब मैने उससे आपके विषय मे कहा, तो वह समझा कि आप आस्ट्रियन अफ़सर हैं।"

"ओह!" मेरे मुँह से निकला।

"हा, हा, हा, हा!" दरबान की हँसी फूट पडी—"बड़ा मजेदार आदमी था वह। उसने मुझे बताया था, आपकी ओर से ज़रा-सी भी कोई बात होती कि वह .... ." उसने अपनी गर्दन पर उँगली फिराते हुए इशारा किया।

"हो, हो, हो!" वह हँसी दबाने का प्रयत्न करते हुए बोला—"जब मै उससे कहूँगा कि आप आस्ट्रियन नहीं हैं—हो, हो, हो, हो!"

"हः हः हः!" मैने खीझते हुए कर्कश स्वर मे दुहराया। "यदि वह मेरा गला काट देता, तो कितना आनन्द आता—क्यो? हो, हो, हो!"

"नही साहब। ना, ना। वह तो आस्ट्रियन नाम सुनकर ही बड़ा डर गया था। हो, हो, हा, हा!"

"हो, हो, हो!" मै गुर्राया— "चलो, भागो यहाँ से!"

वह बाहर भागा। मैने सुना, वह बरामदे मे खड़ा-खडा जी खोलकर हँस रहा था। इतने ही मे मुझे अपने कमरे की ओर आती हुई किसी के पैरों की आवाज़ सुनाई दी। मैने द्वार की ओर देखा। मिस बर्कले अंदर आ रही थी।

वह मेरी ओर आई और पलग से सटकर खड़ी हो गयी।

"कहो प्रियतम!—" वह बोली। वह बड़ी उल्लसित, तारुण्यपूर्ण और अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रही थी। मैने अभी तक इतना सौन्दर्य कहीं नहीं देखा था।

"अरे!" मैने कहा। उससे साक्षात्कार होते ही उसके प्रति मेरा सुप्त प्रेम जाग उठा। मेरे शरीर का रोम-रोम उल्लसित हो उठा। कैथरीन ने द्वार की ओर देखा। वहाँ कोई नही था। वह मेरे बिस्तर पर बैठ गयी, मेरे ऊपर झुकी और मुझे उसने चूम लिया। मैने उसे अपनी ओर खीच लिया और प्रगाढ आलिंगन मे कसकर उसका चुम्बन ले लिया। एक लम्बे युग के बाद जैसे उसके हृदय की धड़कने मुझे सुनायी पड़ी—बिलकुल पास—अपनी धड़कनो के समीप!

"प्रियतमे !" मेरे मुँह से निकला--"क्या तुम्हारा यहाँ आना आश्चर्य की बात नही है ?"

"आना कोई कठिन नही था। हाँ, यहाँ टिकना कठिन हो सकता है।"

"नही, तुम्हे यही रहना होगा।" मै बोला—"ओह ! तुम कितनी मोहक हो—बिलकुल स्वप्न-सदृश !" मै उसे देखकर पागल-सा हो उठा था। मुझे जैसे अपने नेत्रो पर ही विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सचमुच वहाँ आ गई है। इसी अर्द्ध स्वप्नावस्था मे मै उसे न-जाने कबतक अपने हृदय से लगाये रहा।

"ऊँ-हूँ ! यह सब नही।" वह बोली "तुम्हारी तबीयत ठीक नही है।" और वह मुझसे अलग होकर दूर बैठ गई।

"मै ठीक हूँ। आओ भी। यहाँ आओ, मेरे पास।"

"ना, ना। तुम अभी कमजोर हो।"

"मै बिलकुल तन्दुरुस्त हूँ। मान भी जाओ—इस तरह मुझसे दूर मत बैठो।"

"तुम मुझसे प्रेम करते हो ?"

"मै सचमुच तुमसे प्रेम करता हूँ। मै तुम्हारे पीछे पागल हो गया हूँ—बिलकुल दीवाना। मान जाओ, प्रिये !"

"हमारे दिलो की धडकनें सुनते हो तुम ?"

"मै उनकी परवाह नही करता। मै तुम्हे चाहता हूँ। तुम्हारे लिए मै अधीर हो उठा हूँ—पूर्णतः उन्मत्त !"

"क्या तुम मुझसे सचमुच प्रेम करते हो ?"

"बार-बार वही बात मत दुहराओ। मान जाओ—कैथरीन मेरी, मान भी जाओ मेरी बात, प्रिये !"

"अच्छा, किन्तु क्षणभर के लिए ही।"

"यही सही।" मैने अधीरतापूर्वक कहा—"द्वार बन्द कर दो।"

"नही नही, तुम ऐसा नही कर सकते। तुम्हे ऐसा नही ...."

"आओ भी। बात मत करो। चलो !"

कथरीन बिस्तर के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। दरवाज़ा खोल दिया गया।

मेरे अंतर का पशुत्व समाप्त हो चुका था और मै, स्वयं को पहले की अपेक्षा अधिक स्फूर्तिमय अनुभव कर रहा था।

"अब तो तुम विश्वास करते हो कि मै तुमसे प्रेम करती हूँ ?" उसने पूछा।

"ओह, तुम कितनी मोहक हो—कितनी अच्छी!" मैंने उत्तर दिया—"तुम्हें यही रहना पड़ेगा। कोई तुम्हे यहाँ से दूसरी जगह नहीं भेज सकता—मुझसे अलग नहीं कर सकता। मै तुम्हारे प्रेम में अपने-आपको बिलकुल भूल चुका हूँ।"

"हमें बहुत सावधान रहना पड़ेगा। अभी-अभी जो कुछ हुआ, वह पूरा पागलपन था। हम हमेशा ऐसा नही कर सकते।"

"क्यो नही? हम रात मे वैसा कर सकते हैं।"

"फिर भी हमे बहुत सावधानी बरतनी पड़ेगी। दूसरो के सामने तुम्हें अपने-आप पर पूर्ण नियन्त्रण रखना होगा।"

"मै इसका ध्यान रखूँगा।"

"तुम्हे ध्यान रखना ही पड़ेगा। तुम कितने मधुर हो! तुम मुझसे प्रेम करते हो। करते हो न?"

"इसे मत दुहराओ। तुम नहीं जानती कि इससे मेरे हृदय पर कितनी चोट पहुँचती है!"

"तब मै तुम्हारा हृदय नही दुखाऊँगी। मै तुम्हे कोई कष्ट नही देना चाहती। अब मुझे जाना है—प्रियतम! सच!"

"लौटने में देर न करना।"

"समय मिलते ही आऊँगी।"

"अच्छा, विदा।"

"विदा—मेरे प्राण!"

वह बाहर चली गयी। ईश्वर जानता है कि मै उसके प्रेम मे नहीं फँसना चाहता था। मै किसी के भी प्रेम-जाल मे नहीं पड़ना चाहता था। किन्तु ईश्वर यह भी जानता है कि मै उसके प्रेम मे बँध चुका था। मिलान के उस अस्पताल के एक कमरे में अपने पलग पर पड़ा हुआ मै न-जाने क्या-क्या सोचने लगा। मेरे मानस-पटल पर एक साथ हजारो बाते उभर आयीं और तभी मिस गेज ने कमरे के भीतर पैर रखा।

"डाक्टर आ रहा है।" उसने बताया—"लेक-कोमो से उसने टेलीफोन द्वारा ख़बर भेजी है।"

"यहाँ वह कब तक पहुँचेगा?"

"आज तीसरे पहर तक।"

१५

तीसरे पहर तक कोई विशेष बात नही हुई। तभी डाक्टर आया। वह शात स्वभाव का, दुबला-पतला और ठिगना व्यक्ति था। ऐसा लगा, जैसे युद्ध ने उसे काफी परेशान कर दिया था। उसने बडी कोमलता और शिष्टता के साथ पूर्णतया निर्विकार भाव से मेरी जाघ मे से लोहे के अनेक छोटे-छोटे टुकडे निकाले। मेरे उस अंग को चेतनाशून्य बनाने के लिए उसने एक नयी और स्थानीय औषधि का प्रयोग किया, जिसका नाम 'बर्फ' के नाम से मिलता-जुलता था। औषधि ने मेरे स्नायुओं को बर्फ़-सा जमाकर चेतनाहीन कर दिया। मुझे उस समय तक दर्द भी नहीं मालूम हुआ, जब तक डाक्टर ने उस चेतनाशून्य भाग के नीचे अपनी सलाई, छुरी या चिमटी नहीं घुसेड दी। और तब मेरे लिए यह बताना आवश्यक हो गया कि मेरे शरीर का कौन-सा और कितना भाग चेतनाशून्य था। थोड़े ही समय बाद डाक्टर की ढुलमुल नाजुकता समाप्त हो गयी। "यदि एक्स-रे लिया जाये, तो ठीक रहेगा।" वह बोला—"इस प्रकार सलाई डालकर टुकड़े को ढूंढना विशेष लाभप्रद नहीं होगा।"

बड़े अस्पताल मे एक्स-रे लिया गया। जिस डाक्टर ने एक्स-रे लिया, वह उत्साहपूर्ण, कार्यकुशल तथा बड़ा हँसमुख था। एक्स-रे लेने की व्यवस्था रोगी के कधो को ऊपर की ओर रखते हुए इस तरह की गयी थी, जिससे वह स्वय भी एक्स-रे यत्र के भीतर से, अपने शरीर मे मौजूद कुछ बड़े-बडे बाहरी पदार्थों को देख सके। तसवीर के प्लेट बाद में हमारे पास भेजे जानेवाले थे। डाक्टर ने मुझसे अपनी जेबी नोटबुक में अपना नाम, सैन्य दल का नाम तथा अपने कुछ उद्‌गार लिख देने का आग्रह किया।

"आपके शरीर मे जो बाहरी वस्तुएँ प्रविष्ट हो गई है, वे बड़ी ख़तरनाक, गन्दी तथा घातक हैं" उसने बताया—"ये आस्ट्रियन लोग बिलकुल कुतियो की औलाद हैं।" उसने एक भद्दी-सी गाली देते हुए कहा—"आपने युद्ध में कितने आस्ट्रियनों को मारा?"

मैने यद्यपि एक भी आस्ट्रियन को नहीं मारा था, किन्तु मै उसे प्रसन्न बनाए रखना चाहता था। अतः मैने कह दिया कि मैने बहुत-से आस्ट्रियनो को मौत के घर भेज दिया था।

मेरे साथ मिस गेज थी। डाक्टर ने उसकी कमर में हाथ डालते हुए कहा—

"बड़ी आकर्षक हो तुम—क्लेयोपेट्रा से भी अधिक सुन्दर! समझ में आया कुछ तुम्हारी? क्लेयोपेट्रा हो तुम-क्लेयोपेट्रा—मिस्र की प्रसिद्ध सम्राज्ञी। ईश्वर की सौगंध—बिलकुल वैसी हो तुम। सच!"

हम एम्बुलेन्स द्वारा अपने छोटे-से अस्पताल मे लौट आये। कुछ समय बाद, बड़ी मुश्किल से मुझे उठाकर ऊपर ले जाया गया और अपने पलंग पर लिटा दिया गया। एक्स-रे की तसवीरे उसी दिन तीसरे पहर हमारे पास आ गयीं। हमारे यहाँ के डाक्टर ने कहा था कि वह उन्हें निश्चित रूप से तीसरे पहर तक मगवा लेगा। और उसने जो कहा था, कर दिखाया। मिस कैथरीन बर्कले ने उन्हें मुझे दिखाया। वे एक लाल लिफाफे में बन्द थीं। उसने तसवीरो को बाहर निकाला और उन्हें प्रकाश की ओर लेकर खड़ी हो गयी। हम दोनो ने साथ-साथ उन्हें देखा।

"यह तुम्हारी दाहिनी टाँग है।" उसने उँगली से सकेत किया और उस फोटो को लिफाफे मे रख दिया। "और, यह बायीं टाँग है।"

"उन्हें बन्द कर के रख दो—" मै बोला—"और मेरे पास आ जाओ, पलंग पर।"

"नहीं—" उसने कहा—"मैं तो क्षणभर के लिए, तुम्हे केवल ये तसवीरें दिखाने आई थी।"

वह बाहर चली गई और मै बिस्तर पर पड़ा रहा। बहुत गर्मी थी। और मै बिस्तर पर लेटे-लेटे तग आ गया था। मैंने दरबान को पुकारा और उससे, जितने समाचारपत्र मिल सकते थे, सब ले आने के लिए कहा।

पर दरबान के लौटने से पहले ही मेरे कमरे मे तीन डाक्टर आये। मैंने देखा है कि जो डाक्टर चिकित्सा-कार्य को अपना व्यवसाय बना लेते हैं, उनका एक-दूसरे के सम्पर्क मे बराबर बने रहने तथा आपस मे सलाह-मशविरा करते रहने का स्वभाव बन जाता है। वह डाक्टर, जो आपकी पथरी सफलतापूर्वक बाहर निकालने मे असमर्थ है, आपको उस चिकित्सक के पास जाने की सलाह देगा, जिसे आपके गले की गिल्टियाँ अच्छी तरह निकालनी नहीं आती। मेरे सामने उस समय तीन ऐसे ही डाक्टर खड़े थे।

"यही वह युवक है।" अस्पताल के डाक्टर ने अपने नाजुक हाथो से इंगित करते हुए कहा।

"कहिए, कैसे हैं आप?" दाढीवाला, ऊँचा किन्तु क्षीणकाय डाक्टर बोला।

तीसरे डाक्टर ने, जिसके पास मेरे एक्स-रे वाला लाल लिफ़ाफ़ा था, कुछ नहीं कहा।

"पट्टियाँ खोली जाएं?" दाढीवाले डाक्टर ने पूछा।

"क्यो नहीं! नर्स, जरा इनकी पट्टियाँ तो खोल डालो।" अस्पताल के डाक्टर ने मिस गेज को आदेश दिया। मिस गेज ने पट्टियाँ उतार दी। मैंने सिर झुकाकर अपनी टाँगे देखी। मोर्चे के अस्पताल मे, वे हलाल किये हुए मुर्गे की बासी बोटियो के समान दिखायी देती थी। अब उनपर पपड़ी जम गई थी। घुटना सूजकर काला पड़ गया था और पिण्डली और भीतर धँस गई थी, किन्तु घाव मे मवाद नहीं पड़ा था।

"घाव तो बड़ा साफ है।" अस्पताल का डाक्टर बोला—"साफ़ भी और अच्छा भी।"

"हूँ!" दाढी वाले डाक्टर ने कहा। तीसरे डाक्टर ने अस्पतालवाले डाक्टर के कंधो के पीछे से अपना सिर कुछ ऊपर उठाते हुए घाव की ओर देखा।

"जरा अपना घुटना हिलाइये तो।" दाढीवाले डाक्टर ने कहा।

"मै ऐसा कर नहीं पाता—दर्द करता है।"

"जोड़ की परीक्षा ली जाये?" दाढीवाले डाक्टर ने प्रश्न किया। उसकी बाँह पर तीन सितारो के साथ एक पट्टी चमक रही थी। इसका अर्थ था कि वह सेना में प्रथम कप्तान था।

"अवश्य।" अस्पताल के डाक्टर ने उत्तर दिया। उन दोनो ने बड़ी सावधानी से मेरा दाहिना पैर पकड़ कर मोड़ा।

"दर्द करता है!" मैने कहा।

"हाँ, हाँ, थोड़ा-सा और, डाक्टर!"

"बस, बस, यही तक मुड़ सकता है मेरा पैर।" मै बोला।

"घुटना पूरी तरह नही मुड़ता।" प्रथम कप्तान ने कहा और सीधा खड़ा हो गया। "क्या मै एक्स-रे-प्लेटो को एक बार फिर देख सकता हूँ, डाक्टर?" तीसरे डाक्टर ने एक तस्वीर निकालकर उसे दे दी।

"यह नहीं, बायीं टाँगवाली दीजिए।"

"यह बायीं टाँग की ही तस्वीर है, डाक्टर।"

"आप ठीक कहते हैं। मै इसे दूसरी ओर से देख रहा था।" उसने तस्वीर लौटा दी। कुछ देर तक वह दूसरी तस्वीर का निरीक्षण करता रहा। "देखते हैं, डाक्टर!" उसने प्लेट मे, प्रकाश के विरुद्ध स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाली एक वृत्ताकार बाहरी वस्तु की ओर संकेत करते हुए कहा। वे कुछ समय तक उस फोटो के परीक्षण में लगे रहे।

"मैं एक ही बात कह सकता हूँ।" दाढ़ीवाले प्रथम कप्तान ने कहा—"यहाँ प्रश्न समय का है—तीन महीने—या कदाचित् छः महीने भी लग सकते हैं।"

"निश्चय ही। पहले घुटने के जोड़ को तर बनाए रखने वाले द्रव पदार्थ (चरबी या तेल) का पुनर्निर्माण होना आवश्यक है।"

"अवश्य, समय का प्रश्न तो है ही। मै जान-बूझकर, धातुओ के भीतर धँसे हुए टुकडो के आसपास झिल्लीदार आवरण तैयार होने से पहले, वर्तमान स्थिति मे, घुटना नहीं चीर सकता।"

"मै आपसे सहमत हूँ, डाक्टर।"

"छः महीने—किस बात के लिए?" मैने पूछा।

"आपके घुटने का आपरेशन करने से पहले, उसके भीतर धँसे हुए पदार्थों के आसपास झिल्लीदार आवरण तैयार होना जरूरी है और इसको छः महीने भी लग सकते है।"

"मैं इस पर विश्वास नहीं करता।" मै बोला।

"आप अपना घुटना बचाना चाहते हैं या नहीं, मेरे युवक मित्र?"

"नहीं!" मैंने कहा।

"क्या?"

"मै उसे कटवा डालना चाहता हूँ," मैंने कहा—"जिससे मै उसके ऊपर लोहे का हुक पहन सकूँ।"

"क्या मतलब है आपका? कैसा हुक?"

"ये केवल मजाक कर रहे हैं।" अस्पताल का डाक्टर बोला। उसने बड़ी कोमलता से मेरा कन्धा थपथपाया—"ये, वास्तव में, अपना घुटना बचाना चाहते हैं। बड़े वीर युवक है ये। इनकी वीरता के उपलक्ष्य मे इन्हे रजत-पदक भेट करने का प्रस्ताव रखा गया है।"

"मेरी ओर से सैकड़ो बधाइयाँ।" प्रथम कप्तान ने कहा। उसने मुझसे हाथ मिलाया—"मै तो यही कहूँगा कि सुरक्षा की दृष्टि से ऐसे घुटने को चीरने से पहले आपके लिए छः मास तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना ही उचित है। हाँ, आपका और कोई मत हो, तो उसका स्वागत किया जाएगा।"

"आपको अनेक धन्यवाद।" मैंने उत्तर दिया। "मै आपकी सलाह की क़द्र करता हूँ।"

प्रथम कप्तान ने अपनी घड़ी की ओर देखा।

"हमें अब चलना चाहिए—" वह बोला—"अच्छा, मेरी हार्दिक-शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।"

"मेरी ओर से भी आपके प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ तथा अनेक धन्यवाद!" मैंने आभार प्रदर्शित करते हुए कहा। इसके बाद मैंने तीसरे डाक्टर से हाथ मिलाया। "मेरा नाम कैप्टन वारिनी है।" उसने कहा। "मुझे लैफ्टिनेण्ट हेनरी कहते हैं।" मैंने उत्तर दिया। और तीनो डाक्टर कमरे से बाहर चले गये।

"मिस गेज!" मैंने पुकारा। वह भीतर आई। "कृपया एक मिनट के लिए अपने डाक्टर साहब को तो बुलाइए।"

डाक्टर हाथ में अपनी टोपी लिए हुए आया और मेरे पलंग के पास आकर खड़ा हो गया। "आपने मुझे बुलाया?" उसने पूछा।

"जी, हॉं। मैं इस शल्य-क्रिया के लिए छः मास तक नहीं ठहर सकता। हे भगवान्! क्या आप कभी छः माह तक बिस्तर में पड़े रहे हैं डाक्टर?"

"आप दिन-रात बिस्तर मे थोड़े ही पडे रहेंगे। पहले आपको अपने घावों को कुछ महीने तक सूर्य के प्रकाश मे खुला छोड़ना पडेगा। उसके बाद आप बैसाखियो पर घूम-फिर सकते हैं।"

"छः महीने तक! और उसके बाद शल्य-क्रिया?"

"यही सुरक्षित मार्ग है। पहले भीतर धँसे हुए बाहरी पदार्थों के आसपास झिल्लीदार आवरण का निर्माण होने देने के लिए हमें कुछ समय देना ही पडेगा। फिर जोडो को तर बनाए रखने वाला द्रव पदार्थ तैयार होगा। और उसके बाद ही घुटना खोलना उचित होगा।"

"क्या आप स्वयं ऐसा ही समझते हैं कि मुझे इतने लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पडेगी?"

"हॉं, यही एक ऐसा रास्ता है जिसमे किसी खतरे की आशका नहीं।"

"यह प्रथम कप्तान कौन है?"

"वह मिलान का एक अत्यन्त कुशल चिकित्सक है।"

"वह प्रथम कप्तान है। क्यो?"

"हॉं; किन्तु है वह बहुत होशियार!"

"मै एक प्रथम कप्तान को इस तरह अपनी टॉगो के साथ खिलवाड़ करने देने की मूर्खता नहीं कर सकता। यदि वह सचमुच कार्यकुशल होता, तो उसे अब तक मेजर बना दिया जाता। ये प्रथम-कप्तान कैसे होते हैं, यह मै अच्छी तरह जानता हूँ, डाक्टर!"

"वह इतना योग्य है कि मेरी पहचान के जितने भी चिकित्सक हैं, उनकी सलाह की अपेक्षा मै उसी का निर्णय स्वीकार करूँगा।"

"क्या कोई अन्य चिकित्सक भी मेरे घावों को देख सकता है?"

"क्यो नही—यदि आप चाहे, तो ऐसा हो सकता है। किन्तु मै स्वय डाक्टर बारेल्ला का ही मत स्वीकार करूँगा।"

"क्या आप किसी दूसरे सर्जन को बुलाकर नहीं दिखा सकते?"

"मै डा. वॅलेन्टाइनी को आने के लिए कह दूँगा।"

"ये महाशय कौन हैं?"

"बडे अस्पताल के सर्जन!"

"सुदर, यह बहुत अच्छा रहेगा! समझे डाक्टर, आप? मै भला छः माह तक बिस्तर मे कैसे पड़ा रह सकता हूँ?"

"आप सदा बिस्तर मे कहाँ रहेगे। पहले आप सूर्य-चिकित्सा प्राप्त करेंगे। बाद मे आप कुछ व्यायाम प्रारम्भ कर सकते है। उसके बाद जब घावो के निकट आवरण तैयार हो जायेगा, तब हम आपके घाव की शल्य-क्रिया कर देंगे।"

"किन्तु मै छः माह तक नहीं ठहर सकता।"

अपनी नाजुक उँगुलियों को अपनी टोपी पर फैलाते हुए डाक्टर मुस्कराया— "आप मोर्चे पर लौटने के लिए इतने उत्सुक हैं!"

"क्यो नही?"

"बडा सुन्दर विचार है आपका।" वह बोला—"आप एक संभ्रांत युवक हैं।" वह मुझपर झुका और उसने मेरे कपाल का बड़ी कोमलता से चुम्बन ले लिया। "मै वॅलेन्टाइनी को बुलवा भेजूँगा। आप चिंतित और उत्तेजित मत होइए। सुशील बने रहिए।"

"क्या आप कुछ पीना चाहेगे?" मैने पूछा।

"नही, धन्यवाद! मै मादक द्रव्यो का कभी सेवन नही करता।"

"एक गिलास तो लीजिए।" मैने गिलास मॅगाने के लिए घण्टी बजाकर दरबान को बुलाया।

"नही, नहीं, धन्यवाद! वे लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

"नमस्ते—" मैने कहा।

"नमस्ते!"

दो घण्टे बाद डा. वॅलेन्टाइनी ने कमरे मे प्रवेश किया। वह बड़ी जल्दी में प्रतीत होता था। उसकी मूँछों की नोकें सीधी ऊपर उठी हुई थी। वह मेजर

था। उसका चेहरा साँवला था और वह सदा हँसता रहता था।

"यह बला तुमने कैसे मोल ले ली?" उसने पूछा—"जरा मुझे एक्स-रे की तसवीरे तो दिखाओ। हॉ, हॉ, ठीक। अरे, तुम तो बिलकुल एक बकरे-जैसे स्वस्थ दीख रहे हो। यह सुन्दर युवती कौन है?" उसने कैथरीन की ओर सकेत करते हुए कहा—"तुम्हारी प्रेमिका है न? मैने भी यही सोचा था। यह युद्ध भी कितना नृशस है? है, न? कैसा लगता है तुम्हे? तुम बहुत अच्छे लडके हो! मै तुम्हारा पैर नये-से-भी-नया बना दूँगा। कष्ट हो रहा है क्या? शर्त बद लो, यदि कष्ट होता हो तो। ये डाक्टर भी कैसे हैं? कैसे पसन्द करते हैं ये तुम्हे कष्ट देना? अभी तक इन्होंने तुम्हारे लिए क्या किया? क्या तुम्हारी प्रेमिका इटालियन बोल लेती है? उसे इटालियन सीख लेना चाहिए। कितनी मोहक लडकी है? मै उसे इटालियन सिखा सकता हैं। मै स्वय यहॉ उसका रोगी बन जाऊँगा। मगर नहीं, जब तुम्हारे सतान पैदा होगी, उस समय मै तुम्हारी प्रेमिका का सब प्रसवकार्य मुफ्त मे कर दूँगा, हूँ! क्या यह सारी बातें समझती है? यह तुम्हे बड़ा योग्य व्यक्ति बना देगी—ठीक अपनी ही तरह योग्य और आकर्षक! हॉ, अब ठीक है। कोई हर्ज नहीं। कितनी आकर्षक लडकी है! इससे पूछो कि क्या यह आज रात को मेरे साथ भोजन करना स्वीकार करेगी? नहीं, मै इसे तुमसे अलग नहीं करूँगा।" और तब कैथरीन की ओर उन्मुख होते हुए उसने कहा—"धन्यवाद, अनेक धन्यवाद मिस! बस, ठीक है।"

"बस, मैं इतना ही जानना चाहता था।" उसने मेरा कन्धा थपथपाया—"पट्टियॉ पड़ी रहने दो।"

"क्या आप थोड़ी शराब पीयेंगे, डा. वॅलेन्टाइनी?"

"शराब? शौक से। एक बार नहीं, दस बार। कहॉ हैं बोतले?"

"अलमारी मे। मिस बर्कले निकाल लायेंगी।"

"खुश रहो—जीओ! तुम भी खुश रहो मिस—कितनी प्रिय लड़की है .. मै तुम्हारे लिए इससे भी अच्छी कॉग्नेक लेता आऊँगा।" उसने अपनी मूँछे पोछते हुए कहा।

"आपका क्या खयाल है? मेरी शल्य-क्रिया कब की जा सकती है?"

"कल सबेरे। उससे पहले नही। शल्य-क्रिया के पहले तुम्हारा पेट बिलकुल खाली किया जाना चाहिए—तुम्हारे शरीर मे कोई भी विकार नहीं रहे। मैं नीचे, उन वृद्ध देवीजी से मिलकर उन्हें यथोचित आदेश दिए देता हूँ। अच्छा,

नमस्ते! कल सबेरे फिर मिलूँगा। तुम्हारे लिए इससे भी अच्छी फ्रेंच शराब लेता आऊँगा। तुम यहाँ बिलकुल आराम से हो। अच्छा, कल तक के लिए विदा। गहरी नीद सोओ। शीघ्र तुमसे फिर मिलूँगा।" उसने द्वार पर से हाथ हिलाया। उसकी मूँछे सीधी ऊपर उठ गई थी। उसका साँवला मुख मुस्करा रहा था। उसकी बाँह पर एक नन्हीं डिब्बी के भीतर एक चमकता हुआ सितारा हँस रहा था, क्योकि वह मेजर था।

• १६ •

उस रात बरामदे की ओर के दरवाजे से, जहाँ से हम नगर की छतो पर उतरती हुई रात का स्वागत किया करते थे, हमारे कमरे मे एक चमगादड़ घुस आया। रात्रि के बिखरे मन्द प्रकाश के सिवा कमरे मे अन्य कोई प्रकाश नहीं था, वह पूर्णतः अंधकारमय था। चमगादड निडर होकर इस प्रकार चक्कर काटता रहा जैसे वह किसी मुक्त वातावरण मे ही हो। हम लेटे हुए उसे देखते रहे और मेरे खयाल से उसने हमे नहीं देखा था, क्योकि हम बिलकुल दम साधे पडे थे। जब चमगादड उड़ कर कमरे से बाहर निकल गया, तब हमने आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, शत्रु की गतिविधि का पता लगाने वाली प्रकाश-किरण को घूमते हुए देखा। पर वह प्रकाश-पुज विशाल गगन का एक चक्कर लगाकर विलीन हो गया और पुनः अंधेरे ने अपनी चादर फैला दी। तभी हवा का एक तेज झोका आया। हमने बगल की छत पर वायुयान पर निशाना साधनेवाले सैनिको को आपस मे बाते करते हुए सुना। ठड होने के कारण वे बिना आस्तीनवाले लबादे पहने हुए थे। मुझे इस बात की चिन्ता हो रही थी कि कही कोई ऊपर, इस ओर न आ निकले। किन्तु कैथरीन ने मुझे बताया कि सब लोग सो चुके थे। थोड़ी देर बाद एक-दूसरे के प्रगाढ आलिंगन मे हम सो गए और जब मेरी नीद खुली, तो मैने देखा कि कैथरीन वहाँ नहीं थी। तभी मैने उसे बरामदे मे चलते हुए सुना। द्वार खुला और वह मेरे पलग पर लौट आई। उसने बताया कि वह नीचे गई थी। सब लोग सो रहे थे। डरने की कोई बात नही थी। वह मिस वॉन कैम्पेन के बद दरवाजे के बाहर तक गई थी और उसके गाढी नीद मे होने का विश्वास कर के लौटी थी। वह अपने साथ कुछ पतले-कुरकुरे बिस्कुट भी ले आई थी। उन्हें

"तुम अस्वस्थ रहोगे और तब मेरी उपस्थिति तुम्हारे लिए कोई अर्थ नहीं रखेगी।"

"तब, इसी समय आ जाओ।"

"नही"—वह बोली—"मुझे अभी तुम्हारा चार्ट तैयार करना है, प्रियतम! और तुम्हारे आपरेशन की सब व्यवस्था भी करनी है।"

"तुम मुझे सच्चे हृदय से प्रेम नही करती, अन्यथा तुम अवश्य मेरे पास आतीं।"

"तुम कितने भोले हो!" उसने मेरा चुम्बन ले लिया—"चार्ट तो खैर मै बना लूँगी। तुम्हारा तापक्रम तो सदा सामान्य रहता है। बडा प्यारा है तुम्हारा तापक्रम!"

"किन्तु तुम्हारी तो प्रत्येक वस्तु प्रिय है।"

"अरे नहीं, तुम्हारा तापक्रम सचमुच बहुत सुंदर है। मुझे उस पर गर्व है।"

"हो सकता है, हमारी सभी सन्तानो का तापक्रम भी बडा अच्छा रहे।"

"यह भी तो हो सकता है कि हमारे बच्चो का तापक्रम पशुओं-जैसा हो!"

"वॅलेन्टाइनी के लिए मुझे तैयार करने के लिए तुम्हें क्या-क्या करना है?"

"कुछ विशेष नही। किन्तु जो-कुछ करना है, वह बड़ा अप्रिय है।"

"काश! तुम्हे यह सब नही करना पडता।"

"नहीं-नही। मै किसी दूसरे को तुम्हारा स्पर्श तक नहीं करने देना चाहती। मै सचमुच मूर्ख हूँ। यदि कोई और तुम्हे छू लेता है, तो मेरे तन-बदन मे आग-सी लग जाती है।"

"फर्ग्यूसन के स्पर्श करने पर भी?"

"विशेषतः फर्ग्यूसन, गेज तथा उस दूसरी परिचारिका के द्वारा। क्या नाम है उसका?"

"वॉकर?"

"हॉ-हॉ, वही। अब यहॉ बहुत-सी परिचारिकाएँ हो गई है। कुछ और रोगियो का आना आवश्यक है, अन्यथा हम लोगो को यहॉ से जाना पडेगा। इस समय यहॉ चार परिचारिकाएँ है।"

"शायद कुछ रोगी और आ जाएँ। यहॉ इतनी परिचारिकाओ का होना ज़रूरी है। अस्पताल भी तो काफी बड़ा है।"

"मुझे आशा है कि कुछ और रोगी आ जायेंगे। यदि मुझे यहॉ से कहीं और भेज दिया गया, तो फिर मेरा क्या होगा? क्या करूँगी मै? और यदि

अधिक रोगी यहाँ न भेजे गए, तो अधिकारी-वर्ग निश्चय ही मुझे अन्यत्र भेज देगा।"

"तब मै भी चल दूँगा।"

"पागल मत बनो। अभी तुम कहीं नहीं जा सकते। मगर हाँ, तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओ, प्रियतम! तब हम कही और चल देगे।"

"और उसके बाद?"

"उसके बाद कदाचित् युद्ध भी समाप्त हो जाए। युद्ध हमेशा तो नहीं चल सकता।"

"मै अच्छा हो जाऊँगा।" मैने कहा—"वॅलेन्टाइनी मेरी उचित व्यवस्था कर देगा।"

"अपनी ऊपर उठी हुई मूँछों की लाज रखने के लिए उसे कुछ तो करना ही चाहिए। और हाँ प्रियतम, जब तुम्हें बेहोशी की दवा सुघायी जाए, तब तुम किसी अन्य वस्तु के विषय मे सोचना—हम दोनो के विषय मे नही। जानते हो क्यो? बेहोशी की अवस्था मे मनुष्य बहुत बक-झक करने लगते है—अपने अनेक भेद खोल देते हैं।"

"तब मै किसके विषय में सोचूँ?"

"किसी भी विषय मे। हमे छोड़कर अन्य किसी के भी बारे में। अपने सम्बन्धियो के विषय मे अथवा किसी अन्य लड़की के विषय मे।"

"ना!"

"तब अपनी प्रार्थनाएँ ही दुहराना। उससे तुम्हारे अन्तःकरण पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

"शायद मै बड़बड़ाऊँ ही नहीं।"

"यह भी सम्भव है। कई आदमी बेहोशी मे नहीं बोलते।"

"मै भी नहीं बोलूँगा।"

"व्यर्थ की आत्मप्रशंसा मत करो, प्रियतम! कृपा करके ऐसा मत करो। तुम इतने मधुर हो कि तुम्हे स्वय अपनी प्रशसा करने की आवश्यकता ही नहीं है।"

"अच्छा, मै एक शब्द भी मुँह से नहीं निकालूँगा, बस।"

"तुम फिर बहक रहे हो, प्रिय! तुम जानते हो कि तुम्हे आत्मस्तुति नही करनी चाहिए। जब डाक्टर लोग तुमसे गहरी साँस लेने के लिए कहें, तो तुम और कुछ नहीं करना—केवल मन-ही-मन अपनी प्रार्थना या कविता-पाठ अथवा कुछ और सोचना प्रारम्भ कर देना। उस स्थिति में तुम बड़े आकर्षक

दिखायी दोगे और मै तुम पर जी-भरकर अभिमान कर सकूँगी। यो तो मुझे तुम पर गर्व है ही। तुम्हारा तापक्रम कितना सुदर है? जब तुम एक नन्हे-मुन्ने के समान तकिये के आसपास भुजा लपेटकर नीद मे डूब जाते हो और सोचते हो कि तुम्हारे बाहुपाश मे तकिया नही, मै हूँ अथवा कोई दूसरी लडकी-कोई सुन्दर इटालियन युवती, तब तुम कितने प्रिय लगते हो!"

"नहीं, दूसरी कोई युवती नही, केवल तुम।"

"हॉ-हॉ, मै ही—निश्चित रूप से मैं। ओह! मै तुमसे कितना प्रेम करती हूॅ। वॅलेन्टाइनी तुम्हारी टॉग को पुनः सुदर-स्वस्थ रूप प्रदान कर देगा। मुझे प्रसन्नता है कि मै यह सब दुःखद दृश्य देखने के लिए वहॉ उपस्थित नहीं रहूँगी।"

"तब क्या तुम आज रात मे काम पर रहोगी?"

"हॉ, किन्तु तुम्हे इसकी बिलकुल खबर ही नहीं रहेगी।"

"धीरज रखो, आप ही जान जाओगी!"

"हॉ, अब ठीक है प्राण, तुम अब भीतर-बाहर दोनो ओर साफ हो गये। सच बताओ, तुमने आज तक कितनी युवतियों से प्रेम किया है?"

"किसी से नहीं।"

"मुझसे भी नही।"

"तुम्हारी बात अलग है-तुमसे मुझे प्रेम है!"

"और कितनी युवतियो से तुम्हे प्रेम है? सच बताना?"

"एक से भी नही।"

"तुम कितनो के साथ—क्या कहते हो तुम लोग उसे?—रात बिता चुके हो?"

"किसी के साथ भी नहीं।"

"तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो न?"

"हॉ।"

"ठीक है। इसी प्रकार झूठ बोलते रहो। मै भी तुमसे यही चाहती हूँ। क्या वे सुदर थी?"

"मै किसी के साथ रहा ही नहीं।"

"क्या वे बडी आकर्षक थी?"

"मै भला कैसे कह सकता हूँ?"

"तुम पूर्ण रूप से मेरे हो— केवल मेरे! यह नग्न सत्य है—और यह भी

कि तुम कभी किसी और के नहीं थे। यदि तुम कभी किसी के रहे भी हो, तो मै उसकी तनिक चिन्ता नही करती। मै तुम्हारी उन लडकियो से नहीं डरती। किन्तु मुझसे उनके विषय में कभी कुछ मत कहना। एक बात पूछूँ ? जब मनुष्य किसी युवती के साथ रात व्यतीत करता है, तब वह युवती उसे यह कब बताती है कि उसे उसका कितना मूल्य चुकाना पड़ेगा ?"

"मै नही जानता।"

"तुम सचमुच नही जानते ? क्या वह कभी यह कहती है कि वह उसे प्यार करती है ? मुझे बताओ, प्राण ! मै इसे जानना चाहती हूँ ?"

"हॉ, यदि पुरुप उससे यह कहलाना चाहता है, तो वह कह देती है।"

"क्या पुरुष भी कभी यह कहता है कि वह उससे प्रेम करता है ? बताओ न ? बडा महत्त्वपूर्ण प्रश्न है यह।"

"यदि उसकी इच्छा हुई, तो वह वैसा कह देता है।"

"पर तुमने कभी ऐसा नहीं कहा। हे न, सच ?"

"हॉ, मैने कभी नही कहा!"

"नही, यह सच नही है। दया कर सच-सच बताओ।"

"सच ही कह रहा हूँ।" मै झूठ बोला।

"तुम ऐसा नही करोगे।" वह बोली—"मुझे विश्वास है, तुम ऐसा नहीं करोगे। ओह, मै तुमसे बेहद प्रेम करती हूँ—बेहद, पियतम !"

बाहर, सूर्य घरो की छत पर चढ़ चुका था और मै गिरजाघरो के शिखर को सूर्य के निरभ्र प्रकाश मे चमकते हुए देख रहा था। मेरा पेट तथा शरीर का ऊपरी भाग पूरी तरह साफ किया जा चुका था। बस, डाक्टर की प्रतीक्षा की जा रही थी।

"और यह भी न ?" कैथरीन ने कहा "वह जो-कुछ उससे कहलाना चाहता है, वही वह कह देती है ?"

"हमेशा नहीं।"

"किन्तु मै कह दूँगी। तुम जो कहलाना चाहोगे, वही मै कह दूँगी—जो तुम्हारी इच्छा होगी, मै वही करूँगी। और तब किसी अन्य युवती से मिलने की तुम्हारी इच्छा ही नहीं होगी। बोलो होगी, इच्छा ?" उसने मेरी ओर बड़े प्रेम से देखा। "मै तुम्हारी सभी इच्छाओ की पूर्ति करूँगी, तुम्हारे कहने के अनुसार ही आचरण करूँगी और तभी मै अपने जीवन में पूर्णतः सफल बन सकूँगी। बन सकूँगी न ?"

"अवश्य।"

"अब, जब कि तुम पूरी तरह तैयार हो चुके हो, मुझे क्या करने के लिए कहते हो?"

"बिस्तर पर फिर से आ जाओ।"

"अच्छी बात है, आ जाऊँगी।"

"ओह प्रिये, हृदयेश्वरी!" मै प्रसन्न हो उठा।

"देखा तुमने!" वह बोली—"तुम जो चाहते हो, वही करती हूँ न मै!"

"तुम सचमुच बहुत प्रिय हो!"

"ना, मुझे स्वय सदेह है कि मै इस व्यापार में अभी उतनी कुशल नहीं बन पायी हूँ।"

"तुम अत्यंत मधुर हो!"

"जो तुम चाहते हो, मै भी वही चाहती हूँ। मुझमे 'मै' नाम की अब कोई चीज नही रह गई है। मैने स्वय का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया। अब तो जो तुम हो, वही मै हूँ।"

"मेरी जीवन-सुधा!"

"मै अच्छी हूँ, हूँ न? क्या हम दोनो की यह एकात्मता, हमारी एकरूपता सुखमय नहीं है? अब तो तुम अन्य किसी युवती को नहीं चाहते? नहीं न?"

"नही।"

"देखा तुमने? मैं अच्छी हूँ न? जो तुम चाहते हो, वही करती हूँ मैं।"

. १७ .

शल्य-क्रिया के बाद जब मै होश में आया, तो मुझे ऐसा आभास हुआ कि मै अपने आपे से बाहर नहीं हुआ था। कोई भी व्यक्ति वस्तुतः ऐसी स्थिति मे मन पर अधिकार नहीं खो बैठता। उस समय केवल गला घुटता-सा प्रतीत होता है—मृत्यु के समय की घुटन नहीं। वह तो केवल रासायनिक द्रव्यों के प्रयोग से उत्पन्न घुटन होती है। इसलिए उसका अनुभव नहीं होता—वह कष्ट-प्रद नहीं प्रतीत होता। बाद मे शराब भी पी ली जाये, तो कोई हानि नहीं। हानि केवल इतनी ही होती है कि जब उलटी हो जाती है, तो पित्त को छोड़कर और कुछ बाहर नहीं निकलता और तब तबीयत घबराने लगती है—कुछ भी

अच्छा नहीं लगता। मैंने देखा कि मेरे पलग के एक किनारे रेत से भरे हुए थैले रखे थे। ये थैले पलग से लगी हुई नलियो पर रखे थे। थोडी देर बाद मिस गेज अंदर आई। "दर्द कैसा है अब?" उसने पूछा।

"पहले से ठीक है।" मैंने उत्तर दिया।

"उसने आपके घुटने की बड़ी आश्चर्यजनक शल्य-क्रिया की।"

"कितना समय लगा?"

"ढाई घण्टे।"

"मैंने कोई मूर्खतापूर्ण बक-झक तो नहीं की?"

"एक शब्द भी नही। अब आप बातें मत कीजिए। मौन पड़े रहिए।"

बाद मे मै स्वय को काफी अस्वस्थ अनुभव करने लगा। कैथरीन का कथन सत्य था। रात में मुझे बिलकुल होश नहीं रहा कि रात की ड्यूटी पर मेरे पास कौन था और कौन नही?

अस्पताल मे अब तीन और रोगी आ गए थे। जॉर्जिया मे, रेड-क्रॉस मे काम करनेवाला मलेरिया से पीडित एक दुबला-पतला युवक—बडा अच्छा व्यक्ति था बेचारा—दूसरा, एक और दुबला-पतला व्यक्ति—न्यूयॉर्क-निवासी, जो मलेरिया तथा पाण्डुरोग से पीडित था। तीसरा रोगी एक बडा सुदर लड़का था—उसने एक बम को अपने पास स्मृति के रूप में सहेजकर रखना चाहा था। इस इच्छा से प्रेरित होकर उसने बम का विस्फोट करनेवाली प्रज्वलन-नलिका के पेच को खोलने का दुस्साहस किया था। बम घातक पदार्थों, धातुओ के टुकड़ों आदि से भरा था और भयानक रूप से विस्फोटक था। विस्फोटक तथा घातक पदार्थों से भरे ऐसे बमो का उपयोग आस्ट्रियन सेना पर्वतीय क्षेत्र मे किया करती थी। इसके अग्रभाग में यह विशेषता थी कि बम के फटने पर उसकी नली बाहर आ जाती थी, किन्तु उसका भीषण-विस्फोट किसी वस्तु के ससर्ग मे आने पर ही होता था।

परिचारिकाएँ कैथरीन बर्कले को बहुत चाहती थी; क्योंकि वह अनिश्चित काल तक रात की ड्यूटी करने के लिए तैयार थी। मलेरिया-पीडितो की उसे कोई अधिक देख-भाल नहीं करनी पड़ती थी। जिस व्यक्ति ने बम के अग्रभाग को खोलने का प्रयत्न किया था, वह हमारा मित्र बन चुका था, पर वह भी, जब तक आवश्यक न हो, नर्स (मिस बर्कले) को बुलाने के लिए रातमें कभी घण्टी नहीं बजाया करता था। हॉ, ड्यूटी खत्म होने पर हम दोनो हमेशा ही साथ रहते थे। मै कैथरीन से बेहद प्रेम करने लगा था। वह भी मुझसे बहुत प्यार करती

थी। दिन मे मै पडे-पडे सो जाया करता। जब मैं जागता रहता तो हम दोनो एक-दूसरे को पत्र लिखा करते और उन्हे फर्ग्यूसन के हाथ भिजवा देते। फर्ग्यूसन बड़ी नेक लड़की थी। मुझे उसके विषय मे कुछ अधिक मालूम नही था। मै केवल इतना ही जानता था कि उसका एक भाई ५२-वें सैन्य-दल मे था और दूसरा मेसोपोटामिया मे। मैं यह भी जानता था कि वह कैथरीन बर्कले के प्रति बड़ी उदार थी।

एक बार मैंने उससे पूछा—"तुम हम लोगों की शादी मे आओगी न, फर्गी?"

"तुम दोनो की कभी शादी ही नहीं होगी।" उसने उत्तर दिया।

"होगी—अवश्य होगी।"

"नही—नही होगी!"

"क्यो नहीं?"

"शादी के पहले ही तुम दोनो झगड़ पड़ोगे।"

"किन्तु हम तो कभी लड़ते ही नहीं है।"

"लड़ने का समय अभी आया नहीं।"

"ना, हम कभी नही लड़ सकते।"

"तब तुम खत्म हो जाओगे—मर जाओगे! लड़ो या मरो—यही तो आदमी करता है। वह शादी कहाँ करता है।"

मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे लेना चाहा। "मुझे मत पकड़ो—मत छुओ मुझे!" वह बोली—"मै रो नही रही हूँ। हो सकता है, तुम दोनों नहीं झगड़ो। पर तुम्हारे कारण वह किसी विपत्ति मे न फँस जाये, इसका पूरा ध्यान रखना। तुमने उसे जरा भी कष्ट पहुँचाया, तो मै तुम्हारी जान ले लूँगी, समझे?"

"नही, मै उसे कभी कोई तकलीफ नहीं दूँगा।"

"अच्छा, तब मैंने जो कहा, उसे भूलना मत। मुझे विश्वास है कि तुम उससे अच्छा व्यवहार करोगे। सुख-शान्ति से जीवन बिताओगे।"

"हम तो अभी भी सुख-शान्ति से रह रहे हैं।"

"तब आगे भी उससे लड़ना मत और उसे किसी गढ़े में न गिरा देना।"

"नहीं, मै ऐसा नहीं करूँगा।"

"अच्छी तरह विचार लो। मै तुम्हें सावधान किए देती हूँ। मै नही चाहती कि वह किसी युद्ध-कालीन वर्णसंकर सन्तान को लिए-लिए घूमे।"

"तुम बड़ी भली लड़की हो, फर्गी!"

"नहीं, मै भली नहीं हूँ। मेरी चापलूसी करने का प्रयत्न मत करो। तुम्हारी टॉग कैसी है?"

"अब तो काफी अच्छी है।"

"और सिर, सिर कैसा है?" उसने अपनी उँगलियो से मेरे सिर का स्पर्श किया। उसके स्पर्श मे एक विचित्र चेतना थी—ऐसी चेतना, जो पैर के सुन्न हो जाने पर अनुभव होती है।"

"मुझे सिर की कोई विशेप चिन्ता नहीं है।" मै बोला।

"सिर पर इस तरह का आघात तुम्हें पागल भी बना सकता है। इसकी भी तुम्हे कोई चिता नहीं है?"

"नहीं।"

"तुम बड़े भाग्यवान् युवक हो! क्या तुमने पत्र पूरा कर लिया? मै नीचे जा रही हूँ।"

"यह रहा।" मैने कहा।

"तुम्हे कुछ दिनों के लिए उसे रात की ड्यूटी करने से मना कर देना चाहिए। वह दिनोदिन अधिक थकावट का अनुभव कर रही है।"

"अच्छी बात है। मै कहूँगा।"

"मै उसके स्थान पर रात की ड्यूटी करने को तैयार हूँ, पर वह मुझे करने नहीं देगी। अन्य परिचारिकाओ को तो खुशी है कि उन सबके बदले वह रात-ड्यूटी करती है। तुम्हे कुछ समय तक उसे आराम करने का मौका तो देना चाहिए।"

"अवश्य।"

"मिस वॉन कैम्पेन कह रही थीं कि तुम हमेशा दिन चढे तक सोए रहते हो।"

"वह तो कहेगी ही।"

"अच्छा हो, यदि तुम बर्कले को कुछ समय तक रात मे अपने से अलग रहने दो।"

"मै चाहता हूँ कि वह रहे।"

"नहीं, तुम नही चाहते। किन्तु यदि तुम उसे अपने से दूर रहने पर राजी कर सके, तो इसके लिए मैं तुम्हारा आदर करूँगी।"

"मै उसे मजबूर करूँगा।"

"मुझे विश्वास नहीं आता।" उसने पत्र लिया और बाहर निकल गई। मैने घण्टी बजाई और क्षणभर बाद ही, मिस गेज अन्दर आई।

"क्या बात है?"

"मै जरा आपसे कुछ बात करना चाहता था। क्या आपकी राय में मिस बर्कले का कुछ दिनो तक रात की डयूटी छोड देना आवश्यक नही है? वह काफी थकी-थकी लगती है। उसके स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर पड़ सकता है। आखिर इतने दिनो तक वही रात-डयूटी क्यो कर रही है?"

मिस गेज ने मेरी ओर देखा।

"मै आपकी मित्र हूॅ।" उसने कहा—"आपको मुझसे इस प्रकार बात करना शोभा नहीं देता।"

"क्या मतलब है आपका?"

"मूर्खता मत दिखाइए। क्या आप केवल इतना ही कहना चाहते थे?"

"आप शराब पीना पसंद करेंगी?"

"अच्छी बात है। तब मुझे उठना पड़ेगा।" उसने अलमारी से एक बोतल निकाली और एक गिलास भी ले आयी।

"आप गिलास ले लीजिए।" मै बोला—"मै बोतल से पी लूॅगा।"

"आपके स्वास्थ्य के लिए।" मिस गेज ने कहा।

"सबेरे देर तक मेरे सोते रहने के विषय मे, मिस वॉन कैम्पेन क्या कह रही थी?"

"यो ही, कुछ खास नही। वह आपको यहॉ का 'विशेष कृपा-प्राप्त रोगी' कहकर पुकारती है।"

"जहन्नुम मे जाये वह!"

"वह बुरी नही है।" मिस गेज ने कहा—"जरा अधिक उम्र की और झक्की मिजाज की है। उसने आपको शुरू से ही पसन्द नहीं किया।"

"नही।"

"पर मैंने पसन्द किया है—मै पसन्द करती हूॅ। मै आपकी मित्र हूॅ। भूलिए मत इसे।"

'आप सचमुच बहुत सुन्दर हैं।"

"नही, मै जानती हूॅ कि आप किसे सुन्दर समझते हैं। फिर भी मै आपकी मित्र हूॅ। आपका पैर कैसा है अब?"

"अच्छा है।"

"मै उस पर डालने के लिए कुछ ठण्डा खनिज-जल ला दूॅ। प्लास्तर के भीतर खुजलाहट होती होगी। बाहर गर्मी भी तो है।"

"आप बहुत-बहुत ही अच्छी है।"

"क्या पैर मे बहुत खुजलाहट हो रही है?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।"

"मै इन रेत के थैलो को और अच्छी तरह जमा दूँगी।"

उसने मेरे ऊपर झुकते हुए कहा—"आखिर मै आपकी मित्र हूँ।"

"मै अच्छी तरह जानता हूँ।"

"नही, आप नहीं जानते; किन्तु किसी दिन जान जाएँगे।"

कैथरीन बर्कले को तीन रात के लिए रात-ड्यूटी से अवकाश मिल गया। उसके बाद वह फिर काम पर आ गई। तीन रात के बाद हम पुनः मिले, तो ऐसा प्रतीत हुआ, मानो हम एक बहुत लम्बे अर्से के बाद मिले हो।

• १८ •

वह ग्रीष्म हमारे लिए बडी सुखद रही। जब मै बाहर जाने लायक हो गया, तो हम लोग गाडी मे बैठकर पार्क की सैर किया करते। अभी तक मुझे उस गाड़ी की याद है। उसके धीरे-धीरे चलने वाले घोड़े और कलफदार ऊँचा हैट लगाये मेरे सामने एक ऊँची-सी सीट पर बैठने वाले गाडीवान की पीठ, आज भी मेरी ऑखो के सामने नाच उठती है। कैथरीन बर्कले मेरे पास ही बैठा करती थी। यदि हमारे हाथ एक-दूसरे से छू जाते या कुहनियाँ ही आपस में स्पर्श कर जाती, तो हम बड़े उत्तेजित हो जाया करते थे। बाद को जब मै बैसाखियो पर चलने-फिरने लगा, तो हम बिफ्फी-भोजनालय अथवा ग्रॉन–इतालिया में भोजन करने जाते। वहाँ हम भोजनालय के बाहर बरामदे की मेज पर खाना मँगवा लेते। खानसामे भीतर से बाहर और बाहर से भीतर आते-जाते रहते, लोग हमारे पास से गुज़रा करते, और मेजपोशों से ढकी हुई मेज़ पर ढक्कनदार खूबसूरत बत्तियाँ जगमगाया करती। बाद मे, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ग्रॉन-इतालिया ही हमारे मनलायक और सबसे अच्छा भोजन-गृह है, अतः हम वहीं जाने लगे। वहाँ का सबसे बड़ा खानसामा जार्ज, हमारे लिए एक मेज सुरक्षित रखता। वह बड़ा अच्छा ख़ानसामा था। हम उसे खाना मँगवाने का आदेश देते और जब तक हमारा खाना आता, हम आसपास के व्यक्तियो को देखा करते, धुँधलके मे भोजनगृह के बरामदे

पर नजरे दौड़ाते अथवा एक-दूसरे की ओर निहारते रहते। हम सदा एक बडी बाल्टी मे बर्फ से ठण्डी की गई सफेद-सूखी काप्री ही पिया करते। हमने फ्रेसा, बारबॅरा तथा दूसरी मीठी और सफ़ेद शराबो का भी स्वाद लिया था, किन्तु काप्री ही हमे अधिक पसन्द आई। युद्ध के कारण नौकरो की कमी थी। अतः वहॉ अलग से शराब लाकर देनेवाला खानसामा नहीं था। काप्री पीने का एक कारण और भी था कि जब हम जॉर्ज को फ्रेसा-जैसी कोई शराब लाने का आदेश देते, तो वह लज्जित होकर मुस्करा देता था।

"यदि कोई देश झरबेरी के समान स्वाद देनेवाला कोई आसव बनाता है, तो क्या आपकी कल्पना मे वह आसव सचमुच शराब है?" एक दिन उसने कहा।

"क्यो नहीं—" कैथरीन बोली—"नाम तो बड़ा प्रिय है।"

"तब देवीजी, यदि आपकी इच्छा है, तो आप उसका स्वाद ले देखिए। किन्तु मुझे लैफ्टिनेंट साहब के लिए मारगॉक्स (शराब) की एक छोटी बोतल ले आने दीजिए।"

"मै भी आज उसी को चखूँगा, जार्ज।"

"साहब, मै आपको फ्रेसा-जैसी शराब पीने की सलाह नहीं दे सकता। उसका स्वाद झरबेरी के समान भी नहीं है।"

"शायद हो।" कैथरीन ने कहा—"यदि उसका वैसा ही स्वाद हुआ, तो सचमुच बड़ा मजा आयेगा।"

"मै ले लाता हूँ," जॉर्ज ने कहा—"और जब देवी जी को संतोष हो जायेगा, मै उसे वापस ले जाऊँगा।"

सचमुच ही, उसमे शराब-जैसा बहुत कम स्वाद था। जॉर्ज ने ठीक कहा था, उसका स्वाद झरबेरी-जैसा भी नही था। हमने फिर काप्री पीना ही निश्चित किया। एक दिन सन्ध्या समय जब मेरे पास पैसे कम पड़ गए, तो जॉर्ज ने मुझे सौ लायर उधार दिए। "कोई बात नहीं, लैफ्टिनेंट साहब," उसने कहा-"मै जानता हूँ, कभी-कभी ऐसा हो जाता है। मनुष्य को पैसे कम क्यो पड़ जाते हैं, यह भी मै समझता हूँ। यदि आपको या आपकी महिला-मित्र को कभी पैसे की आवश्यकता पड़े, तो मै सेवा मे सदा प्रस्तुत रहूँगा।"

भोजन के बाद हम गैलेरिया को पार करते हुए आगे बढ जाते। राह के दूसरे रेस्त्रा और बद दूकानों के बीच से चलते हुए हम एक छोटे-से स्थान पर पहुँचकर रुक जाते, जहॉ सैण्डविच (एक खाद्य-पदार्थ) बिकती थी। ये सैण्डविचें

बकरे की रान, चुकन्दर तथा एन्कोवी नामक मछली की बनी होती थी। उन पर छोटी-छोटी भूरी, गोल, चिकनी तथा चमकदार परते होती और वे छोटी-छोटी खूबसूरत-सी केवल अँगुली के बराबर लम्बी होती थी। रात मे भूख लगने पर खाने के विचार से हम उन्हे खरीद कर ले जाते थे। सैण्डविच खरीदने के बाद हम गैलेरिया से बाहर, गिरजाघर के सामने एक खुली हुई गाडी मे बैठ कर अस्पताल लौट आते। अस्पताल के दरवाजे पर दरबान मुझे सहायता देने के लिए बैसाखियाँ लेकर आ जाता। मै गाड़ीवान को पैसे चुकाता और तब हम लिफ्ट द्वारा ऊपर जाते। कैथरीन एक मज़िल नीचे, परिचारिकाओ के रहने के कमरो के सामने उतर जाती और मै ऊपर चला जाता। अपनी मजिल पर उतर कर बैसाखियो के सहारे मै बरामदा पार करता हुआ अपने कमरे मे पहुँच जाता। कभी-कभी मै कपड़े उतारकर सो जाता और कभी एक दूसरी कुर्सी पर टाँगे फैला कर बरामदे मे बैठ जाता। बैठे-बैठे मै छतो पर चहचहाती चिडियो को देखा करता और कैथरीन की प्रतीक्षा करता। जब वह मेरी मजिल पर आती, तो मुझे ऐसा लगता, मानो वह किसी लम्बी यात्रा से कई दिनो बाद लौटकर आई हो। मै उसके साथ अपनी बैसाखियो पर बरामदे के चक्कर काटता, उसके पीछे-पीछे बेसिन (बर्तन) लेकर चलता और जब वह रोगियो के कमरो मे घुसती और रोगी हमारा मित्र हुआ, तो मै भी उसके साथ कमरे मे चला जाता, अन्यथा कमरे से बाहर खड़ा होकर उसके लौटने की प्रतीक्षा करता। जब वह सब रोगियो के जरूरी काम निबटा देती, तो हम दोनो अपने कमरे के सामने, बरामदे मे, बैठ जाते। बाद मे, मै अपने बिस्तर पर चला जाता। जब सब लोग सो जाते और उसे यह निश्चय हो जाता कि अब उसे कोई नहीं बुलाएगा, तब वह मेरे पास आ जाती। मुझे उसके केशो से खेलना बड़ा प्रिय लगता! वह बिस्तर पर बैठ जाती और तनिक भी नही हिलती-डुलती। हाँ, बीच-बीच मे मेरा चुम्बन लेने के लिए वह अचानक झुक जाती। उसके केशो से खेलते हुए मै उनमे लगी हुई पिनो को निकालता और उन्हे चादर पर रख देता। उसकी केश-राशि धीरे-धीरे मुक्त होती जाती। वह मूर्तिवत् बैठी रहती और मै उसे निहारा करता। पिने निकलती रहती—उसके बँधे केश खुलते जाते और तब अचानक अंतिम दो पिनो के निकलते ही, उसके वे लम्बे-लम्बे केश बिखर जाते। तभी वह अपनी गर्दन झुका देती और हम दोनो के मुख उन घने केशो मे छुप जाते। हमें ऐसा लगता, मानो हम किसी तम्बू के भीतर घुस गये हैं अथवा किसी जल-प्रपात के पीछे मुँह छिपाए बैठे है।

उसके केशो मे आश्चर्यजनक सौन्दर्य था। कभी-कभी मै बिस्तर पर लेटे-लेटे खुले हुए द्वार से भीतर प्रवेश कर जानेवाले मन्द प्रकाश मे उसे अपने बालो का जूड़ा बाँधते हुए देखा करता। उसके बाल रात मे भी ऐसे चमकते, जैसे कभी-कभी उषःकाल मे गहन जल-राशि चमका करती है। उसका मुखडा बड़ा प्यारा था, शरीर कोमल था और त्वचा मधुर और चिकनी थी। हम दोनो लेटे रहते। मै अपनी उँगलियो के कोर से उसके कपोलो, उसके कपाल, नयनो की कोर, चिबुक अथवा कण्ठ का स्पर्श करते हुए कहता—"पियानो के परदो-जैसा चिकना।" उत्तर मे वह अपनी उँगली से मेरी टोढी पर हल्का-सा प्रहार करती और कहती—"एमरी पेपर (एक प्रकार का खुरदरा काग़ज) के समान चिकनी और 'पियानो के परदों' पर बड़ी कठोरता से चुभनेवाली!"

"क्या यह सचमुच चुभती है?"

"नहीं प्राण, मै तो यो ही मजाक कर रही थी।"

रातें बड़ी प्यारी होती थीं। केवल एक-दूसरे का स्पर्श ही हमारे रोम-रोम मे सुख की मादक तरगो को जन्म देने के लिए पर्याप्त होता था। अनेक लम्बे मधुर क्षणो के सिवा हम अपने प्रेम को स्थायी बनाने के लिए और भी बहुत-से छोटे-छोटे तरीके काम में लाते थे। जब हम अलग-अलग कमरो मे रहते, तो सदा एक दूसरे के विषय मे सोचा करते। इस प्रकार एक-दूसरे को याद करना कभी-कभी सफल होता था और हमारा तत्काल ही मधुर मिलन हो जाता। ऐसा कदाचित् इसीलिए होता था कि हम दोनो की विचारधारा एक ही दिशा मे प्रवाहित होती थी।

हम आपस मे बाते करते कि हमारा ब्याह तो उसी दिन हो गया था, जिस दिन वह इस अस्पताल मे आई थी। उस ब्याह के दिन से हम पीछे खिसकने वाले महीने गिना करते। मै तो विधिवत् शादी कर लेना चाहता था; किन्तु कैथरीन डरती थी कि यदि हम दोनो का ब्याह होना निश्चित हो गया, तो अधिकारी-वर्ग उसे मुझसे दूर, कहीं अन्यत्र भेज देगा। वह यह भी कहा करती थी कि यदि हम लोकाचार पर अधिक ध्यान देंगे, तो हम अधिकारी-वर्ग की निगाहों मे आ जायेगे और वह हम दोनो को अलग-अलग कर देगा। फिर हमारी शादी भी इटालियन विधान के अनुसार होगी, जहाँ नियमो की भरमार थी—बड़े कठोर नियम थे। पर मै सचमुच विधिवत् शादी करने का इच्छुक था; क्योकि जब मै इस विषय में सोचता, तो अपनी होनेवाली सतान का भविष्य मेरी आँखो के आगे आ जाता। फिर भी हम आपस मे ऐसा ही व्यवहार करते कि

हमारा ब्याह हो चुका है और इस सम्बन्ध मे अधिक नहीं सोचते। तब मुझे लगता कि हमारा अविवाहित रहना ही अधिक आनंदजनक है।

मुझे स्मरण है, एक दिन मैंने कैथरीन से शादी के विषय मे बात की थी। कैथरीन ने कहा था—"किन्तु प्रियतम, तब ये लोग मुझे यहाँ से कही और भेज देगे।"

"हो सकता है, वे न भी भेजे।"

"वे निश्चित रूप से भेज देगे। वे मुझे घर भेज देगे और तब हम दोनो को युद्ध का अन्त होने तक एक-दूसरे से दूर रहना पडेगा।"

"मै छुट्टी लेकर आ जाऊँगा।"

"तुम्हे स्कॉटलैड जाकर लौटने की छुट्टी नही मिल सकती। फिर मैं तुमसे दूर रह भी तो नहीं सकूँगी। इस समय शादी होने से हमारा कौन-सा भला होगा? हम तो यो भी शादीशुदा हैं। मेरी शादी अब दुबारा तो हो नही सकती।"

"मै तुम्हारे हित मे ही यह सब करना चाहता था।"

"अब हमारे बीच 'मै'-'तुम' नाम की कोई वस्तु नहीं रही। मै तुम हूँ—तुम मै हो। यह 'मैं' और 'तुम' का भेद मत खडा किया करो।"

"मेरा अनुमान था कि लडकियाँ हमेशा विवाह कर लेना पसन्द करती हैं।"

"अवश्य, किन्तु प्रियतम, मै तो विवाहित हूँ। मेरा तुमसे विवाह हो चुका है। क्या मै तुम्हारी योग्य पत्नी नही हूँ?"

"क्यों नही, तुम बड़ी योग्य और सुन्दर पत्नी हो!"

"प्राण! जानते हो न, मुझे विवाह के समय की प्रतीक्षा करने का एक कटु अनुभव प्राप्त हो चुका है।"

"मैं उसके विषय मे नहीं सुनना चाहता।"

"तुम जानते हो कि मै तुम्हे छोड़कर किसी और से प्रेम नहीं करती। यदि किसी और ने मुझसे प्रेम किया था, तो तुम्हे उसका बुरा नही मानना चाहिए।"

"क्यों नहीं?"

"जब तुम्हें सब-कुछ प्राप्त हो चुका है, तो फिर उस अभागे से, जो इस दुनिया से उठ चुका है, ईर्ष्या करने से क्या लाभ?"

"कुछ नहीं, किन्तु मै इस विषय मे कुछ सुनना पसन्द नही करता।"

"मेरे भोले प्रियतम! मै जानती हूँ तुम सब तरह की स्त्रियो के सम्पर्क मे रह चुके हो; किन्तु उससे मेरे प्रेम में तो कोई अन्तर नही पड़ता।"

"क्या हम किसी तरह गुप्त रूप से विवाह नही कर सकते? तब यदि मुझे कुछ हो गया या तुम्हे बच्चा पैदा हुआ—तो भी चिंता करने लायक कोई बात नही रहेगी।"

"गिरजाघर मे अथवा राष्ट्रीय क़ानून के अनुसार, विधिवत् विवाह करने के सिवा हमारे समक्ष अन्य कोई मार्ग नही है। गुप्त रूप से तो हम विवाहित बन ही चुके हैं। यदि मै किसी विशेष धर्म का पालन करती होती, तो उसमे नियमानुसार शादी करना ही मेरे लिए सब-कुछ होता। किन्तु मेरा तो कोई धर्म ही नहीं है।"

"याद है, तुमने मुझे सन्त एन्थोनी दिया था?"

"वह केवल इसलिए कि भाग्य तुम्हारी रक्षा करे। मुझे भी किसी और ने दिया था।"

"तब तुम्हें कोई चिन्ता नहीं है?"

"केवल एक। तुमसे दूर भेजे जाने की। तुम मेरे धर्म हो, देवता हो। मेरे सर्वस्व हो—मेरी एकमात्र सम्पत्ति!"

"तब ठीक है। किन्तु तुम जिस दिन कहोगी, उसी दिन मै तुमसे विवाह कर लूँगा।"

"ऐसी बाते मत किया करो प्रियतम, कि तुम मुझे एक वफादार औरत बनाना चाह रहे हो। मै आप ही बड़ी वफादार हूँ। यदि तुम सतुष्ट और प्रसन्न हो और तुम्हे मुझ पर गर्व है, तो तुम्हे किसी चीज़ के लिए लज्जित नहीं होना पड़ेगा। बोलो, क्या तुम सुखी नही हो?"

"किन्तु कही तुम किसी और के लिए मुझे छोड़ तो नहीं दोगी?"

"नहीं प्राण, नही, मै किसी के लिए भी तुम्हें कभी नही छोड़ूँगी। मेरा अनुमान है कि हमारे साथ सभी प्रकार की भयावह घटनाएँ घटेगी। किन्तु तुम्हे उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

"अच्छी बात है। किन्तु मै तो तुमसे इतना प्रेम करता हूँ और तुमने निश्चय ही पहले किसी और से भी प्रेम किया है।"

"पर उसका अन्त क्या हुआ?"

"वह मर गया।"

"हाँ, और यदि वह मर न गया होता, तो मै तुमसे मिलती भी नहीं। मै बेवफ़ा नहीं हूँ, प्रियतम! मुझमें अनेक दुर्गुण हैं, बहुत-सी कमजोरियाँ हैं—किन्तु मै हूँ बहुत वफ़ादार। मै इतनी वफादार रहूँगी कि तुम मुझसे तग आ जाओगे।"

"मुझे शीघ्र ही मोर्चे पर लौट जाना पड़ेगा।"

"जब तक तुम चले नही जाओ, तब तक हम उस विषय में सोचेंगे ही नहीं। देखते हो न प्रियतम, मै कितनी सुखी हूँ! हमारा समय कितनी सुंदरता से बीत जाता है। मै एक लम्बे अर्से तक दुःखी रही हूँ और कदाचित् जब मै तुमसे पहली बार मिली थी, तब करीब-करीब पागल हो चुकी थी। हॉ, शायद तब मै पागल ही थी। किन्तु आज हम सुखी हैं—हम एक-दूसरे से प्रेम करते है और हम इसी प्रकार सुखी बने रहे, तो अच्छा है। तुम सुखी हो। हो न? क्या मै कोई ऐसा काम करती हूँ, जो तुम्हे अच्छा नही लगता? बोलो, तुम्हे प्रसन्न रखने के लिए मुझे क्या करना होगा? मेरे केश खोलकर उन्हे नीचे लहराना तुम्हे पसन्द है? तुम उनसे खेलना चाहते हो?"

"हॉ, तुम बिस्तर पर आ जाओ।"

"अच्छी बात है। लेकिन जरा ठहरो, पहले दूसरे रोगियो को एक बार देख आऊँ मै।"

• १९ •

इसी प्रकार ग्रीष्म ऋतु बीत गई। दिन कैसे बीते, वस्तुतः मुझे अच्छी तरह याद नहीं है। हॉ, इतना अवश्य याद है कि दिन मे बहुत गर्मी पड़ती थी और समाचारपत्रो मे विजय-प्राप्ति के अनेक समाचार पढने को मिला करते थे। मै अब बहुत स्वस्थ हो गया था। मेरे घाव शीघ्रता से भर रहे थे, फलतः पहले के समान बैसाखियो के सहारे चलने की जरूरत नहीं रह गयी थी। मैने उनसे जल्दी ही पीछा छुड़ा लिया था और अब मै केवल एक छडी के सहारे घूमता रहता था। बाद मे, मै घुटना आसानी से मोड़ सकूँ, इसके लिए बड़े अस्पताल में मेरा उपचार प्रारम्भ हुआ—यान्त्रिक-चिकित्सा! कॉच के एक सन्दूक मे, बैंगनी प्रकाश-किरणें भरकर, उसमे मेरा घुटना रखकर सेंका जाता, उसकी मालिश की जाती और उसे नहलाया-धुलाया जाता। मै तीसरे पहर अस्पताल जाता था। वहॉ से मै कॉफे में जाता, कुछ पीता और समाचारपत्र पढ़ता। कॉफे से निकलकर शहर में घूमने के बदले मै अपने अस्पताल में ही लौट आने का इच्छुक रहता। मेरी केवल एक ही इच्छा रहती थी—कैथरीन को देखने की इच्छा। शेष समय मै हँसी-खुशी से बिता देता। सबेरे प्रायः सोता

रहता, तीसरे पहर, कभी-कभी घुडदौड़ देखने चला जाता और यांत्रिक-चिकित्सा के लिए अस्पताल जरा देर से पहुँचता। कभी कभी मै आग्ल-अमरीकन क्लब पहुँचकर, खिड़की के सामने, चमड़े की मोटी गद्दीदार कुरसी में बैठा-बैठा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ा करता। बैसाखियॉ छोड़ने के बाद अधिकारी-वर्ग कैथरीन और मुझे एक साथ नही जाने देता था; क्योकि एक परिचारिका का एक ऐसे रोगी के साथ, जिसे परिचारिका की कोई विशेष आवश्यकता नही थी, बिना किसी प्रौढ़ा के, इस प्रकार स्वतन्त्रतापूर्वक घूमना उनकी दृष्टि में भद्दा लगता था। इसीलिए तीसरे पहर हम लोग अधिक समय तक साथ नही रहते थे। हॉ, यदि फर्ग्यूसन हमारे साथ रहती थी, तो कभी-कभी हम बाहर भोजन करने जा सकते थे। मिस वॉन कैम्पेन ने इसे बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लिया था कि हम दोनों बड़े गहरे मित्र हैं, क्योकि कैथरीन उसका बहुत काम कर देती थी। वह समझती थी कि कैथरीन एक बड़े कुलीन और उच्च वश की लड़की है। मिस वॉन कैम्पेन किसी के वश के सम्बन्ध मे बड़ी सावधानी बरतती थी। वह स्वय भी एक बड़े उच्च कुल की थी। अब अस्पताल में भी काफ़ी काम बढ़ गया था। परिणामस्वरूप वह सदा व्यस्त रहती थी। उस वर्ष गर्मी बहुत पड़ रही थी। मैं मिलान मे बहुत से लोगो को जानता था; किन्तु, तीसरे पहर के बाद हमेशा अस्पताल लौट जाने की इच्छा प्रबल हो उठती थी। मोर्चे पर हमारी सेना कार्सो की ओर बढ रही थी। प्लावा को पार करके उन्होने कुक को जीत लिया था और अब बेन्सिज्जा पठार को जीतने की कोशिश कर रहे थे। पर पश्चिमी मोर्चे पर हमारी इतनी अच्छी प्रगति नहीं थी। हमे ऐसा प्रतीत होता था कि एक लम्बे अर्से से युद्ध चल रहा है। यद्यपि हम इस समय युद्धरत थे, किन्तु मेरा ख़याल था कि बहुत बड़ी संख्या में सैनिक इकट्ठा करने और उन्हे युद्ध की शिक्षा देने मे कम-से-कम एक वर्ष लग जायगा। अगला वर्ष बड़ा ख़राब वर्ष होगा या सम्भव है, अच्छा भी हो। इटालियन लोग काफी बडी सख्या मे युद्ध मे भाग ले रहे थे। पर मै यह नही समझ पा रहा था कि इस तरह काम कैसे चलेगा? यदि इटालियनो ने समस्त बेन्सिज्जा पठार पर कब्ज़ा भी कर लिया, मॉन्टे सॉन जेब्राइल भी जीत लिया, तो आस्ट्रियनों के लिए उनसे आगे और भी बहुत-से पहाड़ थे। मैंने उन्हें देखा था। सभी ऊँचे-उँचे पहाड़ आगे की ओर ही थे। कार्सो पर वे सचमुच आगे बढ रहे थे; किन्तु इसके बाद नीचे की ओर समुद्र के पास दलदल और कीचड़ थी। नैपोलियन आस्ट्रियनों को मैदानो मे ही बुरी तरह पराजित कर

सकता था; किन्तु वह उनसे पर्वतों में कभी नहीं लडता। वह उन्हे नीचे मैदानो में उतरने देता और तब उन्हें वेरोना के आसपास नाको चने चबवा देता। तब भी पश्चिमी मोर्चे पर कोई किसी को नाको चने नही चबवा रहा था। कदाचित् युद्ध अब जीतने के लिए नहीं होते थे—शायद वे हमेशा के लिए चला करते थे। सम्भवतः यह दूसरा शतवर्षीय युद्ध था।

मैंने समाचारपत्र को रैक मे रख दिया और क्लब छोड़कर चल दिया। सावधानी के साथ मै सीढियो से नीचे उतरा और वाया मान्जोनी पर चलता गया। ग्रॉन होटल के सामने मुझे वृद्ध मेअर्स और उनकी स्त्री गाड़ी से उतरते हुए दिखाई दिये। वे लोग घुडदौड से लौट रहे थे। श्रीमती मेअर्स बड़े-बड़े स्तनों वाली औरत थी। वह काली साटन के कपड़े पहने हुए थी। मेअर्स महाशय ठिगने और बूढे थे। उनकी मूँछें सफेद थी और वे छुडी के सहारे चलते थे।

"कहो कैसे हो। स्वस्थ तो हो?" श्रीमती मेअर्स ने हाथ मिलाया।

"हेलो!" श्री मेअर्स ने कहा।

"घुड़दौड़ कैसी रही?"

"सुन्दर! बडी प्यारी दौड़ थी। मै तीन बार जीती।"

"आपका क्या हाल रहा?" मैने श्री मेअर्स से पूछा।

"ठीक रहा। मै एक बार जीता।"

"मै कभी नही जान पाती कि ये कैसे जीतते हैं?" श्रीमती मेअर्स बोली—"ये मुझे कभी नहीं बताते।"

"मै, बस, जीत जाता हूँ।" मेअर्स ने कहा। वे बड़ी विनम्रता से बाते कर रहे थे—"तुम्हे अब बाहर निकल कर घूमना-फिरना चाहिए।" जब वे किसी से बाते करते, तो ऐसा प्रतीत होता कि वे अपने सामने खड़े हुए व्यक्ति की ओर न देखकर कहीं और देख रहे हैं या फिर ऐसा लगता कि उन्होंने ग़लती से अपने सामने वाले व्यक्ति को कोई और समझ लिया है।

"निकला करूँगा बाहर।" मैंने कहा।

"मै तुमसे मिलने के लिए अस्पताल आने वाली हूँ।" श्रीमती मेअ बोली—"अपने बच्चो के लिए मेरे पास कुछ सौग़ातें हैं। तुम सब मेरे बच्चे हो। सचमुच, तुम लोग मेरे प्रिय बच्चे ही तो हो!"

"वे सब आपसे मिलकर बड़े प्रसन्न होंगे।"

"मेरे तो प्यारे बच्चे हैं वे। तुम भी। तुम भी मेरे उन बच्चो में से एक हो।"

"मुझे वापस जाना है।" मैने कहा।

"उन सब प्यारे बच्चो से मेरा प्यार कहना। मुझे तुम सबके लिए बहुत-सी वस्तुएँ लाना है। मेरे पास कुछ सुन्दर मार्साला (सिसली मे बनी हुई शेरी के समान शराब) और केक है।"

"अच्छा नमस्ते—" मै बोला—"वे सब आपसे मिलकर वस्तुतः बहुत प्रसन्न होंगे।"

"नमस्ते—" मेअर्स ने कहा—"कभी गैलेरिया की ओर आया करो न! मेरी मेज कहाँ है, यह तो तुम जानते ही हो। हम लोग प्रति दिन सन्ध्या-समय वहीं रहते है।"

मै सड़क पर आगे बढ़ता गया। कोवा से मै कैथरीन के लिए कुछ खरीदना चाहता था। भीतर जाकर, कोवा मे मैने चॉकलेट का एक पैकेट खरीदा और जब तक वहाँ की लडकी उसे कागज मे लपेटने मे लगी रही, मै शराब पीने के कमरे मे घुस गया। वहाँ एक अंग्रेज दम्पति तथा कुछ वायुयान-चालक बैठे हुए थे। मैने केवल मार्टिनी (शराब) ली, उसके पैसे चुकाये, बाहरी काउटर पर से चॉकलेट का पैकेट उठाया और अस्पताल की ओर चल दिया। सडक पर, स्काला से आगे, एक छोटे-से उपाहारगृह के बाहर, मेरी जान-पहचान के कुछ व्यक्ति बैठे थे। उनमे से एक वहाँ का उप-न्यायाधीश था, दो सगीत के विद्यार्थी थे और सॉनफ्रान्सिस्को-निवासी एक इटालियन था, एत्तोरे मोरेत्ती, जो इटालियन सेना मे था। मैने उनके साथ कुछ शराब पी। सगीत के विद्यार्थियो मे एक का नाम रॅाल्फ सिमन्स था और वह एन्रिको-डेल-क्रेडो नाम से गाया करता था। वह कैसा गाता था, यह मै बिलकुल नही जानता था; किन्तु वह कोई बड़ा भारी कार्य करने के लिए सदा तैयार रहा करता था। वह मोटा था और उसकी नाक के आस-पास ऐसा दीखता था, जैसे वह किसी दूकान मे रखे-रखे घिस गयी हो। उसका मुँह भी ऐसा लगता था, मानो वह ग्रीष्म-ज्वर से पीड़ित हो। वह पिआसेन्जा मे गाकर लौटा था। वहाँ उसने टोस्का (एक धुन) गाया था और सुनने मे आया कि उसका गाना बड़ा सुदर रहा था।

"निश्चय ही, तुमने मुझे कभी गाते हुए नही सुना है।" वह बोला।

"यहाँ कब गाने वाले हो तुम?"

"पतझड़ के मौसम मे, स्काला मे।"

"मै शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि लोग इस पर बेचें फेकेंगे।" एत्तोरे बोला—"तुमने कुछ सुना, लोगों ने मोडेना मे इस पर किस प्रकार बेचे उछाली थी?"

"यह सरासर झूठ है।"

"उन्होने इस पर बेचें फेकी थीं।" एत्तोरे बोला—"मै वहॉ मौजूद था। मैंने स्वयं छः बेचे फेकी थी।"

"तुम फ्रिस्को के एक मूर्ख इटालियन हो!"

"यह इटालियन का उच्चारण तक नहीं कर सकता।" एत्तोरे ने कहा—"हर जगह, जहॉ यह जाता है, वही इस पर बेचे उछाली जाती है।"

"पिआसेन्जा, उत्तर इटली मे गायको के लिए सबसे कठिन जगह है।" दूसरे ने ज़रा ऊँचे स्वर मे कहा—"विश्वास कीजिए, वहॉ के उस छोटे-से सगीत-गृह में गाना बडा ही कठिन है।" इस व्यक्ति का नाम एड्गर सौडर्स था और एडाउआर्डो जिओवान्नी के नाम से गाता था।

"मै वहॉ जाकर यह देखना पसद करूँगा कि लोग किस प्रकार तुम्हारे ऊपर बेचे फेकते हैं।" एत्तोरे बोला—"तुम इटालियन गाना गा ही नही सकते।"

"इस मूर्ख की बाते सुनो—" एड्गर सौन्डर्स बोला—"यह केवल दो ही शब्द बोलना जानता है—बेच और फेकना।"

"जब तुम दोनो रेकने बैठते हो, तो श्रोतागण केवल ये दो ही शब्द जानते हैं।" एत्तोरे बोला—"और जब तुम अमेरिका जाओगे, तो वहॉ, स्काला मे प्राप्त सफलता का ढिढोरा पीटोगे। पर यह जान लो कि स्काला में अपने पहले राग के बल पर तुम टिक नही सकोगे। लोग तुम्हे गाने ही नही देगे।"

"नहीं, मै स्काला मे गाऊँगा।" सिमन्स बोला—"मै वहॉ अक्टूबर में टोस्का गाऊँगा।"

"हम वहॉ चलेगे। चलगे न, मैक!" एत्तोरे ने उप-न्यायाधीश से पूछा—"इन्हे अपनी रक्षा के लिए भी तो किसी की आवश्यकता पड़ेगी।"

"हो सकता है, वहॉ इनके बचाव के लिए अमरीकी सेना मौजूद हो!" उप-न्यायाधीश बोला—"क्या तुम और पीना चाहते हो, सिमन्स? सौडर्स तुम?"

"अच्छी बात है, पिलाओ।" सौडर्स ने कहा।

"मैने सुना है कि तुम्हे रजत-पदक मिलने वाला है।" एत्तोरे ने मुझसे पूछा—"तुम्हें यह किस बात का पुरस्कार प्राप्त होने वाला है?"

"मैं नही जानता। मुझे कोई पुरस्कार मिलने वाला है, यह भी मै नहीं जानता।"

"नही, तुम्हे मिलेगा। और दोस्त, तब कोवा की सब लडकियॉ सोचेंगी कि तुम बड़े सुदर हो। वे समझेगी कि तुमने दो सौ आस्ट्रियन सैनिको को

मौत के घाट उतार दिया था अथवा तुमने अकेले ही दुश्मनो की पूरी खाई पर अधिकार कर लिया था। विश्वास करो, मुझे तो अपने पुरस्कारो की लाज रखने के लिए ही काम करना पडता है।"

"तुम्हे कितने पुरस्कार प्राप्त हो चुके है, एत्तोरे?" उप-न्यायाधीश बोला।

"उसे तो सारे पुरस्कार मिल चुके हैं।" सिमन्स बोला—"यही तो वह व्यक्ति है, जिसके लिए युद्ध हो रहा है।"

"मुझे दो ताम्र पदक और तीन रजत-पदक प्राप्त हो चुके है—" एत्तोरे ने कहा—"किन्तु अभी तक मज़ूरी केवल एक ही पदक की आयी है।"

"और दूसरे पदको का क्या हुआ?" सिमन्स ने प्रश्न किया।

"आक्रमण असफल रहा।" एत्तोरे ने उत्तर दिया—"जब आक्रमण सफल नही होता, तो पुरस्कार-पदक नही दिये जाते।"

"तुम कितनी बार घायल हो चुके हो, एत्तोरे?"

"तीन बार बुरी तरह। मुझे अपने घावो के पुरस्कार-स्वरूप तीन पट्टियॉ प्राप्त हुई हैं। यह देखो।" उसने अपनी कमीज की बॉह नीचे गिराकर पट्टियॉ दिखाई। ये पट्टियॉ काली पृष्ठभूमि पर तीन समानान्तर रजत-रेखाएँ थी। कन्धे से करीब आठ इन्च नीचे की ओर उन्हे कमीज की बॉह पर सी दिया गया था।

"तुम्हे भी तो एक मिली है।" एत्तोरे ने मुझसे कहा—"विश्वास करो, इन्हे लगाकर आदमी बडा अच्छा लगता है। मै पदको की अपेक्षा इन्हे ही प्राप्त करना अधिक पसद करूँगा। विश्वास करो दोस्त, जब तुम्हे तीन पट्टियॉ मिल जायें, तो समझना, तुम्हे कुछ मिला है। उस एक घाव के बदले, जो तुम्हे पूरे तीन माह तक अस्पताल मे पड़े रहने पर बाध्य करता है, तुम्हें केवल एक पट्टी मिलती है।"

"एत्तोरे, तुम कहॉ आहत हुए थे?" उप-न्यायाधीश ने प्रश्न किया।

एत्तोरे ने अपनी बॉह ऊपर चढा ली। "यहॉ पर—" उसने एक गहरा लाल चिह्न दिखाते हुए कहा—"फिर यहॉ, मेरी टॉग मे चोट लगी थी। पट्टियॉ चढी हैं, इसलिए मै तुम्हे उसे नहीं दिखा सकता। और पॉव मे—तीसरा घाव पॉव मे है। मेरे पॉव में एक सडी हुई हड्डी है, जिससे आज भी दुर्गंध आती है। प्रति दिन सबेरे मै उसके नये-नये सड़े हुए नन्हे टुकड़े बाहर निकालकर फेका करता हूँ।"

"तुम किस चीज से आहत हुए थे?" सिमन्स ने पूछा।

"एक हथगोले द्वारा। उन आलुओ जैसे दीखनेवाले हथगोलो में से एक मुझे

भी लग गया था। उसने मेरे पैर का एक पूरा हिस्सा ही उडा दिया। इन हथगोलो से परिचित हो तुम?" मेरी ओर मुड़कर वह बोला।

"क्यो नही।"

"एक कुतिया के बच्चे ने उसे मेरे ऊपर फेक दिया—मैंने उसे फेकते हुए देखा था।" एत्तोरे बोला—"हथगोले ने मुझे नीचे गिरा दिया। क्षणभर के लिए मैने सोचा कि मै बिलकुल खत्म ही हो गया, किन्तु इन आलुओ-जैसे गोलों मे कुछ होता ही नही। मैने उस कुतिया के बच्चे को राइफल की गोली से उडा दिया। मै हमेशा अपने साथ राइफल लेकर चलता हूॅ, इसलिए कोई कह भी नहीं सकता कि मै एक अफसर हूॅ।"

"वह कैसा दिखाई देता था?" सिमन्स ने पूछा।

"उसके पास बस, वही एक गोला था।" एत्तोरे बोला—"मेरी तो समझ मे नही आता कि आखिर उसने उसे फेका ही क्यो? मेरा अनुमान है कि वह शायद एक-आध गोला फेकने के लिए उत्सुक था। कदाचित् उसने कभी सच्चा युद्ध देखा ही नही था। मैने उसी क्षण उस पिल्ले को उसकी गुस्ताखी की सजा दे दी।"

"जब तुमने उसे मारा, तो वह कैसा दिखाई दे रहा था?" सिमन्स ने दुहराया।

"तुम्हारा सिर। यह भला मै क्या जानूॅ?" एत्तोरे बोला—"मैने उसके पेट मे गोली मार दी, बस! मुझे भय था कि यदि मैने उसके सिर का निशाना लगाया, तो मेरा निशाना चूक जा सकता है।"

"तुम कितने दिनो से अफसर हो, एत्तोरे?" मैने पूछा।

"दो वर्ष से। मै अब कैप्टन बनने जा रहा हूॅ। तुम कब से लैफ्टिनेण्ट हो?"

"तीसरा वर्ष चल रहा है।"

"तुम कैप्टन नही बन सकते, क्योकि तुम इटालियन भाषा अच्छी तरह नही जानते।" एत्तोरे बोला—"तुम उसे बोल तो सकते हो; किन्तु अच्छी तरह पढ-लिख नही सकते। कैप्टन बनने के लिए तुम्हे उसे अच्छी तरह सीखना पड़ेगा। तुम अमरीकी सेना मे क्यो नही चले जाते?"

"शायद मै कभी चला जाऊॅ।"

"मै ईश्वर से प्रार्थना करता हूॅ कि मै भी वहीं भर्ती हो जाऊॅ। एक कैप्टन को क्या मिलता है, मैक?"

"मुझे ठीक-ठीक नही मालूम। मेरा खयाल है—दो सौ पचास डॉलर के आसपास।"

"हे भगवान्! दो सौ पचास डालर का मैं करूँगा क्या? तुम जितनी जल्दी हो सके, अमरीकी सेना मे चले जाओ, फ्रेड और मेरे लिए भी कुछ प्रयत्न कर दो न!"

"अच्छी बात है!"

"मैं इटालियन भाषा में एक पूरे सैन्य-दल को आदेश दे सकता हूँ। अंग्रेजी मे आदेश देना भी मै सरलतापूर्वक सीख जाऊँगा।"

"तुम तो जनरल बनोगे।" सिमन्स बोला।

"नहीं, जनरल बनने की योग्यता मुझमे नहीं है। जनरल को सत्रह सौ साठ बातो की जानकारी रखनी पडती है। तुम गधो का खयाल है कि लड़ने में कुछ नहीं रखा है। वस्तुतः तुम लोगों के पास तो दूसरी श्रेणी के नायक बनने योग्य बुद्धि भी नहीं है।"

"ईश्वर को धन्यवाद! कम-से-कम मुझे तो नायक नहीं बनना है।" सिमन्स बोला।

"यदि राज्य ने तुम-जैसे ढीले व्यक्तियो की भी धर-पकड शुरू की, तो हो सकता है कि तुम्हे भी बनना पड़े। लड़के, तुम दोनो को तो मै अपनी टुकड़ी में रखना चाहूँगा। मैक को भी। मैक, मै तुम्हें अपना अर्दली बना लूँगा।"

"तुम एक महान व्यक्ति हो, एत्तोरे।" मैक बोला—"किन्तु मुझे शंका है कि तुम युद्ध के मैदान मे भी इतने ही बहादुर हो!"

"देखना, मैं युद्ध बन्द होने से पूर्व ही कर्नल बन जाऊँगा।" एत्तोरे बोला।

"यदि तुम मारे न गये, तो।"

"नही, मै मारा नहीं जाऊँगा।" उसने अपनी कॉलर पर लगे हुए सितारो का अँगूठे तथा तर्जनी से स्पर्श किया—"देखा तुमने? मैने क्या किया? यदि कोई हमसे हमारे मारे जाने की बात करता है, तो हम सदा अपने सितारो का स्पर्श कर लेते हैं।"

"चलो सिम, अब चलें—" सौन्डर्स ने खड़े होते हुए कहा।

"अच्छा।"

"अच्छा, नमस्ते" मैने कहा—"मुझे भी जाना है।"

उपाहार-गृह की घड़ी मे पौने छः बज चुके थे—"ईश्वर तुम्हारा सहायक हो, एत्तोरे!"

"भगवान् तुम्हारा भला करे, फ्रेड!" एत्तोरे बोला "तुम्हें रजत-पदक मिलने जा रहा है, यह बडा अच्छा है।"

"मुझे विश्वास नही होता कि मिलेगा।"

"मिलेगा, अवश्य मिलेगा, फ्रेड! मैने सुना है कि तुम्हें निश्चित रूप से रजत-पदक मिलने वाला है।"

"अच्छा, पुनर्मिलन तक विदा—" मैने कहा—"जरा सावधानी रखना एत्तोरे, नहीं तो किसी आफत मे फॅस सकते हो।"

"मेरी चिन्ता मत करो। न तो मै पीता ही हूॅ और न ही मै किसी के आगे-पीछे भागता हूॅ। मै पियक्कड भी नहीं हूॅ और वेश्यागामी भी नहीं। मै जानता हॅू कि मेरा हित किसमे है।"

"अच्छा, आगामी भेट तक के लिए विदा—" मै बोला—"मुझे प्रसन्नता है कि कैप्टन के रूप मे तुम्हारी पद वृद्धि होने जा रही है।"

"मुझे पद-वृद्धि के लिए प्रतीक्षा नही करनी है। मै तो अपनी युद्ध-कुशलता के कारण कैप्टन होने जा ही रहा हॅू। समझे तुम? तिरछी काटती हुई दो तलवारो के साथ तीन सितारे और ऊपर मुकुट। यही होगा तब मेरा रूप।"

"अच्छा, अनेक शुभ कामनाएॅ।"

"शुभ कामनाएॅ। तुम मोर्चे पर कब लौट रहे हो?"

"बहुत शीघ्र।"

"मै मिलूॅगा फिर तुमसे।"

"विदा!"

"विदा! कोई खोटा रजत-पदक स्वीकार मत कर लेना।"

मै एक गली मे, जो अस्पताल जाने वाले सीधे मार्ग से जाकर मिलती थी, आगे बढ़ा। एत्तोरे तेईस वर्ष का था। उसका पालन-पोषण सॉनफ्रान्सिस्को मे उसके चाचा द्वारा हुआ था। जब युद्ध की घोषणा हुई थी, तब वह टोरिनो मे अपने मॉ-बाप से मिलने आया था। उसकी एक बहन थी। वह इस वर्ष नार्मल-स्कूल से स्नातिका बनने वाली थी। वह भी अपने चाचा के पास ही अमेरिका में रह रही थी। एत्तोरे वास्तव मे एक बहादुर सिपाही था। पर बातूनी भी बडा था वह! जिस किसी से मिलता, उसी को अपनी बातो से थका डालता। कैथरीन तो उसके सामने आने मे भी घबराती थी।

"हमारे यहॉ भी एक-से-एक सूरमा हैं।" उस दिन एत्तोरे के विषय में बात करने पर वह बोली—"किन्तु प्रियतम, सामान्यतः वे बड़े शात स्वभाव के होते हैं।"

"मैं एत्तोरे की बातो पर ध्यान नहीं देता।"

"यदि वह इतना घमंडी न होता और सदा बक-बक करके मुझे परेशान न करता, तो मै भी उसका बुरा न मानती।"

"मै भी उससे तग आ जाता हूँ।"

"ऐसा कहकर तुम उदारता प्रकट कर रहे हो, प्रिय! किन्तु इसकी आवश्यकता नही है। मोर्चे पर वह क्या करता है, इसकी तुम कल्पना कर सकते हो और जानते हो कि वह उपयोगी व्यक्ति है। किन्तु वह उन व्यक्तियो के समान है, जिन्हे मै बिलकुल पसन्द नहीं करती।"

"मै जानता हूँ।"

"यह तुम्हारी शालीनता है। मै उसे पसंद करने का प्रयत्न करती हूँ; किन्तु वह बडा भयानक है—सचमुच बडा भयानक व्यक्ति है!"

"वह आज शाम को कह रहा था कि वह शीघ्र ही कैप्टन बनेगा।"

"सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई।" कैथरीन बोली—"इससे तो उसे प्रसन्न होना चाहिए।"

"क्या तुम नहीं चाहती कि मुझे भी कोई बहुत ऊँचा पद प्राप्त हो?"

"नहीं प्रियतम! मै केवल इतना ही चाहती हूँ कि तुम्हे कोई इतना ऊँचा पद मिल जाए, जिससे हम लोग उच्च श्रेणी के होटलो मे प्रवेश पा सके।"

"इतना ऊँचा पद तो मेरा अभी भी है।"

"सचमुच बड़ा अच्छा पद है तुम्हारा। मै नहीं चाहती कि तुम्हे और ऊँचा पद मिले। उससे तुम्हारा दिमाग बदल जायगा। ओह, प्रिय! मै बड़ी प्रसन्न हूँ कि तुम्हे घमड नही है। यदि तुम घमडी भी होते, तो भी मै तुम्ही से ब्याह करती। किन्तु ऐसा पति प्राप्त होना, जो आत्मप्रशंसक न हो, बड़े ही सुख-सन्तोष की बात होती है।"

हम बरामदे मै बैठे हुए, धीमे स्वर में बाते कर रहे थे। नीले आकाश में चन्द्रमा के उदय होने की अपेक्षा थी, किन्तु शहर पर कुहासा छाया हुआ था, अतः उसका उदय होना मालूम नही पड़ा। थोडी देर बाद बूदा-बादी होने लगी। हम भीतर चले आये। बाहर, कुहासा वर्षा में बदल गया और कुछ समय बाद ही बड़े जोर की वर्षा आरभ हो गयी। हमे छत पर पानी गिरने का भड़ भड़ शब्द सुनाई दिया। मै उठा और यह देखने के लिए, कि कही कमरे मे तो बौछारे नही आ रही हैं, द्वार तक गया। किन्तु पानी भीतर नहीं आ रहा था। मैं द्वार खुला छोड़कर लौट आया।

"तुम्हारी और किससे भेट हुई थी?" कैथरीन ने पूछा।

"श्रीमान् और श्रीमती मेअर्स से।"

"वे दोनो भी बड़े विचित्र हैं।"

"आशा तो यही थी कि मेअर्स को अपने नगर के सुधार-गृह में रखा जाएगा, किन्तु अधिकारियो ने उसे मरने के लिए बाहर छोड दिया।"

"और बाद मे, वह सदा के लिए मिलान मे सुख से रहने लगा।"

"मै नही जानता, कितने सुख से रह रहा है वह।"

"मै तो समझती हूँ, कारावास से मुक्त होने के बाद बडे आराम से जीवन बिता रहा है वह।"

"श्रीमती मेअर्स कुछ वस्तुएँ लेकर यहाँ आनेवाली है।"

"वह बडी आकर्षक सौग़ाते लाया करती है। क्या तुम उसके प्रियजन हो?"

"उनमें से एक।"

"तुम सब उसके प्यारे बेटे हो।" कैथरीन बोली—"वह अपने इन प्रिय बच्चो को अधिक पसन्द करती है। सुनो, बाहर वर्षा हो रही है।"

"बडे जोर से।"

"तुम सदा मुझसे प्रेम करोगे। करोगे न?"

"अवश्य।"

"और इस वर्षा से तुम्हारे प्रेम मे कोई अंतर तो नही पडेगा?"

"नहीं।"

"तब ठीक है, क्योकि वर्षा से मुझे डर लगता है।"

"क्यो?" मै ऊँघते हुए बोला। बाहर लगातार पानी बरस रहा था।

"कह नही सकती, प्रियतम, क्यो! पर मै वर्षा से हमेशा डरती रही हूँ।"

"मुझे तो बरसात अच्छी लगती है।"

"मै भी उसमें घूमना पसंद करती हूँ। किन्तु उससे प्रेम करना मेरे लिए कठिन है।"

"मै सदा तुमसे प्रेम करूँगा।"

"मै भी सदा तुमसे प्रेम करूँगी—वर्षा मे—बर्फ़ मे—ओले गिरने पर भी—और भी जो कुछ आये उसमे—हर हालत मे—प्रत्येक परिस्थिति मे! इन वर्षा, बर्फ़ और ओलो आदि के सिवा और क्या होता है?"

"मुझे नहीं मालूम। मैं शायद ऊँघ रहा हूँ।"

"तब सो जाओ प्रिय, और मै तुमसे प्रेम करूँगी। चाहे कैसी ही परिस्थिति क्यो न हो, मुझे चिन्ता नहीं।"

"लेकिन तुम वास्तव मे वर्षा से नहीं डरती? है न?"
"जब मै तुम्हारे साथ रहती हूँ, तब नहीं।"
"क्यो डरती हो उससे?"
"न जाने क्यो!"
"मुझे बताओ, क्यो!"
"मुझे कहने के लिए बाध्य मत करो।"
"बताओ न।"
"ना।"
"अरे, बताओ भी।"
"अच्छा तो सुनो, मै वर्षा से इसीलिए डरती हूँ कि कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है, मै उसी मे मर गयी हूँ।"
"व्यर्थ की बात है।"
"और कभी-कभी उसमे मुझे तुम्हारा मृत शरीर दिखाई देता है।"
"हॉ, इसकी अधिक सम्भावना है।"
"नहीं, नहीं। नहीं, प्रियतम, नहीं। बिलकुल नही हो सकता यह। मै ऐसा नही होने दूँगी, क्योकि मै तुम्हे सुरक्षित रख सकती हूँ। मै जानती हूँ कि मै ऐसा कर सकती हूँ। पर आदमी, स्वय उनसे अपना बचाव नही कर सकता।"
"भगवान् के लिए बंद करो इसे! मै नही चाहता कि तुम आज रात एक स्कॉच (स्कॉटलैडनिवासी) के समान—पागलपन से भरा व्यवहार करो। हम अब अधिक दिनों तक साथ नही रहने वाले है।"
"जानती हूँ। पर मै स्कॉच और पागल ही हूँ। हॉ, मै अपने इस पागलपन को समाप्त कर दूँगी। यह सब व्यर्थ का प्रलाप है।"
"सचमुच, व्यर्थ का प्रलाप ही तो है।"
"हॉ, सब-कुछ निरर्थक है—व्यर्थ! केवल मूर्खता! मै वर्षा से नहीं डरती। नही डरती मै—नही-नही, मै नही डरती वर्षा से। आह, हे भगवान्! काश मै वर्षा से नही डरती होती।" वह रो रही थी। मैने उसे सात्वना दी। उसका रोना बन्द हो गया, किन्तु वर्षा बन्द न हुई। बाहर पानी बरसता ही रहा।

• २० •

एक दिन तीसरे पहर हम लोग घुडदौड मे गये। फर्ग्यूसन भी गयी और वह लड़का, क्रोवैल राजर्स भी, जिसकी ऑखो मे गोले की बत्ती के भीषण विस्फोट से चोट आयी थी। दोनो युवतियॉ दोपहर का भोजन करने के बाद कपडे वगैरह पहन कर तैयार होने लगी। मै और क्रोवैल, उसके कमरे मे पलग पर बैठे-बैठे घुडदौड के परचे मे घोडों की पिछली दौडो का अध्ययन और होनेवाली घुडदौड के विषय मे विचार करने लगे। क्रोवैल के सिर पर पट्टियॉ बॅधी थी। उसे इन घुडदौडो से विशेष दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी वह घुड़दौड़ के परचो का हमेशा अध्ययन करता था और कुछ कर गुजरने के लिए प्रत्येक घोडे की पूरी खोज-खबर रखता था। उसने बताया कि घोडो का समूह तो बिकट था; किन्तु इटली मे वैसे ही घोड़े दौड़ा करते थे। वृद्ध मेअर्स क्रोवैल को बहुत चाहता था और उसे घुडदौड के (टिप्स) पूर्व-संकेत दिया करता था। मेअर्स प्रत्येक घुडदौड मे जीतता, किन्तु किसी को पूर्व-सकेत देना उसे पसन्द नहीं था, क्योंकि उससे जीत की रकम कम हो जाया करती थी। घुडदौड मे वहॉ बडी बेईमानी से काम लिया जाता था। जो व्यक्ति और सभी स्थानो से, घुडदौड खेलने के अयोग्य ठहराये जाकर, निकाल दिए गए थे, वे ही इटली में आकर घुडदौड में भाग लिया करते थे। मेअर्स की सूचना लाभदायक होती थी, किन्तु मै उससे पूछना घृणास्पद समझता था। पूछने पर कभी-कभी वह उत्तर ही नहीं देता। यदि कोई उससे पूछता, तो उसके मुख पर ये भाव बिलकुल स्पष्ट दिखाई देते कि उसे घुड़दौड़ के विषय मे कुछ बतलाते हुए बडा कष्ट हो रहा है। किन्तु किसी कारणवश वह हमें सकेत देते समय अपने-आप को खुशनसीब समझता था। क्रोवैल को बतलाते समय तो उसे औरो की अपेक्षा बहुत कम बुरा लगता था। क्रोवैल की ऑखों मे चोट लगी थी। एक ऑख तो बुरी तरह जख्मी हो गई थी। मेअर्स की ऑखो मे भी कुछ तकलीफ़ थी और शायद इसी से वह क्रोवैल को चाहता था। मेअर्स अपनी पत्नी तक को कभी यह नहीं बताता था कि वह कौन-सा घोड़ा खेल रहा है। वह अपनी ही इच्छा से खेलती और जीतती या हारती—प्रायः हारती ही और लगातर बड़बड़ाया करती।

हम चारो एक खुली हुई गाड़ी मे सॉन सिरो (घुडदौड का स्थान) के लिए

चल पड़े। दिन बड़ा सुन्दर था। हम लोग उद्यान से होते हुए, ट्राम-पथ के साथ-साथ, शहर के बाहर पहुँच गये, जहाँ सडक धूल से भरी हुई थी। मार्ग के दोनों ओर लोहे की चहारदीवारी के भीतर बगले बने थे। उनके सामने ही बडे–बड़े बगीचे थे, जिनके बीच मे नालियाँ बनी थीं। उन नालियों में पानी बह रहा था। वहाँ तरकारियो के हरे-भरे बगीचे भी थे। उनके पत्तो पर धूल जमी हुई थी। मैदान के पार, खेतो मे, किसानो के घर दिखायी दे रहे थे। उनके आसपास हरे-भरे खेत लहलहा रहे थे, जिनमे सिचाई की नालियाँ बह रही थी। उनसे उत्तर की ओर पहाड़ खड़े थे। घुडदौड़ के मैदान मे बहुत-सी सवारियाँ जा रही थीं। द्वार रक्षकों ने बिना प्रवेशपत्र के ही हमें भीतर जाने दिया; क्योंकि हम अपने सैनिक वेश मे थे। हम गाडी में से उतरे, दौड़ का कार्यक्रम खरीदा और भीतरी क्षेत्र को पार करते हुए, घुड़दौड़-पथ के चिकने-मोटे घास पर से होकर उस अहाते के पास पहुँचे, जहाँ दौड़ मे भाग लेने वाले घोडे खडे थे। खेल देखने के लिए बनाये गये चबूतरे पुराने और लकड़ी के बने थे। दाँव लगाने के खेमे नीचे थे और अस्तबल के पास एक पक्ति मे बने थे। भीतरी क्षेत्र मे घेरे के पास सैनिको का एक समूह खड़ा था। घोडो का वह अहाता आदमियो से काफी भर गया था। चबूतरे के पीछे वाले वृक्षों के नीचे एक गोल चक्र मे घोड़ो को घुमाया जा रहा था। हमे वहाँ अपने कई परिचित व्यक्ति मिल गये। फर्ग्यूसन और कैथरीन के बैठने के लिए हमने कुर्सियो की व्यवस्था करवा दी और घोड़ो को देखने लगे।

घोड़े सिर लटकाये हुए अपने सईसो के पीछे, एक-के-बाद-एक, चारो ओर का चक्कर लगा रहे थे। क्रोवैल ने एक काले बैगनी रंग के घोडे को देखकर कहा, वह कसम खाकर कह सकता है कि उस घोड़े को रगा गया है। हमने उसे ध्यानपूर्वक देखा और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वैसा होना सम्भव था। उसे उस समय बाहर निकाला गया था, जब जीन कसने की घंटी बजने ही वाली थी। सईस की बाँह पर लगे हुए नम्बर के सहारे हमने कार्यक्रम के काग़ज मे उस घोड़े को खोज की। सूची मे उसका नाम 'जापालाक' दिया गया था और उसे काला बधिया किया हुआ घोड़ा बताया गया था। दौड ऐसे घोड़ों की थी, जिन्होंने एक हजार लायर अथवा इससे अधिक रकम की दौड़ कभी नही जीती थी। कैथरीन को तो विश्वास-सा था कि उस घोड़े का रंग बदल दिया गया है। फर्ग्यूसन बोली कि इस विषय में वह निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती। मुझे भी उसके विषय मे शंका थी। पर हम सबने एकमत होकर उस पर दाँव लगाने का निश्चय किया

और सौ लायर निकाल लिये। किस घोड़े के जीतने पर अनुमानतः कितनी रकम मिलेगी, इस-सम्बन्धी घोषणापत्र से मालूम हुआ कि वह एक के पैतीस देगा। क्रोवैल टिकिटे खरीदने चला गया। हम लोग जॉकियों (घुडदौड़ मे घोड़े पर सवार रहने वालो) को देखते रहे। उन्होने एक बार फिर चारो ओर का चक्कर लगाया। उसके बाद वे वृक्षो के बीच से निकलते हुए घुडदौड-पथ की ओर चल दिये और धीमी-सरपट चाल से दौड़ प्रारम्भ होने के स्थान पर पहुँच गये।

हम दौड़ ठीक से देखने के लिए चबूतरे पर चढ गए। सॉन सिरो में उस समय दौड प्रारम्भ होने के स्थान पर कोई ऐसी लचीली रुकावट नहीं थी, जिसके पीछे घोडे एक पक्ति मे खडे हो जाये और दौड़ प्रारम्भ होते ही वह रुकावट स्वय छूटकर एक ओर हो जाए। अतः दौड़ आरम्भ कराने वाले व्यक्ति ने सब घोड़ो को एक पक्ति मे खडा कराया। दौड-पथ के उस किनारे खडे वे बहुत छोटे दिखायी देते थे। फिर दौड आरम्भ करानेवाले ने अपना लम्बा कोडा फटकार कर दौड़ शुरू कराई। घोड़े हम लोगो के सामने से निकले। काला घोड़ा उन सबमे काफी आगे था। मोड पर पहुँचकर वह दूसरो से बहुत आगे निकल गया। मैने अपने दूरबीन से घोडो को दूसरे छोर पर दौड़ते हुए देखा। काले घोड़े का जॉकी उसे अपनी सीमा मे रखने की जी-तोड कोशिश कर रहा था, पर वह उस पर काबू पाने मे असमर्थ था। दूसरे मोड़ का चक्कर लगाते हुए घोडे जब विस्तार मे आये, तो काला घोड़ा अन्य घोड़ो से पन्द्रह हाथ आगे था। दौड़ के अन्तिम छोर पर पहुँचने के बाद भी वह आगे की ओर निकल गया और मोड़ का चक्कर काट कर रुक गया।

"आश्चर्यजनक घोडा है।" कैथरीन बोली—"हमें अब तीन हज़ार लायर से भी ऊपर मिलेंगे। यह घोडा तो वास्तव में अद्‌भुत निकला!"

"मै आशा करता हूँ कि, हमे पैसे मिलने से पहले उस पर लगा हुआ रग धुल नही जायेगा।"

"है, बडा प्यारा घोड़ा!—" कैथरीन बोली—"मालूम नहीं, श्री मेअर्स ने इस पर दॉव लगाया है या नही?"

"क्या आपने जीते हुए घोड़े पर दॉव लगाया था?" मैने श्री मेअर्स से पूछा। उसने सिर हिलाकर हामी भरी।

"मैंने नही लगाया।" श्रीमती मेअर्स ने कहा—"मेरे बच्चो, तुमने किस पर दॉव लगाया था?"

"जापालाक पर।"

"सच ? वह तो एक के पैंतीस दिलायेगा।"

"हमे उसका रग पसद था।"

"मुझे पसद नहीं आया। मैने सोचा कि यह तो बिलकुल बीमार-सा लगता है। लोगो ने मुझे उस पर दॉव लगाने की सलाह भी नही दी।"

"वह कुछ ज्यादा पैसे नही दिलाएगा।" मेअर्स ने कहा।

"घुड़दौड़-पत्रक के विवरणो मे उसे एक के पैंतीस दिलानेवाला बताया गया है।" मैं बोला।

"पर उससे अधिक रकम-प्राप्ति की आशा मत करो। आखिरी क्षण," मेअर्स बोला—"लोगो ने उसके ऊपर बहुत-सा पैसा लगा दिया था।"

"कौन हैं वे ?"

"कैम्पटन और उसके गुट के व्यक्ति। देखना तुम। वह एक के दो भी नहीं दिलायेगा।"

"तब हमे तीन हजार लायर नही मिलेंगे—" कैथरीन ने कहा—"इस तरह की धोखेबाजी से भरी घुडदौड मुझे ज़रा भी पसंद नही है।"

"हमे दो सौ लायर तो मिलेंगे ही।"

"उससे क्या होनेवाला है ? उससे हमारा कौन-सा लाभ होगा भला ? मै तो समझी थी कि हमे तीन हजार मिलेंगे।"

"यह तो बड़ा कुटिलतापूर्ण और निन्दनीय व्यापार है।" फर्ग्यूसन ने कहा।

"है ही—" कैथरीन बोली—"यदि कुटिलतापूर्ण न होता, तो हम उस पर एक पैसा भी न लगाते। पर तीन हज़ार लायर प्राप्त कर के मैं वास्तव मे, बड़ी प्रसन्न होती।"

"चलो, नीचे चलकर कुछ पिएँ और देखे कि आखिर क्या दिया जानेवाला है।" क्रोवैल बोला। जहॉ भुगतान के नम्बर लगाये जाते थे, हम वहॉ पहुँचे। भुगतान करने की घण्टी बजी। हमने देखा कि जापालाक के नाम के सामने भुगतान-अङ्क १८५० लिखा था। इसका अर्थ था कि दस लायर की बाजी पर जितनी रकम लगानी पडती है, उस से भी कम रकम मिलनेवाली थी।

हम चबूतरे के नीचे के उपाहारगृह मे गये। वहॉ हमने व्हिस्की और सोडा अलग-अलग लिया। वहीं हम अचानक दो इटालियनो से टकरा गये। उन्हे हम पहचानते थे। जब हम युवतियो (कैथरीन और फर्ग्यूसन) के पास लौटे, तो उप-न्यायाधीश मैक एडम्स और वे दोनो इटालियन भी हमारे साथ चले आए। वे दोनो इटालियन बड़े व्यवहारकुशल थे। मैक एडम्स कैथरीन से

गप्पे लड़ाने लगा। हम पुनः दॉव लगाने चल दिए। मेअर्स चबूतरे के पास खड़ा था।

"इससे पूछो तो सही, यह कौन-सा घोड़ा खेल रहा है?" मैंने क्रोवैल से कहा।

"कहिए श्री मेअर्स, आप कौन-से घोडे के जीतने की आशा करते है?" क्रोवैल ने पूछा। मेअर्स ने कार्यक्रम का काग़ज निकाला और अपनी पेन्सिल से पॉचवें नम्बर की ओर सकेत किया।

"यदि हम भी इसी घोड़े पर दॉव लगाए, तो आप बुरा तो नही मानेंगे?" क्रोवैल ने पुनः प्रश्न किया।

"लगाओ, लगाओ। पर मेरी स्त्री से मत कहना कि मैंने तुम्हे यह संकेत दिया है।"

"क्या आप कुछ पीना पसंद करेंगे?" मैंने पूछा।

"नहीं, धन्यवाद। मै कभी शराब नही पीता।"

हमने पॉचवें घोडे के नाम से उसके प्रथम आने के लिए सौ लायर लगाये और दूसरे नम्बर पर आने के लिए सौ लायर और लगा दिये। उसके बाद हमने दुबारा अलग-अलग सोड़ा और व्हिस्की पी। मुझे यह सब बड़ा अच्छा लग रहा था। दो अन्य इटालियनो ने भी हमारे साथ शराब पी। उन दोनों को अपने साथ लेकर हम युवतियो के पास लौट आए। ये इटालियन भी बडे सभ्य थे। इनका व्यवहार भी उन्हीं दो इटालियनो के सदृश था, जो पहली बार हमारे साथ आये थे। थोड़ी देर बाद, कोई भी बैठा नहीं रह सका। मैंने कैथरीन को टिकिटे दे दी।

"यह कौन-से घोड़े का टिकिट है?"

"मुझे नहीं मालूम। श्री मेअर्स की पसन्द है।"

"क्या तुम्हे इसका नाम तक नहीं मालूम?"

"नहीं, कार्यक्रम के कागज से तुम उसके नाम का पता लगा सकती हो। मेरे खयाल से पॉचवॉ नम्बर है उसका।"

"तुम्हारे विश्वास की भी हद हो गई।" वह बोली।

पॉच नम्बर जीता तो अवश्य, पर उसने धेला भी नही दिया। श्री मेअर्स तो नाराज हो गए।

"केवल बीस लायर अधिक प्राप्त करने के लिए आपको दो सौ लगाने पड़े।" वह बोला—"दस के बदले केवल बारह लायर्स। व्यर्थ है बिलकुल। मेरी स्त्री बीस लायर हार गई।"

"मैं तुम्हारे साथ नीचे चलूँगी।" कैथरीन मुझसे बोली। वे इटालियन भी खड़े हो गए। हम सीढ़ियो पर से नीचे उतरे और घोड़ो के अहाते के पास पहुँचे।

"क्या तुम्हें यह सब पसंद है?" कैथरीन ने पूछा।

"हाँ, मुझे तो पसंद है।"

"मेरेभी खयाल से है तो ठीक—" वह बोली—"किन्तु प्रियतम, मै एक बारगी इतने आदमियो से मिलना पसद नहीं करती।"

"हम बहुत-से आदमियो से तो नही मिले।"

"नहीं; किन्तु वे मेअर्स और वह बैकवाला आदमी, उसकी पत्नी और लड़कियाँ—"

"वह मेरी दर्शनी-हुण्डियो को भुना देता है।" मैने कहा।

"ठीक है, पर वह नहीं तो कोई और भुना देगा। और वे चारों इटालियन—ओफ़! कितने त्रासदायक हैं वे!"

"हम यहीं ठहरें और घेरे की इस ओर से घुडदौड देखे, तो?"

"यह तो बड़ा सुन्दर रहेगा। और हाँ, प्रियतम, हम एक ऐसे घोडे पर दाँव लगाए, जिसके विषय मे हमने अभी तक कुछ सुना ही न हो।—जिसपर श्री मेअर्स कभी दाँव न लगाएँ।"

"अच्छी बात है।"

हमने लाइट फॉर मी नामक घोडे पर दाँव लगाया, जो पाँच घोड़ो की दौड़ मे चौथा आया। हम घेरे पर झुक गए और अपने सामने से खुरो की आवाज के साथ दौड़ते हुए घोड़ों का निकलना देखते रहे। सामने ही बडी दूरी पर हमें पहाड दिखाई दे रहे थे और वृक्षों तथा खेतो से परे मिलान नगर भी नजर आ रहा था।

"मुझे अब बडा भला लग रहा है।" कैथरीन ने कहा। पसीने मे लथपथ और भीगे हुए घोडे अब फाटक पार करते हुए पीछे लौट रहे थे। उनके जॉकी उन्हे शान्त रखने का प्रयत्न कर रहे थे और उन पर सवार, वृक्षो की ओर चले जा रहे थे, ताकि वहाँ पहुँचकर वे उन पर से उतर सके।

"क्या तुम कुछ पीना पसन्द करोगे? हम एक-एक गिलास यही पी ले और फिर इन घोड़ों को देखे।"

"अच्छी बात है। मैं ले आता हूँ।" मै बोला।

"नहीं, नौकर ले आयेगा।" कैथरीन बोली। उसने अपने हाथ से इशारा

किया और अस्तबल की बगल मे बने पैगोडा-बार (मदिरालय) का एक नौकर हमारी ओर आया। हम लोहे की एक गोल टेबल के निकट पड़ी कुर्सियो पर बैठ गए।

"क्या हम दोनो का अकेले साथ रहना तुम्हे अधिक पसन्द नही है ?"

"है, अवश्य है।" मैने उत्तर दिया।

"जब वहाँ वे सब लोग बैठे हुए थे, तो मुझे बडा सूना-सूना लग रहा था।"

"यह बडी सुंदर जगह है।" मै बोला।

"हाँ, यह सचमुच एक सुन्दर स्थान है।"

"और बड़ा ही अच्छा।"

"मै तुम्हारे आनन्द मे बाधक होकर, उसे बिगाड़ना नहीं चाहती, प्रियतम! जब तुम चाहोगे, तभी मै लौट पड़ूंगी।"

"नहीं," मैने कहा—"हम यहीं ठहरेगे और यही शराब पियेंगे। बाद मे हम नीचे जायेंगे और खाई कूदने की घुड़दौड़ देखने के लिए पानी की खाई के निकट जाकर खडे रहेगे।"

"तुम मेरे प्रति कितने उदार हो!" वह बोली।

कुछ समय तक अकेले रहने पर हम प्रसन्नतापूर्वक पुनः अपने अन्य साथियो से जा मिले। हमारा समय बड़े आनन्द मे कटा।

. २१ .

सितम्बर मे ठडी राते आरम्भ हो गई। धीरे-धीरे दिन भी ठडे होने लगे। उद्यान के वृक्षो के पत्तो का रग बदलने लगा। हमने अनुभव किया कि गरमी अब खत्म होने को आ गयी है। युद्ध बड़े भयानक रूप से चल रहा था। सेनाएँ सॉन-जेब्राइली पर अभी तक अधिकार नही कर सकी थीं। बेन्सिज्जा-पठार का युद्ध समाप्त हो चुका था। आधा महीना बीतते-बीतते सॉन-जेब्राइली का युद्ध भी समाप्त होने को आया। हम उसे जीत नही सके। एत्तोरे मोर्चे पर लौट गया। घोड़े रोम भेज दिए गये और घुड़दौड समाप्त हो गई। क्रोवैल भी अमेरिका वापस भेजे जाने के लिए, रोम चला गया। युद्ध के विरुद्ध, नगर मे दो बार विप्लव हुआ। ट्यूरिन में तो बडा भयानक विप्लव हुआ था। क्लब

में मुझे एक अंग्रेज मेजर ने बताया कि बेन्सिज्जा-पठार तथा सॉन-जेब्राइली के युद्ध मे इटालियनो को अपने एक लाख पचास हजार सैनिको से हाथ धोना पडा था। उसने कहा कि इसके सिवा कार्सो पर भी चालीस हजार व्यक्ति हताहत हुए थे। हम लोग शराब पीते जा रहे थे और वह बाते कर रहा था। उसने कहा कि इस वर्ष का युद्ध तो वस्तुतः यही समाप्त हो गया है। वह बोला कि इटालियनो ने इतनी तेजी से आगे बढना शुरू किया कि उन्हे लेने के देने पड़ गये।

"फ्लैण्डर्स मे भी हमारा आक्रमण बिलकुल व्यर्थ सिद्ध होने जा रहा है—" उसने कहा—"यदि शत्रु इसी प्रकार हमारे सैनिको को मारते गये, जिस प्रकार उन्होने इस पतझड़ मे किया है, तो आगामी वर्ष हमारी मित्र-सेनाओ को वे अच्छी तरह भून कर रख देगे।"

वह बोला—"यों तो हम अभी भी समाप्त हो चुके है—किन्तु जब तक हम इसे स्वीकार नहीं करते, तब तक कोई बात नही है। जो राष्ट्र सब से अन्त मे यह अनुभव करेगा कि वह समाप्त हो चुका है—वही युद्ध मे जीतेगा।"

हमने दुबारा शराब पी। उसने मुझसे पूछा—"क्या आप किसी सैन्याधिकारी के कार्यालय में हैं?"

मैने कहा—"नही।"

"मै तो हूँ।" उसने उत्तर दिया।

हम क्लब मे पीछे की ओर, चमडे के एक बडे सोफे पर अकेले बैठे हुए थे। उसके जूते चिकने और चमकदार थे। वे बड़े सुदर थे। उसने मुझे बताया—"आजकल जो कुछ हो रहा है, वह बडा वाहियात है!—अधिकारी लोग केवल सैन्य-दल और अपनी सैन्य-शक्ति के विषय मे ही सोचते रहते है। वे सैन्य-दलो के प्रश्न को लेकर ही झगडते रहते हैं, और जब उनके पास पर्याप्त सैनिक हो जाते है, तो वे उन्हे युद्ध मे ले जाकर मार डालते है। वे अब सब-कुछ हार-से चुके हैं। युद्ध तो साहब, जर्मनों ने जीते। भगवान् की सौगध! वे सच्चे सैनिक हैं। पहले के हूण भी सच्चे सैनिक थे—किन्तु एक दिन वे भी पराजित हो गये। हम सब भी बाजी हार-सी चुके हैं!"

"और रूस? रूस के विषय मे क्या कहते हैं आप?" मैने पूछा। उसने उत्तर दिया—"वे तो पहले ही परास्त हो चुके है। शीघ्र ही उनका पतन होगा। आस्ट्रियनों का भी शीघ्र ही पतन होगा। हॉ, यदि उनके पास कुछ हूण सैन्यदल होते, तो वे अवश्य जीत जाते।"

मैने उससे पूछा कि उसकी क्या धारणा है? क्या वे इस पतझड़ में हमला

करेंगे? वह बोला—"अवश्य! इटालियन लोग परास्त हो चुके हैं। सब जानते है कि वे हौसला हार चुके है। वे पुराने हूण, उनकी सन्तानें—आस्ट्रियन लोग ट्रेन्टिनो को पार करके नीचे उतरेंगे और विसेन्जा पहुँचकर, रेल की लाइनें तोड देंगे, तब इटालियन लोगो की क्या हालत होगी? कहाँ जायेंगे वे?"

मैंने कहा—"सन् सोलह मे भी उन्होंने ऐसा प्रयत्न किया था।"

"जर्मनो के साथ नही।"

"हाँ।" मैंने कहा।

"किन्तु अब वे शायद ऐसा नहीं करेंगे—" उसने कहा—"यह तो बहुत आसान तरीका है। वे तो कोई जटिल तरकीब से काम लेंगे और तब बुरी तरह परास्त हो जायेंगे।"

"मुझे अब जाना है।" मैंने कहा। मुझे अस्पताल लौटना था।

"अच्छा, नमस्ते।" उसने कहा। और फिर बड़े उल्लास के साथ बोला—"भाग्य आपका हर प्रकार से साथ दे!" ससार के प्रति वह जितना निराश था, व्यक्तिगत जीवन मे वह उतना ही प्रफुल्ल था।

मैंने नाई की दूकान पर पहुँच कर दाढी बनवाई और अस्पताल की ओर बढा। मेरी टॉग अब काफी अच्छी हो गयी थी। तीन दिन पहले डाक्टरो ने उसकी परीक्षा की थी। बड़े अस्पताल में उपचार बन्द होने से पूर्व मुझे अभी भी कुछ और चिकित्साएँ करानी थीं। मै एक गली मे से चला जा रहा था। चलते हुए मै कोशिश करता था कि मुझे लगड़ाकर न चलना पड़े। एक पुलिया के नीचे, मार्ग के पास एक बूढा आदमी काले काग़ज पर बाह्याकृतियॉ (रेखाचित्र) काट रहा था। मै रुककर उसे देखने लगा। दो लड़कियॉ वहॉ बैठी अपनी बाह्याकृतियॉ बनवा रही थीं। उसने एक साथ उन दोनो की बाह्याकृतियॉ काटी। वह बड़ी शीघ्रता से उनकी ओर देखदेख कर चित्र काटता जा रहा था। काम करते समय उसका सिर एक ओर को झुका था। लड़कियॉ मूर्खो के समान दॉत निकाले हँस रही थी। उस बूढे कलाकार ने वे बाह्याकृतियॉ मुझे दिखाई, उन्हे सफ़ेद काग़ज पर चिपकाया और उन लड़कियों को दे दिया।

"बड़ी सुन्दर हैं।" वह बोला—"आप भी अपनी एक बाह्याकृति बनवाइए न, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

लडकियाँ आगे निकल गयी थीं और रास्ते में अपनी बाह्याकृतियाँ देख-देखकर हँसती जा रही थी। वे देखने मे वस्तुतः सुन्दर थी। उनमे से एक मेरे अस्पताल से आगे, एक शराब की दूकान पर काम करती थी।

"अच्छी बात है।" मैने उस वृद्ध से कहा।

"अपनी टोपी उतार लीजिए।"

"नही, इसके साथ ही बनाओ।"

"तब उतनी सुंदर आकृति नहीं आ सकेगी।" बूढे ने कहा—"किन्तु"—उसका चेहरा खिल उठा—"वह एक सैनिक के अधिक उपयुक्त अवश्य होगी।"

उसने काले कागज पर आकृति काटनी आरम्भ की, आकृति कट जाने पर दोनो तहो को अलग किया और उन पार्श्व-चित्रों को एक कार्ड पर चिपकाकर मुझे दे दिया।

"कितने पैसे हुए?" मैने पूछा।

"पैसे की कोई बात नहीं है।" उसने अपना हाथ हिलाते हुए कहा—"यह तो मैने आपकी खातिर यो ही बना दिया।"

"कृपया कुछ तो लीजिये।" मैने कुछ सिक्के निकालते हुए कहा।

"नहीं। मैने अपनी प्रसन्नता के लिए ही तो आपकी आकृति बनायी है। पैसे अपने पास ही रखिए। अपनी प्रेमिका को कोई उपहार ले दीजियेगा।"

"अच्छा, अगली भेट तक के लिए नमस्ते और अनेक धन्यवाद!"

"नमस्ते, जब तक कि आप उसे लेकर फिर कभी इस ओर न आयें।"

मैं अस्पताल पहुँचा। कुछ पत्र आ कर पड़े हुए थे—एक सरकारी तथा कुछ अन्य पत्र। चिकित्सा समाप्त होने के बाद स्वास्थ्य सुधारने के लिए मुझे तीन सप्ताह की छुट्टी मिली थी और फिर मोर्चे पर लौट जाने का आदेश था। छुट्टी चार अक्टूबर से, जब मेरी चिकित्सा समाप्त होनेवाली थी, प्रारम्भ हो रही थी। तीन सप्ताह का अर्थ था इक्कीस दिन, याने पच्चीस अक्टूबर तक। मैने अस्पताल मे लोगो को बता दिया कि मै जरा बाहर जा रहा हूँ और तब थोड़ी दूर सडक पर चलकर अस्पताल के पास ही एक रेस्तरॉ मे, रात का खाना खाने के लिए घुस गया। वहीं मैने अपने पत्र पढे और उन्हे समाप्त करने पर "कैरियरे डेल्ला सॅरा" (एक समाचार पत्र) मेज पर से उठाकर पढ़ने लगा। एक पत्र मेरे पितामह के पास से आया था। पत्र मे कुछ पारिवारिक समाचार थे, राष्ट्र-सेवा सम्बन्धी कुछ उत्साहजनक बाते थीं, दो सौ डालर की हुण्डी थी और कुछ समाचारों की कतरने! दूसरा पत्र हमारे भोजनालय के उस पादरी ने भेजा था—बिलकुल नीरस सा पत्र। एक पत्र मेरी जान-पहचान के एक व्यक्ति का था, जो फ्रेंच सेना मे वायुयानचालक था। वह कुछ दिन पहले एक क्रोधित जनसमूह द्वारा किसी कारणवश घेर लिया गया था; उसका पत्र तत्सम्बन्धी

सुने। एक बार मैंने उसे बरामदे में, अपने सामने से, निकलते हुए भी देखा। अन्य कमरो का चक्कर लगाने के बाद अन्त में वह मेरे कमरे में आयी। "मुझे देर हो गई, प्रियतम!" वह बोली—"काम बहुत था। कैसे हो तुम?"

मैंने उसे अपने पत्रो और छुट्टी के विषय मे बताया।

"तब तो बड़ा अच्छा है—" उसने कहा—"तुम अपनी छुट्टी बिताने कहाँ जाना चाहते हो?"

"कहीं नहीं। मैं यहीं रहना चाहता हूँ।"

"पागल मत बनो। छुट्टी बिताने के लिए तुम कोई स्थान तय कर लो। मै भी तुम्हारे साथ वहाँ चलूँगी।"

"यह कैसे सम्भव हो सकता है?"

"मै नहीं जानती। किन्तु मै चलूँगी अवश्य।"

"तुम सचमुच बड़ी अद्‌भुत हो!"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। किन्तु जब जीवन मे खोने-लायक कुछ नहीं होता, तो उसे निभाना कठिन नहीं होता।"

"क्या मतलब?"

"कुछ खास नहीं। मै केवल यही सोच रही थी कि जीवन मे जो कठिनाइयाँ कभी पहाड़-जैसी दिखाई दे रही थी, वे सचमुच बहुत छोटी थी।"

"मेरा खयाल है कि यहाँ से निकलकर मेरे साथ चलने की व्यवस्था करना तुम्हारे लिए कठिन होगा।"

"नही, प्रियतम, नही! यदि आवश्यकता हुई, तो मै नौकरी ही छोड़ दूँगी। किन्तु यहाँ तक नौबत नही आने पायेगी।"

"कहाँ जाना चाहिए हमें?"

"मुझे इसकी कोई चिता नहीं है। जहाँ भी तुम चलना चाहो। कही भी, जहाँ हम किसी को नहीं जानते हो—कोई हमे न जानता हो।"

"हम कहाँ जाते हैं, इसकी भी तुम्हें कोई फ़िक्र नही है?"

"नहीं। मुझे हर स्थान पसन्द आएगा।"

मुझे लगा, जैसे वह किसी उलझन मे थी, किन्तु वह अडिग प्रतीत हो रही थी।

"क्या बात है, कैथरीन?"

"कुछ नहीं। कोई बात नही है।"

"नहीं, कुछ है तो अवश्य।"

"नहीं, नहीं। सचमुच कुछ नहीं।"

"मै जानता हूँ—कुछ है जरूर। मुझे बताओ, प्रिये! मुझसे तो सब-कुछ कह सकती हो तुम।"

"पर कोई बात भी तो हो।"

"बोलो, बोलो भी।"

"नहीं, मै कहना नही चाहती। मेरा विचार है कि मै अपनी बात बता कर तुम्हें भी दुःखी और चिन्तित कर दूँगी।"

"नही, ऐसा नहीं होगा।"

"सच? तुम्हे ऐसा विश्वास है? मुझे तो चिन्ता नहीं है इसकी, किन्तु कहीं तुम व्यर्थ ही चितित न हो उठो। इसीका डर है मुझे।"

"यदि तुम्हे चिन्ता नहीं है, तो मुझे भी नहीं होगी।"

"पर मै कहना नहीं चाहती।"

"कह दो, कह भी दो।"

"क्या मुझे कहना ही पड़ेगा?"

"हॉ।"

"मैं मॉ बनने वाली हूँ, प्रियतम! करीब करीब तीन महीने बीत चुके हैं। तुम्हें चिन्ता तो नहीं हुई? क्यो? नही-नही, परमात्मा के लिए तुम चिन्ता मत करो। तुम्हे चिन्ता करनी ही नहीं चाहिए।"

"अच्छा।"

"ठीक है न?"

"हॉ, हॉ, क्यो नहीं।"

"मैंने हर सावधानी बरती; किन्तु कोई फल नहीं हुआ—कोई अन्तर नहीं पडा।"

"मुझे बिलकुल चिन्ता नहीं है।"

"मेरे वश की बात नही थी, प्रियतम! मुझे उसकी चिन्ता भी नहीं हुई। तुम्हे भी चिन्ता नही होनी चाहिए।"

"मैं केवल तुम्हारे ही विषय मे चिन्तित हूँ।"

"यही तो! यही तो तुम्हे नहीं करना चाहिए। लोगो को बच्चे पैदा हुआ ही करते हैं। बच्चे हरएक के यहॉ होते हैं। यह तो स्वाभाविक है।"

"तुम बड़ी आश्चर्यमयी हो!"

"नहीं, मैं वैसी नहीं हूँ। किन्तु तुम्हें इसका खयाल नहीं करना चाहिए,

प्रियतम! मै प्रयत्न करूँगी और तुम्हे किसी कष्ट में नही डालूँगी। मैं जानती हूँ कि मै पहले ही तुम्हारे लिए काफी तकलीफे पैदा कर चुकी हूँ। किन्तु क्या मै अभी तक एक अच्छी लड़की के समान नही रहती आई हूँ? तुम्हें तो यह कभी मालूम भी नही हुआ। बोलो, मालूम हुआ कभी?"

"नहीं।"

"ऐसा तो होगा ही। तुम्हे बस चिंतित भर नहीं होना चाहिए। पर मै देख रही हूँ कि तुम चिंता कर रहे हो। बन्द करो इसे। अभी, इसी समय छोड दो चिंता करना। क्या तुम कुछ पीना नही पसद करोगे? मै जानती हूँ कि शराब सदा तुम्हारे मन को उल्लसित कर देती है, प्राण।"

"नहीं, मै यो भी प्रसन्न हूँ। और फिर तुम भी कुछ कम आश्चर्यजनक नही हो।'

"नहीं, मैं नहीं हूँ। यदि तुम अपनी छुट्टी बिताने के लिए किसी स्थान का चुनाव कर लो, तो मै तुम्हारे साथ रहने के लिए सारी तैयारी कर लूँ। अक्टूबर का मौसम वस्तुतः बड़ा आनदमय रहेगा। हमारा समय बड़ी मौज मे कटेगा, प्रियतम! और उसके बाद जब तुम मोर्चे पर चले जाओगे, तब मैं तुम्हें प्रतिदिन पत्र लिखा करूँगी।"

"तब तुम कहाँ रहोगी?"

"अभी तो नहीं कह सकती, किन्तु किसी सुंदर स्थान मे ही रहूँगी। इस विषय मे मै पूरी सावधानी बरतूँगी—तुम चिंता न करो. मै सब ठीक कर लूँगी।"

कुछ देर तक हम मौन बैठे रहे। हम मे से कोई एक शब्द भी नहीं बोला। कैथरीन बिस्तर पर बैठी थी। मै उसके मुख पर आँख गडाए था, पर हमने आज एक-दूसरे का स्पर्श तक नही किया। हम उसी तरह से एक-दूसरे से अलग बैठे हुए थे, जैसे कमरे मे किसी के प्रवेश करते ही लोग सचेत हो जाते हैं और सॅभलकर बैठ जाते है। कैथरीन ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरा हाथ अपने हाथ मे ले लिया।

"तुम नाराज नहीं हो। नही हो न, प्रियतम?"

"नही।"

"और तुम्हें ऐसा तो प्रतीत नहीं होता कि, तुम्हें किसी जाल में फँसाया गया हो!"

"हो सकता है, ऐसा कुछ आभास होता हो। किन्तु तुमने मेरे साथ छल किया—ऐसा तो मै सोच भी नहीं सकता।"

"मेरा मतलब यह नहीं था कि मैंने तुम्हे छला है। मूर्ख मत बनो। मेरा मतलब था—कहीं तुम स्वय को किसी जाल में फँसा हुआ तो नही अनुभव करते हो!"

"तुम सदा यह अनुभव करती रही हो कि तुम्हें छला गया है—तुम्हारे शरीर से छल किया गया है।"

बड़ी देर तक वह कुछ सोचती रही—गुमसुम। बिना हिलेडुले, बिना अपना हाथ छुड़ाए वह मौन बैठी रही।

"'सदा' सुंदर शब्द नही है। तुमने उसका उचित प्रयोग नहीं किया।"

"मुझे दुःख है, इसका।"

"ठीक है। किन्तु तुम जानते हो कि मै आज तक कभी माँ नहीं बनी। मैंने कभी किसी से प्रेम भी नहीं किया। जैसा तुमने चाहा, वैसा ही मैंने, तुम्हारे साथ स्वय को बनाने का प्रयत्न किया है। तुम्हारी इच्छा के अनुरूप ही अपने-आपको ढालने की कोशिश की है। और तुम, इस पर भी 'सदा' शब्द का प्रयोग करते हो!"

"मै अपनी इस ग़लती के लिए अपनी जीभ तक कटाने को तैयार हूँ।" मैंने कहा।

"ओह, प्रियतम!" अपने भाव-जगत से लौटती हुई-सी वह बोली—"तुम्हें मेरी बातो का खयाल नहीं करना चाहिए।" हम मानो पुनः एकसाथ हो गये थे। वह आत्म-चेतना की भावना तिरोहित हो चुकी थी—"हम दोनों तो एक ही हैं। हमे जान-बूझकर एक-दूसरे को ग़लत नहीं समझना चाहिए।"

"नहीं, हम ग़लत नहीं समझेंगे।"

"पर अकसर लोग एक-दूसरे को ग़लत समझ बैठते हैं। वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और जान-बूझकर गलत समझ लेते हैं। और तब वे लड बैठते हैं—वे अचानक अलग-अलग हो जाते हैं—उनका प्रेम समाप्त हो जाता है!"

"पर हम कभी नही लडेगे।"

"हमें लडना भी नहीं चाहिए; क्योकि इस विश्व में केवल हम दो, एक साथ हैं—एक ओर हैं—और शेष समस्त विश्व दूसरी ओर! यदि हम दोनों के बीच कुछ हुआ, तो दुनिया हमे जीवित नहीं रहने देगी।"

"दुनिया हमारा कुछ नही कर सकेगी।" मैंने कहा—"क्योकि तुम बड़ी बहादुर हो और जो बहादुर हैं, उन्हें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।"

"मर तो जाते है, बहादुर!"

"पर केवल एक ही बार।"

"कह नहीं सकती। किसने कहा ऐसा?"

"कायर व्यक्ति हजार बार मरता है, किन्तु बहादुर केवल एक बार—यही न?"

"हाँ! किसने कहा था यह?"

"मुझे स्वयं नही मालूम।"

"खैर, किसी ने भी कहा हो। किन्तु जिसने ऐसा कहा, वह कदाचित् स्वय बहुत कायर था।" वह बोली—"कायरो के विषय मे तो वह बहुत-कुछ जानता था, किन्तु बहादुरो के बारे मे उसे कुछ नही मालूम था। यदि बहादुर व्यक्ति बुद्धिमान होता है, तो शायद दो हजार बार उसकी मौत होती है। हाँ, वह बेचारा कभी उसका जिक्र नही करता।"

"मै कह नहीं सकता। बहादुरो के मन मे क्या है, इसका पता लगाना बड़ा कठिन है।"

"हाँ, इसी तरह तो वे अपना अस्तित्व बनाए रखते है।"

"तुम्हे इस विषय का पूर्ण ज्ञान है। तुम इस सम्बन्ध मे अधिकारपूर्वक कुछ कह सकती हो।"

"तुम ठीक कहते हो, प्रियतम! मैंने तुमसे इसी की अपेक्षा की थी।"

"तुम वस्तुतः बहादुर हो!"

"नही, मै बहादुर नहीं हूँ—" उसने कहा—"किन्तु मै बहादुर बनना अवश्य चाहूँगी।"

"मै भी बहादुर नही हूँ—" मै बोला—"मै जानता हूँ कि मेरी क्या स्थिति है। मै इतना बाहर रह चुका हूँ—मैंने इतनी दुनिया देखी है कि मै अपनी असलियत जान गया हूँ। मै ठीक उस खिलाडी की तरह हूँ, जो दो सौ तीस बार गेद मारने पर भी यह जानता है कि वह किसी काम का आदमी नहीं है।"

"यह दो सौ तीस बार गेद मारनेवाले खिलाड़ी की क्या बात है? सुनने में तो बड़ी प्रभावशाली लगती है।"

"नही, मेरा मतलब बेस बॉल के खेल मे गेद मारने वाले एक सामान्य खिलाड़ी से है।"

"फिर भी, है तो वह गेद मारने वाला।" उसने मुझे उकसाते हुए कहा।

"मेरा अनुमान है कि हम दोनो ही अपने-अपने घमण्ड मे खोये हैं।" मैंने कहा—"फिर भी तुम हो बहादुर!"

"नहीं, किन्तु मै बहादुर बनूँगी, इस की मुझे आशा अवश्य है।"

"हम दोनो ही बहादुर हैं—" मै बोला—"और मै तो बहुत बहादुर हूँ—विशेषतः उस समय, जब मै शराब पी लेता हूँ।"

"हम सचमुच बड़े अच्छे हैं।" कैथरीन ने कहा। वह आलमारी तक गयी और मेरे लिए कॉग्नेक (शराब) तथा एक खाली गिलास ले आई। "लो शराब पिओ, प्रियतम!" उसने कहा—"तुम मेरे प्रति बड़े उदार रहे हो।"

"अभी मुझे पीने की इच्छा नहीं है।"

"एक गिलास तो लो।"

"अच्छी बात है।" मैने पानी पीने वाले गिलास में एक-तिहाई कॉग्नेक उड़ेली और पी गया।

"यह बहुत अधिक थी।" उसने कहा—"मैं जानती हूँ कि ब्राडी बहादुर व्यक्तियों के पीने के लिए ही बनाई गई है, पर तुम्हे सीमा से बाहर नहीं पीना चाहिए।"

"युद्ध के बाद हम कहाँ रहेगे?"

"कदाचित् वृद्ध व्यक्तियो के लिए बनाए गये किसी निवासस्थान मे।" वह बोली —"पिछले तीन वर्षों से मै मूर्खों की भाँति यही आशा करती आयी हूँ कि इस बार क्रिसमस मे युद्ध समाप्त हो जायेगा। किन्तु अब मै भविष्य की कल्पना करती हूँ और सोचती हूँ कि युद्ध समाप्त होने तक हमारा बेटा लेफ्टिनेण्ट-कमाण्डर बन जायेगा।"

"हो सकता है, वह प्रधान सेनापति भी हो जाये।"

"यदि यह शत-वर्षीय युद्ध हुआ, तो उसे दोनो पदो के लिए प्रयत्न करने का सुयोग प्राप्त हो जायेगा।"

"क्या तुम कुछ नहीं पीओगी?"

"नही। शराब तो सदा तुम्हें ही सुख पहुँचाती है, प्रियतम! मुझे तो वह केवल नशे मे डुबो देती है।"

"क्या तुमने कभी ब्राडी नही पी?"

"नही प्राणेश, मै बड़े पुराने युग की पत्नी हूँ।"

मैंने नीचे फ़र्श की ओर हाथ बढाकर बोतल उठाई और दूसरा गिलास भरा।

"यदि मै एक बार तुम्हारे साथियो को देख आऊँ, तो अच्छा होगा—" कैथरीन बोली —"जब तक मैं नहीं लौटूँ, तब तक शायद तुम समाचारपत्र पढ़ते रहोगे।"

"क्या तुम्हारा जाना आवश्यक है?"

"अभी नहीं, तो बाद मे जाना ही है।"
, "तब, अभी ही हो आओ।"
"मै तुरत ही वापस आ जाऊँगी।"
"तब तक मै समाचारपत्र पूरा पढ़ लूँगा।" मैने कहा।

-२२-

उस रात अचानक ठंढ बढ़ गई और दूसरे दिन वर्षा भी होने लगी। बड़े अस्पताल से लौटते समय मूसलाधार बारिश हो रही थी और इस अस्पताल के अपने कमरे तक आते आते मै पूरा भीग चुका था। मेरे कमरे से बाहर बरामदे पर बड़े जोर से पानी गिर रहा था। हवा के जोर से पानी के तेज़ झोंके कॉच के दरवाज़ो से आ-आकर टकरा रहे थे। मैने अपने कपड़े बदले और एक गिलास ब्राडी पी ली, किन्तु उसका स्वाद कुछ अच्छा नही लगा। उसी रात मै बीमार पड़ गया और प्रातःकाल नाश्ते के बाद मेरा जी मचलाने लगा।

"इस विषय मे तो कोई शंका ही नही है।" अस्पताल के सर्जन ने कहा—"इनकी ऑखो की पुतलियो के आसपास के सफेद भाग को देखो, मिस।"

मिस गेज ने मेरा निरीक्षण किया। उन लोगो ने मुझे एक शीशे में अपना चेहरा दिखाया। मेरी ऑखो की पुतलियो के पास की सफेदी पीलेपन में बदल गई थी। मुझे पाण्डुरोग हो गया था। मै दो सप्ताह तक उससे पीड़ित रहा। इसी कारण हम दोनो (कैथरीन और मै) स्वास्थ्य सुधारने के लिए जो छुट्टी मुझे मिली थी, उसे साथ-साथ नहीं बिता सके। हमने लागो-मेज्जिओर पर पालान्जा नामक स्थान पर जाने की योजना बनाई थी। पतझड़ के मौसम मे जब पत्ते बदलते है, तो वहॉ का दृश्य बड़ा सुन्दर लगता है। वहॉ घूमने लायक कई स्थान हैं और वहॉ की झील मे आप ट्राउट नामक मछलियो का शिकार भी खेल सकते है। स्ट्रेसा की अपेक्षा पालान्जा जाना ही ज्यादा अच्छा था, क्योकि पालान्ज़ा में कम आदमी रहते हैं। मिलान से स्ट्रेसा पहुॅचना इतना आसान है कि वहॉ जाने पर सदा अपनी पहचान के कुछ व्यक्ति अवश्य मिल जाते है। पालान्जा मे छोटा-सा सुन्दर गॉव भी है और वहॉ आप नाव खेते हुए उन छोटे-छोटे द्वीपो को जा सकते है, जहॉ मछुए रहते है। सबसे बड़े द्वीप पर, वहॉ एक रेस्तरॉ भी है। किन्तु हम पालान्जा भी नही जा सके।

पाडुरोग का मरीज़ बनकर एक दिन जब मै अपने बिस्तर पर पड़ा था, तब अचानक ही मिस वॉन कैम्पेन कमरे मे आयी। उसने आते ही आलमारी खोली और उसे वहॉ रखी हुई खाली बोतले दिखायी दे गयी। मैने दरबान के हाथ खाली बोतलो की एक बड़ी-सी गठरी नीचे भेजी थी। निश्चय ही, मिस वॉन ने उसे बाहर ले जाते हुए देख लिया होगा और इसीलिए कुछ और बोतलों का पता लगाने की इच्छा से ऊपर आ गयी थी। आलमारी मे बहुत-सी बोतले वरमाउथ की थीं। इसके सिवा मार्साला और काप्री की बोतले, किआन्हटी की खाली कुप्पियॉ तथा कॉग्नेक की भी कुछ बोतले थी। दरबान वरमाउथ की बड़ी-बड़ी बोतले और घास से ढॅकी किआन्हटी की कुप्पियॉ तो उठा ले गया था; किन्तु ब्राडी की खाली बोतले बाद मे ले जाने के विचार से वहीं छोड गया था। ये सब ब्राडी की बोतले थी। उनमे एक बोतल भालू की आकृति की थी, जिसमे पहले क्यूमेल (शराब) भरी थी। मिस वॉन कैम्पेन इन बोतलो को देखकर रुष्ट हो गयी। विशेषतः भालू की आकृति वाली बोतल को देखकर तो उसे और भी क्रोध हो आया। उसने उसे उठा लिया। उस आकृति मे भालू पजो को ऊपर उठाए अपने कूल्हो पर बैठा था। बोतल के कॉच से बने हुए सिर मे डाट लगा था और उसकी पेदी मे कुछ चिपचिपे टुकड़े दिखाई दे रहे थे। मै लेटा-लेटा हॅस पडा।

"उसमे क्यूमेल थी।" मै बोला—"सबसे अच्छी क्यूमेल इन भालू की आकृति वाली बोतलो मे ही आती है। ये बोतले रूस से आती है।"

"और ये सब ब्राण्डी की बोतले है। है न?" मिस वॉन कैम्पेन ने पूछा।

"मै सब बोतले तो नही देख सकता—" मैने उत्तर दिया—"पर शायद वे ब्राण्डी की ही हो।"

"यह सब कितने दिनो से चल रहा है?"

"मैने स्वय ही उन्हें खरीदा और स्वयं यहॉ लाया हूॅ।" मैने कहा—"मेरे पास हमेशा इटालियन अफसर मिलने के लिए आते-जाते रहते हैं। ब्राण्डी मैने उन्हीं को पिलाने के लिए रखी थी।"

"ओर तुम स्वयं उसे नहीं पीते रहे हो?" उसने कहा।

"नहीं, मैने स्वय भी पी है।"

"ब्राण्डी—" वह बोली—"ग्यारह खाली बोतले ब्राण्डी की—और यह भालू की आकृति वाली बोतल का पेय पदार्थ!"

"क्यूमेल !"

"मै इन्हे यहॉ से हटाने के लिए किसी आदमी को भेजती हूॅ। क्या तुम्हारे पास इतनी ही खाली बोतले है ?"

"इस समय तो इतनी ही हैं।"

"और जब तुम्हारे पाण्डुरोग से पीड़ित होने की बात मुझे मालूम हुई, तो मुझे तुम पर दया आ रही थी। पर तुम्हारे ऊपर दया करना!—ना, तुम उसके उपयुक्त पात्र नहीं हो !"

"बहुत-बहुत–धन्यवाद !"

"मेरे विचार से मोर्चे पर न लौटने की तुम्हारी इस इच्छा के लिए तुम्हे दोष नहीं दिया जा सकता। किन्तु मेरा खयाल था कि इस के लिए मादक-द्रव्यो का सेवन करके पाण्डुरोग पैदा करने की अपेक्षा तुम किसी अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण उपाय का सहारा लोगे।"

"क्या!"

"मोर्चे पर न जाने के लिए मादक–द्रव्यो के सेवन से पाडुरोग से पीड़ित होने की चाल ! सुन लिया न तुमने ?"

मै कुछ नहीं बोला।

"जब तक तुम यहॉ पड़े रहने का कोई अन्य मार्ग न ढूॅढ निकालो, मेरा विचार है कि पाण्डुरोग से मुक्त होते ही तुम्हे मोर्चे पर जाना पडेगा। मेरी समझ से, स्वेच्छा से पैदा किया हुआ पाण्डुरोग तुम्हें स्वास्थ्य सुधारने की छुट्टी प्राप्त करने का अधिकार नही दे सकता है।"

"क्या आप ऐसा ही सोचती हैं?"

"हॉ !"

"आपको कभी पाण्डुरोग हुआ है, मिस वॉन कैम्पेन ?"

"नही; किन्तु मैने इसके अनेक मरीजों को देखा है।"

"क्या आपने इस बात पर भी कभी ध्यान दिया है कि इस रोग के पीड़ित व्यक्ति कैसा महसूस करते हैं?"

"मेरा अनुमान है कि मोर्चे पर जाने की अपेक्षा यह रोग पाल लेना अधिक सुखद होता है।"

"मिस वॉन कैम्पेन !" मै बोला—"क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानती हैं, जिसने अपने गुप्तागो पर आघात पहुॅचाकर स्वयं को अपंग बनाने का प्रयत्न किया हो ?"

मिस वॉन कैम्पेन मेरे इस प्रश्न को टाल गई। उसके सामने दो ही मार्ग थे—प्रश्न को टाल देना अथवा कमरा छोड़कर चली जाना। कमरा छोड़कर जाने के लिए वह तैयार नही थी, क्योंकि आरम्भ से ही वह मुझसे घृणा करती आ रही थी और आज उसे पूरा-पूरा बदला चुकाने का सुयोग मिला था।

"स्वेच्छा से घाव पैदा कर के मोर्चे से बच निकलने वाले अनेक सैनिको को मैंने देखा है।"

"मेरा प्रश्न यह नहीं था। मैंने स्वेच्छा से उत्पन्न किए हुए घाव भी देखे हैं। मैंने आपसे पूछा था कि क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानती हैं, जिसने अपने गुप्तागों पर आघात पहुँचाकर स्वय को अपङ्ग बनाने का प्रयत्न किया हो? उसमे भी पाण्डुरोग से मिलती-जुलती पीड़ा की अनुभूति होती है। यह एक ऐसी पीडा है, जिसका अनुभव, मेरे ख़याल से, बहुत ही कम स्त्रियो ने किया होगा। इसीलिए मैंने आपसे पूछा था कि आप कभी पाडुरोग से पीड़ित हुई हैं? मिस वॉन कैम्पेन, क्योंकि..." मिस वॉन कैम्पेन कमरा छोड़कर चली गयी। बाद मे मिस गेज आयी।

"तुमने वॉन कैम्पेन से क्या कह दिया? वह बड़ी रुष्ट थी।"

"हम लोग पीडा से होने वाली अनुभूतियो की आपस में तुलना कर रहे थे। मैं तो उससे यह कहनेवाला था कि उसने कभी प्रसव के समय होने वाली पीड़ा का अनुभव नही किया है .. ।"

"तुम निरे मूर्ख हो!" गेज बोली—"वह तुम्हारा नाश करने पर तुली हुई है।"

"उसने पहले ही मेरा सब-कुछ समाप्त कर दिया है।" मै बोला—"उसने मेरी छुट्टी ख़त्म कर दी और सम्भव है कि अब वह मुझे सैन्य-न्यायालय से दंड दिलवाने का प्रयत्न करे। वह बड़ी नीच है!"

"तुम उसे कभी अच्छे नहीं लगे।" गेज बोली—"पर बात क्या थी?"

"उसका कहना है कि मोर्चे पर मुझे लौटना न पड़े, इसलिए जान-बूझ कर मैंने शराब पी-पीकर पाण्डुरोग पैदा कर लिया।"

"छिः!" गेज ने कहा—"मैं कसम खाकर कह सकती हूँ कि तुमने शराब नहीं पी। हर व्यक्ति कसम खा सकता है कि तुमने शराब नहीं पी।"

"वह इन बोतलों को देख गई है।"

"मैंने तुमसे हजार बार कहा था कि इन बोतलों को यहाँ से हटाओ। कहाँ हैं वे?"

"आलमारी में।"

"क्या तुम्हारे पास कोई सूटकेस है ?"

"नही, उन्हें थैले मे बन्द कर दो।"

मिस गेज ने उन बोतलो को थैले में अच्छी तरह बन्द कर दिया। "मै इन्हें दरबान को दे दूँगी।" वह बोली और द्वार की ओर बढी।

"ठहरो!" मिस वॉन कैम्पेन अचानक ही आ पहुँची—"उन बोतलो को मै ले जाऊँगी।" वह अपने साथ एक नौकर भी लाई थी। "इन्हें ले जाओ!" उसने नौकर को आदेश दिया। "इन के विषय में अपनी रिपोर्ट लिखते समय मै ये बोतलें डाक्टर को दिखाना चाहती हूँ।"

वह बरामदा पार करती हुई नीचे चली गयी। नौकर भी थैला लेकर उसके पीछे-पीछे चला गया। उसे मालूम था कि उस थैले मे क्या हे।

और इन सारी बातो का कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। हुआ सिर्फ इतना ही कि मुझे अपनी छुट्टी से हाथ धोना पड़ा।

२३

जिस रात मै मोर्चे पर लौटने वाला था, मैंने दरबान को ट्यूरिन से आने वाली गाड़ी मे मेरे लिए जगह रोक रखने को भेजा। गाड़ी आधी रात के समय मिलान से रवाना होने वाली थी। वह ट्यूरिन मे ही बनती थी। साढे दस बजे रात के लगभग वह मिलान पहुँचती थी और छूटने का समय होने तक स्टेशन मे ही पड़ी रहती थी। जगह पाने के लिए लोगो को गाड़ी आने से पहले ही प्लेटफार्म पर प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। दरबान ने अपने एक मित्र को साथ ले लिया। उसका मित्र एक मॅशीनगन-चालक था। उन दिनो वह छुट्टी पर था और इस समय एक दर्जी की दूकान पर काम करता था। दरबान को विश्वास था कि वे दोनो मिलकर जगह अवश्य रोक रखेंगे। मैंने उन्हें प्लेटफार्म-टिकट के लिए पैसे दिए। अपना सामान भी उनके हाथ भिजवा दिया। सामान के नाम पर मेरे साथ एक बडा थैला, जो कंधे से लटकाया जा सकता था और दो मसक थे।

पॉच बजे के करीब मैंने अस्पताल के सब लोगो से विदा ली और बाहर आया। दरबान मेरा सामान अपने घर ले गया। मैंने उससे कह दिया कि मैं

आधी रात से कुछ पहले स्टेशन पर पहुँच जाऊँगा। उसकी स्त्री मुझे "सॅन्योरिनो" (मास्टर या बेटा) कहकर पुकारती थी। मेरे विदा लेते समय वह रोने लगी। उसने अपनी ऑखे पोछते हुए मुझसे हाथ मिलाया और फिर रोने लगी। मैंने उसकी पीठ थपथपाई। वह पुनः रो पड़ी। वह मेरे फटे हुए कपडे वगैरेह सी दिया करती थी। वह एक नाटी, मोटी और फूले हुए चेहरे वाली स्त्री थी। उस के बाल सफ़ेद हो चुके थे। जब वह रोती थी, तो उसका चेहरा बड़ा विचित्र दिखता था।

मै नुक्कड़ पर पहुँचा। वहॉ शराब की एक दूकान थी। उसी मे बैठकर मैं खिड़की से बाहर की ओर देखने लगा। बाहर अंधेरा छाया हुआ था। ठड काफी थी और कुहासा भी। मैंने अपनी कॉफी और ग्रेप्पा (शराब) के पैसे चुकाए और खिड़की से आने-जाने वाले व्यक्तियो को देखता रहा। तभी मैंने कैथरीन को आते हुए देखा और खिड़की पर आवाज कर उसका ध्यान अपनी ओर खीचा। उसने ऑखे ऊपर उठाई, मुझे देखा और मुस्कराई। मै उससे मिलने के लिए बाहर आ गया। वह एक गहरे नीले रग का लबादा पहने हुए थी और एक नरम फेल्ट-हैट लगाए थी। हम दोनो साथ-साथ चलने लगे। फुटपाथ पर चलते-चलते, शराब की दूकानो को पार करते हुए, हम बाजार के चौक पर आ पहुँचे। उसे भी पीछे छोड कर हम सडक पर बढ़ते गए और मेहराबो के बीच के मार्ग से निकलकर गिरजाघर के चोक पर पहुँच गये। चौक पर ट्रामों की पटरियॉ थी और उनके आगे गिरजाघर था। वह कुहासे मे सफ़ेद और गीला दीख रहा था। हमने ट्रामो की पटरियॉ पार की। बाई ओर दूकाने थी। उनकी खिड़कियो मे प्रकाश जगमगा रहा था। उसी दिशा मे 'गैलेरिया' का प्रवेशद्वार खडा था और पूरा चौक कुहरे से ढॅका था। हम जब गिरजाघर के प्रवेशद्वार के समीप पहुँचे, तो वह बहुत बड़ा दिखाई दिया। उसके पत्थर गीले हो रहे थे।

"क्या तुम भीतर चलोगी?"

"नही—" कैथरीन बोली। हम आगे बढते गए। सामने ही एक दीवार के पत्थर के आधार-स्तम्भ की छाया मे हमे एक सैनिक, एक युवती के साथ खड़ा दिखाई दिया। सैनिक ने पत्थर के सहारे उस लडकी को खड़ा कर दिया था और उसे अपने से कसकर चिपकाए हुए था। उसने उसके शरीर के चारो ओर अपना लबादा लपेट दिया था।

"ये भी हमारी ही तरह हैं।" मैंने कहा।

"ना, हमारी तरह कोई भी नही है।" कैथरीन बोली।

"काश, उन्हे अपनी कामना-तृप्ति के लिए कोई ऐसा स्थान मिल जाता, जहॉ वे जा सकते।"

"किन्तु उससे उन्हे कोई लाभ नहीं होता।"

"कह नहीं सकता। पर प्रत्येक व्यक्ति के पास कोई-न-कोई ऐसा स्थान तो होना ही चाहिए, जहॉ जाकर वह अपनी तृप्ति कर सके।"

"वे गिरजाघर मे जा सकते है।" कैथरीन बोली।

हम अब गिरजाघर पार कर चुके थे। चौक के दूसरे छोर से आगे निकल जाने पर हमने फिर गिरजाघर की ओर देखा। कुहासे मे लिपटा, वह बड़ा सुन्दर दिखाई दे रहा था। हम चमडे के सामान की एक दूकान के सामने जाकर खड़े हो गये। दूकान की खिडकी मे घुड सवारी के जूते, कधे से लटकाया जानेवाला थैला और बर्फ़ पर फिसलते समय पहने जानेवाले जूते रखे थे। प्रत्येक वस्तु प्रदर्शन के लिए एक-दूसरे से अलग-अलग, सजाकर रखी गई थी। घुड-सवारी के जूते और बर्फ पर फिसलने वाले जूते दो ओर थे और बीच मे था, कधे से लटकाया जानेवाला थैला। उनका चमडा काला था। तेल लगाये जाने के कारण वे इतने चिकने दिखाई दे रहे थे, जैसे कई दिनों तक उपयोग मे आयी हुई घोड़े की जीन। ऊपर बिजली की बत्ती का प्रकाश पड रहा था और वे बहुत चमक रहे थे।

"हम लोग भी कभी बर्फ़ पर फिसलेगे।"

"दो माह बाद, म्यूरेन मे बर्फ़ पर फिसलना शुरू होगा।" कैथरीन बोली।

"फिर हम वही चलेगे।"

"अच्छी बात है।" वह बोली। हम दूसरी दूकानो की खिडकियो को देखते हुए आगे बढ़ते गये और अन्त मे एक गली मे मुड गये।

"मै इस रास्ते कभी नही आई।"

"मै बराबर इसी रास्ते अस्पताल जाया करता था।" मै बोला। वह एक सकरी गली थी। हम उसकी दाहिनी ओर से चलने लगे। बहुत-से लोग आ-जा रहे थे। गली के दोनो ओर काफ़ी दूकाने थी और उनकी खिड़कियो से भीतर का प्रकाश स्पष्ट दिखायी दे रहा था। हमने एक खिड़की मे रखे हुए पनीर की थप्पी पर नजर दौड़ाई और फिर मै एक हथियारो की दूकान के सामने जाकर खड़ा हो गया।

"ज़रा भीतर चलो। मुझे एक बन्दूक खरीदनी है।"

"किस तरह की बन्दूक?"

"एक पिस्तौल।" हम अन्दर गये। मैंने अपना कमर-पट्टा खोला और पिस्तौल की खाली पेटी के साथ उसे मेज (काउटर) पर रख दिया। मेज के पीछे दो स्त्रियॉ खड़ी थी। उन्होने हमे बहुत-सी पिस्तौले लाकर दिखाई।

"देखिये, पिस्तोल इस पेटी मे ठीक से आ जाये।" मैंने पिस्तौल रखने की पेटी को खोलते हुए कहा। पेटी भूरे चमडे की बनी थी। शहर मे पहनकर निकलने के विचार से ही मैंने वह पुरानी पेटी खरीदी थी।

"क्या इन लोगो के पास अच्छी पिस्तौले हैं?" कैथरीन ने पूछा।

"सभी करीब-करीब एक-सी हैं। क्या मै इसकी जॉच कर के देख सकता हूॅ?" मैंने उस स्त्री से पूछा।

"निशाना मारने की जगह तो अभी हमारे यहॉ नहीं है।" वह बोली—

"पर विश्वास रखिये, यह चीज बड़ी अच्छी है। इससे कभी आपका निशाना ग़लत नहीं होगा।"

मैंने उसे मोडा और उसका घोडा पीछे की ओर दबाया। उसका स्प्रिग कडा था, किन्तु अच्छी तरह काम करता था। मैंने उसे परखा और पुनः मोडा।

"यह उपयोग मे आ चुकी है।" वह स्त्री बोली—"पहले यह एक अफसर के पास थी, जो एक कुशल निशानेबाज था।"

"क्या आप ही ने यह पिस्तौल उसे बेची थी?"

"जी, हॉ।"

"तब यह आपके पास वापस कैसे आ गई?"

"उसके अर्दली के द्वारा।"

"हो सकता है, मेरी पुरानी पिस्तौल भी आपके ही पास हो।" मै बोला—"कितनी कीमत है इसकी?"

"पचास लायर। बहुत सस्ती है।"

"अच्छी बात है। मुझे दो अतिरिक्त क्लिप और कारतूसो की एक पेटी और चाहिए।" वह उन्हे मेज़ के नीचे से निकालकर ले आई।

"क्या आपको तलवार की भी ज़रूरत है?" उसने पूछा—"मेरे पास कुछ बहुत अच्छी और सस्ती तलवारे हैं।"

"मै मोर्चे पर जा रहा हूॅ।" मै बोला।

"ओह, हॉ; तब आपको तलवार की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।" वह बोली।

मैंने कारतूसो और पिस्तौल का मूल्य चुकाया। मैगज़ीन भर कर उसे अपने

स्थान पर बिठा दिया। पिस्तौल मैंने पेटी मे डाल दी और अतिरिक्त क्लिपों मे गोलियॉ भर ली। फिर मैंने बकसुए लगाकर पेटी को पट्टे पर कसकर बॉध लिया। पिस्तौल काफी भारी प्रतीत हुई। फिर भी मैंने सोचा कि ऐसी ही पिस्तौल खरीदनी चाहिए, जो ज्यादा प्रचलित हो! उसके कारतूस सरलता से मिल सकते हैं।

"अब हम शस्त्रो से पूर्ण सुसज्जित है।" मैंने कहा—"यही एक ऐसी वस्तु थी, जिसे खरीदने की मुझे हमेशा याद रखनी पडती थी। मेरी पुरानी पिस्तौल अवश्य ही किसी को अस्पताल के रास्ते पर पडी मिली होगी।"

"मुझे विश्वास है कि वह काफी अच्छी पिस्तौल है!" कैथरीन बोली।

"क्या उसके साथ और भी कुछ गायब हुआ था?" दूकान की उस स्त्री ने पूछा।

"याद नहीं आता मुझे।"

"पिस्तौल के साथ छोटी-सी रस्सी की खूबसूरत मुठिया भी है।" वह बोली।

"ऐसा ही कुछ मेरी नजरो से भी गुजरा था।" स्त्री मेरे हाथो और कुछ बेचना चाहती थी।

"आपको सीटी की आवश्यकता तो नहीं है?"

"नहीं।"

उसने नमस्ते की और हम बाहर फुटपाथ पर आ गये। कैथरीन ने खिड़की की ओर देखा। स्त्री ने बाहर झॉका और हमे देखते पा कर सम्मान प्रदर्शित करते हुए थोड़ी झुकी।

"ये लकडी मे जड़े हुए छोटे छोटे कॉच वहॉ क्यों रखे हैं?"

"वे पक्षियो को आकर्षित करने के लिए है। लोग उन्हे बाहर, मैदानो मे ले जाकर, बड़े वेग से गोलाकार घुमाते है। चंडूल पक्षी उन्हे देखकर बाहर निकलते हैं और तब इटालियन लोग उनका शिकार करते हैं।"

"इटालियन सचमुच ही बड़े तीक्ष्ण बुद्धिवाले है।" कैथरीन ने कहा—"क्या अमेरिका के लोग चडूलो का शिकार नहीं करते,, प्रियतम?"

"नही, कुछ खास नहीं।"

हम लोग सड़क पार करके दूसरी ओर से चलने लगे।

"मुझे अब कुछ ठीक लग रहा है।" कैथरीन बोली—"जब हमने घूमना शुरू किया था, तब मेरी तबीयत ठीक नहीं थी।"

"जब हम दोनो साथ होते है, तब हमे हमेशा ही अच्छा लगता है।"

"हम सदा साथ रहेंगे।"

"हाँ, सिवा इसके कि आज रात ही मै तुमसे दूर जा रहा हूँ।"

"इस सम्बन्ध मे मत सोचो, प्रियतम।"

हम सडक पर चलते गये। कुहरे ने सडक पर लगी बत्तियो के प्रकाश को पीले रग मे बदल दिया था।

"तुम थक तो नहीं गए हो?" कैथरीन ने पूछा।

"तुम्हारा क्या हाल है?"

"मुझे तो कुछ नही हुआ है। घूमने मे भी एक अनोखा आनद है।"

"किन्तु हमे अधिक नहीं घूमना चाहिए।"

"नही—नहीं।"

हम एक गली मे मुड गए। उसमें बत्तियाँ नहीं थीं, पर हम गली मे चलते गये। एक स्थान पर मै रुक गया और कैथरीन को अपनी ओर खीच कर मैंने उसका चुम्बन ले लिया। चुम्बन लेते समय, मुझे ऐसा लगा कि उसने अपना हाथ मेरे कधे पर रख दिया और मेरा लबादा खीच कर उसे अपने चारो ओर लपेट लिया। लबादे मे हम दोनो ही छिप गए। उस सूनी-सी गली मे हम दोनो एक ऊँची दीवार से सटकर खडे हो गये।

"चलो, हम कहीं एकान्त मे चले।" मै बोला।

"अच्छी बात है।" कैथरीन तैयार हो गयी। हम उस समय तक उस गली मे चलते गए, जब तक वह नहर की बगल की एक चौड़ी सड़क से जाकर नही मिल गई। उसके दूसरी ओर ईट की एक दीवार तथा बहुत-से मकान थे। सड़क पर कुछ आगे की ओर हमने एक ट्राम को पुल पार करते देखा।

"हमे पुल पर कोई किराए की गाड़ी मिल जाएगी।" मैंने कहा और हम किसी सवारी की राह देखते हुए कुहरे मे, उस पुल पर खड़े रहे। घर जाते हुए लोगो से भरी कई ट्राम गाड़ियाँ भी हमारे सामने से निकल गई। एक गाड़ी दिखाई भी दी; किन्तु उसमे कोई बैठा था। कुहरा धीरे-धीरे वर्षा का रूप धारण करता जा रहा था।

"या तो हम पैदल चले चले या फिर कोई ट्राम ही पकड़ ले।" कैथरीन ने कहा।

"अभी कोई-न-कोई गाड़ी आती ही होगी।" मै बोला।

"यहाँ से बहुत-सी गाडियाँ निकला करती है।"

"एक आ भी रही है।" उसने कहा।

गाडीवान ने अपना घोड़ा रोका और 'मीटर' (जिसमे किराये की रकम स्वय अंकित हो जाती है) नीचे गिरा दिया। गाड़ी की छत उठी हुई थी और गाड़ीवान के कोट पर पानी की बूदें नजर आ रही थी। उसका कलफ़ किया हुआ हैट गीला होने के कारण चमक रहा था। हम अपने स्थान पर पीछे की ओर खिसक कर और बिलकुल सट कर बैठ गए। गाडी की छत उठी होने के कारण भीतर बिलकुल अंधेरा छा गया था।

"तुमने उसे कहॉ ले जाने के लिए कहा है?"

"स्टेशन पर। स्टेशन के उस पार एक होटल है, जहॉ हम लोग ठहर सकते है।"

"क्या हम इसी हालत मे वहॉ जा सकते है? बिना सामान के?"

"हॉ।" मैने उत्तर दिया।

वर्षा के कारण कई गलियो से होते हुए स्टेशन तक जानेवाला मार्ग काफ़ी लम्बा प्रतीत हो रहा था।

"क्या हम खाना नहीं खाएँगे।" कैथरीन बोली—"मुझे तो वहॉ पहुँचते-पहुँचते भूख लग आएगी।"

"हम अपने कमरे मे ही खाना मँगवा लेगे।"

"मेरे पास पहनने तक को कुछ नही है। रात का पहना जानेवाला लबादा भी नहीं।"

"हम रास्ते मे खरीद लेगे।" कहते हुए मैंने गाडीवान को आदेश दिया—"मॉन्जोनी की ओर से चलो।" उसने अपना सिर हिलाया और अगले नुक्कड़ पर बायीं ओर मुड़ गया। बड़ी सड़क आते ही कैथरीन लबादे की दूकान खोजने लगी।

"वह रही एक दूकान।" उसने कहा। मैंने गाडीवान को रुकने का आदेश दिया। कैथरीन नीचे उतरी और सडक पार करती हुई दूकान में घुस गई। मै गाडी मे ही बैठा उसके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। बाहर वर्षा हो रही थी। मुझे भीगे हुए पथ और हॉफते हुए गीले घोड़े के शरीर से निकलने वाली गन्ध का अनुभव हो रहा था। कैथरीन एक पुलिन्दा लेकर वापस लौटी। गाड़ी मे उसके बैठते ही गाडीवान ने गाड़ी चला दी।

"मैने व्यर्थ ही अधिक पैसा खर्च कर डाला, प्रियतम!" वह बोली—"किन्तु लबादा है बडा अच्छा।"

होटल पहुँचने पर मैंने कैथरीन से गाडी में ही बैठे रहने के लिए कहा

और स्वय उतरकर मैनेजर के पास पहुँचा। होटल मे बहुत-से कमरे खाली थे। मै लौटकर गाड़ी के निकट पहुँचा, किराया चुकाया। कैथरीन और मैं साथ-साथ होटल मे घुसे। बटनो से लैस होटल की पोशाक मे एक छोटे लड़के ने हमारे कपडे का पुलिदा सँभाल लिया। मैनेजर बडे सम्मान के साथ झुकता हुआ हमे लिफ्ट की ओर ले गया। होटल मे चारो ओर लगे लाल रेशमी परदे तथा पीतल की चीजे चमक रही थी।

मैनेजर हमारे साथ ही लिफ्ट मे हमारे कमरे तक आया।

"मोशियो तथा मादाम (महाशय और महाशया) के लिए भोजन की व्यवस्था उनके कमरे मे ही की जाये?"

"हॉ, क्या आप ऊपर ही खाना भिजवा देगे?" मैंने कहा।

"भोजन के साथ आप क्या कोई विशेष खाद्य पदार्थ लेना पसंद करेंगे? मास अथवा सूफ्ले (अंडे से बना एक खाद्य पदार्थ)?"

हर मज़िल पर एक हल्की-सी आवाज करता हुआ लिफ्ट तीन मंजिले पार कर गया और फिर एक 'खटाक्' की आवाज़ के साथ रुक गया।

"किस चीज का मास खिलायेगे आप?"

"आपको तीतर या जगली मुर्गे का मास मिल सकता है।"

"तो जंगली मुर्गे का मॉस भिजवाइये।" मैने कहा। हम बरामदे से गुजर रहे थे। वहॉ बिछी हुई दरी कई जगह से फटी और पुरानी थी। एक-एक कर हम कई दरवाजो के पास से निकलते गये और अन्त मे, मैनेजर एक द्वार के सामने रुका। उसने ताला खोला।

"लीजिए, यह रहा आपका कमरा। बड़ा सुन्दर कमरा है।"

होटल की पोशाक मे सज्जित उस छोटे लड़के ने कमरे के बीच में रखी हुई मेज पर वह पुलिन्दा रख दिया। मैनेजर ने खिड़कियो मे लगे परदे ऊपर की ओर खिसका दिये।

"बाहर कुहरा छाया है—" वह बोला। कमरा लाल रेशमी परदों से सजाया गया था। उसमे बहुत-से दर्पण लगे थे, दो कुर्सियॉ थी और एक बडा बिस्तर था, जिस पर साटन की चादर बिछी हुई थी। एक ओर एक दरवाजा था, जो स्नानागार मे खुलता था।

"मै नीचे जाकर आपका खाना भेज रहा हूँ।" मैनेजर ने कहा। वह सम्मानपूर्वक थोड़ा झुका और चला गया।

मैने खिड़की पर जाकर बाहर की ओर झॉका, और मोटे रेशमी परदो को

गिराने वाली रस्सी खींची। परदे गिर गये। कैथरीन बिस्तर पर बैठी हुई कॉच के टुकडो से बने झाड़-फानूस की ओर देख रही थी। उसने अपनी टोपी उतार ली थी। प्रकाश मे उसके केश चमक रहे थे। वह एक दर्पण के सामने खड़ी हो गई। उसने अपने केशो पर अपने हाथ रखे। मुझे उसका प्रतिबिम्ब तीन अन्य दर्पणो मे भी दिखाई दिया। वह प्रसन्न नहीं दीख रही थी। उसने अपना लबादा उतारा और धीरे-से बिस्तर पर गिरा दिया।

"क्या बात है, प्रिये?"

"आज से पहले मैने कभी सोचा भी नहीं था कि मै भी एक वेश्या के समान हूँ।" वह बोली। मै खिड़की के पास गया, परदा हटाया और बाहर देखने लगा। मुझे स्वप्न मे भी आशा नहीं थी कि कैथरीन मेरे यहॉ आने का इतना गहरा अर्थ लगायेगी।

"कौन कहता है कि तुम वेश्या हो!"

"मै यह जानती हूँ, प्रियतम! किन्तु इस तरह अपने-आपको वेश्या समझना बड़ा बुरा लगता है।" उसका स्वर शुष्क और भावनाहीन था।

"वास्तव मे, यही सब से अच्छा होटल था, जहॉ हम ठहर सकते थे।" मै बुझे हुए स्वर मे बोला और फिर खिडकी से बाहर देखने लगा। चोक के उस ओर स्टेशन की बत्तियॉ जगमगा रही थीं। सडक पर गाड़ियॉ आ-जा रही थी और सामने के बगीचे मे वृक्ष गुमसुम खड़े थे। होटल की बत्तियॉ नीचे की गीली जमीन मे प्रतिबिम्बित होकर चमक रही थी। "हाय रे दुर्भाग्य! क्या अब मुझे व्यर्थ के वाद-विवाद मे भाग लेना पडेगा?" मै सोच रहा था।

"यहॉ आओ, यहॉ।" कैथरीन बोली। उसके स्वर की शुष्कता नष्ट हो चुकी थी। "आओ भी, मै फिर से अपने आपे में आ गयी हूँ।"

मैने पलग की ओर देखा। कैथरीन मुस्करा रही थी।

मै खिड़की से हटकर बिस्तर पर पहुँचा। मैने उसे अपने आलिगन में लेते हुए चूम लिया—"तुम मेरी बडी अच्छी सगिनी हो!"

"मै निश्चय ही तुम्हारी हूँ।" वह बोली।

भोजन करने के बाद हम काफी स्वस्थ हो गये। थोडी देर बाद ही हमारे बीच जैसे एक अलोकिक सुख की तीव्र लहर-सी दौड़ गई और उसके बाद हमे ऐसा लगा कि होटल का वह कमरा हमारा घर ही हो। अस्पताल मे भी मेरा कमरा मेरा अपना घर ही था। उसी प्रकार यह कमरा भी हमारे अपने घर की तरह लगा।

भोजन के समय कैथरीन ने अपने कंधो पर मेरा फौजी कोट डाल लिया था। हम बड़े भूखे थे, खाना भी काफी अच्छा था। हमने बड़े प्रेम से खाना खाया और काप्री तथा सन्त-एस्तेफे (शराब) की एक-एक बोतल खाली कर दी। ज्यादा शराब मैंने ही पी। कैथरीन ने तो थोडी-सी शराब ली और उससे उसे बड़ा सुख मिला। हमारे खाने में जंगला मुर्गे का मांस, सूफ्ले के आलू (अण्डो के सफेद भाग और आलुओ को तलकर बनाया गया एक खाद्य पदार्थ), प्यूरी दा मॉरों (अखरोट का शोरबा), सलाद था। बाद मे खाने के लिए, कुछ फल तथा मिठाइयाँ भी थी।

"कमरा अच्छा है—" कैथरीन बोली "—और बडा प्यारा! मिलान मे हम अगर सदा इसी कमरे मे रहे होते, तो कितना आनन्द आता।"

"कमरा है तो बडा विचित्र, पर अच्छा है।"

"पाप वस्तुतः बड़ी अद्‌भुत चीज है!" कैथरीन बोली—"जो लोग पाप करते है, उन्हे कदाचित् वह बहुत अच्छा लगता है। इस कमरे में लगे लाल रेशमी परदे सचमुच सुन्दर है। और ये दर्पण भी बडे आकर्षक है।"

"तुम कितनी अच्छी हो!"

"मै नही जानती कि सवेरे उठने पर यह कमरा कैसा लगता होगा, फिर भी कमरा है बड़ा सुन्दर।" मैने सन्त एस्तेफे का दूसरा गिलास भरा।

"मै चाहती हूँ कि हम कोई ऐसा कार्य करते, जो सचमुच पाप कहा जा सकता।" कैथरीन ने कहा—"हम जो कुछ करते है, वह बिलकुल निर्दोष और सरल होता है। मुझे विश्वास नही होता कि हम कोई ऐसा भी कार्य करते हैं, जो गलत हो—जो बुरा कहा जा सके।"

"तुम्हारा हृदय वस्तुतः विशाल है।"

"मुझे एक भूख-सी सताया करती है— बडी भयङ्कर भूख—एक प्रकार की अतृप्ति!"

"बडी भोली हो तुम।" मैने कहा।

"भोली तो हूँ ही। तुम्हें छोड़कर अन्य कोई भी आज तक मुझे नही पहचान सका।"

"एक बार, जब मै पहले-पहल तुमसे मिला था, तो दोपहर के बाद दिनभर यही सोचता रहा था कि किस प्रकार हम दोनो एक दिन होटल कॅवोर मे जाएँगे और वहाँ हमे कैसा लगेगा।"

"तुम्हारा ऐसा सोचना तो भयानक धृष्टता थी। पर यह होटल कॅवोर तो नहीं है? क्यो, नही है न?"

"नही। वहाँ हमे प्रवेश ही नहीं मिलता।"

"कभी-न-कभी तो मिलेगा। किन्तु प्रियतम, यही हम दोनो मे अन्तर है। मैने इस तरह की कोई बात सोची भी नही आज तक।"

"कभी नही सोची? बिलकुल नही?"

"बहुत कम।" उसने कहा।

"तुम सचमुच ही बडी अच्छी हो!"

मैंने गिलास मैं एक बार और शराब भरी।

"मै बस एक सीधी-सादी युवती हूँ।" कैथरीन ने कहा।

"पहले मै तुम्हारे विषय मे ऐसा नही सोचता था। मेरी धारणा थी कि तुम एक पागल लडकी हो।"

"थी भी मै कुछ पागल-सी। किन्तु मेरी सनक कभी किसी के लिए समस्या नहीं बनी। मैंने तुम्हें भी तो कभी किसी उलझन मे नहीं डाला। बोलो, क्या यह सच नहीं है, प्रियतम?"

"शराब बड़ी सुदर वस्तु है।" मैने कहा—"उसे पीकर मनुष्य अपने तमाम दुःखों को भूल जाता है।"

"है तो सुन्दर—" कैथरीन बोली—"किन्तु उसे पी-पी कर ही मेरे पिता बुरी तरह वातरोग से पीड़ित हो गये है।"

"क्या तुम्हारे पिता हे?"

"हॉ—" कैथरीन बोली—"उन्हे वातरोग हो गया है, किन्तु तुम्हें उनसे मिलने की कभी जरूरत ही नहीं पडेगी। क्या तुम्हारे पिता नहीं हैं।"

"नही।" मै बोला—"सौतेले पिता अवश्य है।"

"क्या मै उन्हे पसद कर सकूँगी।"

"तुम्हे भी उनसे मिलने की जरूरत नही पड़ेगी।"

"हमारा जीवन कितने सुख से बीत रहा है।" कैथरीन ने कहा— "मुझे तो अब अन्य किसी वस्तु मे आनन्द ही नही आता। तुम्हारे प्रणय-बधन मे बॅधकर मै बहुत सुखी हूँ। मैने जीवन मे सब कुछ पा लिया है।"

खानसामा आया और सारी चीजे उठाकर ले गया। कुछ क्षणो तक हम बिलकुल मौन बैठे रहे। बाहर वर्षा हो रही थी और हमे उसकी आवाज स्पष्ट सुनाई दे रही थी। इसी बीच नीचे, सडक पर, एक मोटर का हार्न बज उठा।

"मैं सदा—

अपने पीछे सुना करता हूँ

समय के उड़ते हुए रथ का स्वर

जो—
मेरी ओर शीघ्रता से बढा आ रहा है।"

मै यह गीत गुनगुनाने लगा।

"मुझे याद है, यह कविता—" कैथरीन बोली—"यह मार्वेल की लिखी हुई है। किन्तु इस कविता का विषय तो एक लड़की है, जो एक मनुष्य के साथ नही रहना चाहती।"

मेरा मस्तिष्क उस वक्त काफी स्थिर और सुलझा हुआ था। अतः मैंने कैथरीन से कुछ गम्भीर बाते करने का निश्चय किया।

"संतानोत्पत्ति के लिए तुम कहाँ जाओगी?"

"कह नही सकती। किन्तु किसी अच्छे स्थान का ही चुनाव करूँगी, जहाँ मै जा सकूँ।"

"और उसका प्रबन्ध कैसे करोगी?"

"जितने अच्छे ढग से मुझसे सम्भव हो सकेगा। तुम कोई चिन्ता मत करो, प्रियतम। युद्ध का अन्त होने के पहले हमारे न जाने कितने बच्चे हो जाएँगे।"

'मेरे जाने का समय हो रहा है।"

"जानती हूँ। यदि तुम चाहो, तो "समय हो रहा हे" को "समय हो गया है" भी कह सकते हो।"

"नहीं, नही।"

"तब चिन्ता मत करो, प्रियतम? अभी तक तो तुम बिलकुल निश्चिंत थे और अब चिन्ता कर रहे हो।"

"अच्छी बात है, मैं चिन्ता करना छोड़ देता हूँ। तुम पत्र तो जल्दी-जल्दी लिखोगी न?"

"प्रति दिन लिखूँगी। क्या अधिकारी-वर्ग तुम्हारे पत्र पढ़ लेते है।"

"वे अंग्रेजी इतनी अच्छी तरह नही पढ़ सकते कि हमारा पत्र पढ़कर हमें कोई हानि पहुँचा सके।"

"मै अपने पत्रो को इस तरह घुमा-फिरा कर लिखूँगी कि वे समझ ही नहीं सके।" कैथरीन ने कहा।

"किन्तु इतना घुमा-फिरा कर मत लिखना कि मैं भी न समझ सकूँ।"

"नही-नहीं। बस, थोडा-सा घुमा फिरा कर लिखूँगी।"

'अब हमे यहाँ से चलने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।"

"अच्छी बात है, प्रियतम।"

"मै अपने इस सुन्दर घर को छोड़ना नही चाहता।"

"छोडना तो मै भी नहीं चाहती!"

"किन्तु हमे जाना ही पडेगा।"

"तब चलो। पर हम अपने इस घर में अधिक समय तक कभी नहीं रह सके।"

"कभी-न-कभी रहेगे ही।"

"जब तुम वापस आओगे, तब मै तुम्हारे लिए एक सुन्दर घर तैयार रखूँगी।"

"हो सकता है कि मै पहुँचने के साथ ही वापस भी आ जऊँ।"

"हॉ, शायद तुम्हारे पैर मे थोड़ी चोट लग जाये और तुम घायल हो जाओ।"

"या शायद कान के नीचे के भाग मे ही कोई चोट लग जाए।"

"नही, मै चाहती हूँ कि तुम्हारे कान बिलकुल वैसे ही रहें, जैसे अभी है।"

"और मेरे पैर चाहे बिगड़ जायें?"

"तुम्हारे पैर तो पहले ही घायल हो चुके है।"

"अब हमे जाना ही चाहिए, प्रिये। सच!"

"अच्छी बात है। चलो, तुम आगे-आगे चलो।"

.२४.

लिफ्ट द्वारा उतरने के बदले हम सीढियो से होकर नीचे चले। सीढ़ियो पर बिछी हुई दरी फटी-पुरानी थी। भोजन के पैसे मैंने तभी चुका दिए थे, जब वह ऊपर भेजा गया था। जो खानसामा भोजन लाया था, वह इस समय द्वार के पास एक कुर्सी पर बैठा था। हमे देखते ही वह जल्दी से खड़ा हो गया और झुककर उसने सम्मान प्रदर्शित किया। मै उसके साथ बग़ल के एक कमरे में गया। वहॉ मैंने अपने कमरे का किराया चुकाया। हम जब होटल में आये थे, तो मैनेजर ने मित्र के रूप मे हमारा स्वागत किया था और पेशगी किराया लेने से इनकार कर दिया था, किन्तु जब वह आराम करने चला गया, तो उसने इस डर से उस खानसामा को द्वार पर बैठा दिया, कि मै कहीं बिना पैसा चुकाए न चला

जाऊँ। मेरा अनुमान है कि उसके अन्य 'मित्रों' के साथ भी उसका इसी प्रकार का बर्ताव रहा होगा। युद्ध के समय मे आदमी के मित्र भी तो बहुत हो जाते है।

मैने खानसामा से हमारे लिए एक गाडी ले आने के लिए कहा। उसने मेरे हाथ से कैथरीन के कपडो का पुलिन्दा ले लिया और छाता लेकर बाहर चला गया। हमने खिड़की से देखा कि वर्षा के बीच वह सड़क पार कर रहा था। हम उस बगल के कमरे में खडे होकर खिडकी से बाहर देखते रहे।

"कैसा लग रहा है केट, तुम्हे?"

"नीद आ रही है।"

"मुझे कुछ खाली-खाली-सा लग रहा है। भूख भी मालूम हो रही है।"

"क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है?"

"हॉ है। मेरी मसक मे!"

मैने गाड़ी आते हुए देखी। वह सडक के निकट आकर खड़ी हो गयी। उसमे जुते हुए घोड़े का सिर वर्षा के कारण नीचे झुका हुआ था। खानसामा गाड़ी से नीचे उतरा। उसने छाता खोला और भीतर की ओर आया। दरवाजे पर ही हमारी उससे भेट हो गयी। हम दोनो छाते मे सिर छुपाये, पानी मे नहाये रास्ते को पार करते हुए, सड़क की पटरी के किनारे खड़ी हुई गाड़ी के निकट पहुँचे। बरसात का पानी नालियों से होकर बहता जा रहा था।

"आपका पुलिन्दा भीतर सीट पर रखा है।" खानसामा बोला। वह उस समय तक छाता ताने खड़ा रहा, जब तक हम दोनो गाड़ी मे न बैठ गये और मैंने उसे इनाम न दे दिया।

"अनेक धन्यवाद। आपकी यात्रा सुखद हो!" वह बोला। कोचवान ने रास खींची और घोड़ा चल पडा। खानसामा छाता लेकर होटल की ओर मुड़ गया। सड़क पर आगे बढती हुई हमारी गाड़ी बायीं ओर मुडी और स्टेशन के ठीक सामने पहुँच कर रुक गयी। रेलगाड़ी के बाहर, प्रकाश के नीचे दो सैनिक पहरेदार खडे थे। उनके हैट के ठीक ऊपर बत्ती चमक रही थी। स्टेशन के प्रकाश मे ऊपर से गिरती पानी की धार स्पष्ट दिखाई दे रही थी। स्टेशन की छत के नीचे से एक कुली निकलकर हमारे पास आया।

"नहीं!" मै बोला—"धन्यवाद, मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं पडेगी।"

वह लौटकर पुल की छत के नीचे छिप गया। मैं कैथरीन की ओर मुडा। उसका चेहरा गाड़ी की छत के साये मे था।

"अब हमे एक-दूसरे से विदा होना है।"

"क्या मै स्टेशन के भीतर नहीं चल सकती ?"

"नहीं। अच्छा विदा, केट!"

"क्या तुम कोचवान को अस्पताल का नाम बता दोगे?"

"हॉ, हॉ।"

मैने कोचवान को अस्पताल का पता बताया और कैथरीन को वहॉ पहुॅचा देने के लिए कहा। उसने सिर हिला कर स्वीकार कर लिया।

"अच्छा, नमस्ते।" मै बोला—"अपनी और नन्हीं कैथरीन की अच्छी तरह देख-भाल करना!"

"विदा, मेरे सर्वस्व!"

"विदा, प्राण।" मै बोला और वर्षा की बौछारो के बीच गाडी से नीचे उतर पड़ा। कैथरीन बाहर की ओर झुकी और प्रकाश में उसका सुंदर मुख और भी आकर्षक हो उठा। मुस्कराते हुए उसने अपना हाथ हिलाया। गाडी चल पड़ी। कैथरीन ने ढॅके हुए स्थान की ओर संकेत किया। मैने उस ओर देखा। वहॉ केवल वही ढॅका हुआ स्थान था, जहॉ वे दो सैनिक पहरेदार खड़े थे। और तब मेरी समझ में आया कि वह मुझे वर्षा मे भीगने के बजाय साये मे चले जाने के लिए कह रही थी। मै भीतर जाकर खडा हो गया और गाडी की ओर देखता रहा। गाडी अब एक मोड़ पार कर रही थी। मै धीरे-धीरे कदम बढाता हुआ स्टेशन में घुसा और पटरियों को पार करके रेलगाड़ी के पास पहॅुच गया।

दरबान प्लेटफार्म पर खडा मेरी राह देख रहा था। मैं उसके पीछे-पीछे, लोगो की भीड़ को चीर कर, एक ओर से अपना मार्ग बनाता हुआ, एक डिब्बे में घुस गया और उस ओर बढा, जहॉ एक कोने में मॅशीनगन-चालक बैठा हुआ था। मेरा थैला और मसके उसके सिर के ठीक ऊपर, सामान रखने के तख्ते पर रखी हुई थी। बेचो के बीच के रास्ते मे बहुत-से आदमी खडे थे। जब मै भीतर घुसा तो डिब्बे के सब लोगो की नजरें मुझ पर जम गईं। गाड़ी में बहुत भीड़ थी और प्रत्येक व्यक्ति जगह के लिए झगड़ने पर उतारू था। मुझे बैठने के लिए स्थान देने के विचार से मॅशीनगन-चालक उठ खड़ा हुआ। किन्तु मेरे बैठते ही किसी ने मेरा कंधा थपथपाया। मैने घूम कर देखा। कन्धा थपथपाने वाला, तोपखाने का एक लम्बा और दुबला-पतला कैप्टन था। उसके जबड़े के पास किसी चोट का एक लाल-सा निशान था।

"कहिये, क्या कहना चाहते हैं आप?" मैने पूछा। मुडकर मैने अपना मुॅह

ठीक उसके सामने कर लिया था। वह मुझसे ऊँचा था। उसका दुबला-पतला मुँह उसकी आगे की ओर झुकी हुई टोपी में छिपा हुआ था। उसके घाव का निशान नया था और चमक रहा था। डिब्बे का प्रत्येक व्यक्ति उस वक्त मेरी ओर देख रहा था।

"आप ऐसा नहीं कर सकते।" वह बोला—"आप किसी सैनिक द्वारा अपने बैठने के लिए जगह नहीं रुकवा सकते।"

"पर मैंने ऐसा किया है। अब बोलिए।"

उसने थूक निगला और मेरी ओर देखा। मॅशीनगन-चालक उस जगह के सामने खडा हो गया। दूसरे व्यक्ति भी कॉच के पीछे से देखने लगे। पर डिब्बे के किसी व्यक्ति ने कुछ नहीं कहा।

"आपको ऐसा करने का कोई अधिकार नही है। मै यहाँ आपके आने से दो घटे पहले से खड़ा हूँ।"

"आप चाहते क्या है?"

"वह स्थान।"

"और वही मुझे भी चाहिए।"

मैंने गौर से उसके चेहरे की ओर देखा। मुझे यह समझने भी देर न लगी कि सारा डिब्बा मेरे विरुद्ध है। मै लोगो को इसके लिए दोष नही दे सकता था। उनका कहना भी सच था। किन्तु मुझे भी जगह की जरूरत थी और फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा।

"क्या दुर्भाग्य है!" मैंने सोचा।

"आप ही बैठ जाइये, कैप्टन महोदय!" अन्त मे, मै बोला। मॅशीनगन-चालक एक ओर हट गया और वह लम्बा-सा कैप्टन वहाँ बैठ गया। उसने मेरी ओर देखा। उसके मुखपर झुँझलाहट के भ व स्पष्ट थे। पर जगह उसे मिल गई थी। "मेरा सामान उठा लो।" मैंने मशीनगन-चालक से कहा और हम बेंचो के बीच के खाली स्थान पर जाकर खडे हो गये। गाड़ी खूब भरी हुई थी और मुझे मालूम था कि अब जगह मिलने की आशा करना व्यर्थ है। मैंने दरबान और मॅशीनगन-चालक को दस-दस लायर इनाम मे दिये। वे डिब्बे मे से निकल कर बाहर प्लेटफार्म पर आ गये। जाते-जाते उन्होंने खिड़कियो मे झाँककर देखा, पर कहीं भी खाली जगह नहीं दिखाई दी।

"हो सकता है, कुछ लोग ब्रेस्सिआ में उतर जायें।" दरबान बोला।

"ना, ब्रेस्सिआ में और भी लोग चढेंगे।' मॅशीनगन-चालक ने कहा। मैंने

उनसे विदा ली। हमने हाथ मिलाये और तब वे दोनो चले गये। जाते हुए उन्हें बडा दुःख हो रहा था। जब गाडी चली, तो डिब्बे में बहुत-से व्यक्ति खड़े थे। गाडी धीरे-धीरे प्लेटफार्म को पीछे छोडने लगी। मै स्टेशन पर और माल-गोदाम में जगमगाती हुई बत्तियो को देखता रहा। वर्षा अभी भी हो रही थी। थोडी ही देर मे सब खिड़कियाँ गीली हो गयी और बाहर का दृश्य दिखाई देना बद हो गया। बाद मे, मै बेन्चो के बीच की खाली जगह मे, फ़र्श पर ही सो गया। सोने के पहले मैने अपनी पाकेट-बुक मे अपने सब कागज और पैसे रख लिये और उसे कमीज और पायजामे के भीतर कमर पर दबा लिया। वह मेरी 'ब्रीचेस' के भीतरी ओर दब गई। फिर मै सारी रात इतमीनान से सोता रहा। बीच मे जब ब्रेस्सिआ और वेरोना पर और लोग गाडी में चढ़े, तब थोडी देर के लिए मेरी नींद खुली। पर तुरत ही मै फिर सो गया। सोते समय एक मसक के ऊपर मेरा सिर था और दूसरी को मै अपनी भुजाओ मे लिपटाये हुए था। पर मेरा थैला मुझे चुभ रहा था। नींद मे भी मुझे लोगो के आने-जाने का भान होता रहा। अगर वे लॉघ कर नहीं जाते, तो मुझे कुचल देते। खाली जगह मे फर्श पर सब तरफ आदमी सो रहे थे। अन्य बहुत-से लोग खिड़कियो की छड़े पकड़ कर खडे थे या दरवाजो के सहारे बाहर की ओर झुके हुए थे। गाड़ी पूरे सफर मे भरी ही रही और उस भीड मे कहीं कोई कमी नही हुई

तृतीय खंड

• २५ •

पतझड़ की ऋतु थी। वृक्ष पत्र-विहीन हो गये थे। सड़के कीचड़ से भर गयी थीं। मै एक मोटर मे यूडाइन से गोरीजिया गया। मार्ग में हम कई मोटरो को पीछे छोड आगे बढते गये। रास्ते-भर मैं आसपास के इलाके का दृश्य देखता रहा। शहतूत के वृक्ष बिलकुल ठूँठ-से खडे थे। खेत मटमैले दीख रहे थे। सडक पर एक कतार मे खड़े वृक्षो की पत्तियाँ उन्हे आवरण-हीन कर और स्वय भी जैसे उनके बिछोह को सहन न कर सकने के कारण मुरझाई हुई बिखरी पड़ी थी। सडक पर कुछ मजदूर काम कर रहे थे। वृक्षो की कतार के बीच-बीच मे गिट्टियो के ढेर पडे थे। मजदूर उनसे गिट्टियाँ उठाते और सडक पर कहीं-कहीं बने हुए गड्ढो मे डाल देते। वे उन गड्ढो को भरकर सडको की मरम्मत कर रहे थे। हमने देखा कि शहर पर कुहासा छाया था। कुहासे ने पर्वतो को पूर्णतः ढक लिया था। नदी पार करते समय हमने देखा कि उसमे काफ़ी पानी आ गया था और पर्वतो मे वर्षा हो रही थी। हम शहर मे घुसे। कारखानो को पीछे छोडते हुए हमने मकानो को पार किया और बगलो के बीच से आगे बढते गए। मैंने देखा कि बमबारी से और भी बहुत-से घर नष्ट हो गए थे। एक संकरी गली में हमें ब्रिटिश-रेड-क्रॉस की एक मोटर मिली। उसका चालक टोपी लगाए हुए था। उसका मुख दुबला था और वह काफी साँवला पड़ गया था। मै उसे नही जानता था। शहर के एक बड़े चौक पर मेजर के घर के सामने मै मोटर से उतर गया। मोटर-चालक ने मुझे मेरा थैला पकड़ा दिया। मैंने उसे पीठ पर लादा, दोनो मसको को लटका लिया और अपने बगले की ओर चल पड़ा। घर—अपने चिर-परिचित वातावरण मे—लौटने पर जिस आनद और उत्साह का अनुभव होता है, उसका मुझ में सर्वथा अभाव था।

मैं वृक्षो के बीच से बगले की ओर देखता हुआ, उस ओर जाने वाली उस गीली—ठंडी सड़क पर आगे बढ़ता गया। बगले की सब खिड़कियाँ बन्द थीं,

किन्तु दरवाजा खुला हुआ था। भीतर जाकर मैंने देखा कि उस सूने-से कमरे मे मेजर एक मेज पर झुका हुआ बैठा था। उसके सामने, दीवार पर, नक्शे और टाइप किए हुए कुछ कागज़ लगे थे।

"ओहो!" वह बोला—"कहो, कैसे हो?" वह पहले की अपेक्षा अधिक बूढा और कमजोर दीख रहा था।

"ठीक हूँ।" मै बोला—"अपनी बताइये—क्या हालचाल है?"

"अब तो सब-कुछ समाप्त हो गया है।" उसने उत्तर दिया—"अपना थैला वगैरह उतारो और आराम से बैठ जाओ।" मैंने अपना थैला और दोनो मसके उतारकर फ़र्श पर रख दीं और टोपी थैले पर। फिर दीवार के पास से दूसरी कुर्सी उठा लाया और उसकी मेज की बगल मे बैठ गया।

"इस वर्ष गर्मी का मौसम बडा खराब रहा—" मेजर बोला—"क्या अब तुम पूरी तरह स्वस्थ हो गये हो?"

"जी, हाँ।"

"तुम्हे पुरस्कार मिले या नही?"

"मिल गये। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!"

"जरा दिखाओ तो उन्हे।"

मैंने अपना फौजी कोट उतारा और पुरस्कार मे प्राप्त वे दो फीते उसे दिखाई दे गये।

"क्या तुम्हे पदकों की पेटियाँ नही मिली?"

"जी नहीं, केवल उनसे सम्बन्धित पत्र प्राप्त हुए हैं।"

"तो पेटियाँ भी बाद मे आ जाएँगी। उनके आने मे कुछ समय लगता है।"

"मेरे लिए क्या आदेश है?"

"गाडियाँ सब बाहर हैं। छः गाड़ियाँ उत्तर मे केपोरेट्टो मे है। तुम जानते हो न, केपोरेट्टो कहाँ है?"

"हाँ," मैंने उत्तर दिया। एक घाटी के बीच मे, आकाश की ओर सिर उठाए घण्टाघर वाले एक नन्हे-से श्वेत नगर के रूप मे मुझे उसका स्मरण था। वह एक साफ़ सुथरा और छोटा-सा शहर था और उसके चौक मे एक सुन्दर फव्वारा था।

"काम आजकल वही से हो रहा है। फिर इन दिनों तो बहुत-से सैनिक बीमार हैं। लड़ाई भी तो बन्द हो गई है।"

"दूसरी मोटरें कहाँ है?"

"दो तो पहाड़ो मे है और चार अभी भी बेन्सिज्जा पर है। दूसरी दो उपचार-टुकड़ियाँ तृतीय सैन्यदल के साथ कार्सो मे है।"

"फिर आप मुझसे क्या काम लेना चाहते है?"

"यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो बेन्सिज्जा चले जाओ और वहाँ की गाडियों की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लो। जिनो वहाँ बहुत दिनो से है। तुमने तो वह स्थान अभी तक देखा भी नहीं है। है न?"

"जी हाँ, नही देखा।"

"बड़ी बुरी लडाई हुई थी वहाँ। हमे वहाँ तीन मोटरो से हाथ धोना पड़ा।"

"हाँ, मैंने उसके विषय मे सुना था।"

"रिनाल्डी ने तुम्हे लिखा था न?"

"और रिनाल्डी कहाँ है?"

"यहीं, इसी अस्पताल मे है। गर्मी और पतझड़ के मौसम मे वह दिनरात काम करता रहा है।"

"मै जानता हूँ, यह सच है।"

"यह युद्ध बड़ा बुरा रहा!" मेजर ने कहा—"कितना बुरा था यह युद्ध! तुम सम्भवतः इसका अनुमान भी नहीं लगा सकते। अकसर मै यही सोचता रहा हूँ कि जब तुम घायल हुए थे, तब तुम्हारा भाग्य सचमुच तुम्हारे साथ था।"

"मै ज़ानता हूँ, मैं वास्तव मे भाग्यशाली था।"

"आगामी वर्ष तो इससे भी खराब वर्ष होगा।" मेजर ने कहा—"शत्रु शायद अभी ही आक्रमण कर दे। ऐसा सुना तो है कि वे आक्रमण करने वाले है। किन्तु मै विश्वास नहीं करता। अब बहुत देरी हो चुकी है। तुमने नदी तो देखी होगी?"

"जी हाँ, उसमे काफ़ी पानी चढ आया है।"

"मुझे विश्वास नही है कि अब आक्रमण हो। वर्षा आरम्भ हो गई है। शीघ्र ही बर्फ गिरना भी शुरू हो जाएगा। तुम्हारे देश के क्या समाचार है? क्या युद्ध मे तुम्हारे सिवा अन्य अमरीकी भी शामिल होगे?"

"मेरे देश मे तो एक करोड़ व्यक्तियो की सेना तैयार की जा रही है।"

"उनमे से शायद कुछ सैनिक हमे भी मिल जायें—मुझे तो इसकी आशा है। किन्तु फ्रेन्च लोग शायद उन्हें बीच मे ही रोक लेगे। हमे यहाँ के लिए एक भी सैनिक नहीं मिलेगा। अच्छा, आज रात तुम यही ठहरो। सबेरे छोटी मोटर

लेकर चले जाना और जिनो को वापस भेज देना। मै तुम्हारे साथ कोई ऐसा व्यक्ति भेज दूँगा जिसे रास्ता मालूम हो। जिनो तुम्हे सब-कुछ बता देगा। शत्रु अभी भी थोडी बहुत बमबारी कर रहा है, पर लड़ाई एक तरह से बद हो चुकी है। तुम बेन्सिज्ज़ा देखना चाहोगे न?"

"मुझे बडी प्रसन्नता होगी। मै आपके पास पुनः लौटकर बहुत प्रसन्न हूँ, मेजर साहब!"

वह मुस्कराया—"तुम ऐसा कहकर केवल अपना सौजन्य प्रदर्शित कर रहे हो। मै तो सचमुच इस युद्ध से बडा तंग आ चुका हूँ। यदि मै यहाँ से सिर्फ एक बार अपनी जान छुड़ा सकता, तो यह निश्चित है कि मैं यहाँ वापस नहीं आता।"

"क्यो, इतना बुरा है यह युद्ध?"

"हाँ, इतना बुरा है, बल्कि और भी खराब। जाओ, जाकर हाथ-मुँह धोओ और अपने मित्र रिनाल्डी से मिल लो।"

मै बाहर निकला और सीढियो पर से अपना थैला ऊपर ले आया। रिनाल्डी कमरे मे नहीं था, किन्तु उसका सामान वहीं था। मै बिस्तर पर बैठ गया। मैंने अपनी पट्टियाँ खोली और दाहिने पैर का जूता निकाला। फिर मै बिस्तर पर लेट गया। मै काफी थक गया था। मेरे दाहिने पैर में चोट भी लग गई थी। पर एक पैर का जूता उतारकर बिस्तर पर लेटना मूर्खतापूर्ण दिखाई देता था। अतः मैंने उठकर अपना दूसरा जूता भी खोल कर फर्श पर डाल दिया और पुनः बिस्तर पर बिछे हुए कम्बल पर लेट गया। कमरे की खिडकियाँ बन्द थीं और मुझे बड़ी घुटन-सी प्रतीत हो रही थी। किन्तु मै इतना थका हुआ था कि उठकर खिड़की खोलने की मुझे हिम्मत नही हो रही थी। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही मैंने देखा कि मेरा सारा सामान कमरे के एक कोने मे रखा हुआ था। बाहर अंधेरा बढ़ता जा रहा था। मै चुपचाप बिस्तर पर लेटा कैथरीन के विचारो में खोया था और रिनाल्डी की राह देख रहा था। मैं रात मे सोने के पहले के कुछ क्षणो को छोड़कर शेष समय मे कैथरीन की याद नहीं करना चाहता था, किन्तु इस समय मै थका हुआ था और मेरे पास कोई काम भी नहीं था, अतः मै उसी की याद मे डूबा रहा। कुछ देर बाद ही रिनाल्डी आ गया। वह ठीक वैसा ही दिखाई दे रहा था, जैसा पहले था। हाँ, शायद अब कुछ दुबला हो गया था।

"कहो दोस्त!" वह बोला। मै उठकर बिस्तर पर बैठ गया। वह मेरे पास

आया, बिस्तर पर बैठ गया और मुझसे लिपट गया—"मेरे प्यारे दोस्त!" उसने मेरी पीठ पर मानो अपना स्नेह प्रदर्शित करने के लिए एक करारी धौल जमायी। मैने उसके दोनो हाथ पकड़ लिये।

"दोस्त मेरे!" वह बोला—"जरा अपना घुटना तो दिखाओ।"

"मुझे अपनी ब्रीचेस निकालनी पड़ेगी।"

"तो निकाल लो दोस्त, निकाल भी लो। यहाँ सब मित्र हैं। मै तो देखना चाहता हूँ कि वहाँ के चिकित्सको ने कैसी चिकित्सा की है।" मै खड़ा हुआ, अपनी ब्रीचेस उतारी और घुटने पर बँधे हुए पट्टे खोल डाले। रिनाल्डी फर्श पर बैठ गया और उसने मेरा घुटना आगे-पीछे मोडकर देखा। घाव के निशान पर उसने अपनी उँगली फिराई और अपने अँगूठे तथा उँगलियो से मेरे टखने को धीरे-धीरे ठकठकाया।

"क्या तुम्हारा घुटना बस, इतना ही मुड़ता है?"

"हाँ।"

"तब तुम्हें मोर्चे पर वापस भेजकर उन्होने भयंकर अपराध किया है। उन्हें तुम्हारा घुटना पूरी तरह मुड़ने के बाद तुम्हें भेजना चाहिए था।"

"फिर भी यह पहले की अपेक्षा बहुत ठीक है। पहले तो यह काठ के समान बिलकुल कठोर हो गया था।"

रिनाल्डी ने उसे कुछ और मोड़ा। मै उसके हाथो की ओर देखता रह गया। उसके हाथो मे एक कुशल सर्जन की योग्यता थी। मैने उसके सिर पर दृष्टि दौडाई। उसके केश चमक रहे थे और उसने बडी खूबसूरती से माँग निकाली थी। देखते-देखते उसने मेरा घुटना बहुत ज्यादा मोड़ दिया।

"ओह!" मै चीख उठा।

"तुम्हे इसकी यान्त्रिक-चिकित्सा अभी और करानी चाहिए।" रिनाल्डी ने कहा।

"अब तो पहले से काफ़ी अच्छा है यह।"

"वह तो दिख ही रहा है, दोस्त! यह एक ऐसी वस्तु है, जिसे मैं तुमसे अधिक समझता हूँ।" वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया—"हाँ, तुम्हारे घुटने का उपचार ठीक हुआ है।" उसने घुटने को अच्छी तरह जाँच कर कहा।

"और बाते तो बताओ मुझे।"

"वैसे, कहने लायक तो कुछ भी नही है।" मैने उत्तर दिया—"मेरे दिन बड़ी शान्ति से बीते।"

"तुम तो एक विवाहित व्यक्ति के समान बाते कर रहे हो।" वह बोला—"आखिर तुम्हे हो क्या गया है?"

"कुछ तो नहीं।" मैने कहा—"हॉ, तुम्हें कुछ जरूर हो गया है!"

"यह युद्ध मुझे मारे डाल रहा है—" रिनाल्डी बोला—"इसने मेरे जीवन मे बडी मनहूसियत पैदा कर दी है।" उसने अपने घुटने पर दोनो हाथ मिलाकर रखते हुए कहा।

"ओह!" मैंने एक लम्बी सॉस छोड़ी।

"क्यो, क्या बात है? क्या मै मानवीय-प्रवृत्तियो से भी स्वय को वचित रखूॅ?"

"नहीं। मै देख रहा हूॅ कि तुम्हारे दिन अच्छी तरह बीते हैं। बताओ तो, कैसे बीते भला?"

"पूरे गर्मी और पतझड के मौसम मे मै दिन-रात शल्य-क्रियाएॅ करता रहा हूॅ। दिन-रात काम, काम और काम! हरएक का काम करता हूॅ मै। कठिन शल्य-क्रिया के सब रोगी अस्पताल मे मेरे ऊपर छोड़ दिए जाते हैं। भगवान् की सौगन्ध दोस्त! मै बडा कुशल सर्जन बनता जा रहा हूॅ।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

"मै कभी कोई अन्य बात सोचता भी नहीं हूॅ। सच, भगवान् कसम! मै कभी नहीं सोचता—बस, शल्य-क्रिया करता रहता हूॅ—सिर्फ़ शल्य-क्रिया!"

"फिर तो बड़ा अच्छा है।"

"पर दोस्त, अब तो यह भी खत्म हो चुका है। अब मै शल्य-क्रिया भी नहीं करता। मुझे बडा बुरा लगता है अब—बिलकुल नरक जैसा। बड़ी भयकर लड़ाई है यह। सच—विश्वास करो मुझ पर और अब जब तुम आ गये हो, मुझे उत्साहित करो—प्रेरणा दो मुझे! क्या तुम ग्रामोफोन के रेकार्ड लाये हो?"

"हॉ।"

वे काग़ज मे लिपटे हुए, कार्ड-बोर्ड के एक डिब्बे मे बन्द थे। डिब्बा मेरे थैले मे रखा था और मै इतना थका हुआ था कि उठकर उन्हे थैले से निकालना मुझे बड़ा कठिन लग रहा था।

"क्या तुम्हें अच्छा नही लग रहा है, दोस्त?"

"बड़ा बुरा लग रहा है मुझे तो।"

"यह युद्ध बडा भयानक है!" रिनाल्डी बोला—"चलो, हम दोनो थोडी शराब पीकर ही स्वस्थ हो ले। तब हम बाहर चलेगे और जंगल से कुछ

लकडियॉ यहॉ मॅगवायेंगे! तुम्हारी तबीयत बहल जायेगी और फिर हमे काफ़ी अच्छा मालूम होगा।"

"मुझे पाण्डुरोग हो गया था—" मैं बोला—"मैं शराब नहीं पी सकता।"

"ओह, तुम अपनी कैसी बुरी हालत बनाकर मेरे पास लौटे हो, मेरे दोस्त! इतनी बुरी हालत मे और बढा हुआ यकृत् लेकर आये हो यहॉ! यह युद्ध वस्तुतः बड़ी बुरी वस्तु है। आखिर हमने इसे आरम्भ ही क्यो किया?"

"खैर, हम शराब पियेंगे। मै शराब में बिलकुल खो जाना तो नहीं चाहता, किन्तु तुम्हारे साथ थोडी-सी पी लूँगा।"

रिनाल्डी उठकर कमरे से होता हुआ शराब रखने की तिपाई के पास पहुँचा और वहॉ से दो गिलास और एक बोतल कॉग्नेक लेकर लौट आया।

"यह आस्ट्रियन काग्नेक है।" वह बोला—"सात तारो की छाप वाली। सॉन जेब्राइले के युद्ध मे केवल इन्हीं पर अधिकार कर पाये हम लोग।"

"क्या तुम वहॉ थे?"

"नहीं, मै कहीं नहीं गया। जब तक लडाई चलती रही, यहीं रहकर मै शल्य-चिकित्सा करता रहा। देखो दोस्त, यह तुम्हारा सबेरे दॉत साफ करने के समय काम आनेवाला पुराना गिलास है। मैंने इसे अपने पास रख लिया था, जिससे यह मुझे तुम्हारी याद दिलाता रहे।"

"नहीं, जिससे तुम्हे हमेशा अपने दॉत साफ करने की याद दिलाता रहे।"

"नहीं, मेरे पास अपना भी तो है। मैंने इसे अपने पास इसीलिए रखा था कि मुझे तुम्हारी याद आती रहे। उस समय की याद—जब तुम प्रातःकाल अपने दॉतो से 'विला-रोम्सा' के सुखद क्षणो के स्वाद को घिस-घिस कर मिटाने का प्रयत्न करते थे, कसमें खाते थे, एस्पिरिन (सिरदर्द की गोलियॉ) चबाया करते थे और वेश्याओ को गालियॉ देते थे। हर बार, जब मै इस गिलास को देखता हूँ, मुझे ऐसा लगता है, जैसे कि तुम—तुम अपने दाँत साफ करने का ब्रश लेकर अपनी अंतरात्मा भी साफ़ करने की कोशिश कर रहे हो।" वह मेरे बिस्तर पर आ गया—"एक बार मेरा चुम्बन तो लो और कहो कि तुम नाराज नहीं हो!"

"मै कभी तुम्हारा चुम्बन नहीं ले सकता। तुम तो एक बन्दर हो!"

"मैं जानता हूँ–तुम एक सुन्दर, सुशील आग्ल-सेक्सन युवक हो। मालूम है मुझे। तुम में अपने किये पर पछताने की आदत है—यह मै जानता हूँ। मै उस समय की प्रतीक्षा करूँगा, जब मेरा यह आग्ल सेक्सन दोस्त दॉत घिसने के ब्रश से वेश्यालय के दाग़ मिटाने का प्रयत्न करेगा।"

"गिलास में थोड़ी कॉग्नेक डालो।"

हमने गिलास एक दूसरे से छुलाये और उन्हें खाली कर दिया। रिनाल्डी मेरे ऊपर हँस पड़ा।

"मै तुम्हें खूब शराब पिलाऊँगा, तुम्हारा यकृत् निकाल दूँगा और उसके स्थान पर नया इटालियन यकृत् बैठाकर तुम्हे फिर से आदमी बना दूँगा।"

मैंने और कॉग्नेक के लिए अपना गिलास आगे बढ़ा दिया। बाहर अब अंधेरा छा गया था। कॉग्नेक से भरा गिलास लिये-लिये मैंने उठकर खिड़की खोली। वर्षा बन्द हो गई थी। कमरे की अपेक्षा बाहर अधिक ठंड थी और वृक्षो पर कुहासा छाया था।

"देखो, कॉग्नेक खिड़की से बाहर मत फेंक देना।" रिनाल्डी ने कहा—

"यदि तुम नहीं पी सकते, तो मुझे दे दो उसे।"

"जाओ और जाकर अपने-आपको शराब मे डुबा लो।" म बोला।

रिनाल्डी से पुनः मिलकर मै बड़ा प्रसन्न था। मुझे चिढाते-सताते हुए उसने मेरे साथ पूरे दो वर्ष व्यतीत किये थे और उसका चिढाना मुझे हमेशा अच्छा लगता था। हमने एक दूसरे को भलीभाँति समझ लिया था।

"क्या तुम्हारा विवाह हो गया?" उसने बिस्तर पर से पूछा। मै दीवार के सहारे खिडकी के निकट खडा था।

"अभी तक तो नहीं।"

"किसी से प्रेम करने लगे हो?"

"हाँ।"

"उस अंग्रेज लड़की से तो नहीं?"

"हाँ।"

"दोस्त, वह तुम्हारे प्रति भली तो है?"

'क्यो नही?"

"मेरा मतलब है—वह सचमुच तुम्हारे प्रति भली है न?"

"चुप रहो।"

"चुप रहूँगा। अवश्य चुप रहूँगा। तुम भी देख लेना कि मैं कितने कोमल स्वभाव का व्यक्ति हूँ। क्या वह—"

"रिनी!" मैंने कहा—"दया करके चुप हो जाओ अब। यदि तुम मेरे मित्र बने रहना चाहते हो, तो अब एक शब्द भी मत बोलना।"

"मित्र बनने का प्रश्न ही नही उठता, दोस्त! मै तो तुम्हारा मित्र हूँ ही।"

"तब बिलकुल चुप रहो।"

"अच्छी बात है।"

मैं बिस्तर पर पहुँचा और रिनाल्डी के पास बैठ गया। वह हाथ में अपना गिलास लिये फ़र्श की ओर देख रहा था।

"तुम जानते हो, ऐसी बातें करना कितना बुरा है, रिनी?"

"जानता हूँ। अवश्य जानता हूँ। मेरा समस्त जीवन ही पवित्र विषयो के विरुद्ध संघर्ष करने मे बीता है। हॉ, उन विषयो पर तुमसे मेरी बहस बहुत कम हुई है। मेरी समझ से पवित्र विषयो की, तुम्हारे पास भी तो कमी नही होगी।" वह फ़र्श की ओर देखते हुए बोला।

"तुम्हारे पास नहीं है क्या?"

"नहीं।"

"एक भी विषय ऐसा नही है, जिस पर तुम अपने विचार पवित्र रख सको?"

"नहीं।"

"तब क्या मै तुम्हारी मॉ के विषय मे कोई ऐसी-वैसी बात कह सकता हूँ—तुम्हारी बहन के विषय मे अनर्गल प्रलाप कर सकता हूँ? बोलो, बक सकता हूँ मै?"

"और अपनी बहन के बारे में भी। है न?" रिनाल्डी ने शीघ्रतापूर्वक उत्तर दिया। हम दोनो हँस पड़े।

"तुम बहुत चालाक हो!" मैंने कहा।

"हो सकता है, मै ईर्षालु होऊँ।" रिनाल्डी बोला।

"नही, तुम वैसे नहीं हो।"

"मै उस अर्थ में नहीं कह रहा हूँ। मेरा मतलब कुछ और है। क्या तुम्हारा कोई विवाहित मित्र भी है?"

"हॉ!" मैंने कहा।

"मेरा कोई ऐसा मित्र नही है।" रिनाल्डी बोला—"यदि कोई विवाहित जोडा आपस मे प्रेम करता है, तो मेरी उनसे मित्रता नहीं निभ सकती।"

"क्यो नही?"

"तब वे लोग मुझे पसद नही करते।"

"क्यो नहीं पसद करते?"

"मै उनके लिए सॉप के समान खतरनाक हो उठता हूँ। विवेक-रूपी सर्प!"

"तुम व्यर्थ ही बातो को उलझा रहे हो। विवेक तो था सेब का फल।"

"नहीं, सर्प ही विवेक था।" वह अधिक प्रसन्न दीख रहा था।

"जब तुम इतने गम्भीर विचारो मे नही उलझे रहते हो, तब तुम्हारी हालत अच्छी रहती है!" मैने कहा।

"मै तुम्हे प्यार करता हूँ, दोस्त—" वह बोला—"जब मै स्वय मे खोया हुआ एक महान इटालियन विचारक बन जाता हूँ, तब तुम मेरा ध्यान भग कर देते हो। किन्तु मै बहुत-सी ऐसी बाते जानता हूँ, जो कह नही सकता। मुझे तुमसे अधिक ज्ञान है, मेरे दोस्त!"

"हॉ, मै मानता हूँ।"

"किन्तु तुम्हारा जीवन मुझसे अधिक सुखद होगा। अपने पश्चात्ताप के क्षणो के साथ भी तुम्हारा जीवन मुझसे कही अच्छा बीतेगा।"

"मै इसे नहीं मानता।"

"विश्वास करो, सच कह रहा हूँ मै। मैं तो तभी सुखी रहता हूँ, जब काम में डूबा रहता हूँ। मेरा यह स्वभाव बन गया है।" वह पुनः फर्श की ओर देखने लगा।

"तुम इस पर काबू पा लोगे।"

"नही। मुझे इसके अलावा केवल दो बाते और पसन्द हे। उनमें से एक मेरे कार्य के लिए बहुत बुरी है और जो दूसरी चीज है, उसकी जीवन-अवधि आधे घण्टे या सिर्फ़ पन्द्रह मिनट की होती है—कभी-कभी तो उससे भी कम।"

"और कभी-कभी बहुत ही थोड़े समय की!"

"शायद। मैने बहुत तरक्की की है, मेरे दोस्त! तुम्हे मालूम नही है, किन्तु मेरे जीवन मे केवल वे ही दो चीजे हैं और मेरा काम—बस!"

"और भी चीजे मिल जायेंगी तुम्हे।"

"नही। कोई भी वस्तु हमें मिला नही करती। हमारे पास जो कुछ है, उसे साथ लेकर ही हम पैदा होते हैं। हॉ, उसकी जानकारी हमे नही होती। कोई नयी वस्तु हमें कभी प्राप्त नहीं होती। सब-कुछ अपने पास लेकर ही हमारे जीवन का प्रारम्भ होता है। तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए कि तुम लैटिन नही हो।"

"लैटिन नाम की तो कोई चीज नहीं है। 'लैटिन विचारधारा' कहो। तुम्हें अपनी खामियो पर इतना नाज है!"

रिनाल्डी ने ऊपर देखा और हँस पड़ा।

लेकर वापस आया, तो उसने गिलास में आधी दूर तक शराब भर दी।

"यह तो बहुत अधिक है।" कहते हुए मैंने गिलास उठाया और मेज पर रखी हुई बत्ती के प्रकाश के सामने ले जाकर उसे देखा।

"खाली पेट के लिए अधिक नहीं है। बडी गजब की चीज है यह। सारे पेट को जलाकर खाक कर देती है। तुम्हारे लिए कोई भी चीज इससे अधिक खराब नहीं हो सकती।"

"अच्छी बात है।"

"दिनो-दिन अपने हाथो अपना नाश!" रिनाल्डी बोला—"यह पेट को बिलकुल खराब कर देती है। इसे पीकर हाथ कॉपने लगते हैं—एक सर्जन के लिए बिलकुल उपयुक्त है यह।"

"क्या तुम मेरे लिए भी इसकी सिफारिश करते हो?"

"हृदय से। मै और कोई शराब नहीं पीता। पी लो इसे दोस्त! पी भी लो और फिर अपने बीमार होने की प्रतीक्षा करो।"

मैंने गिलास आधा खाली कर दिया। तभी मुझे भोजन के बडे कमरे मे अर्दली के चिल्लाने की आवाज सुनायी दी—"शोरबा! शोरबा तैयार है!"

मेजर अन्दर आया। उसने सिर हिलाकर हमे नमस्ते की और बैठ गया। मेज के निकट उस तरह बैठने पर वह बहुत छोटा दिखाई दे रहा था।

"क्या हम सब इतने ही लोग है?" उसने पूछा। अर्दली ने शोरबे का बर्तन नीचे रख दिया और चम्मच से एक रकाबी मे शोरबा उड़ेला।

"हॉ, हम सभी यहॉ मौजूद है—" रिनाल्डी बोला—"बस, पादरी को छोड़कर। यदि उसे मालूम हो जाता कि फेडेरिको यहॉ आ गया है, तो वह भी आ पहुॅचता।"

"वह है कहॉ?" मैंने पूछा।

"३०७ नम्बर के अस्पताल मे।" मेजर ने कहा। वह शोरबा पीने मे व्यस्त था। बीच-बीच मे वह अपनी ऊपर उठी हुई भूरी मूॅछे पोछता और अपने मुॅह को साफ करता जाता था।

"मेरा खयाल है कि वह आ जाएगा। मैंने कुछ लोगो के हाथ उसके पास तुम्हारे यहॉ आने का समाचार भिजवा दिया है।"

"भोजनालय मे पहले के शोरगुल के स्थान पर यह चुप्पी मुझे खल रही है।" मैंने कहा।

"हॉ, बिलकुल सुनसान-सा हो गया है आजकल।" मेजर बोला।

"कहो तो, मै शोर मचाऊँ।" रिनाल्डी ने कहा।

"थोड़ी शराब पिओ, एन्रिको!" मेजर ने कहा। उसने मेरा गिलास भर दिया। इतने मे मैकरोनी आ गयी और हम सब उसे खाने मे जुट गये। हमारा खाना खत्म हो ही रहा था कि पादरी आ गया। वह हमेशा की तरह ही था—ठिगना, भूरा और गठीले बदनवाला। मै उसे देखकर खड़ा हो गया। हम दोनो ने हाथ मिलाये और उसने मेरे कधे पर अपना हाथ रख दिया।

"ज्योंही मैने सुना कि तुम लौट आये हो, त्योही चल पडा।" वह बोला।

"बैठ जाओ—" मेजर ने कहा—"तुम्हे कुछ देर हो गई।"

"नमस्ते!" रिनाल्डी ने अंग्रेजी में कहा। अभिवादन का यह तरीका यहाँ के लोगो ने पादरी का मजाक उडाने वाले उस कैप्टन से सीख लिया था, जो थोड़ी-थोडी अंग्रेजी जानता था। "नमस्ते, रिनाल्डी।" पादरी ने उत्तर दिया। अर्दली ने उसके सामने शोरबा लाकर रख दिया, किन्तु पादरी ने पहले मैकरोनी खाने की इच्छा व्यक्त की।

"कैसे हो तुम अब?" उसने मुझसे पूछा।

"बिलकुल ठीक!" मैंने उत्तर दिया—"यहाँ का क्या हाल है?"

"थोडी शराब लो, पादरी!" रिनाल्डी बोला—"अपने पेट को ठीक रखने के लिए। सन्त पॉल का कथन है यह, जानते हो न?"

"हाँ, जानता हूँ।" पादरी नम्रतापूर्वक बोला और रिनाल्डी ने उसका गिलास भर दिया।

"वह सन्त पॉल!" रिनाल्डी ने उसे चिढ़ाना आरम्भ किया—"वही तो सब झगड़ो का जन्मदाता है!" पादरी मेरी ओर देख कर मुसकराया। मैंने देखा कि चिढ़ाने का अब उसपर कोई प्रभाव नही पडता था।

"वह सन्त पॉल—" रिनाल्डी बोलता रहा—"वह पक्का घुमक्कड़ और पियक्कड था और जब उसका नशा उतर जाता था, तो वह इसे बेकार बताया करता था। जब उसकी मजे उड़ाने की उम्र खत्म हो गयी, तो उसने हम लोगों के लिए नियम बनाये—उनके लिए, जो अभी भी युवा हैं—जिनके खून मे अभी भी गरमी है। क्यो सच है न, फेडेरिको?"

मेजर मुसकराया। अब हम धीमी आँच मे पकाया हुआ मास खा रहे थे।

"शाम हो जाने के बाद मै कभी किसी सन्त के विषय मे बाते नहीं करता।" मैंने कहा। पादरी ने मास की रकाबी से अपना सिर ऊपर उठाया और मेरी ओर देखकर मुसकराया।

"देखो इसे, यह भी पादरी से मिल गया है।" रिनाल्डी ने कहा—"अरे भाई, पादरी को चिढाने वाले वे पुराने और अनुभवी व्यक्ति सब कहाँ चले गये? केवेलकान्टी कहाँ है? सॅसारे कहाँ है? और ब्रन्डी? क्या इस पादरी का मुझे अकेले ही मजाक उड़ाना पडेगा?"

"पादरी अच्छा आदमी है।" मेजर ने कहा।

"आदमी तो अच्छा है—" रिनाल्डी बोला—"पर है तो आखिर पादरी ही। मै इस भोजनालय मे वही आनन्दमय वातावरण फिर लाने का प्रयत्न कर रहा हूँ, जो पहले था। फेडेरिको को सुखी बनाना चाहता हूँ मैं। किन्तु—यह पादरी भी—जहन्नुम मे जाओ तुम!"

मेजर ने उसकी ओर देखा और समझ गया कि वह नशे मे है। उसका दुर्बल मुख सफेद पड गया था। उसके भाल के श्वेतपन के विरुद्ध उसकी केश-पक्ति बड़ी काली दिखाई दे रही थी।

"कोई बात नहीं, रिनाल्डी!" पादरीने कहा—"कोई बात नही।"

"जहन्नुम में जाओ तुम।" रिनाल्डी चिल्लाया—"और जहन्नुम मे जाए यह सब-कुछ।" वह कुर्सी से अपनी पीठ टिकाकर बैठ गया।

"रिनाल्डी बड़ा कठिन परिश्रम करता रहा है और अब वह थक चुका है।" मेजर ने मुझसे कहा। वह मास खा चुका था और अब रकाबी में बचे हुए शोरबे को रोटी के टुकडे से पोछ रहा था।

"मै इसकी रत्ती-भर भी परवाह नहीं करता।" रिनाल्डी मानो मेज से बातें करने लगा—"यह सब—कुछ जहन्नुम मे जाये।" उसने बड़ी उद्दण्डतापूर्वक मेज़ के चारो ओर दृष्टि दौडाई। उसकी ऑखे निस्तेज थी और मुँह पीला पड गया था।

"ठीक है।" मै बोला—"जहन्नुम मे जाए यह सब-कुछ!"

"नही—नहीं—" रिनाल्डी बोला—"तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम नहीं कर सकते ऐसा। मै कहता हूँ, ऐसा कर ही नहीं सकते तुम। तुम नीरस हो—बिलकुल खोखले! इसके सिवा और कुछ है ही नहीं। मै कहता हूँ, और कुछ है ही नही—रत्ती-भर भी नहीं! मै जानता हूँ मेरा दिमाग कब काम करना बन्द कर देता है।"

पादरी ने सिर हिलाकर सकेत किया और अर्दली आकर पके हुए मास की रकाबी उठाकर ले गया।

"तुम मास क्यो खा रहे हो?" रिनाल्डी ने पादरी की ओर मुडकर कहा—"क्या तुम नहीं जानते कि आज शुक्रवार है?"

"गुरुवार है आज तो।" पादरी ने उत्तर दिया।

"बिलकुल झूठ, आज शुक्रवार है। तुम हमारे प्रभु यीशु का मास खा रहे हो। भगवान् का मास है यह। मै अच्छी तरह जानता हूँ। यह मृत आस्ट्रियन का मास है। वही तो खा रहे हो तुम।"

"यह सफेद मास अफसरो का है।" पुराने मजाक को पूरा करते हुए मै बोला।

रिनाल्डी हँस पड़ा। उसने अपना गिलास पुनः भर लिया।

"मेरी बातो का बुरा मत मानना—" वह बोला—"मै कुछ पागल-सा हो गया हूँ।"

"तुम्हे छुट्टी ले लेनी चाहिए।" पादरी ने कहा।

मेजर ने उसकी ओर देखते हुए अपना सिर हिलाया। रिनाल्डी ने पादरी की ओर देखा।

"तुम्हारे विचार से मुझे छुट्टी पर चले जाना चाहिए?"

मेजर ने पादरी की ओर देखते हुए अपना सिर हिलाया। रिनाल्डी पादरी को धेख रहा था।

"जैसी तुम्हारी इच्छा हो—" पादरी ने उत्तर दिया—"यदि तुम नहीं चाहते हो, तो मत लो छुट्टी।"

"तुम्हारा नाश हो!" रिनाल्डी बोला—"तुम सब लोग मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हो। मै जानता हूँ, प्रति रात्रि लोग मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। मैं भी उनसे झगड बैठता हूँ। यदि मुझे उपदश रोग हो गया है, तो उससे क्या? प्रत्येक व्यक्ति को है यह। सारी दुनिया के साथ यही बात है।" एक वक्ता की भाँति वह बोला—"आरम्भ होता है यह एक नन्हीं-सी फुन्सी से और तब कन्धों के बीच मे बड़ी चकती दिखाई देती है। फिर—फिर कुछ नहीं दिखाई देता—कुछ भी नही। हम बस, आँखे मूँदकर पारे मे विश्वास करने लगते हैं।"

"अथवा सालव्हरसान (एक औषधि) में।" मेजर शातिपूर्वक बीच में ही बोल उठा।

"वह भी तो पारे से ही निर्म्मित पदार्थ है।"—रिनाल्डी ने कहा। वह बड़ा उत्तेजित दीख रहा था—"मै ऐसी दो-दो उपयोगी औषधियो के नाम जानता हूँ। सौम्य और वयोवृद्ध पादरी! तुम्हे वह औषधि नही मिलेगी। हाँ, इस नन्हें-मुन्ने को मिल जायेगी। यह तो एक औद्योगिक संयोग है—बिलकुल सीधा-सादा औद्योगिक सयोग!"

अर्दली मिठाइयाँ और कॉफी ले आया। मिठाई, सूखी चटनी और एक प्रकार की काली-सी रोटी से बनी थी। कमरे में रखी बत्ती से धुआँ निकल रहा था—काला धुआँ, जो बत्ती के काँच में ऊपर को इकट्ठा होता जा रहा था।

"यह बत्ती उठा लो और दो मोमबत्तियाँ ले आओ।" मेजर ने आदेश दिया। अर्दली रकाबियों में दो मोमबत्तियाँ जलाकर ले आया और बत्ती बुझाकर उसे वहाँ से ले गया। रिनाल्डी अब शान्त हो चुका था। अब वह काफ़ी स्वस्थ प्रतीत हो रहा था। हम लोग बाते करते रहे और कॉफी पीने के बाद बरामदे मे चले आये।

"तुम पादरी से बाते करना चाहते हो न। मुझे जरा शहर जाना है।" रिनाल्डी ने कहा—"नमस्ते।"

"नमस्ते, रिनाल्डो!" पादरी ने उत्तर दिया।

"मैं तुमसे फिर मिलूँगा, फ्रेडी।" रिनाल्डी ने कहा।

"अच्छा—" मै बोला—"जल्दी लौटना।" उसने मुँह बनाते हुए मुझे चिढ़ाया और दरवाजे से बाहर निकल कर चला गया।

मेजर हम सबके साथ खड़ा था। "उसे बहुत काम करना पडता है, अतः वह काफी थक गया है।" मेजर ने कहा—"उसे यह शका भी हो गई है कि वह उपदंश रोग से पीड़ित है। मै विश्वास तो नहीं करता, किन्तु सम्भव है, उसे यह रोग हो भी। अपना उपचार वह स्वय ही कर रहा है। अच्छा, नमस्ते। तुम सबेरे सूर्योदय के पहले ही यहाँ से चल दोगे न, एन्रिको?"

"हाँ।"

"तब विदा—" उसने कहा—"भाग्य तुम्हारा साथ दे! पेडुज्जी तुम्हे सबेरे जगा देगा। वह भी तुम्हारे साथ जायेगा।"

"विदा, मेजर साहब!"

"विदा! लोग आस्ट्रियनो के आक्रमण की चर्चा करते हैं, किन्तु मुझे उस पर विश्वास नहीं है। मुझे इसकी तनिक भी आशा नहीं है। और यदि आक्रमण हुआ भी, तो यहाँ नहीं होगा। जिनो, तुम्हे सब कुछ बतलाएगा। हाँ, अब टेलिफोन भी अच्छी तरह काम करता है, समझे!"

"मैं आपको नियमित रूप से टेलिफोन करता रहूँगा।"

"हाँ, इतनी कृपा करना। अच्छा, नमस्ते! रिनाल्डी का इतना ब्राण्डी पीना किसी प्रकार कम कराओ।"

"मैं प्रयत्न करूँगा।"

"नमस्ते, पादरी महोदय!"
"नमस्ते, मेजर साहब!"
वह धीरे-धीरे अपने आफिस की ओर चला गया।

. २६ .

द्वार पर पहुँचकर मैंने बाहर की ओर देखा। वर्षा तो थम गई थी; किन्तु कुहासा अभी तक छाया हुआ था।

"ऊपर चलें?" मैंने पादरी से पूछा।

"मै थोडी देर ही यहॉ रुक सकता हूँ।"

"तब हम ऊपर ही चलें।"

सीढ़ियॉ चढकर हम कमरे में पहुँचे। मै रिनाल्डी के बिस्तर पर लेट गया। अर्दली ने मेरे लिए खाट बिछा दी थी। पादरी उस पर बैठ गया। कमरे मे अंधेरा था।

"अच्छा," वह बोला—"अब बताओ कि सचमुच तुम्हारी हालत कैसी है?"

"मै बिलकुल अच्छा हूँ। हॉ, थक अवश्य गया हूँ।"

"थक तो मै भी गया हूँ, किन्तु मेरी थकावट का कोई कारण नजर नही आता।"

"युद्ध की क्या हालत है?"

"मेरे विचार से शीघ्र ही उसका अन्त हो जाएगा। मुझे ऐसा ही प्रतीत होता है। क्यो? यह तो मै स्वय भी नहीं जानता।"

"किन्तु आपकी इस धारणा का आधार क्या है?"

"तुम जानते हो, तुम्हारा मेजर कैसा है? भला व्यक्ति है? अधिकाश व्यक्ति आजकल ऐसे ही बन गये हैं।"

"मुझे स्वयं भी ऐसा ही लगता है।" मै बोला।

"गरमी का यह मौसम बड़ा भयानक रहा है।" पादरी ने कहा। जब मै यहॉ से गया था, उस समय उसकी जो स्थिति थी, उस की अपेक्षा आज वह अपने सम्बन्ध मे अधिक दृढ़ प्रतीत होता था—"यह सब कैसे हुआ है, इस पर तुम शायद विश्वास भी न करो। तुम तो केवल इतना ही जानते हो कि तुम युद्ध

में गए थे और युद्ध क्या होता है। गरमी के इस मौसम में बहुत-से लोग अच्छी तरह समझ गये है कि युद्ध सचमुच क्या होता है। जिन अफ़सरों के विषय मे मै यह सोचा करता था कि वे युद्ध की भयानकता को कभी नहीं समझ सकेगे, वे भी अब जान गये हैं कि युद्ध कितना भयानक होता है।"

"फिर क्या होगा अब?" मैने कम्बल पर हाथ मारते हुए कहा।

"यह तो मै नहीं जानता, किन्तु मेरा अनुमान है कि युद्ध बहुत दिनो तक चलेगा नहीं।"

"तब क्या होगा?"

"होगा क्या, लड़ाई बन्द हो जायेगी।"

"कौन बन्द करेगा लडाई?"

"दोनो पक्ष।"

"ईश्वर करे, ऐसा ही हो।" मै बोला।

"तुम्हें विश्वास नहीं है?"

"दोनो पक्ष लड़ना बन्द कर देंगे, इस पर मुझे विश्वास नहीं होता।"

"वास्तव मे मै भी ऐसा नही सोचता। इतनी अधिक आशा की भी नहीं जा सकती। किन्तु जब मै लोगों के हृदय-परिवर्तन पर ध्यान देता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि यह युद्ध अधिक दिनो तक नही चल सकता।"

"ग्रीष्म ऋतु के इस युद्ध मे जीत किसकी हुई थी?"

"किसी की भी नही।"

"नहीं, जीत आस्ट्रियनो की हुई।" मैंने कहा—"उन्होने इटालियन सेनाओ को सॉन जिब्राइले पर कब्जा नही करने दिया और इसका मतलब है उनकी जीत। वे युद्ध बन्द नहीं करेगे।"

"युद्ध के सम्बन्ध मे जैसा हम अनुभव करते हैं, वैसा ही यदि वे भी अनुभव करने लगे, तो निश्चय ही वे लड़ना बन्द कर देगे। उनके ऊपर भी तो वही बीती है, जो हमारे ऊपर बीती है।"

"किन्तु जब किसी की जीत होती रहती है, तो वह लड़ना कभी बन्द नहीं करता।"

"तुम तो मुझे निरुत्साहित कर रहे हो।"

"मै वही तो कह सकता हूँ, जो मै सोचता हूँ।"

"तब क्या तुम सोचते हो कि यह युद्ध अनिश्चित काल तक चलता ही रहेगा? क्या यह कभी समाप्त ही नहीं होगा?"

"कह नहीं सकता। मै तो केवल इतना ही जानता हूँ कि जब आस्ट्रियन लोग एक बार जीत चुके हैं, तो वे युद्ध बन्द नहीं करेंगे। 'केवल हारने पर ही, हम क्रिश्चियन (धर्मभीरु) बनते है'।"

"बोसनियन्स को छोड़कर, सभी आस्ट्रियन भी तो क्रिश्चियन हैं।"

"मै शाब्दिक अर्थ मे 'क्रिश्चियन' का प्रयोग नही कर रहा हूँ। मेरा मतलब है...जैसे आदम को ही ले लो।"

वह चुप रहा।

"हम सब अभी इसीलिए विनम्र बन रहे हैं कि हम बुरी तरह हार चुके हैं। यदि सन्त पीटर ने आदम को स्वर्ग के बगीचे मे ही बचा लिया होता, तो वे इस दुनिया मे कैसे आते?"

"उससे कोई फर्क नही पडता। वे आते ही!"

"मै ऐसा नहीं समझता।" मैने कहा।

"तुम तो मुझे निराशावादी बना रहे हो।" वह बोला—"मुझे विश्वास है कुछ-न-कुछ अवश्य होगा और मै यही प्रार्थना भी करता हूँ। मैने इसका बहुत निकट से अनुभव किया है। यह मेरी अंतरात्मा की आवाज है।"

"कुछ-न-कुछ अवश्य हो सकता है—" मै बोला—"किन्तु वह हमारे विरुद्ध ही होगा—हम पर ही बीतेगी। यदि शत्रु-पक्ष भी वैसा ही अनुभव करने लगे, जैसा हम कर रहे हैं, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। किन्तु उन्होंने हमे पराजित किया है। वे विजेता हैं—निश्चय ही वे कुछ और सोचते होगे।"

"बहुत-से सैनिक भी हमेशा इसी प्रकार सोचते हैं। उन्होंने युद्ध की भीषणता का नग्न रूप देखा है। और उन्होने ऐसा केवल इसलिए नहीं सोचा कि उन्हें पराजित होना पड़ा था।"

"पराजित तो वे आरम्भ मे ही हो गये थे। जब उन्हें अपने खेतो से बलपूर्वक ले जाकर सैनिक बनाया गया था, तभी वे वस्तुतः पराजित हो चुके थे। एक किसान-सैनिक को, आरम्भ मे ही पराजित होना पड़ता है; इसीलिए तो वह औरो से अधिक बुद्धिमान होता है। उसके हाथ मे अधिकार दो—शक्ति दो और तब देखो, वह कितना बुद्धिमान है।"

उसने कुछ न कहा। वह कुछ सोच रहा था।

"अब मै स्वयं ही हतोत्साहित हो चुका हूँ—" मैने कहा—"इसीलिए मैं इन बातों पर कभी विचार नहीं करता। मै कभी सोचता ही नहीं हूँ। फिर भी जब मैं बोलना आरम्भ करता हूँ, तो ऐसी बाते कह जाता हूँ, जो बिना किसी

पूर्व-विचार के मेरे मस्तिष्क में भरी रहती हैं।"

"मैने तो किसी घटना की आशा की थी।"

"पराजय की?"

"नहीं, इससे भी अधिक कुछ और की।"

"इससे अधिक और कुछ नहीं है—है, सिर्फ़ विजय! और विजय, पराजय से भी बुरी हो सकती है।"

"मैने बहुत समय तक विजय की आशा की थी।"

"मैने भी।"

"और अब मै नहीं जानता, क्या होगा।"

"दो मे से एक बात तो होगी ही। विजय या पराजय!"

"और मैं विजय मैं विश्वास नहीं करता अब।"

"विश्वास तो मैं भी नहीं करता। किन्तु पराजय में भी मेरा विश्वास नहीं है। यद्यपि पराजय, विजय से अच्छी हो सकती है।"

"तब तुम किसमे विश्वास करते हो?"

"अभी तो चुपचाप सो जाने मे—" मैने उत्तर दिया। सुनकर वह खड़ा हो गया।

"मुझे दुःख है कि मैने तुम्हारा इतना समय लिया। किन्तु मुझे तुम्हारे साथ बाते करने मे आनद आता है।"

"यदि हम पुनः इस विषय मे चर्चा करे, तो वह काफी सुदर रहेगा। सोने के सम्बन्ध मे मैने जो-कुछ अभी कहा, उसका कोई खास महत्त्व नहीं था।"

हम दोनो ने खड़े होकर अंधेरे मे ही हाथ मिलाये।

"मै आजकल ३०७ नम्बर मे सोता हूँ।" वह बोला।

"कल तड़के ही मै पड़ाव पर जा रहा हूँ।"

"जब तुम लौट कर आओगे, तब मै तुमसे मिलूँगा।"

"फिर दोनो घूमने जायेगे और घंटो बाते करेंगे।" मै उसे दरवाजे तक पहुँचाने गया।

"नीचे तक चलने की ज़रूरत नहीं।" उसने कहा—"बड़ी प्रसन्नता की बात है कि तुम लौट आये हो। यद्यपि तुम्हारे लिए यह अधिक प्रसन्नता की बात नहीं है।" उसने मेरे कंधे पर अपना हाथ रख दिया।

"नहीं, मुझे यह कोई इतना बुरा नही लगता।" मै बोला—"अच्छा, नमस्ते।"

"नमस्ते। अनेक शुभकामनाएँ।"

"मेरी भी शुभकामनाएँ!" मैने कहा। मुझे बुरी तरह नीद सता रही थी।

• २७ •

जब रिनाल्डी कमरे में आया, तो मेरी नीद खुल गई। किन्तु वह जब कुछ नहीं बोला, तो मै फिर सो गया। सबेरे, अंधेरे मे ही, मैने अपनी वर्दी पहनी और चल पडा। जब मैने कमरा छोड़ा, तब भी रिनाल्डी सो रहा था।

बेन्सिज्जा मैने पहले कभी नहीं देखा था। अतः नदी के किनारे-किनारे—जहॉ मै घायल हुआ था—उस ढालू सडक पर, ऊपर की ओर जाना, मुझे बडा नया लगा। जहॉ हमे जाना था, वहॉ आस्ट्रियन लोग रह चुके थे। सड़क बिलकुल नयी और ढलुवी थी। बहुत-सी मोटरे उस पर आ-जा रही थी। कुछ आगे जाकर राह चौरस हो गयी थी। कुहासे में लिपटे घने वन और ढालू पहाड़ियॉ मुझे दिखाई दी। ऐसे वन भी थे, जिन पर बडी जल्दी अधिकार कर लिया गया था और जो नष्ट-भ्रष्ट होने से बच गये थे। उनसे आगे, जहॉ रास्ता पहाड़ियों द्वारा सुरक्षित नहीं था, चटाइयॉ लगाकर उसे दोनों ओर से तथा ऊपर से ढॅक दिया गया था। एक ध्वस्तप्राय ग्राम मे जाकर सडक समाप्त हो गयी थी। पर सैन्यदल उससे भी आगे, ऊपर की ओर थे। आसपास बहुत-से तोपखाने थे। उस गॉव के अधिकाश घर बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो चुके थे; फिर भी वहॉ की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। प्रत्येक स्थान पर मार्गदर्शक सकेत-पट लगा दिये गये थे।

जिनो हमे वहॉ मिल गया। उसने हमें पीने के लिए कुछ कॉफी लाकर दी। बाद में, उसके साथ जाकर मैने कई व्यक्तियो से मुलाकात की और पड़ावो का निरीक्षण किया। जिनो ने बताया कि बेन्सिज्जा से आगे, नीचे की ओर, रॅव्हने में कुछ ब्रिटिश एम्बुलेन्स कार्य कर रही हैं। उसने उन अंग्रेज़ों की बड़ी प्रशंसा की। "इस क्षेत्र में अभी भी छिटपुट गोलाबारी होती रहती है"—उसने बताया—"किन्तु उससे अधिक व्यक्ति घायल नहीं होते। हॉ, वर्षा आरम्भ हो जाने के कारण अब बहुत-से लोग बीमार अवश्य हो सकते हैं।"

युद्ध-विषयक अन्य जानकारी देते हुए जिनो बोला—"आस्ट्रियनो की ओर से आक्रमण होने की सम्भावना है; किन्तु मै इस पर विश्वास नहीं करता। आक्रमण की बात तो हमारी ओर से भी है, किन्तु अभी तक यहॉ कोई नया सैन्यदल नहीं बुलाया गया है, अतः इस बात मे भी मुझे कोई तथ्य नज़र नहीं आता।"

फिर उसने खाने के सम्बन्ध में बताया—"खाने-पीने की चीजो की बड़ी कमी है यहॉ। गोरीजिया पहुँचकर जब मैं जी-भर कर खाऊँगा, तो सचमुच बड़ा मजा आयेगा। आपने रात को क्या खाया था?" उसने मुझसे पूछा। मैंने उसे अपने रात के खाने के बारे में बताया। सुनकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ—"वाह, तब तो बड़ा आनन्द आया होगा!" खाने मे डोल्चे (मीठी रोटी) का नाम सुन-कर जिनो विशेष प्रभावित हुआ। डोल्चे का मैंने कोई विशद वर्णन नहीं किया था—केवल इतना ही कहा था कि मैंने रात डोल्चे खाया था, किन्तु उसके मन मे सम्भवतः यह धारणा घर कर गयी कि डोल्चे मीठी रोटी न होकर, बड़े परिश्रम से बनाया हुआ कोई अत्यंत स्वादिष्ट पदार्थ है।

"क्या आप जानते हैं कि मुझे कहॉ भेजा जायेगा?" उसने पूछा।

"नहीं, मुझे नहीं मालूम।" मैंने नकारात्मक उत्तर देते हुए कहा—"मुझे तो केवल इतना ही मालूम है कि केपोरेट्टो मे भी अपनी कुछ एम्बुलेन्स हैं!"

"तब तो शायद मुझे वहीं जाना होगा।" वह बोला।

केपोरेट्टो एक छोटा-सा स्थान था। जिनो को उसके एक ओर, दूर खड़ा, आकाश को छूने का प्रयास करता हुआ पहाड बड़ा भला लगता था। जिनो बड़े अच्छे स्वभाव का व्यक्ति था और वहॉ सब लोग उसे चाहते थे। उसने मुझे बताया कि सॉन जेब्राइले में हम वस्तुतः बुरी तरह पराजित हुए थे। लोम से आगे की ओर किए गए आक्रमण का भी बड़ा भयानक अन्त हुआ था।

"हमारी टुकड़ियो से आगे, हम से थोड़ी ऊँचाई पर—टर्नोवा पर्वत-पृष्ठ से सटे हुए वनो मे—आस्ट्रियनो ने भारी तोपे रख छोडी हैं।" उसने मुझे बताया—"वहॉ से वे रात मे बुरी तरह रास्तो पर बमबारी किया करते हैं।" उसने यह भी बताया कि वहॉ जलसेना का भी एक तोपखाना है, जिससे सकट और भी बढ़ गया है। "आप उन्हे उनकी चौरस नलियो के कारण आसानी से पहचान सकेगे।" वह बोला—"पहले उन तोपो के चलने का तीव्र स्वर सुनायी देता है और क्षणभर बाद ही एक कर्कश ध्वनि आरम्भ हो जाती है। सामान्यतः एक-के-बाद-एक करके एक ही बार में दो तोपे दागी जाती हैं। उनके बमों का विस्फोट होने पर भारी संख्या मे उनके टुकड़े इधर-उधर छितरा जाते हैं।" उसने मुझे बम का एक टुकड़ा दिखाया। वह धातु का एक फुट लम्बा, चिकना और टेढ़ा-मेढ़ा कटा हुआ टुकड़ा था और रागा, ताबा तथा सुरमा के मिश्रण से बना प्रतीत होता था।

"मेरी समझ से ये गोले अधिक खतरनाक नहीं हैं।" जिनो ने कहा—

किन्तु वे मुझे बहुत भयभीत कर देते हैं। ऐसी आवाज़ करते हैं, मानो सीधे सिर पर ही गिरकर फूटेंगे। पहले एक गडगड़ाहट होती है, फिर एक कर्कश स्वर सुनायी देता है और तब भयंकर विस्फोट होता है। यदि ये गोले मनुष्य को केवल डराकर मारने के लिए बनाए गये है, तो फिर उनसे घायल न होने से भी क्या!"

जिनो ने मुझे बताया कि हमारे विरुद्ध, शत्रु की सेना में, इस समय क्रोट्स (क्रोशिया की एक जाति) और कुछ मोद्यार (हगेरी की एक जाति) सैनिक भी थे। हमारे सैनिक अभी भी आक्रमण करने की अवस्था मे थे; किन्तु यदि आस्ट्रियनो ने आक्रमण किया, तो घेरा बॉधने के लिए न तो हमारे पास नाम-मात्र को तार ही था और न पीछे हटने के लिये स्थान। पठार से आगे निकले हुए कुछ कम ऊँचे पहाड़ो की कतार चली आयी थी, उनमें आक्रमण के समय बचाव के लिए कई उपयुक्त स्थान थे, पर उन्हे बचाव के मोर्चों का रूप देने के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं की गयी थी।

"खैर, बेन्सिज्जा के विषय मे आपने क्या सोच रखा था?" उसने पूछा।

"मेरा अनुमान था कि बेन्सिज्जा पठार के समान पर्याप्त चौरस स्थान होगा। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि वह इस प्रकार कटा-फटा इलाका होगा।" मैंने उत्तर दिया।

"है तो ऊँचा पठार ही, किन्तु काफी कटा-फटा और ऊबड़-खाबड़।"

हम लोग फिर उस तहखाने मे लौट आये, जहाँ जिनो रहता था। मैंने कहा कि मेरे विचार से तो छोटे छोटे पर्वतों की एक लम्बी कतार के बजाय एक ऐसे पर्वत-पृष्ठ को, जो शीर्ष पर चौरस हो और जिसके बीच मे कुछ गहराई हो, अपने अधिकार मे रखना अधिक सरल तथा उपयोगी होगा। "मैदान की अपेक्षा पर्वत पर आक्रमण करना कुछ अधिक कठिन तो होगा नहीं।" मैने कहा।

"यह तो उस पर्वत पर निर्भर है।" उसने उत्तर दिया—"सॉन जेब्राइले को ही देखिए।"

"ठीक है।" मैंने कहा—"सॉन जेब्राइले मे तो हमारे सैनिकों को असली कठिनाई का सामना वस्तुतः पहाड़ की चोटी पर करना पड़ा था, जहाँ चौरस स्थान था। चोटी तक तो वे बड़ी सरलता से पहुँच गये थे।"

"ना, उतनी सरलता से नही।" वह बोला।

"हाँ, उतनी सरलता से नहीं।" मैने कहा—" किन्तु उस पहाड़ की स्थिति ही भिन्न है। अन्य पहाड़ों की तुलना मे उसमें एक विशेषता है। उसे, वास्तव

में, एक पहाड़ की अपेक्षा सुदृढ किला कहना अधिक उपयुक्त होगा। आस्ट्रियन लोग वर्षों से उसकी क़िलाबन्दी कर रहे थे।" किलाबदी से मेरा अर्थ था कि युद्ध-काल मे आस्ट्रियन सेना की ओर से वहॉ हमेशा कुछ न-कुछ होता रहता था।

सुरक्षा पक्ति के रूप मे पर्वत-श्रेणियो पर अधिकार बनाए रखना कोई अर्थ नहीं रखता था; क्योकि हमारे ही विरुद्ध बड़ी सरलता से उनका उपयोग किया जा सकता था। युद्ध की दृष्टि से वही स्थान उपयुक्त होता है, जहॉ इधर-उधर हिलने-डुलने की गुजाइश हो और एक पहाड इसके लिए अधिक उपयुक्त नही होता। इतना ही नहीं, पहाड पर से सैन्यदल हमेशा नीचे की ओर आवश्यकता से अधिक गोलियॉ चलाया करते हैं। इसके सिवा पहाड़ पर यदि अगल-बगल की सैन्य-टुकड़ियो को घुमाने की जरूरत पड़ गयी, तो दल का सबसे अच्छा सैनिक पहाड के सबसे ऊँचे शिखर पर ही रह जायेगा। "इसी से पहाड़ो मे लड़ाई करने मे मैं विश्वास नही करता।" मैंने जिनो से कहा—"मैंने इस सम्बन्ध मे काफी सोचा है—एक पक्ष ने एक पहाड़ पर क़ब्ज़ा कर लिया और दूसरे पक्ष ने दूसरे पहाड़ पर, किन्तु जब 'सचमुच' युद्ध आरम्भ होता है, तो दोनो दलों को पहाड़ छोड़कर नीचे ही उतरना पड़ता है।"

"यदि कोई देश पहाड़ो की गोद मे ही बसा हो, तो वह क्या करेगा?" उसने पूछा।

"मैंने इस समस्या का हल अभी ढूँढा नहीं है।" मैंने कहा। हम दोनो ही हॅस पड़े। "किन्तु—" मैंने कहा—"पहले की लड़ाइयो मे आस्ट्रियन लोग हमेशा वेरोना के आसपास के चौरस मैदान मे ही बुरी तरह पराजित होते थे। शत्रु उन्हें पर्वतो से नीचे, मैदान मे, उतरने देता था और वहीं उन्हे पराजित करता था।"

"ठीक है—" जिनो बोला—"किन्तु उन्हे इस तरह पराजित करनेवाले फ्रासीसी लोग थे। जब आप किसी दूसरे के देश मे जाकर लड़ते हैं, तो आप अपनी सैन्य-समस्याओ को आसानी से हल कर सकते हैं। सच तो यह है कि इस सम्बन्ध मे आपके सामने कोई समस्या ही नहीं उठती, क्योकि आप पूरी तैयारी कर के ही आक्रमण करने जाते हैं।"

"हॉ।" मैंने इसे स्वीकार करते हुए कहा—"और जब देश अपना होता है, तो हम इस सम्बन्ध मे इतनी सावधानी नहीं बरत पाते—उतनी कुशलता और वैज्ञानिक ढंग से सैन्य-सचालन नहीं कर पाते।"

"किन्तु रूसियों ने नेपोलियन को जाल मे फॅसाने के लिए अपने देश का इसी प्रकार उपयोग किया था।"

"ठीक है; किन्तु उनके पास एक विशाल भूखंड था। यदि हम नेपोलियन को फँसाने के लिए इटली में पीछे की ओर हटने का प्रयत्न करें, तो अपने-आप को ब्रिण्डिसी मे पायेंगे।"

"बड़ा भयानक स्थान है वह—" जिनो बोला—"क्या आप वहाँ कभी गये हैं?"

"ठहरने की दृष्टि से नहीं।"

"मैं एक देशभक्त हूँ।" जिनो बोला—"किन्तु मैं ब्रिण्डिसी या टारण्टो से कभी प्रेम नहीं कर सकता।"

"क्या तुम्हे बेन्सिज्जा से प्रेम है?" मैंने पूछा।

"यहाँ की धरती पवित्र है—"उसने कहा—"किन्तु मेरी इच्छा है कि यहाँ पर आलू की खेती और अधिक हो। आप जानते हैं, जब हम यहाँ आये थे, तो हमे यहाँ आस्ट्रियनो द्वारा लगाये गये आलुओ के खेत दिखायी दिये थे।"

"क्या सचमुच यहाँ खाद्यान्न की कमी रही है?"

"स्वय मुझे तो यहाँ कभी पर्याप्त खाना नही मिला। पर मै खाता भी बहुत हूँ और यहाँ पर कभी भूखा नहीं मरा। भोजनालय की स्थिति सामान्य है। मोर्चे पर के सैन्यदलो को काफी अच्छा भोजन मिलता है; किन्तु उनके सहायतार्थ रखे गए व्यक्तियो को उतना अच्छा और पर्याप्त खाना नहीं मिलता। कहीं कुछ गड़बड़ी अवश्य है। भोजन तो पर्याप्त मिलना ही चाहिए।"

"ये बेईमान कहीं दूसरी जगह खाना बेच दिया करते हैं।"

"हाँ, यही बात है। मोर्चे पर के सैन्यदलों को तो वे जितना अधिक दे सकते हैं, उतना देते हैं; किन्तु पिछली पंक्तियो के लोगों को भोजन की बहुत कमी रहती है। आस्ट्रियनों के द्वारा उगाये गये सब आलू और वनों से प्राप्त अखरोट वे साफ कर चुके हैं। अधिकारियों को चाहिए कि वे पिछली पंक्ति-वालो को भी पर्याप्त भोजन दे। फिर हम लोग बहुत खानेवाले भी हैं। मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि खाद्यपदार्थों की यहाँ कोई कमी नहीं है। सैनिकों के लिए भोजन की कमी होना तो बहुत बुरी बात है। भोजन की कमी आपकी विचारधारा में क्या अंतर पैदा कर सकती है क्या आपने कभी इस पर भी ध्यान दिया है?"

"हाँ," मैंने उत्तर दिया—"उस स्थिति में युद्ध मे विजय प्राप्त नहीं हो सकती। हाँ, हार अवश्य हो जाती है।"

"हार के विषय में हमें बातें नहीं करनी चाहिए। उस विषय में काफ़ी

बातचीत हो चुकी है। जो कुछ इस ग्रीष्म ऋतु में हुआ है, उसका कुछ-न-कुछ उद्देश्य तो होगा ही—वह व्यर्थ नहीं हो सकता।"

मैंने कुछ नही कहा। 'पवित्र', 'श्रेष्ठ' तथा बलिदान-जैसे शब्द या "व्यर्थ है"-जैसे कथन का प्रयोग मुझे सदा बड़ी उलझन मे डाल देते थे। हम ऐसे शब्दो को कई बार सुन चुके थे। कभी-कभी बरसते पानी मे, इतनी दूरपर खड़े होने के बावजूद कि कानो को कुछ सुनाई न पडे—सिर्फ जोर से चिल्लाने पर ही आवाज सुनायी दे—हमने ऐसे शब्दो को सुना था। कई दिनों से लगे हुए पुराने पोस्टरो पर विज्ञप्तियॉ चिपकाने वाले व्यक्तियो के द्वारा चिपकाये गये नए पोस्टरो मे भी मैंने इन शब्दो को पढा था। किन्तु आज तक मैंने पवित्र नाम की कोई वस्तु नहीं देखी थी। श्रेष्ठ समझी जाने वाली चीज़ो में मुझे कोई श्रेष्ठता नजर नही आती थी और बलिदान तो बिलकुल वैसा ही हुआ करता था जैसा शिकागो के कसाईखानो में होता है। अंतर केवल इतना था कि यहाँ वधित मनुष्य के मास का कोई अन्य उपयोग न करके उसे गाड दिया जाता था। बहुत-से शब्द ऐसे थे, जिन्हे सुनना भी कोई व्यक्ति पसंद नही कर सकता था और अततः किन्ही नामो में यदि कोई प्रतिष्ठा की भावना थी भी, तो वे थे स्थानो के नाम। इसी प्रकार कुछ अंक और कुछ तिथियॉ भी ऐसी थीं, जिनमें प्रतिष्ठा निहित थी। यदि कोई कुछ कह सकता था, तो इन्ही तिथियों, अंको और स्थानो के नामों को लेकर। और, इनका आप कोई भी अर्थ निकलवा सकते थे। गॉवो के नाम, सड़को की सख्या, नदियों के नाम अथवा सैन्यदलो की सख्या और तिथियो के प्रत्यक्ष नाम के निकट महिमा, सम्मान, साहस अथवा साधुत्व-जैसे अव्यावहारिक शब्द पूर्णतः महत्त्वहीन थे। जिनो देशभक्त था, इसलिए वह ऐसी बाते कह देता था, जिनपर कभी-कभी हम एकमत नहीं होते थे। किन्तु वह बडा भला व्यक्ति था और मैं उसके देश-प्रेम की भावना समझ सकता था। जन्म से ही वह स्थिर चित्तवाला व्यक्ति था। पेडुज्जी के साथ ही मोटर में बैठकर वह भी गोरीजिया लौट गया।

उस दिन, दिन-भर तूफान का जोर रहा। उसी के साथ वर्षा हुई। चारों ओर पानी तथा कीचड भर गया और टूटे-फूटे घरो का प्लास्तर भूरा और गीला हो गया। शाम को जाकर वर्षा बन्द हुई। पड़ाव नम्बर दो से मैंने आसपास के पतझड़-ग्रस्त, रिक्त तथा भीगे हुए प्रदेश पर नजरे दौड़ायी। पहाड़ों की चोटियो पर मेघ छाए हुए थे। रास्ते को ढकने के लिए लगायी गयी घास की चटाइयाँ गीली हो रही थीं और उनसे पानी टपक रहा था। अस्त होने से पहले

पश्चिमगामी सूर्य पर्वत-पृष्ठ से पत्रविहीन वनो मे अंतिम बार चमक रहा था। पर्वत-पृष्ठ के उस वन में बहुत-सी आस्ट्रियन तोपे थी, किन्तु बहुत कम तोपे ही दागी जाती थी।

अचानक ही मैने मोर्चे की सैन्य-पंक्तियो के पास के खेत मे बने एक नष्ट-भ्रष्ट घर के ऊपर आकाश मे, बम-विस्फोट से उठने वाले धुएँ के अनेक वृत्ताकार छल्ले देखे। धुएँ के वे छल्ले बड़े मुलायम थे और उनके बीच मे कुछ पीली और सफ़ेद-सी चमक थी। पहले वह चमक दिखाई दी, उसके बाद सुनाई दिया विस्फोट और फिर धुएँ का एक गोला टेढे-मेढे ढग से ऊपर उठकर धीरे-धीरे क्षीणकाय होता हुआ वायु मे विलीन होकर बहने लगा। टूटे-फूटे घरो की ईटो और पत्थरो के अवशेषो मे भी लोहे के टुकड़ो से भरे बहुत-से गोले पड़े थे। उन घरो से आगे सड़क पर भी, जहाँ हमारा पड़ाव था, बहुत-से गोले गिराए गए थे। किन्तु उस शाम शत्रु ने हमारे पड़ाव के क्षेत्र मे बमबारी नहीं की। हमने दो मोटरे भरी और भीगी हुई चटाइयो से ढॅकी सडक की ढाल पर चल पड़े। चटाइयो के बीच के छेदो से सूर्य की अंतिम किरणे झाँक रही थी। पहाड़ियो के पीछे खुले हुए रास्ते पर हमारे पहुँचने से पहले ही सूर्यास्त हो गया। हम उस खुले हुए रास्ते पर आगे बढ़ते गए और थोड़ी दूर बाद सड़क ज्योही एक कोने मे मुडकर चटाइयो से बनी एक मेहराबदार चौकोर सुरङ्ग मे घुसी, त्योही वर्षा पुनः प्रारम्भ हो गई।

रात में हवा बड़े ज़ोरों से बहने लगी और सबेरे तीन बजे, मूसलाधार वर्षा के बीच, बमबारी शुरू हो गई। पहाड़ी चरागाहो और वनखडो को पार करते हुए क्रोशियन सैनिको ने हमारी सेनाओ की (सबसे अगली) पक्तिपर आक्रमण कर दिया। हमारे सैनिक वर्षा और अंधकार मे ही उनसे जूझ पड़े। दूसरी पक्ति के भयभीत सैनिको के प्रत्याक्रमण ने शत्रु को पीछे हटा दिया। अगली पक्ति पर सर्वत्र बडी भीषण बमबारी हुई। उस के साथ ही वर्षा मे, बहुत-से रॉकेट छोडे गये। मशीनगनो और राइफलो ने भी खूब गोलियाँ उगलीं। शत्रु-दल के सैनिक पीछे हट गये और फिर लौट कर उस क्षेत्र मे नहीं आये। मोर्चे पर शान्ति छा गई; किन्तु वहाँ से काफ़ी दूर, उत्तर की ओर, वायु के तीव्र झोकों तथा वर्षा के बीच हमें भयानक बमबारी की आवाज़ सुनाई दी।

घायलों का पड़ाव पर आना आरम्भ हो गया। कुछ घायल टिकठियों पर लाए जा रहे थे—कुछ पैदल आ रहे थे और कुछ लोगों को मैदानो के उस ओर से आए हुए सैनिक अपनी पीठ पर लाद कर ला रहे थे। वे सब सिर से-पैर तक

पानी में तर-बतर हो रहे थे और बड़े भयभीत थे। उपचार-केन्द्र के तहखाने के भीतर से टिकठियो पर लादकर बाहर लाये गये घायल सैनिको से हम लोगो ने दो मोटरें भर ली। ज्योही मैने दूसरी मोटर का द्वार बंद कर के उसकी कुण्डी चढ़ाई, त्योही मुझे प्रतीत हुआ कि मेरे चेहरे पर छाई वर्षा की बूदे बर्फ़ में बदल गयी हैं। वर्षा के साथ ही बर्फ के भारी टुकड़े भी शीघ्रता से गिरने आरम्भ हो गये थे।

सूर्योदय हुआ। तूफान अभी भी पूरे जोर पर था, किन्तु बर्फ गिरना बद हो गया था। भूमि पर गिरने के साथ ही बर्फ पिघलने लगा था और वर्षा फिर शुरू हो गयी थी। सूर्योदय के कुछ समय बाद ही शत्रुओ का दूसरा आक्रमण हुआ, किन्तु वह पूर्णतया असफल रहा। हमे तो आशा थी कि दिन-भर आक्रमण होते रहेंगे, किन्तु इसके विपरीत, सूर्य के पश्चिम मे ढलने तक कोई हमला नहीं हुआ। और तब, दक्षिण की ओर, वनो से आच्छादित लम्बे पर्वत-पृष्ठ पर, जिस-की ओर आस्ट्रियनो ने अपनी तोपो का मुँह घुमा दिया था, बमबारी आरम्भ हो गई। बमबारी की आशका तो हमे अपने क्षेत्र मे भी थी, किन्तु वहाँ बमबारी हुई नहीं। धीरे-धीरे अधेरा होता जा रहा था। गॉव के पीछे की ओर के मैदान से तोपे दागी जा रही थी और दूर दिशा की ओर जाते हुए गोलों का स्वर उन्हे अपने से दूर पा हमे सतोष दे रहा था।

तभी हमे समाचार मिला कि दक्षिण का आक्रमण बेकार हो गया। उस रात शत्रु सैन्यदल ने पुनः आक्रमण नहीं किया, किन्तु हमे खबर मिल गयी कि उत्तर की ओर की हमारी पक्तियो को तितर-बितर कर वे आगे बढ़ आए हैं। रात मे ही आदेश मिला कि हमे पीछे हटने की तैयारी कर लेनी चाहिए। पड़ाव पर के एक कैप्टन द्वारा मुझे यह सूचना प्राप्त हुई। उसे सैन्यदल से ही यह समाचार मिला था। पर थोड़ी देर बाद ही वह टेलिफोन पर बाते करके लौटा, तो मालूम हुआ कि पीछे हटने की बात कोरी गप्प थी। सैन्य-दल को असल मे यह आदेश मिला था कि चाहे कुछ भी क्यो न हो जाए, किन्तु उन्हें बेन्सिज्जा पर अपना अधिकार बनाए रखना है। मैने कैप्टन से उत्तर मे, शत्रुओ द्वारा हमारी सैन्यपक्तियो को भेदकर आगे बढने के समाचार के सम्बन्ध में पूछा। उसने बताया कि सैन्यदल मे ही उसने सुना था कि आस्ट्रियन सैन्यदल, हमारी सत्ताईसवीं सैन्यपंक्ति को तोड़कर केपोरेट्टो की ओर कुछ आगे बढ आया है और उत्तर की ओर दिन-भर भीषण युद्ध होता रहा है।

"यदि उन बेवकूफो ने शत्रु को बढ़ आने दिया, तो फिर हमारी मौत है।" उसने कहा।

"आक्रमणकारी जर्मन हैं।" एक मेडिकल अफसर ने कहा। 'जर्मन' एक ऐसा शब्द था, जिससे भय-सा लगता था। हम जर्मनो से कोई सरोकार नही रखना चाहते थे।

"जर्मन सेनाओ की यहाँ पन्द्रह टुकडियाँ है।" मेडिकल अफसर बोला—"वे हमारी सुरक्षा—पक्तियो को तोड़ चुके है और अब हम सब बुरी तरह मारे जायेंगे।"

"सैन्यदल में इस बात की जोरदार चर्चा है कि यह मोर्चा किसी भी तरह हमे बनाए रखना है। ऐसी खबर है कि सुरक्षापक्ति अभी पूरी तरह नहीं टूटी है। हम मॉन्टे मेज्जिओर से लेकर पहाडो के उस ओर तक का मोर्चा अपने हाथ मे बनाए रखने मे कामयाब हो सकते हे।"

"ये सब खबरे मिलती कहॉ से हे?"

"सैन्यदल से।"

"पीछे हटने की बात भी तो सैन्य-दल से ही मालूम हुई थी?"

"हम यो तो सैन्यदल के अन्तर्गत कार्य करते हे—" मैने कहा— "किन्तु यहॉ मैं आपके अन्तर्गत कार्य कर रहा हूँ। फिर यह स्वाभाविक ही है कि जब आप मुझे यहॉ से चले जाने के लिए कहेंगे, मै चला जाऊँगा। किन्तु सुनी-सुनाई बातो पर कार्य करने की अपेक्षा यदि आप सीधे अफसरो से ही आदेश प्राप्त करे, तो मेरी समझसे यह ज्यादा अच्छा होगा।"

"आदेश यही है कि हमे यहीं ठहरना है। आप घायलो को यहॉ से उस केन्द्र पर ले जायें, जहॉ से उन्हे अलग-अलग अस्पतालो मे भेजा जाता है।"

"कभी-कभी हमे उन्हे ऐसे केन्द्रो से मोर्चे के अस्पतालो मे भी ले जाना पड़ता है—" मै बोला—"मैने सेना का पीछे हटना आज तक नहीं देखा है। कृपया मुझे बताइए कि पीछे हटने की स्थिति मे सब घायलो को स्थानान्तरित कैसे किया जाता है?"

"सभी को स्थानान्तरित नही किया जाता। जितने घायल ले जाये जा सकते हैं, उतने साथ ले लिये जाते है और बाकी वहीं छोड़ दिए जाते है।"

"मोटरो मे मुझे क्या भरकर ले जाना होगा?"

"अस्पताल की चीजे।"

"अच्छी बात है।" मैं बोला।

दूसरी रात हमारा पीछे हटना आरम्भ हो गया। हमने सुना कि उत्तर की ओर जर्मनो और आस्ट्रियनो ने हमारी सुरक्षा पक्तियो को छिन्न-भिन्न कर दिया था। वे घाटियो से नीचे, सिविडेल और यूडाइन की ओर बढ़ रहे थे। पीछे हटने का हमारा काम व्यवस्थापूर्ण था, किन्तु एक अजीब-सी उदासी छायी थी। भयावह रात्रि मे, वर्षा के बीच, भीड से भरी सड़क पर, मंद गति से पानी मे भीगते हुए सैन्यदलो को हम पीछे छोड़ते गये। तोपे, बन्दूके और गाडियों को खीचते हुए घोडे, खच्चर और ट्रके सभी मोर्चे से दूर चली जा रही थी। जितनी असुविधा आगे बढने मे होती है, उतनी ही इस समय भी थी।

उस रात हमने मोर्चे के अस्पतालो को खाली करने मे सेना की सहायता की। ये अस्पताल पठार के उन गॉवो में स्थापित किए गये थे, जहॉ युद्ध के कारण कम-से-कम बरबादी हुई थी। युद्ध-क्षेत्र के इन अस्पतालो से घायलो को हटाकर हम उन्हे नदी-तट पर स्थित प्लावा नामक स्थान मे ले गये। दूसरे दिन, दिन-भर बरसते हुए पानी मे हम अस्पतालो और प्लावा के उस उपचार-केन्द्र के रोगियो को स्थानान्तरित करने में लगे रहे। वर्षा लगातार होती रही और अक्टूबर मास की उस वर्षा मे, बेन्सिज्जा पर तैनात सेना, पठार से नीचे उतर कर, नदी पार करने लगी। उसने नदी के उस क्षेत्र को पार कर लिया, जहॉ वसन्त मे हमारी महान विजय आरम्भ हुई थी। दूसरे दिन दोपहर को हम गोरीजिया पहॅुचे। उस समय वर्षा थम गयी थी। सारा शहर लगभग खाली पड़ा था। ज्योही हम रास्ते पर आगे बढे, हमने देखा कि सैनिको के चकले की लडकियॉ एक मोटर मे लादी जा रही थी। कुल सात लडकियॉ थी। उनके सिर पर हैट थे। वे कोट पहने हुए थी और उनके हाथ मे सूटकेस थे। उनमे से दो लड़कियॉ रो रही थीं। शेष लड़कियो में से एक हमे देखकर मुसकराई और हमारी ओर जीभ निकाल कर उसे ऊपर-नीचे हिलाते हुए हमे चिढाने लगी। उस लडकी के होठ मोटे और भरे हुए थे और ऑखे काली थी।

मैंने मोटर रोक दी और उतर कर चकले की व्यवस्थापिका से मिला। "अफसरो के चकले की लड़कियॉ तो आज बड़े सवेरे ही चली गयी—" उसने बताया।

"ये कहॉ जा रही है?" मैंने पूछा।

"कोनेग्लिआनो।" वह बोली।

उनकी मोटर चल पड़ी। मोटे होठो वाली लड़की ने फिर हमारी ओर जीभ

निकाली। व्यवस्थापिका ने हाथ हिलाया। वे दो लडकियॉ—जो रो रही थीं, रोती रहीं। दूमरी लडकियॉ बडी दिलचस्पी के साथ शहर की ओर देख रही थी। मै अपनी मोटर मे बैठ गया।

"हम इन्ही के साथ चले?" बोनेलो ने कहा—"हमारी यात्रा बडी सुन्दर रहेगी।"

"हमारी यात्रा तो यो भी सुन्दर रहेगी।" मैने कहा।

"जी हॉ, दुनिया-भर की तकलीफो का सामना करना पडेगा हमें।"

"मेरा मतलब भी यही था।" मै बोला और हम सड़क पर मोटर दौड़ाते हुए बगले के निकट पहुँच गये।

"मेरी बडी इच्छा है कि जब इन लड़कियो के पास वहॉ के हट्टे-कट्टे सैनिक पहुँचें, तब मै वहॉ मौजूद रहूँ।"

"क्या आपको यह विश्वास है कि वे उनके पास जायेंगे ही?"

"इसमे कोई शक नही। द्वितीय सैन्यदल का प्रत्येक सैनिक उस व्यवस्थापिका को पहचानता है।"

हम अब बंगले की सीमा मे प्रवेश कर चुके थे।

"वे लोग उसे 'मदर-सुपीरियर' कहकर पुकारते हैं।" बोनेलो ने कहा—"लड़कियॉ नयी हे, किन्तु उस व्यवस्थापिका को सब जानते है। ये लड़कियॉ तो हमारे पीछे हटने के कुछ ही समय पूर्व यहॉ लाई गई होगीं।"

"उनके भी दिन आयेगे।"

"हॉ, उनका जमाना भी आयेगा। पर मै बिना कुछ खर्च किए ही एक बार उनके साथ मौज उड़ाना चाहूँगा। खैर, उस चकले मे पैसे तो बहुत लिए जाते हैं। यह सरकार भी हमारे साथ बडा निर्दयतापूर्ण व्यवहार करती है।"

"मोटर बाहर निकाल लो और कारीगरो से कहो कि वे उसके पुर्जो की अच्छी तरह जॉच कर ले।" मैने कहा—"तेल बदल दो और गति-नियत्रक यन्त्र की देखभाल कर लो। मोटर में पानी भी भर दो और तब थोड़ी देर के लिए सो जाओ।"

"जी, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

बंगला खाली पड़ा था। रिनाल्डी अस्पताल के सामान के साथ जा चुका था। मेजर, कर्मचारियों की मोटर मे अस्पताल के कर्मचारियो को साथ लेकर चला गया था। मेरे लिए खिड़की मे एक सूचना लिखकर छोड़ दी गई थी। उसमें लिखा था कि बरामदे मे इकट्ठी की गई चीजों को मोटरो मे लादकर मै

पोर्डेनन रवाना हो जाऊँ। कारीगर पहले ही चले गए थे। मै पुनः गैरेज में पहुँचा। जब मै वहाँ था, तभी दो मोटरे और आ गयीं। उनके चालक नीचे उतरे। वर्षा फिर आरम्भ हो गयी थी।

"मुझे बड़ी नीद आ रही है। इतने जोरो की नींद कि मै प्लावा से यहाँ आते समय रास्ते मे तीन बार सो चुका हूँ।" पिआनी ने कहा।

"अब हमे क्या करना है, साहब?"

"देखो, तेल बदल दो। पुर्जो मे ग्रीज़ लगा दो। मोटरो में पानी भर लो और तब उन्हें सामने की ओर ले जाकर, वहाँ जो कूड़ा-करकट लोग छोड़ गये हैं, उसे लाद लो।"

"क्या उसके बाद हम लोग यहाँ से चल देगे?"

"नहीं, यात्रा आरम्भ करने से पहले हम लोग तीन घण्टे तक सोयेगे।"

"भगवान् भला करे। सोने के नाम पर मुझे बडी प्रसन्नता हुई।" बोनेलो ने कहा—"अन्यथा मै मोटर चलाते समय अवश्य सो जाता।"

"तुम्हारी मोटर कैसी है, आयूमो।" मैंने पूछा।

"बिलकुल ठीक है, साहब।"

"मेरे लिए मोटर साफ करने के समय के कपड़े ले आओ। तेल आदि देने मे मै तुम्हारी सहायता करूँगा।"

"नहीं, नहीं, आप ऐसा मत कीजिये, लेफ्टिनेण्ट साहब!" आयूमो ने कहा—"कुछ ऐसा ज्यादा काम तो है नहीं। आप जाकर अपना सामान बॉधिए।"

"मेरा सब सामान बँध चुका है।" मै बोला—"मै जाकर उन वस्तुओ को बाहर निकालता हूँ, जो वे लोग हमारे लिए छोड गए हैं। ज्योही मोटरें तैयार हो जाएँ, उन्हे उसी ओर ले आना।"

मोटरे घुमाकर बगले के सामने की ओर ले आयी गयी। बरामदे मे अस्पताल की सामग्री का जो ढेर पड़ा था, उसे हमने मोटरो मे लादना प्रारम्भ किया। जब सब सामान भर दिया गया, तो बरसते हुए पानी मे, वृक्षो के नीचे, बगले की सड़क पर, तीनो मोटरे खड़ी कर दी गयीं। हम लोग बगले के भीतर पहुँचे।

"रसोईघर मे जाकर आग जला लो और अपने कपड़े सुखा लो।" मैने कहा।

"मुझे सूखे कपड़ो की कोई चिन्ता नहीं है।" पिआनी बोला—"मै तो सोना चाहता हूँ।"

"देखो, मै तो मेजर के पलंग पर सोने जा रहा हूँ।" बोनेलो ने कहा।

"मुझे इसकी भी चिन्ता नहीं है कि मै कहाँ सोनेवाला हूँ!" पिआनी ने कहा।

"लो, इस कमरे में दो बिस्तर पडे हुए है।" मैने दरवाजा खोलते हुए कहा।

"मुझे तो आज तक कभी मालूम ही नहीं हो पाया कि इस कमरे मे क्या था।" बोनेलो बोला।

"यह पहले उस मछली-जैसे मुँहवाले व्यक्ति का कमरा था।" पिआनी ने कहा।

"तुम दोनो वहीं सो जाओ।" मै बोला—"मै तुम्हे जगा दूँगा।"

"यदि हम बहुत देर तक सोते रह गये, तो फिर आस्ट्रियन लोग ही हमे आकर जगायेंगे, लेफ्टिनेंट साहब!" बोनेलो ने कहा।

"मै देर तक नहीं सोऊँगा।" मैने कहा—"आयमो कहाँ है?"

"वह रसोईघर की ओर गया है।"

"अच्छा, अब सो जाओ।" मै बोला।

"मुझे तो नीद आ जाएगी।" पिआनी ने कहा—"मै दिन-भर बैठे-बैठे ऊँघता रहा हूँ। सारे दिन मेरी आँखे झपकती रही है और मेरा सिर नीद के बोझ से झुकता रहा है।"

"अपने जूते निकाल लो।" बोनेलो ने कहा—"याद रखो, उस मछली-सी सूरतवाले का बिस्तर है, यह।"

"मुझे उस मनहूस सूरत की परवाह नहीं।" पिआनी बिस्तर पर लेट गया। कीचड़-भरे जूते पहने ही उसने बिस्तर पर अपने पैर फैला दिये। सिर उसने अपने हाथो पर रख लिया। मै रसोईघर मे पहुँचा। आयमो ने अँगीठी में आग जलाकर उसके ऊपर पानी से भरी पतीली चढा दी थी।

"मैने सोचा कि मै कुछ मेकरोनी (एक किस्म का खाद्य पदार्थ) ही चढा दूँ।" उसने कहा—"जब हम सोकर उठेंगे, तब हमे भूख लग आयेगी।"

"क्या तुम्हे नींद नहीं आ रही है, बारटोलोमिओ?"

"कोई खास नहीं। जब पानी उबलने लगेगा, तो मै उसे यों ही छोड दूँगा। आग धीरे-धीरे कम होकर बुझ जाएगी।"

"तुम थोड़ी-सी नीद ले लो, तो ठीक रहेगा।" मैने कहा—"और तब हम थोड़ा पनीर और बन्दर का मास खा लेंगे।"

"यह तो बड़ा अच्छा रहेगा।" उसने कहा—"उन दोनो कारीगरो के लिए कोई गरम वस्तु ही ठीक रहेगी। जाइये, आप सो जाइए, साहब! मेजर के कमरे मे एक बिस्तर पडा है, आप वहीं सो जाइये।"

"नहीं, मै ऊपर अपने पुराने कमरे मे जा रहा हूॅ। क्या तुम कुछ पीना पसद करोगे, बारटोलोमिओ?"

"अभी नहीं, साहब। जब हम यहॉ से चलने लगेगे, तब। शराब पीने से इस समय मुझे कोई विशेष लाभ भी नही होगा।"

"यदि तुम तीन घण्टे बाद जाग जाओ और मै तुम्हे उठाने न आऊॅ, तो तुम आकर मुझे जगा देना। जगा दोगे न?"

"पर मेरे पास कोई घड़ी नहीं है, लेफ्टिनेंट साहब।"

"मेजर के कमरे मे दीवार पर एक घडी है।"

"अच्छी बात है। तब जगा दूॅगा।"

मै भोजन करने के कमरे मे गया। वहॉ से बरामदा पार करता हुआ, मै संगमरमर की सीढ़ियॉ चढता गया और उस कमरे मे घुसा, जहॉ मै रिनाल्डी के साथ रहता था। बाहर वर्षा हो रही थी। खिड़की मे खड़े होकर मै बाहर झॉकने लगा। अंधेरा-सा छा गया था। तीनो मोटरे वृक्षो के नीचे एक कतार मे खड़ी थी। वर्षा मे नहाये हुए वृक्षो से पानी टपक रहा था। वातावरण मे ठड थी। पानी की बूॅदे वृक्षो की शाखाओ मे झूल-सी रही थी। मै रिनाल्डी के बिस्तर पर पहुॅचा और उस पर लेट कर नीद लाने का प्रयास करने लगा।

यात्रा आरम्भ करने के पहले रसोईघर मे जाकर हमने कुछ खाया-पिया। एक बर्तन मे प्याज और डब्बे मे बद मास के टुकडो को 'मेकरोनी' के साथ मिलाकर एक नयी चीज तैयार कर ली गयी थी। बगले के तहखाने मे छोड़ दी गयी शराब की दो बोतले भी हम पी गये। बाहर काफी अंधेरा हो चुका था। वर्षा अभी भी हो रही थी। पिआनी खाने की मेज के निकट बैठे-बैठे ऊॅघ रहा था।

"आगे बढने की अपेक्षा पीछे हटना ही मै अच्छा समझता हूॅ।" बोनेलो ने कहा—"पीछे हटते समय हमे बारबॅरा (शराब) तो पीने को मिलती है।"

"बारबॅरा तो हम अभी पी रहे हैं। हो सकता है, कल हमे बरसात का पानी पीना पडे।" आयमो बोला।

"हमारा कल का सूर्य यूडाइन मे उगेगा। तब हम शैम्पेन (शराब) पियेंगे। यूडाइन वह स्थान है, जहॉ आलसी लोग रहते हैं। पिआनी, उठो भाई! कल हमें यूडाइन मे शैम्पेन पीने का सौभाग्य प्राप्त होनेवाला है!"

"मैं सोया नहीं हूँ, जगा हूँ।" पिआनी ने कहा। उसने अपनी रकाबी में मेकरोनी और मास डाल लिया—"क्या तुम कहीं से टमाटर की चटनी नहीं पा सके, बारटो?"

"ना, टमाटर की चटनी थी ही नहीं।" आयमो ने उत्तर दिया।

"यूडाइन मे हम शैम्पेन पियेंगे—" बोनेलो ने कहा और उसने स्वच्छ लाल रग की बारबेरा शराब से अपना गिलास भर लिया।

"क्या आपने पूरा खाना खा लिया साहब?" आयमो ने पूछा।

"हॉ, मैने काफी खा लिया है। मुझे जरा वह बोतल उठा दो तो, बारटोलोमिओ!"

"मेरे पास मोटर मे पीने के लिए एक बोतल अलग से रखी है।" आयमो ने कहा।

"तुमने नीद ली या नहीं?"

"मुझे अधिक सोने की जरूरत नही पडती। थोडी नीद मै ले चुका हूँ।"

"कल हम लोग राजा के बिस्तर पर सोयेगे।" बोनेलो बोला। उसे यह सब बहुत अच्छा लग रहा था।

"मै तो रानी के साथ सोऊँगा।" बोनेलो ने कहा और उसने यह जानने के लिए मेरी ओर देखा कि उसका वह मजाक मुझे कैसा लगा।

"चुप रहो।" मैने उसे डॉटा —"तुम जरा-सी शराब में ही बहकने लगते हो।" बाहर अब जोरो की वर्षा हो रही थी। मैने अपनी घडी की ओर देखा —साढे नौ बज चुके थे।

"चलने का समय हो गया है।" कहते हुए मै खड़ा हो गया।

"आप किसकी मोटर में चलेंगे, साहब?" बोनेलो ने पूछा।

"मै आयमो के साथ बैठूँगा। उसके बाद तुम्हारी मोटर रहेगी और तुम्हारे पीछे पिआनी की। हम कोर्मन्स जाने वाले रास्ते पर चलेंगे।"

"मुझे डर है कि मै रास्ते में ही सो जाऊँगा।" पिआनी ने कहा।

"अच्छी बात है। तब मै तुम्हारे साथ चलूँगा। हमारे पीछे बोनेलो रहेगा और उसके पीछे आयमो।"

"हॉ, यही सबसे अच्छा रहेगा।" पिआनी बोला—"क्योकि मै इतना ऊँघने वाला जो ठहरा।"

"मैं मोटर चलाऊँगा, इसी बीच तुम थोड़ी देर सो रहना।"

"नहीं, जब तक मुझे यह मालूम रहता है कि यदि मै सो जाऊँगा, तो मुझे कोई जगा देगा, तब तक मै अच्छी तरह मोटर चला सकता हूँ।"

"तो, मै तुम्हें जगा दिया करूँगा। बत्तियॉ बुझा दो, बारटो।"

"जलने भी दीजिए।" बोनेलो ने कहा—"अब इस स्थान का हमारे लिए कोई उपयोग नहीं है।"

"मेरे कमरे मे ताला लगा हुआ मेरा एक बक्स पडा है।" मैं बोला—"क्या तुम उसे नीचे लाने में मेरी सहायता करोगे, पिआनी ?"

"हम लोग उसे उठा लायेंगे।" पिआनी बोला—"चलो आल्डो, हम उसे ले आये।" वह बोनेलो के साथ बरामदे की ओर चला गया। मुझे उनके सीढ़ियॉ चढने की आवाज सुनाई दी।

"यह बडी अच्छी जगह थी--" बारटोलोमिओ आयूमो ने कहा। उसने अपने सामान के थैले मे शराब की दो बोतले और पनीर का आधा टुकडा डाल लिया—"इसके समान हमे फिर कोई जगह नहीं मिलनेवाली है। इस तरह पीछे हटकर हम लोग कहॉ जायेंगे, लेफ्टिनेण्ट साहब ?"

"सुनने मे आया है कि सैनिक तो टॅग्लिआमेण्टो से आगे जायेंगे और अस्पताल और उससे सम्बन्धित टुकडी पोर्डेनन में रहेगी।"

"पोर्डेनन से यह शहर कही अच्छा है।"

"पोर्डेनन के सम्बन्ध मे मै कुछ नहीं जानता हूँ।" मैने कहा— "मै तो बस अभी हाल ही वहॉ से गुजरा था।"

"वह कोई खास अच्छी जगह नही है।" आयूमो ने कहा।

.२८.

हमारी मोटरे शहर को पार करती हुई आगे बढने लगी। वर्षा की तेज बौछारो के बीच सारा शहर सूना था और सर्वत्र अंधेरा छाया था। यदि कहीं कोई हलचल थी, तो वह बडी सड़क पर आगे बढनेवाली सैन्य-पंक्तियो और तोपे ढोनेवाली गाड़ियो की थी। बहुत-सी ट्रके तथा मोटरे दूसरी छोटी सड़कों पर से चली जा रही थी। ये सड़के आगे चलकर बड़ी सड़क से मिल गयी थी। जब हम चमड़ा पकाने के कारखानो को पार करते हुए बड़ी सड़क पर आये, तो उस पर सैन्यदल, ट्रके, घोड़ा-गाड़ियॉ और तोपे ढोनेवाली गाड़ियॉ

कतार में धीरे-धीरे, रेंगती हुई, आगे बढ रही थी। हम भी उस वर्षा में मन्द, किन्तु अनवरत गति से आगे खिसकते गये। हमारी मोटर का 'रेडिएटर-कैप' आगे जानेवाली ट्रक के पीछे के हिस्से को लगभग छू रहा था। ट्रक पर बहुत ज्यादा सामान लदा था और उसे तिरपाल से ढँक दिया गया था, जो पानी से तरबतर हो चुका था। अचानक ट्रक रुक गई और पीछे-पीछे चलने-वाली हमारी लम्बी कतार भी रुक गयी। कुछ क्षणो बाद ट्रक फिर चल पड़ी। हम थोडा और आगे बढे और फिर रुक गये। मै मोटर से उतर गया। दूसरी मोटरो तथा गाड़ियो के बीच से निकल कर घोड़ो की भीगी हुई गर्दनो के नीचे से राह बनाते हुए मैं आगे बढता गया। पर रास्ता काफी दूर तक रुका हुआ था। अतः मैंने सडक छोड दी और खाई पर पडे हुए लकड़ी के तख्ते पर होकर उसे पार करता हुआ मैदान मे उतर गया। बरसते पानी में सड़क पर वृक्षों के साये मे रुके सैन्य-दल को दूर ही से देखता हुआ, मैदान-ही-मैदान मै उससे आगे निकल गया। लगभग एक मील तक मै इसी प्रकार चला गया। यद्यपि इन रुकी हुई सवारियो से आगे, दूसरी ओर से मैं कुछ सैन्य-टुकडियो को आगे बढते हुए अवश्य देख रहा था; फिर भी मोटरो और ट्रको की वह लम्बी कतार एक इच भी आगे नहीं बढ सकी थी। मै पुनः अपनी मोटरो के पास लौट आया। मेरी समझ से यह रुकावट यूडाइन तक इसी प्रकार चलने वाली थी। पिआनी स्टीयरिंग ह्वील पर सिर रखकर सो गया था। मै मोटर मे चढ़कर उसके पास बैठ गया और स्वयं भी सो गया। कई घटो के बाद अचानक मैंने आगे-वाली ट्रक रवाना होने की आवाज सुनी। मैंने पिआनी को जगाया और हमारी मोटर आगे बढ़ी। हम कुछ देर तक चलते और फिर रुक जाते। रुकने और धीरे-धीरे आगे बढ़ने का हमारा यह क्रम इसी प्रकार चलता रहा। वर्षा अभी भी हो रही थी।

सैन्यदल की वह लम्बी कतार रात में फिर रुक गयी और रात-भर आगे नहीं बढ़ी। मै नीचे उतरा और आयुमो तथा बोनेलो को देखने के लिए पीछे पहुँचा। बोनेलो के साथ मोटर में इजीनियर-दल के दो सार्जेंट बैठे हुए थे। ज्योंही मैं वहाँ पहुँचा, वे तनकर सीधे बैठ गये।

"किसी पुल को सुधारने के लिए ये रुक गए थे।" बोनेलो ने कहा—"इन्हें अपनी टुकड़ी का पता नहीं चल रहा है, इसलिए मैंने इन्हे मोटर में बैठा लिया है।"

"यदि लेफ्टिनेण्ट महोदय की अनुमति हो, तो।"

"हाँ, हाँ, कोई बात नहीं।" मैने कहा।

"हमारे लेफ्टिनेण्ट साहब अमरीकी हैं।" बोनेलो ने कहा—"वे किसी भी व्यक्ति को मोटर में बैठा लेते हैं।"

एक सार्जेंट मुसकराया। दूसरे सार्जेंट ने बोनेलो से पूछा कि क्या मै उत्तर या दक्षिण अमेरिका में बसा हुआ इटालियन हूँ?

"नहीं, वे इटालियन नहीं हैं। वे उत्तर अमेरिका में रहनेवाले अंग्रेज़ हैं।"

दोनो सार्जेंट बड़ी शिष्टता से बाते कर रहे थे, किन्तु बोनेलो के इस कथन पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ। मै उन्हे वही छोड़कर आयमो के पास पहुँचा। वह अपनी सीट के कोने मे दो लड़कियो के साथ, पीछे की ओर टिककर बैठा धूम्रपान कर रहा था।

"बारटो, बारटो!" मैने उसे आवाज दी। वह हँस पड़ा।

"इनसे बाते कीजिये, लेफ्टिनेंट साहब।" उसने कहा—"मै इनकी बोली ही नहीं समझ पा रहा हूँ। ए!" उसने लड़की की जाँघ पर अपना हाथ रखते हुए उसे दोस्ती की भावना से दबाया। लडकी ने दुशाला कसकर अपने चारों ओर लपेट लिया और अपनी जाँघ पर से उसका हाथ हटा दिया। "ए!" वह बोला—"इन्हे अपना नाम बताओ और यह भी बताओ कि तुम यहाँ क्या करती हो।"

लड़की ने बड़े क्रोध से मेरी ओर देखा। दूसरी लडकी अपनी निगाहे झुकाए बैठी रही। जिस लडकी ने मेरी ओर देखा था, उसने किसी अपरिचित भाषा में कुछ कहा, जिसका एक शब्द भी मेरी समझ मे नही आया। वह लड़की मोटी और काली थी तथा उसकी उम्र सोलह वर्ष के आसपास थी।

"बहन है तुम्हारी?" मैने दूसरी लड़की की ओर इशारा करते हुए पूछा।

उसने अपना सिर हिलाया और मुस्करा दी।

"अच्छी बात है।" कहते हुए मैंने उसका घुटना थपथपाया और मुझे लगा कि मेरे स्पर्श करते ही वह तनकर बैठ गई और मेरी ओर कठोरतापूर्वक देखने लगी। उसकी बहन ने आँख उठाकर ऊपर देखा भी नहीं। वह उससे एक वर्ष छोटी दिखाई दे रही थी। आयमो ने बड़ी लड़की की जाँघ पर अपना हाथ रखा, पर लड़की ने उसे झटक दिया। आयमो हँस पड़ा।

"अच्छा आदमी है।" उसने अपनी ओर संकेत करते हुए कहा।

"अच्छा आदमी है।" उसने इस बार मेरी ओर सकेत किया—"चिन्ता मत करो।"

लड़की ने क्रोधावेश में उसे देखा। उन दोनों लड़कियो की जोड़ी दो वनैले पक्षियों-सी थी।

"यह जब मुझे बिलकुल नहीं चाहती तो मेरे साथ मोटर में चल ही क्यो रही है?" आयूमो ने जैसे स्वय से प्रश्न किया—"जिस क्षण मैंने इन्हें चढने का संकेत किया, ये सीधे मोटर मे आकर बैठ गयीं।" वह लड़की की ओर मुड़ा—"चिन्ता मत करो।" उसने कहा। एक गन्दे शब्द का प्रयोग करते हुए वह बोला—"—की कोई आशका नहीं है।—के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है।" वह उस शब्द को समझ गई और बस, सब कुछ समझ गई। भयभीत दृष्टि से उसने उसकी ओर देखा और अपने दुशाले को अपने शरीर पर कसकर लपेट लिया।

"मोटर बिलकुल भरी हुई है।" आयूमो ने कहा—"—की कोई आशका नहीं। —के लिए काई स्थान नहीं।" जितनी बार उसने उस गन्दे शब्द का प्रयोग किया लड़की अधिक कठोर होती गयी। अन्त मे, सीधे तनकर बैठते हुए उसने एक बार उसकी ओर देखा और रो पड़ी। मैंने उसके होंठों को बडबडाते हुए देखा। उसके फूले हुए मोटे गालो पर से ऑसू लुढकने लगे। उसकी बहन ने बिना ऊपर सिर उठाये ही उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया। वे दोनो एक दूसरे से सटकर बैठ गई। बडी लड़की, जो बड़ी क्रुद्ध हो उठी थी, अब सिसकियाँ भरने लगी।

"शायद मैंने उसे डरा दिया है।" आयूमो बोला—"पर उसे डराने का मेरा बिलकुल उद्देश्य नहीं था।"

बारटोलोमिओ अपना सैनिकों का थैला उठा लाया। उसने उसमें रखा हुआ पनीर निकाला और उसके दो टुकडे कर के उसे देते हुए बोला—

"लो, यह लो। चुप हो जाओ अब।"

बडी लडकी ने हाथ के इशारे से पनीर का टुकड़ा अस्वीकार कर दिया। वह रोती ही रही, किन्तु छोटी लडकी ने दोनो टुकडे ले लिये और तुरत ही खाना प्रारम्भ कर दिया। थोड़ी देर बाद उसने दूसरा टुकडा अपनी बहन को दे दिया। अब वे दोनो मिलकर खाने लगी। बीच-बीच मे बड़ी बहन अभी भी थोड़ी सिसकियाँ भरती जा रही थी।

"कुछ देर बाद वह आप ही स्वस्थ हो जायेगी।" आयूमो ने कहा।

उसके दिमाग में अचानक ही एक विचार उठा।

"कुमारी हो?" उसने अपने पास बैठी हुई लड़की से पूछा। उस लड़की ने बड़े उत्साह से अपना सिर हिलाते हुए 'हाँ' का सकेत किया।

"यह भी कुमारी है?" उसकी बहन की ओर सकेत करके उसने प्रश्न किया। दोनो लड़कियो ने स्वीकारात्मक ढग से सिर हिलाया। बड़ी बहन अपनी बोली मे कुछ बडबडाई।

"ठीक है।" बारटोलोमिओ ने कहा "ठीक है—ठीक है।"

दोनो लडकियॉ कुछ प्रफुल्लित नजर आयी। मैने मोटर के कोने मे पीछे की ओर टिककर बैठे हुए आयूमो के साथ उन लडकियों को वहीं छोड दिया और पिओनी की मोटर के निकट लौट आया। सवारियो की वह लम्बी कतार अभी हिली भी नहीं थी, किन्तु सैनिक-टुकडियो का उनकी बगल से निकलकर आगे बढने का क्रम जारी था। वर्षा अभी भी पूरे वेग पर थी। मैंने सोचा कि सवारियो की इस कतार का इस प्रकार बार-बार रुकने का कारण यह भी हो सकता है कि शायद किसी मोटर के तार के गीले हो जाने के कारण उसमें कुछ खराबी पैदा हो जाती हो। किन्तु अधिक सभावना इस बात की थी कि घोड़े अथवा चालकगण बीच-बीच मे सो जाया करते थे और सबको रुक जाना पड़ता था। पर शहरो मे तो प्रत्येक व्यक्ति के जागते रहने पर भी यातायात रुक सकता है। सवारियो की इस लम्बी कनार मे मोटरे और घोडा-गाडियॉ थी। उन सवारियो को आपस मे एक-दूसरे से कोई सहायता नहीं मिलती थी और न किसानो की गाडियो से ही कोई विशेष मदद मिलती थी। बारटो के साथ बैठी हुई लड़कियो की वह जोडी सुन्दर थी। पर सेना के पीछे हटने के समय उस स्थान पर दो कुमारियो का होना उचित नही था—सही अर्थों में कुमारियॉ, जो कदाचित् बड़ी धार्मिक विचारो की थी। यदि युद्ध नहीं होता, तो इस समय शायद हम सब अपने बिस्तरों मे सोए होते। ओर, मै जैसे बिस्तर मे अपना सिर छिपाकर सो गया। बिस्तर और एक कठोर तख्ता—तख्ते के समान ही कठोर बिस्तर! कैथरीन भी अपने पलग पर चादर ओढ़े सो रही होगी। दो मुलायम चादरे—एक नीचे और एक ऊपर। वह किस करवट सोई होगी भला? कदाचित् वह सोई न भी हो। हो सकता है, वह मेरे विषय मे कुछ सोचते हुए लेटी हो। पश्चिमी पवन! मेरी ओर प्रवाहित हो। इस दिशा मे बह। और सचमुच, पश्चिमी पवन मेरी ओर प्रवाहित हुआ। नन्हीं-नन्हीं बूँदे नहीं, मूसलाधार वर्षा लेकर वह आया। पानी बरसता रहा, रात-भर वर्षा हुई। उसने वर्षा को जैसे झकझोर कर रात—भर बरसने के लिए बाध्य कर दिया। उसकी ओर देखो तो, जरा। हे भगवान्! काश! मै अपनी प्रियतमा कैथरीन को अपने आलिगन मे लिये अपने बिस्तर मे सोया

होता। कैथरीन—मेरे प्रेम की प्रतिमा! मेरा मधुर प्यार कैथरीन—मधुमय रस की वर्षा-सी कदाचित् यहाँ बरस पड़े। पश्चिमी पवन! मेरी प्रेममयी कैथरीन का संदेश पुनः मेरी ओर प्रवाहित कर। और लो, हम सब पवन के झंझावात में ही तो थे। हर व्यक्ति पश्चिमी पवन के जाल मे फँसा हुआ था। और थोड़ी-सी वर्षा उस के वेग को शान्त करने मे असमर्थ थी।

"रात-भर के लिए विदा, कैथरीन, विदा प्रियतमे!" मै जोर से चिल्लाया —"मेरा अनुमान है कि तुम आराम से सो रही हो। यदि इस प्रकार सोने में तुम्हें तकलीफ होनी हो प्रिये, तो करवट बदल कर लेट जाओ।" मैंने कहा— "मै तुम्हारे लिए थोडा ठण्डा पानी ले आता हूँ। कुछ समय बाद सबेरा हो जायेगा और तब तुम्हें इतनी तकलीफ नही होगी। मुझे बड़ा दुःख है कि तुम्हे उस आनेवाले शिशु के कारण इतना कष्ट हो रहा है। सोने का प्रयत्न करो, प्राण!"

स्वप्निल स्मृति जैसे स्पष्टतर होती जा रही थी।

"मै तो अभी तक सो ही रही थी—" वह बोली—"तुम नींद में बड-बड़ा रहे थे। तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?"

"क्या तुम सचमुच मेरे पास हो?"

"निस्सदेह, मै तुम्हारे पास ही तो हूँ। मै तुमसे दूर नहीं जाऊँगी। विछोह की इस स्थिति से हमारे बीच कोई दूरी नहीं आ सकती।"

"तुम कितनी प्रिय और मधुर हो! तुम रात मे भी मुझसे दूर नहीं रहोगी। है न?"

"निश्चय ही, मै तुमसे अलग नहीं रहूँगी। मै तो सदा तुम्हारे साथ हूँ। जब तुम चाहते हो, तभी मै तुम्हारे पास आ जाती हूँ..।"

"——" पिआनी बोला—"हमारा चलना फिर शुरू हो गया है।"

"मै नशे मे था।" मैंने कहा और अपनी घडी पर दृष्टि डाली। सुबह के तीन बज गये थे। मै अपनी सीट के पीछे की ओर से बारबॅरा (शराब) की एक बोतल निकालकर ले आया।

"आप जोर-जोर से बड़बड़ा रहे थे।" पिआनी बोला।

"संभव है, मै अंग्रेजी मे एक स्वप्न देख रहा था।" मै बोला।

वर्षा का वेग धीमा पड़ गया था। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। पर सूर्य निकलने के पहले ही हमारा चलना फिर रुक गया। जब उजेला हुआ, तो मैंने देखा कि हम मैदान के बीच एक छोटे-से टीले के पास खड़े थे। पीछे की ओर

हटते हुए हम जिस मार्ग पर चल रहे थे, वह सामने बड़ी दूर तक फैला हुआ दिखायी दे रहा था। हर वस्तु उस सड़क पर बिलकुल स्थिर होकर खडी थी। केवल पैदल सेना उस स्थिर कतार के बीच से निकलती हुई आगे बढती जा रही थी। हमने फिर चलना शुरू किया; किन्तु जिस गतिसे हम आगे बढ़ रहे थे, दिन के उजाले मे उसे देखकर मुझे विश्वास हो गया कि यदि हम सचमुच यूडाइन पहुँचना चाहते हैं, तो हमें कहीं-न-कही इस बडी सडक को छोडकर आसपास के इलाके से गुजरनेवाले किसी अन्य मार्ग का सहारा लेना पड़ेगा।

रात मे आसपास के इलाको से आनेवाले रास्ते से बहुत-से किसान अपनी गाड़ियॉ लेकर हमारी इस लम्बी कतार मे शामिल हो गए थे। उन गाड़ियो मे उनकी गृहस्थी का सामान लदा था। गाडियो में लगी चटाइयो के बीच से कहीं-कहीं कुछ दर्पण बाहर निकलकर दिन की रोशनी में चमक रहे थे। कुछ गाड़ियो मे मुर्गी के बच्चे और बत्तखे बँधी हुई थीं। हमारी मोटर के आगे-वाली गाडी मे एक कपडा सीने की मशीन रखी-रखी भीग रही थी। किसानो ने अपनी बहुमूल्य वस्तुओ को ही सँभालकर रखा था। कुछ गाडियो में वर्षा की बौछारो से अपने-आपको बचाती हुई औरते एक-दूसरे से सटकर बैठी थीं। कुछ स्त्रियॉ गाड़ियों के साथ-साथ पैदल चल रही थीं। वे यथासम्भव गाड़ियो के जितने पास हो सकता था, उतने पास ही रहती थी। हमारे इस काफ़िले में कुछ कुत्ते भी आ गए थे, जो गाड़ियो के नीचे, उन्ही के साथ-साथ आगे बढ़ रहे थे। रास्ता कीचड़ से भर गया था। बगल की खाइयॉ पानी से लबालब भर गयी थीं। उनसे परे रास्ते के दोनो ओर पक्ति-बद्ध खड़े हुए वृक्ष तथा खेत बहुत गीले दिखायी दे रहे थे। खेतो की जमीन इतनी नरम हो गयी थी कि उसे पार करने का प्रयत्न करना दुःसाहस प्रतीत होता था। मैं मोटर से नीचे उतरा और पैदल ही सड़क पर आगे बढते हुए किसी ऐसे स्थान को खोजने लगा, जहॉ सुविधापूर्वक खड़ा होकर मै आसपास का कोई ऐसा उपमार्ग ढूँढ़ निकालूँ, जिस पर चलकर हम उस प्रदेश को पार कर ले।

मैं जानता था कि उस इलाके में बहुत-से उपमार्ग थे; किन्तु मै ऐसा रास्ता नहीं अपनाना चाहता था, जिस पर चलकर हम लोग कहीं के न रहें। उस इलाके से हम लोग पहले भी कई बार निकल चुके थे। किन्तु जब भी हम निकले थे, तब बड़ी सड़क पर मोटर में तीव्र गति से जाते हुए ही हमने उस इलाके को पार किया था। और ऐसी हालत में स्वभावतः ही उन उपमार्गों को हम शीघ्रता से पीछे छोड़ते जाते थे। वे सब एक-से ही दिखाई देते थे और उनके

विषय में मुझे कुछ भी याद नहीं था। पर मै जानता था कि यदि हमें यहाँ से निकलना है, तो कोई अन्य मार्ग ढूँढना ही पडेगा। आस्ट्रियन सेना इस समय कहाँ थी, इसका किसी को पता नही था। यह भी कोई नहीं जानता था कि अभी कहाँ क्या हो रहा था, किन्तु यह निश्चित था कि यदि वर्षा बन्द हो गई और हमारी इस सैन्य-पक्ति पर दुश्मन के वायुयानो ने आकर बमबारी शुरू कर दी, तो सब-कुछ समाप्त हो जायेगा। उस सडक पर सवारियो का आना-जाना बिलकुल ठप कर देने के लिए केवल इतना ही पर्याप्त था कि कुछ चालक अपनी मोटरे छोड़कर भाग जाये अथवा कुछ घोड़े मार डाले जाये।

वर्षा मे अब उतना जोर नही रहा था और मेरा अनुमान था कि कुछ समय बाद ही वर्षा बद हो जाएगी। मै सड़क के किनारे-किनारे आगे बढता गया और अन्त मे, एक उपमार्ग के पास पहुँच कर रुक गया। वह छोटी-सी सड़क उत्तर की ओर जाती थी। दो खेतो के बीच से गुजरते हुए इस रास्ते के दोनो ओर झाड़ियाँ थी। मैने इसी रास्ते से जाना उचित समझा और बड़ी तेजी से अपनी मोटरो की ओर लौटा। पिआनी से मैने उस रास्ते पर मोटर घुमाने के लिए कहा और बोनेलो तथा आय्मो को भी यही आदेश देने के लिए उनकी ओर बढ गया।

"यदि उस सड़क के जरिये हम किसी निश्चित दिशा मे आगे नही बढ़ सके, तो हम फिर पीछे लौटकर इसी कतार मे मिल जायेगे।" मैने कहा।

"इनका क्या होगा?" बोनेलो ने पूछा। उसके पास ही सीट पर उसके दो सार्जेट साथी बैठे हुए थे। यद्यपि उन्होने अपनी दाढियाँ नही बनाई थी, पर सुबह के उस उजाले मे वे सेना के आदमियो की तरह ही दिखाई दे रहे थे।

"मोटरो को धक्का देते समय इनसे हमे सहायता मिलेगी।" मैने कहा। फिर मै आय्मो के पास पहुँचा और उसे भी अपना निश्चय बता दिया।

"मेरे इस 'कुमारी-परिवार' का क्या होगा तब?" आय्मो ने पूछा। दोनो लड़कियाँ सो रही थी।

"इनसे हमें कोई मदद नहीं मिलेगी।" मै बोला—"तुम्हे अपनी मोटर मे किसी ऐसे व्यक्ति को बैठाना था, जो जरूरत पड़ने पर मोटर ढकेल सकता।"

"ये मोटर मे पीछे की ओर तो बैठी रह सकती है।" आय्मो ने कहा—"भीतर काफ़ी जगह है।"

"यदि तुम इन्हे अपने साथ रखना चाहते हो, तो मुझे कोई आपत्ति नही।" मै बोला—"पर मोटर ढकेलने के लिए किसी चाड़ी पीठ वाले व्यक्ति को भी बैठा लो, तो अच्छा रहेगा।"

"किसी इटालियन निशानेबाज को।" आयमो मुस्कराया—"उन्हीं की पीठ सबसे चौड़ी होती है। वे उसे नापा करते हैं। आपकी तबीयत कैसी है, लेफ्टिनेंट साहब?"

"बहुत अच्छी और तुम कैसे हो?"

"बिलकुल ठीक। हॉं, भूख बहुत लगी हैं।"

"उस मार्ग पर आगे चलकर हमे कही-न-कहीं कोई स्थान अवश्य मिलेगा। वहीं ठहरकर हम कुछ खा-पी लेगे।"

"आप का पैर कैसा है, साहब?"

"ठीक है।" मैंने कहा और गाड़ी के पॉवदान पर खड़े होते हुए, ऊपर सिर उठाकर सामने की ओर देखा। पिआनी की मोटर कतार से बाहर निकलकर उस छोटी सडक पर पहुॅच चुकी थी और आगे बढ रही थी। पत्रविहीन झाड़ियो के बीच से निकलती हुई वह मोटर पथ-प्रदर्शन कर रही थी। बोनेलो ने अपनी मोटर घुमायी और उसके पीछे चल पड़ा। उसी के पीछे आयमो ने भी अपनी राह बनाते हुए उनका अनुसरण किया। झाड़ियो के बीच से गुज़रने वाले उस सकरे पथ पर अग्रसर होती हुई उन दो एम्बुलेन्सो के पीछे हमारी मोटर भी चल रही थी। पर वह रास्ता खेत में बने हुए एक घर के निकट पहुॅच कर खत्म हो गया। हमने देखा कि पिआनी और बोनेलो वहीं खलिहान में ठहर गए थे। घर नीचा, किन्तु लम्बा था। उसके दरवाज़े पर बेलो को ऊपर चढाने के लिए लकडी की एक जाली बनी थी और उस पर अंगूर की बेल फैली थी। आगन मे एक कुऑ था। रेडिएटर मे पानी भरने के लिए पिआनी कुऍ से पानी खींच रहा था। काफ़ी समय तक मद गति से चलने के कारण मशीन बड़ी गर्म हो गयी थी। मैंने पीछे मुड़कर उस सड़क पर एक दृष्टि डाली। खेत मे बना वह घर एक ऊँची जगह पर था। वहॉं से हम आस-पास के इलाके को स्पष्ट देख सकते थे। मैंने सड़क पर नजर घुमायी, झाड़ियो को देखा, खेतो पर ऑखे दौड़ायी और बड़ी सड़क के दोनो ओर के वृक्षों की कतारो को देखता रहा। वृक्षो की उन कतारो के बीच, सड़क पर सैन्यदल का वह काफ़िला धीरे-धीरे रेंगता दिखायी दे रहा था। दोनो सार्जेण्ट घर मे से बाहर की ओर झॉक रहे थे और लड़कियॉं जाग गयी थीं। उन्होने एक बारगी चारो ओर दृष्टि दौड़ाई। आंगन को देखा। कुऍ पर नज़र डाली और घर के सामने खड़ी हुई दो एम्बुलेन्स मोटरों और कुऍ पर खड़े हुए तीनो मोटर-चालको को देखा। इसी बीच एक सार्जेण्ट एक दीवार-घड़ी लेकर उस घर से बाहर आया।

"इसे वापस अपने स्थान पर रख आओ।" मैंने कहा। उसने मुझे देखा, घर के भीतर गया और उसे रखकर लौट आया।

"तुम्हारा साथी कहाँ है?" मैंने पूछा।

"वह शौच के लिए गया है।" कहकर वह मोटर मे बैठ गया। उसे भय था कि कही हम उसे वहीं छोडकर आगे न चल दे।

"नाश्ते के सम्बन्ध मे आपका क्या विचार है, लेफ्टिनेण्ट साहब?" बोनेलो ने पूछा—"यदि हम थोडा-बहुत खा-पी लेते, तो अच्छा होता। इसमे कोई अधिक समय भी नहीं लगेगा।"

"यह सड़क, जो घर के दूसरी ओर से आगे चली गई है, हमे कहीं पहुँचा सकेगी या नहीं? क्या खयाल है तुम्हारा?"

"क्यो नहीं!"

"अच्छा। तो चलो, नाश्ता कर ले।" पिआनी और बोनेलो घर के भीतर चले गये।

"चलो, उतरो।" आय्मो ने लड़कियो से कहा। उसने उन्हें नीचे उतरने में सहायता देने के लिए अपना हाथ बढाया, पर बड़ी लडकी ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। वे उस सूने घर मे जाने के लिए तैयार नहीं थी। उन्होंने जिज्ञासा-भरी दृष्टि से हमारी ओर देखा।

"इनसे निबटना बड़ा कठिन है।" आय्मो बोला और हम सब लोग साथ-साथ घर मे घुसे। उस लम्बे और अंधेरे घर मे—काफी दिनों से खाली रहने के कारण उत्पन्न—एक गहरे सूनेपन की भावना व्याप्त थी। बोनेलो और पिआनी रसोईघर मे व्यस्त थे।

"यहाँ खाने-पीने के लिए कुछ खास नहीं है।" पिआनी ने कहा—"घर के लोग पहले ही सब समाप्त करके गये हैं।"

तभी बोनेलो पनीर का एक बड़ा सफेद टुकड़ा ले आया और रसोईघर की वजनदार मेज पर रखकर उसे काटने लगा।

"यह पनीर का टुकड़ा कहाँ मिला?"

"तहखाने मे। पिआनी शराब और सेव भी ढूँढ लाया है।"

"तब तो हमे काफी अच्छा नाश्ता मिल गया।"

पिआनी सींक की जाली से ढँके हुए शराब के एक बड़े पात्र मे लगे डाट को खोल रहा था। उसने उस पात्र को तिरछा करते हुए तांबे के एक बरतन को शराब से लबालब भर लिया।

"गध तो अच्छी आ रही है।" वह बोला—"बारटो, कुछ गिलास वगैरह ढूँढ़ो दोस्त!"

इसी समय दोनों सार्जेण्ट भी भीतर आए।

"थोडा पनीर खाइए, सार्जेण्ट साहब।" बोनेलो ने कहा।

"हमें, अब चल देना चाहिए।" पनीर का टुकड़ा चबाते हुए और शराब का घूँट लेते हुए एक सार्जेण्ट बोला।

"हाँ साहब, चलेंगे। आप चिन्ता मत कीजिए।" बोनेलो ने उत्तर दिया।

"सेना तो पेट के सहारे चलती है।" मैंने कहा।

"मै समझा नहीं!" सार्जेण्ट ने कहा।

"मेरा मतलब है कि चलने के पहले खा-पी लेना अच्छा है।"

"हाँ, किन्तु समय बहुत कीमती है।"

"मेरे खयाल से ये हरामखोर पहले ही अपना पेट भर चुके हैं।" पियानी बोला। दोनो सार्जेंटो ने उस की ओर देखा। वे हम लोगो से घृणा करते थे, यह निश्चित था।

"आपको रास्ता मालूम है?" उनमें से एक ने मुझसे प्रश्न किया।

"नही!" मैंने उत्तर दिया और वे दोनो एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

"तब तो सबसे अच्छा यही होगा कि हम अब अविलम्ब चलना शुरू कर दें।" एक सार्जेंट ने कहा।

"बस, चलते ही हैं अब।" मैंने ज़वाब दिया और उस लाल शराब की एक और प्याली खाली कर दी। पनीर के टुकड़े और सेव के साथ शराब बहुत अच्छी लगी।

"पनीर साथ ले चलो।" कहते हुए मै बाहर आ गया। हाथ में शराब का वह बड़ा-सा बर्तन लिए बोनेलो भी मेरे पीछे-पीछे बाहर निकाला।

"यह तो बहुत बड़ा है।" मैंने कहा। उसने बडी खिन्नता से उसकी ओर देखा।

"मै भी यही सोच रहा था।" उसने उत्तर दिया—"कृपया मुझे पानी भर कर ले चलनेवाली कुप्पियाँ दे दीजिये। मै उनमें यह शराब भर लेता हूँ। उसने सब कुप्पियो में शराब भर ली। कुप्पियो में शराब भरते समय नीचे जमीन पर भी कुछ शराब गिर गई। बोनेलो ने कुप्पियाँ भर जाने के बाद वह बड़ा-सा मद्यपात्र द्वार के भीतर की ओर रख दिया।

"अब बिना दरवाज़ा तोड़े ही आस्ट्रियनो को यह शराब मिल जायेगी।" वह बोला।

"अच्छा चलो, अब चले।" मैने कहा— "मै पिआनी की मोटर में आगे-आगे चलूँगा।" दोनो सार्जेण्ट पहले ही बोनेलो के पास की सीट पर बैठ चुके थे। लड़कियाँ पनीर और सेव खा रही थी और आय्मो धूम्रपान कर रहा था। हमने उस संकरे पथ पर आगे बढ़ना आरम्भ किया। मुड़कर मैने अपने पीछे आती हुई दोनो मोटरो को देखा और खेतो के बीच बने उस घर पर भी अंतिम दृष्टि फेकी। नीची छत वाला वह घर बडा सुन्दर दीख रहा था और ठोस पत्थरों की उसकी बनावट बड़ी आकर्षक थी। कुएँ पर किया गया लोहे का काम भी बहुत सुंदर दीख रहा था। हमारे सामने, दोनो ओर ऊँची-ऊँची झाड़ियों से घिरा हुआ संकरा और कीचड से भरा रास्ता था और पीछे, हमारा अनुसरण करने वाली मोटरे!

• २९ •

दोपहर को हम एक जगह कीचड मे बुरी तरह फँस गये। जहाँ तक मै दूरी का अनुमान लगा सकता था, उस समय हम लोग यूडाइन से प्रायः छः मील दूर थे। वर्षा दोपहर से पहले ही बन्द हो चुकी थी और इस समय तक हम तीन बार वायुयानो के आने का स्वर सुन चुके थे। वे हमारे सिर पर से उड़ते हुए बायीं ओर बड़ी दूर तक चले जाते और कुछ ही क्षणो बाद हमे उस ऊँचे बड़े रास्ते पर बमों के गिरने की आवाज सुनाई देती। हम कई उपमार्गों से होते हुए ही इतनी दूर आ सके थे। अपने इस सकटपूर्ण प्रयास मे हमने अनेक ऐसे पथो का अनुसरण भी किया था, जो आगे चलकर बिलकुल धोखे की टट्टियाँ सिद्ध हुए थे। वे थोड़ी दूर तक जाकर अचानक विलीन हो जाते और हम पीछे लौट कर किसी दूसरे रास्ते पर चल देते। इसी प्रकार चलते-चलाते हम यूडाइन के इतने पास आ पहुँचे थे और अब एक ऐसे ही लुप्तप्राय मार्ग से पीछे हटने के प्रयास में आय्मो की मोटर एक ओर से, पोली मिट्टी में नीचे धँस गई थी। अपनी जगह पर घूमते हुए उसके पहिए मिट्टी मे भीतर-ही-भीतर धँसते चले गये और अन्त में जब धुरी जमीन से आकर लग गयी, तब उनका घूमना बन्द हो गया। इस सकट से मुक्त होने का केवल एक ही मार्ग था और वह था पहियों के सामने की धरती खोदकर वहाँ झाड़-झंखाड़ बिछा देना, जिससे वे साँकलो की पकड़ में आ सके। उसके बाद ही हम मोटर को ढकेलकर उस

कीचड से बाहर निकाल सकते थे। सडक पर उतरकर हम सब मोटर के चारों ओर खडे हो गए। दोनो सार्जेंटो ने मोटर को देखा और उसके पहियो की जॉच की। और तब, एक शब्द भी बोले बिना वे चुपचाप सड़क पर आगे बढने लगे। मैने उन्हे आवाज दी।

"इधर आओ और कुछ झाडियॉ काटकर ले चलो।"

"हमे जाना है।" उनमे से एक बोला।

"काम करो—" मै झल्लाया—"चलो, काटो झाडियॉ।"

"किन्तु हम यहॉ से जाना चाहते है।" वही व्यक्ति पुनः बोला। दूसरा चुपचाप खडा था। वे वहॉ से भागने की जल्दी मे थे और मेरी ओर ऑखे उठाकर देखना भी नहीं चाहते थे।

"मै तुम्हे मोटर तक वापस लौटने और झाडियॉ काटने का आदेश देता हूॅ।" मै बौखला उठा। पहला सार्जेण्ट मेरी ओर मुड़ा और बोला—"हमे आगे जाना है। यहॉ रुकने से, थोडी देर बाद ही आप लोग मारे जायेगे। आप हमे आदेश नहीं दे सकते। आप हमारे अफसर नहीं है।"

'लौटो और झाडियॉ काटो—यह मेरा आदेश है।" मैने जोर देक कहा। वे घूमे और आगे बढते गये।

"रुक जाओ, मै कहता हूॅ।" मै चिल्लाया। पर वे दोनो ओर झाडियो से घिरी हुई उस कीचड भरी सड़क पर चलते ही गये। "मै तुम्हे रुक जाने को कह रहा हूॅ—रुको!" मै जोर से चिल्लाया। वे कुछ तेजी से चलने लग। मैने अपनी पिस्तौल की पेटी खोली, पिस्तौल निकाली और सार्जेण्ट पर निशाना साधकर गोली दाग दी। निशाना चूक गया और उन दोनो ने भागना शुरू कर दिया। मैने लगातार तीन बार गोलियॉ चलायी। एक सार्जेण्ट गिर गया। दूसरा अपनी जान बचाने के लिए झाडियो मे भाग खडा हुआ और ऑखो से ओझल हो गया। ज्योही वह निकलकर खेत मे भागने लगा, मैने उस पर भी गोली चलायी। किन्तु इसबार पिस्तौल केवल 'खट्' की आवाज करके रह गई। वह खाली हो चुकी थी। मैने उसमे दुबारा गोलियॉ भरी, लेकिन तब तक वह सार्जेण्ट काफी दूर निकल चुका था और इतनी दूर से उसे अपना निशाना बनाने मे मै असमर्थ था। वह अपना सिर झुकाये बडी दूर, खेतो मे, प्राण लिये भागा जा रहा था। मै खड़ा-खडा खाली क्लिप मे गोलियॉ डालने लगा। इसी बीच बोनेलो आ पहुॅचा।

"लाइए। मै उसे खत्म किये आता हूॅ।" वह बोला। मैने उसे अपनी

पिआनी और बोनेलो की मोटरे उस सकरे पथ पर केवल आगे की ओर सीधी चल सकती थी। हमने दोनो मोटरो को रस्सी से बॉध कर रस्सी कीचड़ मे धॅसी उस मोटर से बॉध दी और खीचना आरम्भ किया। उसके पहिए सड़क की लकीर के विरुद्ध केवल बगल में मुड गये, पर मोटर टस-से मस न हुई।

"कोई लाभ नहीं।" मै चिल्लाया—"बन्द करो। मत खीचो।"

पिआनी और बोनेलो अपनी मोटरो से उतरकर मेरे पास लौट आए। आयूमो भी नीचे उतर आया। लडकियॉ सड़क के किनारे हमसे करीब चालीस गज दूर, एक पत्थर की दीवार पर बैठी थीं।

"कहिए, अब क्या आदेश है, लेफ्टिनेण्ट साहब?" बोनेलो ने पूछा।

"हम थोडी जमीन और खोदकर और टहनियॉ बिछाकर एक प्रयास और करेगे।" कहते हुए मैने सडक पर दृष्टि डाली। अपराध वस्तुतः मेरा ही था। मै ही सब लोगो को वहॉ तक लाने के लिए उत्तरदायी था। आकाश मे बादल फट चुके थे। सूर्य खुले आकाश मे चमकने लगा था। सार्जेण्ट का मृत शरीर झाडियों के पास पड़ा था।

"हम उस सार्जेण्ट का कोट और लबादा पहियो के पास डाल देंगे।" मैने कहा। बोनेलो उन्हें लाने के लिए उधर चला गया। मै झाड़ियॉ काट-काट कर लाने लगा। आयूमो और पिआनी सामने तथा पहियो के दोनो ओर गढे खोदने लगे। कोट और लबादा आ जाने पर मैने लबादे को फाड़कर उसके दो टुकड़े कर लिए। उन टुकडो को मैने पहियो के निकट, कीचड़ मे बिछा दिया और उनके ऊपर टहनियॉ जमा दी, जिससे पहिए बिना विशेष दिक्कत के राह पकड़ सके। हम अपना प्रयास प्रारम्भ करने के लिए फिर से तैयार हो गये। आयूमो ड्राइवर की सीट पर जाकर बैठ गया और उसने इजन शुरू किया। पहिए एक बार फिर अपने स्थान पर घूमने लगे। हमने मोटर को धक्का दे-दे कर निकाल ने की जी तोड कोशिश की, किन्तु इस बार भी हमारा प्रयास निष्फल रहा।

"यह तो जैसे यहीं की हो गई।" हारकर मैं बोला—"क्या इसमे कोई ऐसी चीज है बारटो, जिसकी तुम्हे जरूरत हो?"

आयूमो पनीर, शराब की दो बोतले तथा अपना लबादा लेकर बोनेलो के साथ उसकी मोटर मे जा बैठा। बोनेलो स्टीअरिग ह्वील के पीछे बैठ गया और सार्जेण्ट के कोट की जेबों की तलाशी लेने लगा।

"उस कोट को यहीं फेक देना उचित है।" मैने कहा—"अरे, हॉ! बारटो की उन दो कुमारियो का क्या होगा?"

"वे पीछे की ओर बैठ सकती हैं।" पिआनी ने उत्तर दिया।

"मेरा खयाल है कि अब हम लोग ज्यादा दूर नही जा पायेंगे।"

मैने एम्बुलेन्स के पीछे का दरवाजा खोला।

"आओ—" मैने कहा—"बैठ जाओ भीतर।" दोनो लडकियॉ भीतर एक कोने मे बैठ गयी। ऐसा प्रतीत होता था कि सार्जेंट पर मैने जो गोलियॉ चलायी थी, उसका उन पर कोई प्रभाव नही पडा था। मैंने पीछे की ओर सडक पर नजर दौडायी। लम्बी बॉहोवाली मैली बनियाइन मे लिपटी हुई सार्जेण्ट की मृत देह उसी स्थान पर पडी थी। मै पिआनी की मोटर मे चढ गया और हम लोग आगे बढने लगे। हमारा इरादा सामने के खेत को पार कर जाने का था। सडक जब खेत मे उतर गयी तो मै भी मोटर से उतरकर आगे-आगे चलने लगा। यदि हम खेत पार कर लेते, तो उसके दूसरी ओर हमे एक और सडक मिल सकती थी। किन्तु हम खेत को पार नही कर सके। उसकी ज़मीन इतनी पोली और कीचड से भरी थी कि उसमे से मोटरे नहीं जा सकती थीं। अन्त मे, जब मोटरे कीचड मे पूरी तरह फँसकर खडी हो गयी और उनके पहिए धुरी तक कीचड मे धँस गये, तो हमने उन्हे वहीं छोड दिया और पैदल ही यूडाइन की ओर चल पडे।

जब हम उस सडक पर पहुँचे, जो बडी सडक की ओर जाती थी, तो मैने उन दोनो लडकियो से उस रास्ते की ओर इशारा करते हुए कहा—

"इस राह से आगे चली जाओ। तुम्हे अपने आदमी मिल जायेंगे।" उन्होंने मेरी ओर देखा। मैने अपनी पाकेटबुक निकाली। उसमे से दस लिरा का एक-एक नोट निकालकर उन्हे दिया और हाथ से इशारा करते हुए कहा—"सीधी इसी ओर चली जाओ। मित्र या परिवार के लोग—कोई-न-कोई तुम्हे मिल ही जायेगा।"

उन्हे मेरी बात समझ मे नहीं आई। फिर भी उन्होंने पैसा ले लिया और सडक पर मेरी बतायी हुई दिशा मे चल पडीं। जाते-जाते उन्होने मेरी ओर घूमकर इस तरह देखा, मानो उन्हे भय था कि मै अपना पैसा कहीं वापस न ले लूँ। मै उन्हे सड़क पर जाते हुए देखता रहा। वे अपने दुशालो को कसकर लपेटे हुए थीं और बीच-बीच मे मुड कर हमे शकाभरी दृष्टि से देखती जा रही थीं। तीनो ड्राइवर उनके इस व्यवहार पर हॅस रहे थे।

"यदि मै भी उसी ओर जाऊँ, तो आप मुझे क्या देंगे, लेफ्टिनेण्ट साहब?" बोनेलो ने पूछा।

"यदि वे शत्रु के हाथो मे पड़ गईं, तो अकेली पकडी जाने की अपेक्षा उनका कुछ आदमियो के साथ रहना ज्यादा अच्छा रहेगा—" मैने कहा।

"यदि आप मुझे दो सौ लिरे दे, तो इसी क्षण मै सीधा आस्ट्रिया जाने को तैयार हूँ।" बोनेलो ने कहा।

"आस्ट्रियन तुमसे सब पैसा छीन लेगे।" पिआनी बोला।

"हो सकता है, युद्ध ही खत्म हो जाये।" आयमो ने कहा। हम सडक पर शक्ति-भर तेजी से चल रहे थे। सूर्य रह रह कर बादलो के बीच से झाँकने का प्रयत्न कर रहा था। सडक के पास ही शहतूत के पेड़ थे। पेडो के बीच से मुझे अपनी वे दो मोटरे, जो खेत मे फँस गयी थी, स्पष्ट दिखाई दे रही थी। पिआनी भी मुड–मुड़ कर, उन्हे देखता जा रहा था।

"उन मोटरो को वहाँ से निकालने के लिए अधिकारियो को पक्का रास्ता बनवाना पडेगा।" वह बोला।

"काश ! हमारे पास साइकिले होतीं।" बोनेलो ने कहा।

"क्या अमेरिका मे लोग साइकिल चलाते हैं ?" आयमो ने प्रश्न किया।

"पहले चलाते थे, अब नहीं।"

"यहाँ तो यह बडी भारी बात समझी जाती है।" आयमो बोला—"साइकिल सचमुच बडी सुन्दर चीज है।"

"काश ! हमारे पास साइकिले होती।" बोनेलो ने दुहराया—"मुझे पैदल चलने की आदत नहीं है।"

"यह क्या गोली चलने की आवाज है ?" मैने पूछा।

दूर कहीं मुझे गोली चलने-जैसी आवाज सुनाई दे रही थी।

"कह नहीं सकता।" आयमो ने कहा और कान लगाकर सुनने लगा।

"मै समझता हूँ कि कही गोलियाँ अवश्य चल रही ह।" मैने कहा।

"यदि शत्रुदल आ रहा होगा, तो सबसे पहली वस्तु जो हमे दिखाई देगी, वह होगी अश्वारोहियो की सेना।" पिआनी बोला।

"मेरे खयाल से शत्रु के पास अश्वारोही-दल है ही नही।"

"ईश्वर करे, ऐसा ही हो।" बोनेलो ने कहा—"मै किसी अश्वारोही के भाले की नोक पर लटकना नहीं चाहता।"

"आपने तो सचमुच उस सार्जेण्ट पर गोली चला दी, साहब।" पिआनी बोला। हम लोग तीव्र गति से चलते जा रहे थे।

"और मैने उसे मार डाला—" बोनेलो ने कहा—"मैने इस युद्ध मे

किसी को नहीं मारा था। मेरे जीवन की केवल एक ही साध थी और वह थी, किसी सार्जेण्ट की जान लेना।"

"पर तुमने उसे उस समय मारा, जब वह बेचारा आहत होकर स्थिर पड़ा था।" पिआनी बोला—"तुमने जब गोलियाँ चलायीं, तब वह तेजी से भाग थोड़े ही रहा था।"

"तो क्या हुआ। कम-से-कम इस बात पर तो मै गर्व कर ही सकता हूँ—कि मैंने उस सार्जेण्ट के—को मार डाला।"

"अपने पापो की स्वीकारोक्ति के समय तुम क्या कहोगे?" आय्मो ने पूछा।

"कहूँगा, हे धर्मपिता! मुझे आशीर्वाद दो, क्योकि मैंने एक सार्जेण्ट को मार डाला है।" हम सब हँस पड़े।

"बोनेलो तो अराजकतावादी है।" पिआनो बोला—"गिरजाघर मे भी नहीं जाता यह।"

"पिआनी भी अराजकतावादी है।" बोनेलो ने उत्तर दिया।

"क्या तुम लोग सचमुच अराजकतावादी हो?" मैंने पूछा।

"नहीं, लेफ्टिनेण्ट साहब, हम तो समाजवादी हे। हम लोग इमोला के रहने वाले है।"

"क्या आप कभी वहाँ गये है?"

"नही।"

"ईश्वर की सौगन्ध, बड़ा सुन्दर स्थान है वह! युद्ध का अन्त होने पर आप वहाँ कभी जरूर आइये। हम आपको वहाँ की कुछ विशेषताओ से परिचित करायेंगे।"

"क्या तुम्हारे यहाँ के सभी व्यक्ति समाजवादी है?"

"प्रत्येक व्यक्ति।"

"और शहर कैसा है?"

"आश्चर्यजनक! आपने आज तक उस-जैसा शहर नहीं देखा होगा।"

"तुम लोग समाजवादी कैसे बन गये?"

"हम सब है ही समाजवादी। हमारे यहाँ का एक-एक बच्चा समाजवादी है। हम लोग हमेशा से ही समाजवादी रहे हैं।"

"आप कभी वहाँ अवश्य आइए, साहब! हम आपको भी समाजवादी बना देगे।"

सड़क अचानक बायीं ओर मुड गई। सामने की ओर एक पहाडी थी और उसके आगे थी एक दीवार तथा सेब का बगीचा। सडक ज्यों ज्यों पहाड़ी पर चढती गयी, त्यों-त्यों हमारी बातचीत कम होती गई और अन्त मे बिलकुल बन्द हो गई। हम लोग जल्दी-जल्दी तीव्र गति से भागने वाले समय से मानो होड़ लगाते हुए एक साथ आगे बढ़ते चले गए।

. ३० .

चलते चलते हम एक ऐसे रास्ते पर पहुँचे, जो किसी नदी की ओर जा रहा था। राह पर मोटरो तथा ट्रको की एक लम्बी कतार थी, जो नदी के पुल तक चली गई थी। पर एक भी आदमी हमे कहीं नही दीख पडा। नदी मे बाढ आई थी और उसका पुल बीच से उड़ा दिया गया था। पत्थर का वह कमानीदार पुल टूटकर नदी मे गिर गया था और उस पर से मटमैला पानी लहराता हुआ बह रहा था। हम नदी-तट पर पहुँचे और किसी ऐसे स्थान की खोज करने लगे, जहाँ से हम उस पार जा सके। मुझे मालूम था कि नदी के ऊपर की ओर एक रेलवे पुल था। कदाचित् वहाँ से हम नदी पार कर सके। रास्ता गीला और कीचड़ से भरा था। हमे वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया। केवल मोटरे और ढेर-सा सामान ही वहाँ पड़ा था। नदी-तट पर भी कुछ नही था। कुछ झाडियो और कीचड-भरे मैदान को छोडकर वहाँ दूर तक, किसी मनुष्य की गध भी नही थी। नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर चलते हुए अन्त मे हमे रेल का वह पुल दिखाई दे गया।

"कितना सुन्दर पुल है!" आयमो ने कहा। इस स्थान पर नदी प्रायः सूख सी गयी थी और उस पर लोहे का एक लम्बा पुल बना था।

"जल्दी करो। शत्रु द्वारा इस पुल के उड़ाए जाने के पहले ही हमे उस पार पहुँच जाना चाहिए।" मैने कहा।

"पुल उडाने के लिए अब यहाँ कोई नही है।" पिआनी बोला—"सब लोग यहाँ से जा चुके हैं।"

"इस पर शायद सुरगे बिछा दी गयी हैं।" बोनेलो ने कहा—"पहले आप पुल पार कीजिए, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"जरा, इस अराजकतावादी की बाते तो सुनो।" आयमो ने कहा—"पहले इसे ही जाने दीजिए, साहब!"

"नहीं, पहले मै ही जाता हूँ।" मैने कहा—"केवल एक आदमी के साथ सारा पुल उडा देने के लिए उस पर सुरगे नहीं बिछायी गयी होगी।"

"देखा तुमने—" पिआनी बोला—"इसे कहते है दिमाग! तुम अराजकतावादियो के दिमाग क्यो नहीं होता?"

"यदि मेरे दिमाग होता, तो मै आज यहाँ नही होता।" बोनेलो ने उत्तर दिया।

"बात तो इन्होने बडी अच्छी कही, साहब!" आयूमो बोला।

"हाँ, है तो अच्छी बात।" मैने कहा। अब हम पुल के बिलकुल पास पहुँच चुके थे। उधर आकाश मे फिर बादल उमड आये थे। थोडी वर्षा भी आरम्भ हो गई थी। पुल काफी लम्बा और ठोस दिखाई दे रहा था। हम ऊपर की ओर चढने लगे।

"एक बार मे एक ही व्यक्ति आओ।" कहते हुए मै पुल पर आगे बढने लगा। मैने बिछे हुए तारो अथवा विस्फोटक का पता लगाने के लिए रेल की पटरियो और उनके स्लीपरो को अच्छी तरह देखा, किन्तु मुझे कही कुछ नही दिखाई दिया। स्लीपरो की सधि के नीचे, कीचड से भरी नदी का मटमैला पानी तेजी से बह रहा था। वर्षा से नहाये हुए आसपास के इलाके के उस ओर हमारे सामने, पानी मे भीगता हुआ यूडाइन नगर दिखायी दे रहा था। पुल पार करने के बाद मैने पीछे की ओर देखा। नदी के ऊपर की ओर कुछ ही दूर पर एक दूसरा पुल भी था। मै उसे देख ही रहा था कि इतने मे कीचड मे रगी पीले रग की एक मोटर उस पर से निकल गयी। पुल के दोनो किनारे ऊँचे थे, अतः वह मोटर, ऊपर चढते ही पुल के बीच ओझल-सी हो गयी। मै केवल उसके ड्राइवर तथा उसके साथ बैठे हुए व्यक्ति के सिर देख सका। पीछे की सीट पर बैठे हुए दो अन्य व्यक्तियो के सिर भी मुझे दिखायी दिए। उन सबने लोहे के जर्मन टोप पहन रखे थे। कुछ क्षण बाद ही वह मोटर पुल पार करके एक झलक के साथ पुनः घने वृक्षो के पीछे तथा सडक पर पडी हुई मोटरो की उस लम्बी कतार के बीच गायब हो गई। पुल पार करते हुए आयूमो तथा अन्य साथियो को मैने जल्दी आने के लिए इशारा किया। फिर मै नीचे उतरा और पुल के बगल मे झुककर बैठ गया। आयूमो भी नीचे आया और मेरे पास ही छिप गया।

"तुमने वह मोटर देखी?" मैने पूछा।

"नही! मै तो आपको देख रहा था।"

"उस ऊपर के पुल से अभी-अभी जर्मन-सैन्य-कर्मचारियो की मोटर गुजरी है।"

"सैन्य कर्मचारियो की मोटर?"

"हाँ।"

"तब भगवान् ही मालिक है!"

दूसरे साथी भी आ पहुँचे और हम सबने पुल के नीचे, कीचड मे, झुककर अपने-आपको छिपाए रखा और पुल पर बिछी हुई रेल की पटरियो, एक कतार मे खडे वृक्ष, खाइयों तथा सडक को देखते रहे।

"आप क्या सोचते है? क्या हम मारे जायेग?"

"कह नहीं सकता। अभी तो मैं केवल इतना ही जानता हूँ कि उस सड़क पर से जर्मन सैन्य-कर्मचारियो की एक मोटर गयी है।"

"क्या आपको यह सब अजीब सा नहीं लगता? क्या आपके दिमाग मे कोई विचित्र-सी कल्पना नहीं उठती?"

"पागल मत बनो, बोनेलो!"

"हम अगर थोडी शराब पी ले, तो कैसा रहेगा?" पिआनी ने कहा—"यदि हमे मरना ही है, तो उसके पहले थोडी शराब ही क्यो न पी ले!" उसने अपनी कुप्पी निकाली और उसका ढक्कन खोला।

"देखो! देखो!" कहते हुए आयमो ने सडक की ओर इशारा किया। पत्थर के उस पुल पर हमे जर्मनो के लोहे के टोप हिलते दिखाई दे रहे थे। वे आगे की ओर झुके हुए थे और किसी दैवी शक्ति के समान, बडी सरलता से पुल पर घूम रहे थे। ज्योंही वे पुल पार करके आगे बढे, हमने उन्हे अच्छी तरह देखा। वे सेना के साइकिल सवार-दल के सैनिक थे। मुझे अगले दो व्यक्तियो के चेहरे दिखाई दिये। दोनो व्यक्तियो के चेहरो पर लालिमा थी और वे काफी स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। उनके लोहे के टोप उनके चेहरे पर एक ओर कुछ झुके हुए थे। उनकी छोटी बन्दूके उनकी साइकिलो के डडो से बँधी हुई थी। उनके पट्टो से बमगोले लटक रहे थे और उनके लोहे के टोप और भूरी वर्दियाँ वर्षा से भीगी हुई थी। चारो ओर नजरे दौडाते हुए आराम से वे अपनी साइकिलो पर चले जा रहे थे। सबसे अगली पक्ति मे दो व्यक्ति थे। उसके पीछे की पक्ति मे चार सैनिक थे—फिर उनके पीछे दो और तब करीब एक दर्जन सैनिक। इनसे भी पीछे एक दर्जन दूसरे सैनिक थे और सबसे अन्त मे केवल एक सैनिक था। वे बिना कुछ बोले, चुपचाप चले जा रहे थे।

किन्तु यदि वे बाते करते भी, तो नदी के वेग से बहने की आवाज के कारण हमें उनकी बातचीत न सुनाई देती। धीरे-धीरे वे सड़क पर आगे बढते हुए हमारी आँखो से ओझल हो गये।

"लाख-लाख शुक्र है, तेरा भगवान्!" आयमो ने कहा।

"वे सब जर्मन थे।" पिआनी बोला—"आस्ट्रियन नहीं थे, समझे?"

"पर उन्हे रोकने के लिए यहाँ कोई है क्यो नहीं?" मैने कहा—"इस पुल को आखिर उड़ा क्यो नहीं दिया गया? फिर यहाँ पर मशीनगनें भी नही हैं?"

"आप ही बताइए, लेफ्टिनेंट साहब!" बोनेलो ने कहा।

मुझे क्रोध आ गया—"यह बिलकुल पागलपन है। नीचे की ओर हमारी सेना एक छोटा-सा पुल भी उड़ा देती है, किन्तु इस बड़ी सडक पर इतना बडा पुल योही छोड दिया गया। आखिर सब लोग कहाँ मर गये? क्या शत्रु को रोकने के लिए वे बिलकुल प्रयत्न ही नहीं कर रहे है?"

"अब आप ही कहिए, साहब!" बोनेलो ने अपनी बात दुहरायी। मैं चुप हो गया। मुझे इससे क्या लेना देना था। मेरा कार्य तो केवल उन तीनों मोटरो को लेकर पांडॅनॉन पहुॅचना था। अपने इस कार्य मे तो मै असफल हो गया था। अब केवल एक ही कार्य शेष था और वह था स्वय प डॅनॉन पहुॅचना। परन्तु वर्तमान स्थिति मे कदाचित् यूडाइन पहुॅच सकना भी कठिन था। भाग्य की बात थी। इस समय तो एक ही रास्ता था कि हम शान्त बैठे रहे और किसी की गोली का निशाना न बन जायें अथवा शत्रु द्वारा बन्दी न बना लिये जायें!

"क्यों, तुमने कुप्पी नहीं खोली क्या?" मैंने पिआनी से पूछा। उसने मुझे कुप्पी पकडा दी। खूब शराब पी लेने के बाद मै बोला—"हमे अब चल देना चाहिए। वैसे कोई ख़ास जल्दी नहीं है। क्या तुम लोग कुछ खाना चाहते हो?"

"यह स्थान अधिक देर तक ठहरने के उपयुक्त नहीं है।" बोनेलो ने कहा।

"तो फिर हम लोग यहाँ से चल दे।"

"हम लाग इसी बगल से चले न—छिपते हुए?"

"नही, ऊपर से ही चलना ठीक होगा। वे लोग इस पुल पर भी आ सकते हैं। मुझे यह पसद नही कि अचानक ही वे हमारे सिर पर चले आये और हम उन्हे देख भी न पाएँ।"

हम सब रेल की पटरियों पर आगे बढ़ते गये। दोनों ओर दूर–दूर तक वर्षा से नहाया हुआ मैदान फैला था। सामने ही, मैदान से परे, यूडाइन की पहाड़ी दिखाई दे रही थी। उस पर बने हुए किले की छतें गिर चुकी थीं, पर उसका घण्टाघर तथा उसकी मीनार भी हमें दिखायी दे रही थी। खेतों में शहतूत के बहुत-से पेड़ थे। कुछ दूर चलने पर मैंने देखा कि एक जगह रेल की पटरियाँ उखाड़ दी गयी थीं। उनके स्लीपर खोद डाले गये थे और उन्हें रेल-मार्ग से नीचे की ओर फेंक दिया गया था।

"छिप जाओ! छिप जाओ!" आय्मो चिल्लाया। हम लोग उस ऊँचे रेल-मार्ग की बगल में छिप गए। सड़क पर साइकिल-सवार सैनिकों का दूसरा दस्ता जा रहा था। मैंने सिर थोड़ा ऊपर उठाया और उन्हें जाते हुए देखने लगा।

"उन्होंने हमें देख लिया, फिर भी वे चले गए!" आय्मो ने कहा।

"हम अब निश्चय ही मारे जायेंगे, लेफ्टिनेण्ट साहब।" बोनेलो ने कहा।

"उन्हें सम्भवतः हमारी आवश्यकता नहीं है।" मैं बोला—"वे किसी और वस्तु के पीछे पड़े हैं।"

"यदि उन्होंने हमारे ऊपर अचानक आक्रमण कर दिया, तो हम किसी भारी सङ्कट में पड़ जायेंगे।"

"मैं तो यहाँ छिप कर ही चलना पसंद करूँगा।" बोनेलो ने कहा।

"अच्छी बात है। हम लोग इस रेल मार्ग के साथ-साथ चलेंगे।"

"क्या आपको विश्वास है कि हम उनसे बचकर निकल जाएँगे?" आय्मो ने पूछा।

"क्यों नहीं। अभी तक तो वे अधिक तादाद में यहाँ नहीं दिखायी देते हैं। अँधेरे में छिपते-छिपाते हम पार लग ही जायेंगे।"

"सैन्य-कर्मचारियों की वह मोटर यहाँ क्या करने आयी थी?"

"ईश्वर ही जाने!" मैंने कहा और हम रेल मार्ग पर बढ़ते गए। बोनेलो रेल-मार्ग के टीले के पीछे छिपता-छिपता बढ़ रहा था। पर कीचड़ में चलते-चलते वह अंततः थक गया और आकर हम लोगों के साथ चलने लगा। रेल-मार्ग अब दक्षिण की ओर, बड़ी सड़क से धीरे-धीरे दूर होता जा रहा था। अतः सड़क पर आने-जानेवालों को हम साफ़-साफ़ नहीं देख पा रहे थे। हमारे रास्ते में पड़नेवाली नहर के ऊपर बनाया हुआ एक छोटा-सा पुल उड़ा दिया गया था; किन्तु उसके बाँध के अवशेषों के सहारे हमने उसे पार कर लिया। सामने की ओर अब हमें गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

नहर पार करने पर हम पुनः रेल मार्ग पर चले आये। अब हम खेतों के बीच से होते हुए सीधे शहर की ओर जा रहे थे। सामने ही हमे एक दूसरा रेल-मार्ग दिखाई दिया। उत्तर की ओर हमे वह बडी सडक भी दीख पड़ी, जिस पर हमने उन साइकिल-सवारों को देखा था। दक्षिण मे, खेतो के पार, दोनो ओर घने वृक्षो से घिरा हुआ एक छोटा सा उपमार्ग था। दक्षिण की ओर मुड़कर, शहर का चक्कर लगाते हुए उस रास्ते पर आगे बढना ही मैंने ज्यादा अच्छा समझा। उसी मार्ग से आगे के इलाके को पार करते हुए, हम कम्पो-फोर्मिओ की ओर चल देते और तब बडी सडक पकड़कर सीधे टग्लिआमेण्टो पहुँच जाते। यूडाइन पार करने के बाद उपमार्गो के सहारे हम अपनी पीछे हटनेवाली सेना के उस लम्बे काफिले से बच सकते थे। मै जानता था कि उस प्रदेश मे बहुत से उपमार्ग थे। अतः यह खयाल आते ही मै रेल-मार्ग के टीले से नीचे उतरने लगा।

"मेरे पीछे चले आओ।" मै बोला—"हम लोग उस उपमार्ग द्वारा शहर के दक्षिण की ओर चलेगे।" पर हम रेल-मार्ग से नीचे उतर कर आगे बढ़े ही थे कि उधर से किसी ने हम पर गोली चलायी। गोली रेल-मार्ग के टीले की कीचड मे आकर धँस गई।

"पीछे लौट जाओ।" मै चिल्लाया और वापस टीले पर चढ़ने लगा, किन्तु कीचड़ मे फिसल पडा। वे तीनो मेरे आगे थे। किसी तरह जल्दी-जल्दी मै ऊपर चढा। घनी झाड़ियों से दो गोलियाँ छूटीं—रेल की पटरियाँ पार करता हुआ आयूमो अचानक झुका और उछलते हुए, मुँह के बल गिर पडा। हमने उसे नीचे की ओर खींच कर सीधा कर दिया।

"इसका सिर टीले के सहारे ऊपर की ओर रखो।" मैंने कहा। पिआनी ने उसे घुमाया। अभागा आयूमा टीले के एक ओर कीचड़ मे पडा था। उसके पैर नीचे लटक रहे थे। साँस लेते समय बीच-बीच मे उसके मुख से रक्त निकल पडता था। वर्षा हो रही थी, अतः हम तीनो व्यक्तियो ने एक दूसरे से सटकर उसके ऊपर थोडी छाया कर दी। उसके गले के पिछले हिस्से मे, नीचे की ओर, गोली लगी थी और भीतर धँसती हुई दाहिनी आँख के नीचे से बाहर निकल गयी थी। जब मै गोली द्वारा बने उन दोनो छिद्रो को बन्द करने की कोशिश कर रहा था, तभी वह मर गया, पिआनी ने उसका सिर नीचे लिटा दिया। सकट काल मे काम आनेवाली पट्टी के टुकडे से उसके मुख को पोछा और उसे वहीं लिटा दिया।

"हरामखोर कही के!" उस गोली चलानेवाले को सम्बोधित कर जैसे वह बड़बड़ाया।

"वे जर्मन तो नही थे।" मैने कहा—"यहाँ कोई जर्मन नहीं आ सकता।"

"नहीं इटालियन थे!" 'इटालियन' शब्द का किसी उपाधि के रूप में प्रयोग करते हुए पिआनी ने कहा—"इटालियन थे बेचारे!" बोनेलो कुछ नहीं बोला। वह आयमो की मृत देह के पास बैठा था। आयमो की ओर देखने का भी साहस उसमे नहीं था। टीले के नीचे गिरी हुई आयमो की टोपी उठाकर पिआनी ने उससे उसका मुँह ढँक दिया। फिर उसने उसकी कुप्पी निकाल ली।

"शराब पीओगे?" कुप्पी बोनेलो की ओर बढाते हुए पिआनी ने पूछा।

"ना!" बोनेलो ने उत्तर दिया। वह मेरी ओर मुड़ा—"रेल-मार्ग पर ऐसी घटना हमारे साथ कभी भी घट सकती थी।"

"नहीं।" मै बोला—"यह तो इसलिए हुआ कि हम खेत पार कर रहे थे।"

बोनेलो ने अपना सिर हिलाया—"आयमो मर गया।" वह बोला—"अब किसकी बारी है, साहब? अब हम किस ओर जायेंगे?"

"जिन्होने आयमो को मारा है, वे इटालियन ही थे।" मै बोला—"वे जर्मन नहीं थे।"

"मेरा अनुमान है कि यदि वे जर्मन होते, तो हम सबको मार डालते।" बोनेलो ने कहा।

"जर्मनो की अपेक्षा इटालियनो की ओर से हमे अधिक खतरा है।" मै बोला।

"पिछली पक्तियो के रक्षक-सैनिक किसी भी चीज से डर जाते हैं। किन्तु जर्मन लोग अपने लक्ष्य को अच्छी तरह जानते हैं।"

"यह तो आपका तर्क है, लेफ्टिनेण्ट साहब!" बोनेलो ने कहा।

"अब हमें किस ओर जाना है?" पिआनी ने पूछा।

"अच्छा हो, यदि हम अंधेरा होने तक कहीं छिपे रहे। फिर यदि हम दक्षिण की ओर जा सके, तो सुरक्षित रहेगे।"

"यह सिद्ध करने के लिए कि उनका पहले व्यक्ति को मारना उचित था, वे हम सब को मार डालेगे।" बोनेलो ने कहा—"और मैं इस विषय मे उनकी परीक्षा नहीं लेना चाहता।"

"छिप कर रहने के लिए हम यूडाइन के जितने पास हो सकेगा, किसी स्थान की खोज करेगे और अंधेरा होते ही हम वहाँ से आगे चल देंगे।"

"तब हमे यहाँ से चल देना चाहिए।" बोनेलो ने कहा। हम उस ऊँचे रेल-मार्ग के उत्तर की ओर नीचे उतरने लगे। आयूमो टीले के कोने मे, कीचड़ में लथपथ पड़ा था। वह बहुत छोटा दीख रहा था। उसके हाथ एक ओर लटक गये थे। उसके पैरो में पट्टियाँ लिपटी थी और उन पर पहने गये जूते कीचड मे सन गये थे। उसका टोप उसके मुख पर खिसक आया था। वह दूर से ही बिलकुल मुर्दा दिखायी दे रहा था। इधर वर्षा हो रही थी। अपने जीवन मे जिन व्यक्तियो से मै स्नेह करता था, उनमे से आयूमो भी एक था। मैं उससे उतना ही स्नेह करता था, जितना अपने किसी अन्य घनिष्ठ मित्र से। उसके परिचय-पत्र आदि मेरी जेब मे थे। मै उस अभागे की मृत्यु के विषय में उसके घर पत्र लिखनेवाला था।

खेतो के पार, सामने की दिशा मे एक घर था—किसी किसान का घर, जिसके आसपास वृक्षो का घेरा था। उस घर के सामने कुछ और घर थे। घर की दूसरी मंजिल पर खंभो के सहारे टिका हुआ एक बरामदा था।

"हम एक-दूसरे से कुछ फासले पर चले, तो ठीक रहेगा।" मै बोला—"मै आगे-आगे चलता हूँ।" खेतो के निकट बने उस घर की ओर मै चला। खेत के ठीक बीच से एक पगडण्डी गयी थी।

खेत को पार करता हुआ मै उस घर की ओर बढा जा रहा था। सिर्फ इस बात को छोड़कर कि कही उस घर के भीतर से अथवा उसके आसपास खड़े उन वृक्षो की ओट से कोई हम पर गोली न चला दे, और कोई विचार मेरे मन मे नहीं उठ रहा था। घर पर नज़र गड़ाये मैं उस ओर बढता गया। दूसरी मंजिल पर का बरामदा कोठार से जाकर मिल जाता था। खम्भों के बीच से भूसा उड़कर अभी भी बाहर आ रहा था। आगन में पत्थर का फर्श था और वृक्षो से वर्षा की बूदे टपक रही थीं। वहीं दो पहियोंवाली एक गाड़ी भी खडी थी। उसके धुरे बम—वर्षा मे ऊपर की ओर उठ गए थे। मै आँगन मे आ पहुँचा, उसे पार किया और बरामदे के नीचे जाकर खड़ा हो गया। घर का द्वार खुला हुआ था। मै अंदर घुसा और मेरे पीछे पीछे बोनेलो और पिआनी भी आ गये। भीतर अंधेरा था। मै पीछे की ओर रसोईघर मे पहुँचा। वहाँ एक बड़े-से चूल्हे में राख पड़ी थी। राख के ऊपर बर्तन पड़े थे, किन्तु वे सब खाली थे। मैने चारों ओर तलाश की; किन्तु खाने योग्य कोई चीज मुझे वहाँ नहीं मिली।

"हमे कोठार में चलकर आराम करना चाहिए।" मैंने कहा—

"क्यो पिआनी, क्या तुम कहीं से खाने-पीने की कुछ चीज़े खोज-खाज कर ला सकोगे ?"

"मैं तलाश करता हूँ।" पिआनी ने कहा।

"मै भी तलाश करता हूँ।" बोनेला ने कहा।

"अच्छी बात है।" मै बोला—"तब तक मै ऊपर जाकर कोठार में देखता हूँ।" मैंने ऊपर जाने के लिए सीढियो का पता लगाया। नीचे बाड़े मे मुझे ऊपर जाने के लिए पत्थर की सीढियाँ मिल गई। वर्षा के बीच, जानवर बाँधने के उस बाड़े की सूखी जमीन से उठनेवाली गध बड़ी सुखद लगी। बाडा सूना था—कहीं कोई मवेशी नहीं। घर के मालिक ने घर छोड़ते समय कदाचित् मवेशियो को भगा दिया था। कोठार के आधे भाग मे भूसा भरा था और उसकी छत में दो खिडकियाँ बनी थीं। उनमे से एक को लकडी के पटियो द्वारा बन्द कर दिया गया था। दूसरी खिडकी उत्तर की ओर, छत की ढलान मे, थी। वह बहुत सकरी थी। कोठे मे एक नाली भी बनी थी, जिससे जानवरों के लिए वहीं से नीचे की ओर भूसा पहुँचाया जा सके। कोठार के फर्श की खुली जगह से होती हुई, लकडी की बडी धरन नीचे जमीन के भीतर तक चली गयी थीं। जब नीचे घास से लदी हुई गाड़ियाँ आती थी, तब उस धरन के सहारे गाड़ियो मे से भूसा ऊपर खींच लिया जाता था और उसे कोठार में जमा कर दिया जाता था। मुझे छत पर गिरती हुई पानी की बूदो का स्वर सुनायी दिया। मैंने भूसे से उठती हुई गध भी अनुभव की। जब मै नीचे उतरा, तो बाड़े मे सूखे हुए गोबर की गध भी स्पष्ट रूप से व्याप्त थी। दक्षिण की ओर की खिड़की से एक पटिया निकाल देने के बाद हम उससे होकर सीधे आँगन मे उतर सकते थे। दूसरी खिडकी उत्तर मे, खेत की ओर खुलती थी। सीढियों का रास्ता काम मे आने लायक न रहने पर हम किसी भी खिड़की द्वारा छत पर पहुँचकर नीचे उतर सकते थे अथवा भूसा नीचे पहुँचाने की नाली से भी नीचे पहुँचा जा सकता था। कोठार बहुत बड़ा था, अतः यदि कोई वहाँ आया भी या किसी के आने की आहट सुनायी दी, तो हम भूसे के ढेर मे छिप सकते थे। हर प्रकार से वह स्थान उपयुक्त प्रतीत होता था। मुझे विश्वास था कि यदि हम पर गाली न चलाई गई होती, तो हम उस प्रदेश को पार करते हुए दक्षिण की ओर निकल जाते। उस क्षेत्र में जर्मनो की उपस्थिति बिलकुल असम्भव थी। वे तो उत्तर दिशा मे सिविडेल होकर इस ओर आ रहे थे। दक्षिण की ओर से वे निश्चित रूप से नहीं आ सकते थे। वास्तव मे, इटालियन सैनिक ही

उनकी अपेक्षा अधिक खतरनाक थे। वे डर जाते थे और जिसे देखते, उसी पर गोली चला देते थे। पिछली रात, सैन्य-दल के साथ चलते हुए हमने सुना था कि उत्तर की ओर, जो सैन्य-दल पीछे हट रहे थे, उनके साथ इटालियन सैनिकों के वेश मे बहुत-से जर्मन भी मिल गए थे। मुझे इस पर विश्वास नहीं था। युद्ध-काल मे ऐसी बाते हमेशा सुनाई देती थीं—ऐसी अफवाहे शत्रु द्वारा हमेशा फैलायी जाती थी। पर यह सुनने मे कभी नहीं आता था कि विपक्षी दल के किसी सैनिक ने जर्मन पोशाक पहन कर जर्मनो को धोखा दिया हो! हो सकता है, जर्मनो ने ऐसा किया हो। फिर भी ऐसा करना था कठिन। मुझे तनिक भी विश्वास नहीं था कि जर्मनो ने ऐसा किया होगा। मेरी समझ से उन्हे ऐसा करने की कोई आवश्यकता भी नहीं थी। पीछे हटने वाली हमारी सेनाओ को भ्रम मे डालने की उन्हे भला क्या जरूरत थी! यह सब गड़बड़ी तो रास्तो की कमी तथा बहुत बडी सेना होने के कारण ही हुई थी। जर्मनो की बात तो अलग है, हमारी ओर से किसीने ऐसा कोई आदेश नही दिया था। फिर भी, हममे से बहुत-से व्यक्तियो को, सिर्फ जर्मन होने के शक पर मार डाला जाता था। आयमो को भी इसी लिए गोली मारी गयी थी।

सूखे घास की गध बडी भली लग रही थी। कोठार में भूसे पर लेटा मै कुछ ही देर मे अपने-आपको वर्तमान से न-जाने कितने वर्ष पीछे खींच चुका था। पुरानी स्मृतियॉ सजग हो उठी—हम घास पर पडे हुए हैं—कोठार की दीवार के कोना में, छत के निकट चिड़ियो ने घोंसले बना रखे हैं—अपनी हवाई बन्दूक से हम चिड़ियो को मार रहे हैं—कोठार अब नष्ट हो चुका है—हैमलॉक के पेड भी काट डाले गए है—अब केवल उनके ठूठ बचे हैं—वृक्षो के ऊपरी हिस्से सूख चुके है—हरे-भरे वन के स्थान पर शेष बच रहे हैं केवल वे ही ठूठ, वृक्षो के सूखे हुए ऊपरी भाग—डालियॉ—और जलाने के योग्य घास-पात तथा टहनियॉ। किन्तु कोई पीछे कैसे जा सकता है? मनुष्य वर्षों पीछे नहीं लौट सकता, तब? तब वह आगे जाता है? आगे? हॉ—और यदि कोई आगे न जा सका, तब? तब क्या होगा? न आगे, न पीछे—मै पीछे—मिलान नहीं जा सकता। और यदि मिलान चला गया तो? क्या होगा तब? अचानक विचारों की कड़ी टूट गई। मैने उत्तर की ओर यूडाइन के निकट गोली चलने की आवाज सुनी। मशीनगनो के चलने की आवाज भी सुनाई दे रही थी। हॉ, बमबारी नहीं हो रही थी, यही थोड़े संतोष की बात थी। शायद सड़क पर दो सैन्य टुकड़ियो मे मुठभेड़ हो गई थी। तभी घास-भूसे

से आधे भरे हुए कोठार के धुँधले प्रकाश मे मैने देखा कि नीचे के उस स्थान पर, जहॉ से घास ऊपर चढाया जाता था, पिआनी खडा था। उसके हाथो मे मसालेदार मास का एक लम्बा गोल डिब्बा और साथ ही किसी अन्य वस्तु से भरा हुआ एक पात्र था। वह अपनी बगल मे शराब की दो बोतले भी दबाये था।

"ऊपर आ जाओ।" मैने कहा—"सीढी लगी है, उसी से आ जाओ।" पर तभी मैने अनुभव किया कि उसके हाथो मे बहुत-सी वस्तुएँ है और मुझे उसकी सहायता करनी चाहिए। मै नीचे उतर आया। भूसे पर पडे-पड़े मेरा मन बडा अस्थिर हो उठा था। वस्तुतः मै एक प्रकार से अर्द्ध निद्रावस्था मे वहॉ लेटा था।

"बोनेलो कहॉ है?" मैने पूछा।

"जरा ठहरिये बताता हूँ।" पिआनी ने उत्तर दिया। हम सीढी के सहारे ऊपर चढ गये। भूसे के ढेर पर हमने सब वस्तुएँ रख दी। पिआनी ने डाट खोलने के पेच सहित अपना चाकू निकाला और शराब की बोतल का डाट खोलने लगा।

"इस पर मोम लगा दिया गया है।" उसने कहा—"शराब अच्छी होनी चाहिए।" वह मुस्कराया।

"बोनेलो कहॉ है?" मैने फिर पूछा।

पिआनी ने मेरी ओर देखा।

"वह चला गया, साहब।" उसने कहा—"वह युद्ध-कैदी बनना चाहता था।"

उत्तर मे मैने कुछ नहीं कहा।

"उसे भय था कि हम सब मार डाले जायेंगे।"

शराब की बोतल हाथ मे पकडे हुए मै चुपचाप बैठा रहा।

"और आप तो जानते ही है कि हम लोग युद्ध मे विश्वास नहीं करते, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"तब तुम क्यो नहीं गए?" मैने पूछा।

"मै आपको अकेला नही छोड़ना चाहता।"

"किस ओर गया है वह?"

"मालूम नहीं। बस, वह चला गया।"

"खैर, छोड़ो।" मै बोला—"क्या तुम मास का टुकड़ा काटोगे?" पिआनी ने उस धुँधलके मे मेरी ओर चकित नेत्रों से देखा।

"उसे तो जब हम बातें कर रहे थे, तभी मैंने काट लिया।" वह बोला। हम वहीं बैठ गये और मसालेदार मास का टुकड़ा चबाते हुए शराब पीने लगे। ऐसा प्रतीत होता था कि घर के लोगों ने वह शराब किसी शादी के लिए बचाकर रखी होगी। वह इतनी पुरानी पड़ गई थी कि उसका रग तक उड़ रहा था।

"लुइजी ! तुम इस खिड़की से बाहर देखो—" मैने कहा—"मै दूसरी खिड़की से बाहर देखता हूँ।"

हम लोग अलग-अलग बोतलो से शराब पी रहे थे। मैंने अपनी बोतल ली, खिडकी की ओर गया और घास पर चित लेटते हुए, खिडकी से बाहर वर्षा मे सराबोर प्रदेश को देखने लगा। मैं कह नहीं सकता कि क्या देखने की आशा से मै बाहर झाँक रहा था, किन्तु यह सत्य है कि लम्बे-चौड़े खेतो, पत्र-विहीन शहतूत के वृक्षो तथा बरसात के सिवा मुझे और कुछ नहीं दिखाई दिया। मैने शराब खत्म कर दी, किन्तु उससे मुझे कोई लाभ नहीं हुआ—मैंने स्वय को तनिक भी स्वस्थ नहीं अनुभव किया। घर के मालिक ने उसे बहुत दिनों तक सँजो रखा था। वह बिलकुल बेकार हो गयी थी और उसका स्वाद तथा रग दोनो नष्ट हो चुके थे। बाहर, बढ़ते हुए अन्धकार को, मै निहारता रहा। वह बडी तेजी से बढता जा रहा था। मुझे विश्वास हो गया कि रात मे जोरों की बारिश होगी और घना-काला अँधेरा छाया रहेगा। अँधेरा बढने के बाद बाहर देखना व्यर्थ था, अतः मै पिआनी के पास पहुँचा। वह सो रहा था। मैंने उसे जगाया नहीं। थोड़ी देर उसी के पास बैठा रहा। वह एक स्वस्थ और भरा-पूरा मनुष्य था—नीद भी गहरी ले रहा था। कुछ समय बीतने पर मैंने उसे जगाया और हम चल पड़े।

वह रात्रि भी बडी अद्भुत थी। मैं नहीं कह सकता कि उस गहन निशा से मैंने क्या आशा की थी—मृत्यु की आशा ? अन्धकार मे गोलियो का निशाना बनने की आशा ! या आहत होकर भागने की आशा!! किन्तु हुआ कुछ नहीं। रास्ते मे, बड़ी सडक पर जाता हुआ एक जर्मन सैन्य-दल हमें दिखायी पड़ा। और जब तक वह आगे नही निकल गया, हम खाई के उस पार, धरती पर चुपचाप लेटे रहे। जब वे चले गए, तब हमने सड़क पार की और उत्तर की ओर बढने लगे। बरसते हुए पानी मे दो बार हम उस जर्मन सैन्य दल के बिलकुल पास जा पहुँचे, किन्तु उन्होंने हमे नहीं देखा। राह में हमे एक भी इटालियन नहीं मिला। हमने शहर पार कर लिया और थोड़ी

दूर जाने पर पीछे हटनेवाले सैन्य-दल की एक लम्बी कतार मे मिल गये। रात भर हम टैग्लिआमेण्टो की ओर बढते रहे। अभी तक मैंने यह ख़याल नहीं किया था कि हम कितनी बड़ी तादाद मे पीछे हट रहे थे। सेना तो पीछे हट ही रही थी; साथ ही सारा देश भी पीछे हट रहा था। सारी रात हम चलते रहे। हमारी गति सेना के साथ चलनेवाली गाड़ियो की अपेक्षा तेज थी। मेरे पैर दुख रहे थे, मै थक चुका था, किन्तु हम लोग तेजी से आगे बढ़ रहे थे। बोनेलो का युद्ध-कैदी बन जाने का निश्चय मुझे बडा मूर्खतापूर्ण प्रतीत हो रहा था। भय की तो कोई बात ही नही थी। बिना किसी विशेष घटना के हम दो सैन्य-दलों को पार कर चुके थे। यदि आय्मो न मारा जाता, तो हमे कभी किसी प्रकार के भय का आभास ही नही मिलता। रेल-मार्ग पर चलते हुए जब हम स्पष्टतः दूसरो की दृष्टि मे आ सकने की स्थिति मे थे, तब भी हमे किसी ने कुछ नहीं कहा था। आय्मो तो अचानक और अकारण ही मार डाला गया था। किन्तु इन सबके बावजूद बोनेलो चला गया था। इस समय वह कहाँ होगा भला?

"कैसा लग रहा है, साहब?" पिआनी ने पूछा। हम मोटरो-ट्रकों और सैन्य-टुकड़ियों से ठसाठस भरे रास्ते पर चल रहे थे।

"ठीक ही है।" मैंने उत्तर दिया।

"मै तो इस तरह चलने से तग आ गया हूँ।"

"पर इस समय तो हमारे सामने केवल एक ही मार्ग है—और वह है चलना। हमे अब कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

"बोनेलो बडा मूर्ख था।"

"निश्चय ही, पूरा मूर्ख था वह।"

"आप उसके विषय मे क्या कार्यवाही करेंगे, साहब?"

"कह नहीं सकता।"

"क्या आप उसके विषय में यह नहीं लिख सकते कि वह शत्रुओ द्वारा बन्दी बना लिया गया?"

"अभी कैसे कुछ कहूँ।"

"यदि युद्ध चलता रहा, तो अधिकारी-वर्ग उसके परिवार को बड़ा कष्ट देगा।"

"युद्ध नहीं चलेगा अब।" एक सैनिक बोला—"हम सब लोग घर वापस जा रहे हैं। युद्ध समाप्त हो चुका है।"

"हर व्यक्ति घर लौट रहा है।"

"हम सभी घर लौट रहे हैं।"

"इधर आइए, लेफ्टिनेण्ट साहब!" पिआनी ने कहा। वह उन सैनिकों से आगे निकल जाना चाहता था।

"लेफ्टिनेण्ट? कौन है लेफ्टिनेण्ट? अफसरों का नाश हो! अफसर मुर्दाबाद!"

पिआनी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। "अच्छा हो, यदि मैं आपको आपका नाम लेकर पुकारूँ।" उसने कहा—"हो सकता है, ये लोग व्यर्थ ही कुछ बवण्डर खड़ा कर दें। इन्होंने कुछ अफसरों को मार भी डाला है।" हम जल्दी-जल्दी उनसे आगे निकल गए।

"मैं बोनेलो के विषय में ऐसी कोई बात नहीं लिखूँगा, जिससे उसका परिवार संकट में पड़े।" मैंने अपनी बातचीत जारी रखते हुए कहा।

"यदि युद्ध का अन्त हो गया है, तब तो कुछ भी लिखिये—कोई फर्क नहीं पड़ेगा।" पिआनी बोला—"किन्तु मुझे विश्वास नहीं है कि युद्ध बन्द हो गया है। कितना अच्छा हो, यदि वह वास्तव में बन्द हो जाए।"

"बन्द हो गया या नहीं, यह शीघ्र ही मालूम हो जायेगा।" मैंने कहा।

"सभी यह सोचते हैं कि उसका अन्त हो गया है, किन्तु मुझे भरोसा नहीं होता—मैं नहीं विश्वास करता इस पर।"

"शान्ति अमर हो!" एक सैनिक चिल्लाया—"हम घर जा रहे हैं।"

"यदि हम सब घर लौट गये, तो बड़ा अच्छा होगा।" पिआनी बोला—"क्या आप घर नहीं जाना चाहते?"

"क्यों नहीं!"

"किन्तु हम नहीं जा सकेंगे—कभी नहीं जा सकेंगे। मैं नहीं समझता कि लड़ाई खत्म हो गयी है।"

"अपने-अपने घरों को लौट चलो, दोस्तो!" कोई सैनिक चिल्लाया।

"देखिये, ये लोग अपनी राइफलें फेंक रहे हैं।" पिआनी बोला—"सेना के साथ चलते-चलते कंधों पर से राइफलें उतार लेते हैं और उन्हें चुपचाप धरती पर डाल देते हैं। फिर वे इसी प्रकार चिल्लाते हैं।"

"उन्हें अपनी राइफलें अपने साथ रखनी चाहिए।"

"उनकी धारणा है कि यदि वे अपनी राइफलें फेंक देंगे, तो उन्हें कोई लड़ने पर बाध्य नहीं कर सकेगा।"

अन्धकार और वर्षा के बीच, सडक के एक ओर से, अपनी राह बनाते हुए हम लोग आगे बढ रहे थे। बीच-बीच मे सैनिको पर दृष्टि डालते हुए हमने देखा कि उनमे से अभी भी बहुत-से सैनिको के पास राइफले मौजूद थी। वे उनके लबादों पर लटकी हुई थी।

"तुम किस सैन्य दल के हो?" एक अफसर ने किसी को आवाज दी।

"शान्तिदल के।" कोई चिल्लाया—"शान्तिदल के है हम!"

अफसर ने कुछ नहीं कहा।

"यह क्या चिल्ला रहा है? और वह अफसर क्या कहता है?"

"अफसरो का नाश हो! शान्ति अमर रहे।"

"चलिए, चलिए।" पिआनी बोला। गाडियो के उस समूह में परित्यक्त-सी दो ब्रिटिश एम्बुलेन्स को पीछे छोड़ते हुए हम आगे बढ गये।

"ये एम्बुलेन्स गोरीजिया से आ रही है।" पिआनी ने कहा—"मै इन मोटरो को पहचानता हूँ।"

"ये तो हमसे भी आगे निकल आये थे।"

"वहॉ से ये चले भी हमसे पहले थे।"

"पर इन मोटरो के ड्राइवर कहॉ गये?"

"शायद आगे हों।"

"यूडाइन के बाहरी क्षेत्र में जर्मन सेना ठहरी है।" मैने कहा।

"ये लोग भी नदी पार कर जायेंगे।"

"हॉ।" पिआनी बोला—"इसीलिए तो मै सोचता हूँ कि युद्ध जरूर होगा।"

"जर्मन तो यहॉ भी आ सकते थे—" मै बोला—"आश्चर्य है कि वे यहॉ आकर हम पर हमला क्यो नहीं करते!"

"मै क्या बताऊँ! इस प्रकार के युद्ध के विषय मे मै कुछ नही जानता हूँ।"

"मेरा खयाल है कि वे शायद अपनी गाड़ियो की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"मालूम नही।" पिआनी ने उत्तर दिया। अकेले मे वह बडी नम्रता से बाते करता था, किन्तु जब वह दूसरो के साथ होता था, तो उसकी बातें बडी रूखी हुआ करती थी।

"तुम विवाहित हो, लुइजी?"

"जी हॉ, मै विवाहित हूँ।"

"क्या इसीलिए तुम युद्ध-कैदी नहीं बनना चाहते थे?"

"हाँ, यह भी एक कारण था। क्या आपकी भी शादी हो चुकी है, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"नहीं।"

"बोनेलो की भी नहीं हुई है।"

"आदमी के विवाहित होने से ही तुम उसके विषय में कोई धारणा नहीं बना सकते। किन्तु जहाँ तक मेरा खयाल है, एक विवाहित मनुष्य हमेशा अपनी पत्नी के पास लौट जाना पसन्द करेगा।" पत्नियों के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही थी।

"आप सच कहते हैं।"

"तुम्हारे पैर कैसे हैं अब?"

"काफी दुख रहे हैं।"

सूर्य का प्रकाश फैलने से पहले हम टैग्लिआमेण्टो के तट पर पहुँच गए। नदी में बाढ़ आई थी। किनारे-किनारे चलते हुए हम लोग उस पुल पर पहुँचे, जहाँ से समस्त सैन्य-दल नदी पार कर रहा था।

"हमारी सेना को इस नदी पर अपना अधिकार बनाए रखना चाहिए।" पिआनी ने कहा। अंधेरे में नदी की बाढ़ बहुत ऊँची और भयावह दिखायी दे रही थी। पानी की धारा चौड़ी थी और उसमें भँवरें पड़ रही थीं। लकड़ी का वह पुल नदी के एक तट से दूसरे तट तक प्रायः पौन मील लम्बा था। नदी का पानी, जो चौड़े ककरीले पाट के बीच सामान्यतः संकरी धाराओं के रूप में पुल से बहुत नीचे बहा करता था, अब पुल के निचले हिस्से को स्पर्श कर रहा था। तट पर चलते हुए, पुल पार करनेवाले समूह के बीच हम अपना मार्ग बनाते गए। बरसते पानी में, बाढ़ के पानी की सतह से केवल कुछ फुट ऊपर, भीड़ में पिसते हुए, हम बिलकुल धीमी गति से नदी पार कर रहे थे। हमारे आगे तोपखाने की बारूद का एक भारी सन्दूक जा रहा था। एक ओर गर्दन घुमाकर मैंने नदी की ओर देखा। उस भीड़ में अपनी इच्छानुसार चलना सम्भव नहीं था, अतः मुझे बड़ी थकान मालूम होने लगी। पुल पार करने में कोई उत्साह नहीं हो रहा था। मैं सोच रहा था कि दिन निकलने पर यदि पुल पार करते हुए, इस विशाल सैन्य समूह पर यहीं किसी हवाई जहाज ने बमबारी कर दी, तो क्या परिणाम होगा? उसकी कल्पना-मात्र से ही मैं सिहर उठा।

"पिआनी!" मैंने पुकारा।

"मैं यहाँ हूँ, लेफ्टिनेण्ट साहब!" उत्तर मिला। भीड़ की रेल-पेल में वह

मुझसे कुछ आगे पहुँच गया था। सब मौन थे। कोई किसीसे बात नहीं कर रहा था। सबको केवल उस पार पहुँचने की चिन्ता थी। उसी चिन्ता मे खोये वे यथाशीघ्र आगे निकल जाने का प्रयत्न कर रहे थे। हम पुल प्रायः पार कर चुके थे। पुल के अंतिम छोर पर दोनो तरफ़ फौज़ी अफ़सर और कारबाइन–दल के सैनिक खड़े थे। वे पुल पार करते हुए इस सैन्य-दल पर प्रकाश-किरणे फेंक रहे थे। क्षितिज के विरुद्ध उनकी लम्बी प्रतिच्छायाएँ हमे दिखाई दे रही थी। ज्योंही हम उनके पास पहुँचे, त्योंही मैने एक अफसर को सामने की सैन्य-पक्ति के एक सैनिक की ओर सकेत करते हुए देखा। कारबाइन-दल का एक सैनिक उस सैनिक की ओर गया और उसकी बॉह पकडकर उसे बाहर खीच लाया। वह उसे सडक से दूर ले गया। हम लोग भी तब तक उन अफसरो और कारबाइन-दल के सैनिको के अधिक समीप आ गये। वे लोग सैन्यदल के प्रत्येक सैनिक की जॉच कर रहे थे। कभी-कभी वे आपस में बातचीत भी करने लगते, कभी बत्ती के प्रकाश मे किसी सैनिक का चेहरा देखने लगते। उनसे हमारा सामना होने के क्षणभर पहले ही उन्होने एक और व्यक्ति को पक्ति से बाहर खींचा। वह व्यक्ति एक लेफ्टिनेण्ट-कर्नल था। ज्योही उस पर बत्ती का प्रकाश फेका गया, त्योंही मैने देखा कि उसकी बॉह पर सितारे लगे हुए थे। उसके सिर के बाल सफेद हो चले थे। वह ठिगना और मोटा था। कारबाइन-दल के सैनिको ने उसे अफसरो की पंक्ति के पीछे ले जाकर खड़ा कर दिया। जब मैं उनके सामने पहुँचा, तो उन अफसरो मे से कुछेक ने मेरी ओर देखा। तब एक अफसर ने मेरी ओर सकेत करते हुए आदेश दिया। मैने देखा कि कारबाइन-दल का एक सैनिक मेरी ओर आ रहा है। वह कतार के बीच से होता हुआ, मेरे पास आया और मेरी गर्दन पकड़कर खीचने लगा।

"क्या हो गया है तुम्हे? पागल हो क्या?" कहते हुए मैने उसके मुँह पर कस कर प्रहार किया। उसके टोप के भीतर छिपा हुआ मैने उसका मुँह देखा। उसकी मूँछे ऊपर उठी हुई थी और उसके गाल से खून बह रहा था। यह देखकर मेरी ओर उसी दल का दूसरा सैनिक दौड़ा।

"बात क्या है आखिर?" मैने पूछा; पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह मुझ पर जैसे झपट्टा मारने की ताक मे था। मैने अपनी पिस्तौल निकालने के लिए अपना हाथ पीछे किया।

"क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम किसी अफ़सर को हाथ नहीं लगा सकते?"

इतने ही मे कारबाइन-दल के उस दूसरे सैनिक ने मुझे पीछे से कसकर पकड़ लिया। उसने मेरी भुजा ऊपर की ओर खींचकर ऐंठ दी, जिससे वह कंधे के पास से मुड-सी गई। मै उसकी ओर घूमा ही था कि एक अन्य कारबाइन-सैनिक ने झपटकर मेरी गर्दन पकड ली। मै उसकी पिंडलियो मे लातें मारने लगा और उसके पेट के निचले भाग मे, जॉघ के जोड़ पर मैंने अपना बायॉ घुटना अड़ा दिया।

"यदि ये विरोध करें, तो इन्हें गोली से उड़ा दो!" मैंने किसीको कहते हुए सुना।

"लेकिन इस सबका मतलब क्या है?" मैंने चिल्लाने का प्रयत्न किया, किन्तु मेरी आवाज मे जोर नही था। वे अब मुझे खींचकर सड़क के किनारे ले आये।

"यदि ये यो नहीं मानते, तो गोली मार दो।" एक अफसर बोला—"पीछे की ओर ले जाओ इन्हें।"

"आप हैं कौन आखिर?"

"अभी मालूम हो जायेगा।"

"मै पूछता हूॅ, आप हैं कौन?"

"सैन्य-पुलिस।" एक दूसरे अफसर ने उत्तर दिया।

"इन 'उड़नखटोलों' जैसे सैनिकों को झपट्टा मार कर मुझे खींच लाने का आदेश देने के बजाय क्या आप मुझसे दल के बाहर आने के लिए नहीं कह सकते थे?"

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्हें उत्तर देने की आवश्यकता भी नहीं थी—वे सैन्य-पुलिस के आदमी थे!

"इन्हे भी पीछे की ओर दूसरो के पास पहुॅचा दो!" पहले अफसर ने कहा—"देखा तुमने, किस खूबी से यह व्यक्ति इटालियन भाषा का प्रयोग कर रहा है!"

"तुम भी वैसा ही कर रहे हो—हरामजादे कहीं के!" मै चिल्लाया

"हटाओ इसे, ले जाओ दूसरों के पास।" पहला अफसर बोला। वे लोग मुझे लेकर अफसरों की पंक्ति के पीछे से सड़क के नीचे उतरे। हम लोग नदी-तट से लगे एक खेत मे उस स्थान की ओर चल दिये, जहॉ कुछ और व्यक्ति बैठे थे। उस तरफ जाते हुए मुझे गोलियॉ चलने की आवाज सुनाई दी। मैंने राइफलों से निकलनेवाली चिनगारियॉ देखी और गोली चलने की आवाज

सुनी। हमें उस दल के पास पहुँचे। वहाँ पर चार अफसर पास-पास खड़े थे। उनके सामने दो कारबाइन-सैनिको से घिरा एक व्यक्ति खडा था। कुछ फासले पर कारबाइन-सैनिको के घेरे के बीच कुछ और व्यक्ति खड़े थे। जॉच करनेवाले अफ़सर के पास अपनी छोटी-छोटी बन्दूको पर झुके हुए चार और कारबाइन-सैनिक खडे थे। उन्होंने चोड़े किनारे के टोप पहन रखे थे। उन दोनो कारबाइन-सैनिको ने, जो मुझे लेकर आये थे, धक्का देते हुए मुझे उन लोगो के बीच खडा कर दिया, जिनकी जॉच होने वाली थी। मैंने उस व्यक्ति की ओर देखा, जिससे जॉच करनेवाला अफसर प्रश्न पूछ रहा था। यह वही ठिगना, मोटा, सफेद बालवाला लेफ्टिनेण्ट-कर्नल था, जिसे थोडी देर पहले सैन्य-पक्ति से बाहर खीचा गया था। प्रश्नकर्ताओ मे उतनी ही योग्यता, उतना ही निरुत्साह और उतना ही आत्मनियत्रण नजर आ रहा था जितना कि उन इटालियनो मे होता है, जो केवल गोलियॉ चलाना जानते है और बदलेमें, जिन पर कोई गोली नहीं चलाता।

"तुम्हारा सैन्यदल?"

उसने नाम बता दिया।

"तुम्हारी टुकड़ी?"

उसने उसका भी नाम बता दिया।

"तुम अपनी टुकडी के साथ क्यो नहीं हो?"

उसने कारण भी बता दिया।

"क्या तुम यह नहीं जानते कि एक अफसर को सदा अपनी टुकड़ी के साथ होना चाहिए?"

उसने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाया। बस, पहले अफसर ने प्रश्न करना बन्द कर दिया। दूसरे अफसर ने कहा—"तुम और तुम-जैसे अन्य व्यक्तियो के कारण ही हमारे पुरखो की पवित्र भूमि पर बर्बर शत्रुओ को पैर रखने का साहस हो सका है?"

"क्षमा कीजिये, क्या कहा आपने?" लेफ्टिनेण्ट कर्नल ने कहा।

"तुम्हारे ही जैसे व्यक्तियो के देशद्रोह के कारण हमारी जीत नहीं हुई। विजयश्री ने हमें वरण नही किया।"

"क्या आप लोग कभी पीछे हटते हुए किसी सैन्यदल के साथ रहे हैं?" लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ने पूछा।

"इटली पीछे हटना नही जानता।"

हम वर्षा में खड़े-खड़े उनकी बातचीत सुनते रहे। हमारा मुँह अफसरों की ओर था। हमसे कुछ हटकर एक ओर, हमारे सामने ही, वह कैदी खड़ा था।

"यदि तुम लोग मुझे मार डालना चाहते हो—" लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ने कहा—"तो आगे, बिना एक शब्द पूछे ही, मुझे मौत की सजा दे दो। तुम्हारे प्रश्न मूर्खतापूर्ण हैं।" उसने अपने सामने धर्म-चिह्न (क्रॉस) बनाया। अफ़सरों ने कुछ क्षणों तक जैसे आपस में विचारविमर्श किया। फिर एक ने एक काग़ज़ पर कुछ लिखा।

"अपनी टुकड़ी छोड़ कर भाग निकलने के अपराध में गोली से उड़ा देने का दण्ड दिया गया।" उसने कहा।

दो कारबाइन सैनिक लेफ्टिनेण्ट कर्नल को पकड़ कर नदी-तट पर ले गये। बेचारा बूढ़ा आदमी, दोनों ओर दो रक्षकों से घिरा हुआ, अपना टोप उतारे, वर्षा मे भीगता भागता, नदी की ओर चला गया। मैंने उन्हें उस पर गोली चलाते हुए नहीं देखा, किन्तु उसकी आवाज मुझे स्पष्ट सुनाई दे गयी। अफसर अब किसी दूसरे से प्रश्न कर रहे थे। यह व्यक्ति भी अपनी टुकड़ी से बिछुड़ गया था। उसे तो अपनी स्थिति स्पष्ट करने तक का अवसर नहीं दिया गया। काग़ज से पढ़कर जब उसके दण्ड की घोषणा की गई, तो वह रो पड़ा। जब उसे नदी की ओर ले जाया गया, तब भी वह रोता रहा। उसे गोली मारे जाने के समय अफसर लोग एक अन्य व्यक्ति की जाँच करने लगे। उन्होंने यह एक नियम-सा बना लिया था कि जब पहले प्रश्न किये गए व्यक्ति को गोली मारी जाने लगे, तो तुरत ही अगले व्यक्ति से प्रश्न पूछना प्रारंभ कर दिया जाए। यह तरीका अपनाने के पीछे स्पष्टतः उनका यह उद्देश्य था कि गोली मारते समय कहीं कोई कुछ गड़बड़ी पैदा न करे। मै यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि अपनी जाँच होते समय तक ठहरूँ या अभी ही किसी प्रकार वहाँ से भाग निकलूँ। प्रश्नकर्ताओं की दृष्टि मे मै निश्चित रूप से इटालियन सैनिक-वेश में कोई जर्मन था। मै देख ही रहा था कि उनके दिमाग किस दिशा मे काम कर रहे थे—बशर्ते सचमुच उनके पास दिमाग नाम की कोई चीज़ थी और वे कोई काम करने के योग्य थे। वे सब-के-सब नवयुवक थे—वे अपने देश की रक्षा कर रहे थे। टेग्लिआमेण्टो के तट पर द्वितीय सैन्यदल में सुधार हो रहा था। और सुधारक थे मेजर या उनसे उच्च अधिकारी, जो स्वयं अपनी टुकड़ियों से बिछुड़ गये थे। वे उन जर्मन उपद्रवियों से भी, जो इटालियन वेश मे थे, बड़ी शीघ्रता और कुशलता के साथ निबट रहे थे। वे अपने सिर

पर लोहे के टोप लगाये थे। हममें से केवल दो ही के पास लोहे के टोप थे। कुछ कारबाइन सैनिको के पास भी लोहे के टोप थे। अन्य कारबाइन-सैनिको के पास चौडी किनारी के टोप थे—और हम उन्हें 'उड़नखटोला' कहकर पुकारते थे।

हम पानी में भीगते हुए खड़े थे। हममें से एक बार में एक ही व्यक्ति ले जाया जाता। उससे कुछ प्रश्न पूछे जाते और उसे गोली मार दी जाती। अभी तक उन्होंने जिन जिनसे प्रश्न पूछे थे, उन सबको गोली मार दी गयी थी। प्रश्नकर्ताओ मे कठार न्याय के प्रति उदासीनता और धर्मनिष्ठा का वह सौंदर्य व्याप्त था, जो मृत्युदण्ड देने के आदी उन व्यक्तियों में होता है, जिन्हे स्वय मृत्युदण्ड प्राप्त करने का कोई भय नहीं होना। अधिकारी-वर्ग अब एक ऐसे कर्नल से प्रश्न पूछ रहा था, जिसके अधीन एक पूरी पलटन थी। हमारे समूह मे तीन और अफसरो की वृद्धि हो गयी थी।

"इनका सैन्यदल कहाँ है?" मैने उस कर्नल के विषय में किसी अधिकारी को प्रश्न करते हुए सुना।

मैंने कारबाइन-सैनिको की ओर देखा। वे नवागन्तुक व्यक्तियों की ओर देख रहे थे। दूसरे लोगो की दृष्टि कर्नल पर जमी थी। मै एक-ब-एक नीचे की ओर झुका और धक्का देता हुआ दो आदमियों के बीच से निकलकर, नदी की ओर भागा। गोलियों से बचने के लिए, मैंने भागते हुए अपना सिर नीचे की ओर झुका लिया। तट पर पहुँचकर मै हल्के पैरो से ऊपर उछला और छपाक से, वर्षा की बौछारो के बीच, नदी मे कूद पड़ा। पानी बडा ठडा था; फिर भी जितनी देर सम्भव था, उतनी देर तक मै उसके भीतर डूबा रहा। मुझे अपने सिर पर धारा मे चक्कर काटती हुई भँवरो का अनुभव हो रहा था। मै पानी में उस समय तक रहा, जब तक मेरी साँस न फूल गयी। फिर मैंने पानी से बाहर सिर निकाला और क्षणभर साँस लेने के बाद पुन भीतर चला गया। बहुत-से कपडो और भारी जूतो के कारण पानी मे ठहरना बड़ा आसान था। दुबारा जब मै ऊपर आया, तो मुझे अपने सामने लकड़ी का एक कुदा तैरता हुआ दिखाई दिया। वहाँ तक पहुचकर मैंने उसे एक हाथ से पकड़ लिया। अपना सिर मैंने उसके पीछे ही रखा और उसकी ऊपरी सतह की ओर देखा तक नहीं। मै नदी-तट की तरफ भी नहीं देखना चाहता था। अब तक दो बार मेरे ऊपर गोलियाँ छोडी जा चुकी थी—पहली बार उस समय, जब मैं नदी-तट की ओर भागा था और दूसरी बार उस समय, जब मै पहली बार पानी से ऊपर

आया था। गोलियों की आवाज मुझे उस समय सुनाई पड़ी थी, जब मै अपना सिर करीब-करीब बाहर निकाल चुका था। हॉ, अब गोली चलना बिलकुल बन्द हो गया था। लकड़ी का वह कुदा जल-प्रवाह मे हिल-डुल रहा था। मै उसे एक हाथ से कसकर पकडे रहा और कुछ क्षण बाद मैने किनारे की ओर नजर दौड़ाई। लकड़ी का कुदा नदी के वेग के साथ बडी तीव्र गति से बह निकला। नदी मे काफी लकडियॉ बह रही थीं। पानी बहुत ठडा था। मैने दोनो हाथो से लकडी का वह कुदा पकड लिया और उसके सहारे बहने लगा। नदी-तट अब दृष्टि से बिलकुल ओझल हो चुका था।

. ३१ .

जब नदी का प्रवाह बडे वेग मे होता है, तब आपको यह नहीं मालूम होता कि आप कितनी देर से पानी मे हैं। कभी-कभी जब आप कुछ ही देर पानी में रहते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि आप बहुत देर से पानी मे हैं। नदी का पानी ठंडा और पूरे उफान पर था। जब बाढ आयी थी, तब उसके किनारो से बहुत-सी वस्तुऍ बहकर बीच धार मे आ गई थी। वे ही वस्तुऍ अब पानी के साथ बहती चली जा रही थी। सोभाग्य से मैने जो लकड़ी पकड रखी थी, वह काफी भारी थी। बर्फ के समान ठडे पानी मे अपनी ठुड्डी को लकड़ी पर टिकाये मै पड़ा हुआ था। मैंने उसे अपने दोनो हाथो से पकड़ लिया था। किन्तु मुझे भय था कि इतने ठडे पानी मे कही मेरी मास-पेशियॉ न जकड़ जायें। अतः मै शीघ्रातिशीघ्र किनारे की ओर पहुॅचना चाहता था।

लकड़ी के उस कुदे के सहारे बहता हुआ मै नदी के एक लम्बे मोड़ पर जा पहुॅचा। उजेला धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था, अतः अब मैं किनारे की झाड़ियो को अच्छी तरह देख सकता था। सामने ही झाड़-झंखाड़ों से भरा एक द्वीप था और उससे टकरा कर पानी का प्रवाह तट की ओर मुड़ गया था। मैं सोच रहा था कि अपने जूते और कपडे उतारकर किनारे की ओर तैरने का प्रयत्न करूॅ। किन्तु मैंने यह विचार त्याग दिया। इस बात को छोड़कर कि मै किसी प्रकार तट तक पहुॅच ही जाऊॅगा, मैने किसी अन्य बात पर गौर नहीं किया था। यदि मै नगे पैर तट पर पहुॅचता, तो बड़े कष्ट का सामना करना पडता; क्योकि किसी-न-किसी प्रकार मेरा मेस्त्रे पहुॅचना आवश्यक था।

मैंने देखा कि हम किनारे के बहुत समीप आ गये थे। पर अचानक ही उससे दूर होने लगे और फिर उसक पास पहुँच गये। मेरी सगिनी, वह लकडी अब धीरे-धीरे बह रही थी। किनारा बहुत पास आ गया था। मुझे सरई की झाडियो की सूखी टहनियाँ दिखाई दे रही थीं। लेकिन तभी लकडी का कुदा कुछ इस प्रकार घूम गया कि किनारा मेरी पीठ की ओर हो गया। मै समझ गया कि मै भँवर मे फँस गया हूँ। लकडी के कुदे के साथ मै उस भँवर मे धीरे-धीरे चक्कर खाता रहा। ज्योही मैने देखा कि मैं फिर किनारे के बिलकुल पास पहुँच चुका हूँ, त्योही एक हाथ से लकडी पकडते हुए और दूसरे हाथ से लकडी को ढकेलते हुए तैर कर मैने किनारे लगने का प्रयत्न किया, किन्तु उसमे अधिक सफलता नहीं मिली। मुझे भय था कि कहीं फिर किनारे से दूर न हो जाऊँ, अतः एक हाथ से लकडी पकड़कर मैने अपने पैर लम्बे किये और लकडी की विरुद्ध दिशा मे पैर फटकारते हुए स्वय को पूरे बल के साथ तट की ओर ढकेलना आरम्भ किया। मुझे पास ही वे झाडियाँ दिखाई दे रही थीं। किन्तु शरीर की सम्पूर्ण शक्ति से तैरने के बाद भी जल प्रवाह मुझे तट से दूर खींचे जा रहा था। मैने सोचा कि यदि यही हालत रही, तो भारी जूते होने के कारण मै अवश्य डूब जाऊँगा। किन्तु मैने प्रयास जारी रखा—प्रवाह से भरसक लडता रहा। जब मैने अपना मुँह ऊपर उठाया, तो तट मुझे समीप आता हुआ दिखायी दिया। भारी जूतो के कारण सकट की आशका थी, अतः मैने पानी को काटते हुए तैरना उस समय तक जारी रखा, जब तक मै बिलकुल किनारे पर नहीं पहुँच गया। फिर मैने सरई की एक झाडी पकडी और उससे लटक गया। मुझ मे इतनी शक्ति नही थी कि मै उसके सहारे ऊपर चढ सकूँ। फिर भी मुझे इतना विश्वास अवश्य हो गया कि अब मै डूबूँगा नहीं। जब तक मै लकड़ी पकड़कर नदी के प्रवाह मे बहता रहा, तब तक तो मैने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि मै डूब सकता हूँ। सहसा मुझे जोरों की थकान मालूम हुई। पेट के भीतर मै खालीपन का भी अनुभव कर रहा था। अधिक श्रम के कारण मेरी तबीयत बिगड़ने लगी। झाडियो को पकड़े हुए मै बडी देर तक लटका रहा। जब थकान की पीडा और अस्वस्थता मिट गई, तो मैने झाड़ियो के सहारे पैर जमा-जमा कर ऊपर चढ़ने का प्रयास किया और सरई की झाडियो मे घुसकर आराम करने लगा। आराम करते समय मैंने कुछ झाडियाँ अपने हाथो मे लपेट लीं और उन्हे मजबूती से पकड़े रहा। कुछ समय बाद मै रेंगता हुआ बाहर निकला और झाड़ियो के

बीच राह बनाता हुआ, किसी प्रकार नदी की कगार पर पहुँच गया। दिन निकल आया था। मैंने आसपास दृष्टि दौड़ाई, पर कहीं कोई नहीं दिखाई दिया। मैं पीठ के बल किनारे पर लेट गया और नदी तथा वर्षा की हरहराहट सुनता रहा।

कुछ समय बाद मैं उठा और नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ने लगा। मैं जानता था कि लैटिसाना तक नदी पर कोई पुल नहीं था। इधर-उधर नजरें दौड़ा कर मैंने अनुमान लगाया कि मैं शायद सानविटो के सामने पहुँच गया था। मैं सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। तभी मुझे एक नाला दिखाई दिया, जो नदी में जाकर मिलता था। मैं उसी की ओर बढ़ा। अभी तक मैंने उस क्षेत्र में किसी व्यक्ति को नहीं देखा था। नाले के किनारे उगी हुई कुछ झाड़ियों के निकट बैठकर मैंने अपने जूते उतारे और उनमें भरा हुआ पानी बाहर निकाला। फिर मैंने अपना कोट उतारा और उसकी भीतरी जेब से बटुआ निकाला। बटुए में रखे हुए मेरे सब कागज और नोट बिलकुल भीग गए थे। मैंने कोट निचोड़ा और पतलून निकाल कर उसे भी अच्छी तरह निचोड़ डाला। इसी प्रकार एक-के-बाद-एक, मैंने कमीज, बनियाइन, चड्डी आदि सब कपड़े निचोड़ लिए। फिर कुछ समय तक अपने शरीर पर मुक्कियाँ मारने और प्रत्येक अंग को रगड़ने के बाद मैंने पुनः कपड़े पहन लिये। मेरी टोपी नदी में ही कहीं खो गयी थी।

अपना कोट पहनने के पहले मैंने बाँह पर लगे कपड़े के सितारों को काटकर उन्हें अपनी भीतरी जेब में रख लिया। मेरे सब नोट गीले हो गये थे; किन्तु खराब नहीं हुए थे। मैंने उन्हें गिना। सब मिलाकर उस समय मेरे पास तीन हजार से कुछ अधिक लिरे थे। मुझे अपने कपड़े बड़े गीले और चिपचिपे लग रहे थे। शरीर में स्वाभाविक रूप से रक्त-संचालन बनाए रखने के लिए मुझे बीच-बीच में अपनी भुजाओं को जोर से थपथपाना पड़ता था। मैंने ऊनी बनियाइन पहन रखी थी और मेरा खयाल था कि यदि मैं चलता रहा, तो मुझे जुकाम नहीं हो सकेगा। सड़क पर जब मुझे पकड़ा गया था, तो मेरी पिस्तौल छीन ली गयी थी। उसकी खाली पेटी मैंने अपने कोट के नीचे दबा ली। मेरे पास लबादा नहीं था और वर्षा के कारण मुझे ठंड लग रही थी। मैंने नाले के किनारे-किनारे नदी की विपरीत दिशा में चलना प्रारम्भ किया। वह वास्तव में एक नहर थी। सूर्य का प्रकाश अब अच्छी तरह फैल चुका था। समस्त प्रदेश वर्षा के कारण गीला हो रहा था तथा बेजान और

उदासीन दिखाई दे रहा था। खेत भी सूने और पानी से भरे थे। काफी दूर पर, मैदानों के बीच अपना सिर उठाए एक घण्टाघर भी दिखाई दे रहा था। चलते-चलते मै एक सड़क पर पहुँच गया। सामने से कुछ सैन्य-टुकडियाँ मेरी ओर आ रही थीं। मैं लँगडाता हुआ सड़क के किनारे किनारे चलने लगा। सैन्य-टुकड़ियाँ मेरे पास से निकल गयी। उन्होने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वे सब मशीनगन चलानेवाले दल के सैनिक थे और नदी की ओर जा रहे थे। मै सडक पर आगे बढता गया।

उस दिन मैंने व्हेनीशियन की समतल भूमि पार कर ली। यह वस्तुतः एक निचली सतहवाला इलाका है। वर्षा मे वह और भी सपाट दिखाई देता था। इस इलाके मे समुद्र की ओर नमक के अनेक दलदल हैं, किन्तु सडके कम हैं। सभी रास्ते नदी के मुहानो से होकर समुद्र की ओर जाते हैं, अतः इलाका पार करने के लिए नहरो से लगी हुई पगडण्डियों पर से होकर जाना पड़ता है। मै उत्तर से दक्षिण की ओर चलता हुआ वह इलाका पार कर रहा था। अभी तक मै बहुत-सी सड़के और दो रेल-मार्ग पार कर चुका था। अन्ततः मै एक ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ रेल-मार्ग दलदल के किनारे-किनारे जा रहा था। यह रेल-मार्ग वेनिस तथा ट्रीस्ट के बीच का प्रमुख मार्ग था और एक ऊँचे ठोस बाँध पर बनाया गया था। गाडियाँ आने-जाने के लिए अलग-अलग दो लाइने थी। उसके नीचे की ओर एक फ्लैग स्टेशन [बहुत ही छोटा-सा, नाममात्र का स्टेशन] था और उसकी रक्षा के लिए वहाँ सैनिक तैनात थे। मार्ग के ऊपर की ओर दलदल मे गिरनेवाले एक जलस्रोत पर एक पुल बना था। उस पुल पर भी एक सैनिक पहरेदार दिखाई दे रहा था। जब मै खेतो को पार कर रहा था, तब मैंने इसी रेलमार्ग पर एक रेलगाड़ी जाते हुए देखी थी। रेलगाड़ी मुझे सपाट मैदान के पार, काफी दूरी पर दिखायी दी थी, अतः मैंने सोचा, कदाचित् पोर्टो ग्रुआरो से कोई गाड़ी इस तरफ आयेगी। पहरेदारो पर दृष्टि रखते हुए मै रेलमार्ग के टीले पर इस प्रकार लेट गया कि दोनो दिशाओं मे देख सकूँ। पुल की रक्षा करने वाला सैनिक चक्कर लगाता हुआ मेरी ओर कुछ कदम आगे आता और पुनः मुड़कर पुल की ओर लौट जाता। मै लेटा हुआ रेलगाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। मुझे जोरो की भूख लगी थी। जो गाड़ी मैंने देखी थी, वह इतनी लम्बी थी कि इजन उसे बड़े धीरे-धीरे खीच रहा था और मुझे विश्वास था कि मैं उस पर सरलता से चढ़ सकूँगा। बड़ी देर तक रेलगाडी की प्रतीक्षा करने के बाद मैंने यह आशा छोड़ दी कि उस ओर से कोई गाड़ी निकलेगी।

पर इतने ही मे मुझे एक गाड़ी अपनी ओर आती हुई दिखाई दी। बिलकुल सीधी दिशा में आगे बढ़नेवाला इंजन धीरे-धीरे बड़ा होता गया। मैंने पुल के पहरेदार की ओर दृष्टि घुमाई। वह पुल के इसी किनारे पर घूम रहा था, जो मुझ से पास था। किन्तु घूम रहा था वह दूसरी बगल मे—उस ओर नहीं, जिस ओर मैं लेटा हुआ था। मैंने सोचा कि गाड़ी जब सामने आयेगी, तो वह उस ओर होने के कारण निश्चय ही उसकी आड़ मे हो जायेगा और मुझे नहीं देख सकेगा। मैंने इंजन को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा। वह अपनी पूरी ताक़त से गाड़ी खींच रहा था। गाड़ी मे बहुत-से डिब्बे थे और मै समझ गया कि उसमे भी बहुत-से सैनिक पहरेदार होंगे। मैंने यह देखने का प्रयत्न किया कि वे किस डिब्बे मे थे। किन्तु मैं स्वय को छिपाए हुए था, अतः उन्हे देख नहीं सका। इंजन अब प्रायः उस स्थान पर पहुँच चुका था, जहाँ मै लेटा हुआ था। इस समतल भूमि पर भी, वह एक कर्कश चीत्कार के साथ गाड़ी खींचने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा था। जब वह मेरे सामने आया और जब ड्राइवर मेरे सामने से निकल गया, तो मै खड़ा हो गया तथा चुपचाप सामने से निकलते हुए डिब्बों के बिलकुल पास पहुँच गया। यदि सैनिक-पहरेदार मुझे देख भी लेते, तो भी मुझ पर अधिक शक नहीं कर सकते थे; क्योंकि मै रेल-पथ से बिलकुल सटकर खड़ा था। मेरे सामने से बहुत से बन्द माल डिब्बे निकलते गए और तब एक खुला हुआ डिब्बा सामने आया। डिब्बा नीचा था। उसका आकार एक हलकी डोंगी के समान था और उस पर तिरपाल पड़ा हुआ था। जब तक वह डिब्बा निकल न गया, मैं अपने स्थान पर खड़ा रहा। उसके पार होते ही मैंने उछलकर उसका पिछला डंडा पकड़ लिया और उसके सहारे अपने शरीर को ऊपर खींच लिया। ऊपर पहुँचते ही मै धीरे धीरे रेंगता हुआ नाव के आकारवाले उस डिब्बे और उसके पीछे की ऊँची छतवाले माल-डिब्बे के बीच मे पहुँच गया। मेरे ख़याल से मुझे अभी तक किसी ने देखा नहीं था। डंडा को पकड़कर मै नीचे की ओर झुक गया। मेरे पैर अब दो डिब्बो के बीच के हिस्से पर थे। गाड़ी अब पुल के मुख पर पहुँच चुकी थी। मुझे उस सैनिक-पहरेदार की याद हो आयी। ज्योंही गाड़ी उसके सामने से निकली, उसने मुझे देखा। वह बिलकुल लड़का-सा लगता था। उसका लोहे का टोप उसके सिर से काफी बड़ा था। मैंने तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह बेचारा दूसरी ओर देखने लगा। शायद उसने सोचा कि मै गाड़ी से सम्बन्ध रखनेवाला ही कोई व्यक्ति था।

मेरा डिब्बा उससे आगे निकल गया। मैंने देखा वह अभी भी घबराहट-भरी दृष्टि से सामने से निकलते हुए दूसरे डिब्बों को देख रहा था। अब मै तिरपाल की ओर मुड़ा और यह देखने लगा कि वह किस प्रकार बँधा था। तिरपाल मे रस्सी के फंदे दिये गये थे और उसके सिरे रस्सी के टुकड़ो द्वारा नीचे की ओर बॉध दिए गए थे। मैंने अपना चाकू निकाल कर रस्सी के टुकडो को काट दिया और अपना हाथ भीतर घुसेड़ा। वर्षा के कारण तिरपाल ऐंठ गया था और बीच-बीच मे कडा और फूला हुआ दिखाई दे रहा था। ऊपर ऑखे उठाते हुए मैने सामने की ओर देखा। आगे के माल-डिब्बे पर एक सैनिक पहरेदार था, किन्तु वह सामने देख रहा था, पीछे नहीं। मैंने डण्डे छोड दिए और तिरपाल के भीतर घुस गया। मेरे कपाल में कोई वस्तु टकराई और वहॉ एक गूमड़ा उभर आया। मुझे प्रतीत हुआ कि मेरे मुख पर रक्त बह रहा है, लेकिन मै रेंगता गया और अंदर पहुँचकर चित लेट गया। फिर मैने पीछे की ओर मुडकर तिरपाल का नीचे का छोर बॉध दिया।

मै जिस तिरपाल के भीतर घुसा था, उसमे बन्दूके रखी थी। वे सब साफ बन्दूके थी और उनमे से तेल और चरबी की गंध निकल रही थी। मै लेटे-लेटे तिरपाल पर टपकनेवाली वर्षा तथा पटरियो पर दौडते हुए डिब्बे की खटर-खट् की आवाज सुनने लगा। संधियो मे से आते हुए थोड़े-से प्रकाश मे, मैने लेटे-ही-लेटे, बन्दूको पर नजरे दौड़ायीं। उन पर टाट के आवरण चढे हुए थे। ये बन्दूके सम्भवतः तृतीय सैन्य-दल के द्वारा अगली पंक्तियो के पास भेजी जा रही थी। मेरे कपाल पर उभरा हुआ गूमडा अब सूज गया था। मै कुछ समय तक बिना हिले डुले लेटा रहा, जिससे उसमे से बहता हुआ खून जम जाये और रक्त-स्राव बंद हो सके। धीरे-धीरे खून जमता गया और रक्तस्राव बंद हो गया। तब मैंने कटे हुए भाग को छोडकर शेष भाग से जमे हुए रक्त की पपडियॉ निकाल डाली। यो वह कोई भारी चोट नहीं थी। मेरे पास रूमाल भी नही था, अतः मै अपनी उँगलियो से टटोलता गया और तिरपाल से गिरते हुए वर्षा के पानी से उस भाग को, जहॉ खून जमकर सूख गया था, धोता रहा। अच्छी तरह धो लेने के बाद मैने उतना हिस्सा अपने कोट की बॉह से पोछकर साफ कर लिया। मैं नहीं चाहता था कि उस आकस्मिक घाव के कारण किसी की दृष्टि बरबस मेरी ओर उठे। मै जानता था कि मेस्त्रे पहुँचने से पहले ही मुझे रेलगाडी से उतर जाना होगा, क्योकि तब इन बन्दूको की बड़ी सावधानी से देखभाल होने लगेगी। इटालियन सेना के पास पर्याप्त बन्दूके नहीं थीं और वह उनमे से एक के भी

खोने का खतरा उठाने का साहस नहीं कर सकती थी। अब तक मुझे जोरो की भूख लग गयी थी।

• ३२ •

मै डिब्बे के फर्श पर लेटा रहा। ऊपर टॅगे तिरपाल से वर्षा का पानी टपक रहा था। मै भीग गया था। मुझे ठड लग रही थी। मै बहुत भूखा भी था। जब मुझसे भूख सहन न हो सकी, तो अपने सिर को अपनी हथेलियों पर रखते हुए, मै पेट के बल लेट गया। मेरा घुटना अकड़ गया था; किन्तु उसकी स्थिति चिन्ताजनक नहीं थी। डा. वेलेण्टाइनी ने उस घुटने का बड़ा अच्छा इलाज किया था और उसीकी बदौलत सैन्य-दल के पीछे हटते समय आधी दूरी मैने पैदल ही तय की थी—उसी घुटने के बल पर तैरकर मैने टैग्लिआमेण्टो नदी का काफ़ी हिस्सा पार किया था। डा० वेलेण्टाइनी वाला वह घुटना बिलकुल ठीक था। दूसरा घुटना मेरा अपना था। डाक्टर आपके शरीर के साथ जब कुछ कर देते हैं, तो वह शरीर आपका अपना नही रह जाता। उस पर डाक्टर का अधिकार हो जाता है। मेरे साथ भी यही बात थी। शरीर के कुछ अंग मेरे अपने थे। सिर मेरा था, पेट का भीतरी भाग मेरा था—और वहॉ मुझे जोरो की भूख लगी थी। वहॉ मै अपनी आंतो की कुलबुलाहट का अनुभव कर रहा था। सिर की भी यही हालत थी। वह था तो मेरा; किन्तु मै उसका उपयोग नहीं कर पा रहा था—कुछ सोच ही नहीं सकता था—उसमे केवल स्मृतियॉ सहेजकर रख सकता था—वे भी बहुत अधिक स्मृतियॉ नहीं—सीमित स्मृतियॉ।

स्मृतियॉ और कैथरीन। हॉ, मैं कैथरीन को याद कर सकता था, किन्तु इन परिस्थितियों मे मुझे इस बात का निश्चय नहीं था कि मैं उसे देख सकूँगा। और जब उससे मिलने की आशा ही नहीं थी, तो उसके विषय में सोचना भी व्यर्थ था, क्योकि वैसी हालत मे मै पागल हो जाता—बिलकुल विक्षिप्त! नहीं, मै उसके विषय मे नहीं सोचूँगा। बस, उसकी याद-भर करूँगा—थोडी-सी याद—बहुत थोड़ी, धुँधली स्मृति-मात्र। धुँधली स्मृति, कैथरीन और यह डिब्बा। गाडीका डिब्बा खटर खट् करता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। तिरपाल को भेदकर मद-मंद प्रकाश भीतर आ रहा है। डिब्बे के फर्श पर मै

कैथरीन के साथ लेटा हूॅ . । किन्तु डिब्बे का वह फ़र्श बडा सख्त था—इतना सख्त कि उस पर पड़े-पड़े मै केवल उसके सख़्त होने का ही अनुभव कर सकता था—किसी के विषय मे कुछ सोच नहीं सकता था। मुझे कैथरीन से बिछुडे हुए काफी समय हो चुका था और मैं अनुभव कर रहा था। मै अनुभव कर रहा था—मेरे कपड़े गीले हैं, डिब्बे का फर्श बहुत धीरे-धीरे आगे खिसक रहा है, भीतर भयानक सूनापन व्याप्त है, गीले कपड़ों मे लिपटा हुआ मै उस सूनेपन मे पडा हूॅ, वह भी एक ऐसे फर्श पर, जो पीठ छीले दे रहा है—जो एक पत्नी के लिए बड़ा कठोर फर्श है!

रेलगाडी के डिब्बे के फर्श से मनुष्य कभी प्रेम नहीं कर सकता। टाट के आवरण मे छिपी बन्दूको से भी किसी का प्यार नहीं हो सकता। चरबी लगी हुई धातु की गध अथवा वह तिरपाल, जिससे जगह-जगह बरसात का पानी चू रहा हो, प्रेम करने योग्य वस्तुऍ नहीं हो सकती। तिरपाल के नीचे लेटना निस्सन्देह सुखद होता है। बन्दूको के बीच पड़े रहने में भी आनन्द आता है। किन्तु व्यक्ति का प्रेम इन वस्तुओ से नहीं, किसी व्यक्ति से ही होता है। और जब उस व्यक्ति को मालूम है कि उसका स्नेहपात्र उसके साथ नहीं है, तब वह उदास और फटी-फटी ऑखो से इधर-उधर देखने के सिवा और कर ही क्या सकता है? अपने उस एकाकीपन मे वह सोच भी तो नहीं सकता—ऐसी कल्पना भी तो नहीं कर सकता कि उसकी प्रेमिका उसके पास है। ऐसी स्थिति में उसकी उदास दृष्टि स्पष्ट ही किसी को खोजती रहती है। हॉ, उस खोजने मे उदासी उतनी नहीं रहती, जितना सूनापन रहता है। बेचारा प्रेमी पेट के बल लेटकर सूनी सूनी ऑखो से देखता रहता है। उसके नेत्रों के सामने जाने कितनी स्मृतियॉ सजग हो उठती हैं। वह देखता है कि एक सैन्यदल पीछे हट रहा है और दूसरा आगे बढ़ रहा है। उसकी अपनी मोटरे—उसके अपने आदमी—समाप्त हो चुके हैं—ठीक उसी प्रकार, जैसे एक बडी दूकान के किसी कर्मचारी के विभाग का सारा सामान आग लगने से जलकर भस्म हो गया हो। सामान का बीमा भी नहीं है। और अब, वह व्यक्ति इस जजाल से मुक्त हो चुका है। उसकी जिम्मेदारियॉ समाप्त हो गयी हैं। आग लगने के बाद यदि उस बड़ी दूकान का अधिकारी-वर्ग शकावश कुछ कर्मचारियो को गोली मार देता है, तो वहॉ के किसी अन्य कर्मचारी से यह आशा नहीं की जा सकनी कि दूसरे दिन दूकान खुलने पर वह वहॉ काम पर जायेगा। फिर शका भी केवल इसलिए कि मृत कर्मचारियों ने अधिकारी-वर्ग से सदा की भॉति बड़ी

स्पष्टता से बातचीत की थी। ऐसी स्थिति मे शेष कर्मचारी यदि कहीं अन्यत्र काम मिल सका, तो निश्चय ही वहाँ जाकर काम करने लगते है और तब पुलिस भी उनका कुछ नहीं कर सकती।

अपनी जिम्मेदारियो के साथ ही मेरा क्रोध भी नदी में बह गया था। यो तो जिम्मेदारी का अन्त उसी समय हो चुका था, जब पुल पार करते समय, नदी-तट पर कारबाइन-सैनिक ने मेरा गला पकड़कर मुझे पंक्ति से बाहर खीचा था। यद्यपि मै अपनी सैनिक वर्दी को उतार फेकना चाहता था, फिर भी इस बाहरी वेश की मुझे अधिक चिन्ता नहीं थी। मैंने अपनी बॉह पर लगे सितारो को निकाल लिया था। किन्तु केवल सुविधा की दृष्टि से ही मैंने ऐसा किया था। मेरा सम्मान उन सितारो पर निर्भर नहीं करता था। उन इटालियन सैन्याधिकारियो के भी मै विरुद्ध नहीं था। मै उनसे बच कर निकल आया था। मेरी समस्त शुभकामनाएँ उनके साथ थी। इटालियन सेना मे भी अच्छे व्यक्ति थे, बहादुर थे, शान्त स्वभाव के आदमी थे। समझदारो की भी उनमे कमी नही थी। वे सचमुच सम्मान के अधिकारी थे। किन्तु इन सब बातो से अब मेरा कोई सम्बन्ध नही रह गया था। मै चाहता था कि यह सड़ियल रेलगाडी किसी तरह मेस्त्रे पहुँच जाये, जिससे मै वहाँ उतर कर कुछ खा-पी सकूँ और अपने दिमाग को कुछ आराम दे सकूँ। मुझे यह सोचना बन्द करना ही होगा।

पिआनी जाकर लोगो को बताएगा कि सैन्याधिकारियो ने मुझे गोली से उड़ा दिया। अधिकारी-वर्ग जिन व्यक्तियो को मृत्यु-दण्ड देते थे, उनके जेबों की तलाशी लेकर उनमे से उनके काग़जात निकाल लिया करते थे, पर मेरे काग़ज़ात उनके पास नहीं थे। इसीलिए शायद वे लिख दें कि मै नदी मे डूब गया। पता नहीं, मेरे विषय में मेरे देश-वासियो को न-जाने कैसा समाचार सुनने को मिलेगा। उन्हें कदाचित् यह खबर भेजी जाये कि मैं युद्ध मे घायल होकर मर गया या शायद कोई अन्य कारण बता दिया जाये। हे भगवान्, मुझे तो बड़ी भूख लगी थी। भोजनालय के उस पादरी का न-जाने क्या हुआ होगा? मालूम नही, बेचारा कहाँ होगा! और रिनाल्डी? वह कदाचित् पोर्डेनन मे होगा। सैन्य-दल पोर्डेनन से आगे नहीं गया होगा। पर मै अब रिनाल्डी को कभी नहीं देख सकूँगा—उससे कभी नहीं मिल सकूँगा। सैन्य-दल के किसी भी मित्र से मेरी कभी भेंट न हो सकेगी। अब तो उस जीवन का ही अन्त हो चुका था। मुझे विश्वास नहीं होता कि रिनाल्डी को उपदश रोग हो गया था।

और यदि हो भी गया था, तो समय रहते चिकित्सा कर लेने पर वह कोई भयानक बीमारी नहीं रह जाती थी। लोगो की धारणा यही थी। वहॉ के लोग भी यही कहते थे। किन्तु बेचारा रिनाल्डी तो चिंतित होगा। यदि वह रोग मुझे हो जाय, तो मै भी चिंता करने लगूँगा। ऐसी दशा मे कोई भी चिंता करने लगेगा।

पर मेरा जन्म चिंताओ में डूबे रहने के लिए नहीं हुआ था। मै तो खाने-पीने के लिए पैदा हुआ था। परमात्मा की सौगध, यही बात थी। खाना, पीना और कैथरीन के साथ सोना—बस, यही। हो सकता है, आज ही रात मै अपनी कैथरीन से मिल सकूँ। किन्तु नही, यह बिलकुल असम्भव था। हॉ, कदाचित् कल रात को ऐसा हो सके। कल रात को शायद मै उसके पास पहुँच जाऊँ। उसके साथ बैठकर सुस्वादु भोजन कर सकूँ, कोमल चादरो में अपने स्वप्नो को साकार रूप दे सकूँ। हम दोनो पुनः मिल जायें और हमारा फिर कभी बिछोह न हो। हम कभी अकेले न जायें, जब भी कहीं जायें, एक-दूसरे के साथ जायें। किन्तु कदाचित् हमे शीघ्र ही जाना पड़े। कैथरीन को जाना पड़े। मै जानता था, उसे जाना पड़ेगा। पर हम जायेंगे कब? यही एक ऐसी बात थी, जिस के विषय में सोचना आवश्यक था। बाहर अधेरा छाने लगा था। मै लेटे-लेटे सोच रहा था कि हम कहॉ जायेंगे? जाने के लिए स्थानो की कमी तो थी नही।

चतुर्थ खण्ड

३३

दूसरे दिन उपःकाल में, अन्धकार और प्रकाश की उस मिलन-वेला के बीच हमारी गाडी मिलान पहुँची। स्टेशन की सीमा में प्रवेश करते समय गाडी की गति ज्योही धीमी हुई, त्योही मै उससे कूद पड़ा। मैंने रेलमार्ग पार किया और पास ही बने मकानो के बीच से निकलकर एक सडक पर जा पहुँचा। शराब की एक दूकान खुली थी। कॉफी पीने के इरादे से मै उसके भीतर घुस गया। दूकान मे झाड़ू लगाई जा चुकी थी। मेजो पर कॉफी के गिलासो मे चम्मच पडे थे। शराब के गिलासो को उठा लिया गया था और जहाँ वे गिलास रखे हुए थे, वहाँ अब उनकी पेंदी के गीले गोल निशान दिखाई दे रहे थे। दूकान का मालिक काउटर के पीछे बैठा हुआ था। एक मेज के निकट दो सैनिक बैठे थे। मै मद्य-कक्ष के काउटर के पास जाकर खड़ा हो गया और एक गिलास कॉफी तथा रोटी का टुकडा लेकर जलपान करने लगा। दूध ज्यादा होने के कारण कॉफी का रग भूरा हो गया था। मैंने रोटी के टुकड़े द्वारा कॉफी की सतह पर जमी हुई दूध की मलाई हटा दी। दूकानदार मेरी ओर देखने लगा।

"आपको एक गिलास ग्रेप्पा (शराब) दूँ?"

"नहीं, धन्यवाद!"

"मेरी ओर से लीजिये।" कहते हुए उसने एक छोटा-सा गिलास भरकर मेरी ओर बढ़ा दिया—'मोर्चे के क्या हाल-चाल हैं?"

"मै नहीं जानता।"

"डरिये मत। वे तो नशे में हैं।" उसने अपने हाथ से उन सैनिकों की ओर सकेत करते हुए कहा। मै उसके कथन पर विश्वास कर सकता था' वे सचमुच नशे मे थे।

"बताइए न" वह बोला—"क्या हाल हैं मोर्चे के?"

"मुझे उस विषय मे सचमुच कुछ नहीं मालूम।"

" मैंने आपको उस दीवार से नीचे उतरते हुए देखा है। आप गाड़ी से आए हैं।"

" अगर आप इतने ही इच्छुक हैं, तो सुनिए। अपनी सेना भारी संख्या में मोर्चे से पीछे हट रही है।"

" मै समाचार-पत्र पढता रहता हूॅ। आखिर यह सब क्या है? क्या हो रहा है वहॉ? युद्ध बन्द हो गया क्या?"

" नहीं, मेरी समझ से तो नहीं!"

उसने एक बोतल से ग्रेप्पा उडेलते हुए मेरा गिलास पुनः भर दिया।

" यदि आप किसी विपत्ति मे फॅस गए हो—" उसने कहा—" तो मै आपको अपने यहॉ रख सकता हूॅ।"

" नहीं, मुझ पर ऐसी कोई विपत्ति नहीं आयी है।"

" मेरा मतलब है कि यदि आप सचमुच मुसीबत मे हों, तो यहॉ, मेरे ही पास, ठहर जायें।"

" सामान्यतः ऐसे लोग कहॉ ठहरते है?"

" मकान मे। बहुत-से यहॉ भी ठहरते हैं। कोई भी व्यक्ति, जो विपत्ति मे होता है, बहुधा यहीं ठहरता है।"

" क्या बहुत-से लोग विपत्ति मे हैं?"

" यह तो विपत्ति के रूप पर निर्भर है। क्या आप दक्षिण-अमेरिका के निवासी हैं?"

" नहीं।"

" आप स्पेनिश भाषा जानते हैं?"

" थोड़ी थोडी।"

वह काउटर को धोकर साफ़ करने लगा।

" आजकल देश छोड़कर जाना बड़ा कठिन है; फिर भी बिलकुल असम्भव नहीं है।"

" देश छोड़कर जाने की इच्छा नहीं है मेरी।"

" आप जब तक चाहें, तब तक यहॉ रह सकते हैं। मै किस प्रकार का व्यक्ति हूॅ, यह आप शीघ्र ही जान जायेंगे।"

" अभी तो मुझे जाना है, किन्तु यदि लौटकर यहॉ आया, तो आपका पता अवश्य याद रखूॅगा।"

उसने अपना सिर हिलाया—" जब आप इस तरह की बाते कर रहे हैं, तो

उसने अपने कंधे उचकाये।

"अभी तो सब ठीक है।" मै बोला।

जब मै बाहर जाने लगा, तो उसने कहा—"यह भूलियेगा नहीं कि मै आपका मित्र हूँ।"

"भूल कैसे सकता हूँ मै?"

"मै आपसे फिर मिलूँगा।" उसने कहा।

"अच्छी बात है।" मैने उत्तर दिया।

मैं बाहर आया। स्टेशन पर सैन्य-पुलिस का पहरा था, अतः मै उस स्थान से दूर ही रहा। एक छोटे-से पार्क के निकट मैंने किराये की गाड़ी ली और उसे अस्पताल ले चलने के लिए कहा। अस्पताल पहुँचकर मै सीधा दरबान की कोठरी पर पहुँचा। उसने मुझे देखते ही मुझसे हाथ मिलाया और उसकी स्त्री ने मुझे प्रगाढ़ स्नेहालिगन मे कस लिया।

"आप लौट आये? आप स्वस्थ-सानद तो है न?" दरबान बोला।

"हाँ।"

"आपने जलपान किया है या नहीं?"

"कर लिया।"

"आपकी तबीयत कैसी है, लेफ्टिनेण्ट साहब? ठीक है न आप?" उसकी स्त्री ने पूछा।

"बिलकुल!"

"क्या आप हम लोगो के साथ जलपान नहीं करेगे?"

"नहीं, धन्यवाद! हाँ, एक बात तो बताओ। मिस बर्कले अब इस अस्पताल मे है या नहीं?"

"मिस बर्कले?"

"वही, अंग्रेज परिचारिका।"

"इनकी प्रेयसी।" उसकी स्त्री ने कहा। उसने स्नेह से मेरी बाँह थपथपाई और मुस्कराने लगी।

"नहीं।" दरबान ने उत्तर दिया—"वह चली गयी।"

मेरा हृदय बैठ गया। "तुम्हे निश्चित मालूम है?" मैने पूछा—"मेरा मतलब उस अंग्रेज युवती से है, जो ऊँची और बडी सुन्दर है।"

"जी, मै अच्छी तरह जानता हूँ। वह स्ट्रेसा चली गयी।"

"कब गयी?"

"दो दिन पहले। उसके साथ दूसरी अंग्रेज युवती भी चली गयी।"

"अच्छा।" मै बोला—"क्या तुम मेरी कुछ सहायता करोगे? देखो, किसीको यह मत बतलाना कि तुमने मुझे यहाँ देखा था। बड़ा आवश्यक है यह।"

"नहीं, मैं किसीसे नहीं कहूँगा।" दरबान ने कहा। मैंने उसके सामने दस लिरा का एक नोट बढाया, पर उसने मेरा हाथ परे हटा दिया।

"मै आपको वचन देता हूँ कि मैं यह बात किसी से नहीं कहूँगा।" वह बोला—"मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं है।"

"हम आपके लिए और क्या कर सकते हैं, लेफ्टिनेण्ट साहब?" उसकी पत्नी ने पूछा।

"इतना ही पर्याप्त है।" मैंने कहा।

"आप हम लोगो को बिलकुल गूँगा समझिये।" दरबान बोला—"यदि मेरे योग्य अन्य कोई कार्य हो, तो निस्सकोच मुझे बताइयेगा।"

"अवश्य—अवश्य।" मैने कहा—"अच्छा, नमस्ते। मै तुम लोगों से फिर मिलूँगा।"

वे द्वार पर खड़े-खड़े मुझे जाते देखते रहे।

मै गाड़ी में बैठ गया और ड्राइवर को सिमन्स का पता बता कर उससे वहाँ चलने के लिए कहा। सिमन्स को मै अच्छी तरह जानता था। वह मिलान में रहकर सगीत का अभ्यास कर रहा था।

सिमन्स का घर काफी दूर था। वह शहर के एक छोर पर, पोर्टा-मेग्नेटा की ओर रहता था। जब मैं उसके घर पहुँचा, तो वह उस समय भी बिस्तर में पड़ा-पड़ा ऊँघ रहा था।

"तुम बड़ी जल्दी उठ जाते हो, हैनरी।" उसने कहा।

"मै आज सुबह ही गाडी से आया हूँ।"

"यह सेनाओ के पीछे हटने की क्या बात है, दोस्त? क्या तुम मोर्चे पर मौजूद थे? सिगरेट पीओगे? मेज पर उस डब्बे मे रखी है।" उसका कमरा काफी बड़ा था। उसका पलंग दीवार से सटा हुआ था। कोने में एक पियानो रखा था। उसी के पास खाने-पीने के सामान की आलमारी और एक मेज़ थी। मै उसके बिस्तर के पास ही एक कुर्सी पर बैठ गया। सिमन्स तकियों के सहारे टिककर धूम्रपान करने लगा।

"मै एक बड़ी मुसीबत मे फँस गया हूँ, सिम!" मैंने कहा।

"मेरा भी वही हाल है, दोस्त!" वह बोला—"मै तो हमेशा ही किसी-न-किसी मुसीबत मे फँसा रहता हूँ। क्यो सिगरेट नही पीओगे क्या?"

"नहीं।" मैने कहा—"यह तो बताओ कि स्विट्जरलैंड जाने का क्या उपाय है?"

"तुम्हारे लिए? इटालियन अधिकारी तुम्हे देश से बाहर नहीं जाने देगे।"

"यह तो मैं भी जानता हूँ। किन्तु स्विस-सरकार—यदि किसी तरह मै वहाँ पहुँच गया, तो वहाँ की सरकार क्या करेगी?"

"वह तुम पर प्रतिबध लगा देगी।"

"मालूम है, पर उस प्रतिबंध का रूप कैसा होगा?"

"कुछ नहीं। बिलकुल सीधी-सी बात है। तुम कहीं भी आ-जा सकोगे। मेरा खयाल है कि समय-समय पर तुम्हे स्थानीय अधिकारियो को अपनी मौजूदगी की सूचना देनी पडेगी या ऐसा ही कुछ करना होगा। क्यो? कहीं पुलिस से बचकर तो नही भाग रहे हो तुम?"

"अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।"

"यदि तुम्हारी इच्छा न हो, तो मत बताओ। किन्तु तुम्हारी कहानी सुनने में आनद अवश्य आता। खैर! यहाँ के समाचारों मे कोई विशेषता नहीं। पिआसेन्जा के संगीत-कार्यक्रम मे मै बिलकुल असफल रहा।"

"मुझे इसका दुःख है।"

"देखो न—मै वहाँ जम ही नहीं सका। यों, मेरा गाना अच्छा ही रहा। अब मैं पुनः यहाँ लिरिको मे प्रयत्न करनेवाला हूँ।"

"काश, मै वहाँ मौजूद रह सकता!"

"तुम बड़ी विनम्रता प्रदर्शित कर रहे हो। किसी गहरी मुसीबत में तो नहीं हो न?"

"क्या बताऊँ मै!"

"नहीं, यदि इच्छा नहीं हो, तो न सही। उस जानलेवा मोर्चे को छोड़कर तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे?"

"जहाँ तक मेरा स्वय का प्रश्न है, मै उससे मुक्त हो चुका हूँ।"

"भले आदमी, मुझे तो पहले ही विश्वास था कि तुम कभी-न-कभी अपनी अक्ल से काम जरूर लोगे! क्या मै किसी प्रकार तुम्हारी कोई सहायता कर सकता हूँ?"

"किन्तु तुम तो बहुत व्यस्त हो।"

"नहीं, बिलकुल नहीं, हैनरी! जरा भी व्यस्त नही। तुम्हारे लिए मै सब-कुछ कर सकता हूँ—बडी प्रसन्नता के साथ।"

"तुम प्राय. मेरे ही कद के हो। क्या तुम बाजार से मेरे लिए सामान्य नागरिको-जैसे कुछ कपडे ला सकते हो? सादी पोशाक है तो मेरे पास भी, किन्तु यहाँ नहीं, रोम मे है।"

"तो तुम रोम मे भी रह आए हो, है न? बड़ा गदा शहर है! कैसे रह सके तुम वहाँ?"

"मुझे रहना पड़ा। मै शिल्पकारी सीखना चाहता था।"

"वह तो शिल्पकारी सीखने के योग्य स्थान नही है। हाँ, सुनो, तुम कपड़े मत खरीदो। तुम्हे जिन कपडो की जरूरत हो, मै दे दूँगा। मै तुम्हे इस प्रकार सजा दूँगा कि तुम सफलतापूर्वक अपने सामान्य नागरिक होने का अभिनय कर सको। उस कमरे मे चले जाओ। वहाँ एक आलमारी है। उसमे से जो कपड़े चाहो, निकाल लो! मेरे प्रिय मित्र, तुम्हे कपडे खरीदने की जरूरत नहीं है।"

"नहीं—नहीं, सिम! मै कपड़े खरीदना ही अधिक पसन्द करूँगा।"

"भाई मेरे, बाहर जाकर तुम्हारे लिए कपडे खरीदकर लाने की अपेक्षा, यही से कपडे दे देने मे मुझे अधिक सुविधा होगी। क्या तुम्हारे पास देश से बाहर जाने का आज्ञापत्र है या तुम बिना आज्ञापत्र के ही इतनी दूर जाना चाहते हो?"

"नहीं, अभी तक मेरा आज्ञापत्र मेरे पास है।"

"तब कपड़े पहनो, और सीधे पुराने हैल्वेशिया का रास्ता पकड़ो।"

"यह इतना आसान नहीं है, भाई! मुझे पहले स्ट्रेसा जाना है।"

"बहुत सुदर! अरे, नाव में बैठकर उस पार चले जाओ। बस, पहुँच गये स्ट्रेसा! यदि मैं गाने का अभ्यास नही करता होता, तो तुम्हारे साथ मै भी चलता।"

"तुम्हें तो रोने का अभ्यास करना चाहिए था।"

"आगे चलकर वह भी सीखूँगा, मित्र। फिर भी यह सच है कि मैं गा सकता हूँ। यही तो मेरी विचित्रता है।"

"मै शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि तुम्हें गाना आता है।"

वह बिस्तर पर पड़े-पड़े सिगरेट पीता रहा।

"अधिक शर्त मत लगाओ। यो इसमें संदेह नहीं कि मैं गाना जानता हूँ।

बड़ा अजीब-सा लगता है यह सब, किन्तु गा मै सकता हूँ। मुझे गाना अच्छा लगता है—उसका शौक है मुझे। सुनो।"

वह 'आफ्रिकाना' राग मे गरजा। उसका गला फूल गया। उसकी नसे उभर आयी। अलाप भरने के बाद वह बोला—"मै गा तो सकता हूँ न? चाहे किसी को अच्छा लगे या न लगे।" मैंने खिडकी से बाहर झाँका—"मैं जरा नीचे जाकर उस गाडीवाले को जाने के लिए कह दूँ।"

"जल्दी ऊपर आना, दोस्त। हम लोग यहीं जलपान करेंगे।"

वह बिस्तर पर से उठ कर सीधा खड़ा हो गया। फिर उसने गहरी साँस खीची और शरीर को झुकाकर व्यायाम करने लगा। मै सीढियाँ उतर कर नीचे पहुँचा और गाडीवाले को किराया देकर विदा कर दिया।

▪ ३४ ▪

नागरिकों-जैसे सामान्य वस्त्र पहनकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मै कोई बहुरूपिया हूँ। मै एक लम्बे अर्से तक सैनिक-वेश मे रहा था, अतः साधारण नागरिक की वेशभूषा धारण करने की मेरी प्रवृत्ति ही नष्ट हो चुकी थी। मुझे मेरा पतलून बड़ा ढीला-ढाला लग रहा था। स्ट्रेसा जाने के लिए मैंने मिलान से ही टिकट खरीद लिया था। एक नया टोप भी खरीदना पड़ा। सिम का टोप मेरे सिर मे नहीं आया, किन्तु उसके कपड़े बिलकुल ठीक बैठे थे। उनसे तम्बाखू की गध आ रही थी। मै रेल के डिब्बे मे बैठ गया और खिड़की से बाहर झाँकने लगा। अपने नये टोप की तुलना मे मुझे अपने कपड़े बड़े पुराने लगे। सामने ही विस्तृत लोम्बार्ड प्रदेश दिखायी दे रहा था। उस पर फैली हुई उदासी के समान ही मेरे मन मे भी उदासी छायी हुई थी। मेरे डिब्बे मे कुछ वायुयान-चालक बैठे थे, पर उन्हे मेरी कोई परवाह नहीं थी। वे मेरी तरफ सम्भवतः देखना भी नहीं चाहते थे। मेरी आयु के व्यक्ति को अ-सैनिक-वेश मे पाकर उनके नेत्रो में व्यंग्य झलक रहा था। किन्तु मुझे यह अपमानजनक नहीं लगा। यदि कुछ दिन पहले ऐसा हुआ होता, तो मै निश्चय ही, इसके लिए उनका अपमान करता और उनसे लड़ बैठता। वे गैलॅराते पर उतर गए। डिब्बे मे स्वय को अकेला पाकर मुझे प्रसन्नता ही हुई। मेरे पास समाचारपत्र था; किन्तु मैंने उसे पढ़ा नही था। मै अब युद्धविषयक समाचार नही पढ़ना चाहता था। युद्ध को

मै बिलकुल ही भूल जाना चाहता था। मैने अलग ही शान्ति से समझौता कर लिया था। पर शीघ्र ही मुझे यह अकेलापन अखरने लगा और जब मै स्ट्रेसा पहुँच गया, तो मैने संतोष की साँस ली।

मुझे आशा थी कि स्टेशन पर स्ट्रेसा के होटलो के कर्मचारी अवश्य दिखायी दे जायेंगे, किन्तु वहाँ कोई नहीं मिला। जिस मौसम मे लोग स्ट्रेसा जाते है, वह कभी का बीत चुका था और अब गाडियो पर यात्रियो को लेने, कोई नहीं आता था। मै अपना झोला लेकर नीचे उतरा। झोला भी सिम का ही था। वह बहुत हलका था, क्योंकि उसमे दो कमीज़ो को छोडकर और कुछ नही था। बाहर वर्षा हो रही थी। मै स्टेशन की छत के नीचे जाकर खडा हो गया। गाडी चली गई। स्टेशन मे एक और आदमी खड़ा था। मैने उससे पूछा कि वहाँ उन दिनों कौन कौन-सी होटले खुली रहती हैं। उसने ग्रैण्ड-होटेल-दा-ले-बोरोमी का नाम लिया। अन्य बहुत-सी छोटी-छोटी होटलो के नाम भी गिनाये और कहा कि वे होटले सालभर खुली रहती है। बरसते पानी मे, हाथ मे झोला लिए, मै ले–बोरोमी की ओर चल पडा। इतने ही मे, मुझे सडक पर अपनी ओर आती हुई एक गाडी दिखाई दी। मैने चालक को ठहरने का सकेत किया। गाडी मे बैठकर ही होटल जाना ठीक था। उस विशाल होटल के प्रवेशद्वार पर, जहाँ गाडियाँ खडी की जाती थी, जब मै पहुँचा, तो मुझे देखते ही, दरबान हाथ मे छाता लेकर दौड़ा आया। उसके व्यवहार मे बड़ी विनम्रता थी।

मैने एक अच्छा-सा कमरा किराये पर ले लिया। कमरा काफ़ी बड़ा और खुला हुआ था। वहाँ से झील का दृश्य दिखाई देता था। झील पर मेघ छाए थे। सूर्य की सुनहली किरणें जब झील के नीले जल पर नृत्य करती होगी, तो निश्चय ही वह बड़ा सुदर दिखायी देता होगा—ऐसा मेरा विश्वास था। मैने होटलवालो को बताया कि मै वहाँ अपनी पत्नी की प्रतीक्षा कर रहा था। कमरे में सुहागरात के पलंग के समान ही काफी बड़ा दुहरा पलग बिछा हुआ था। बिस्तर पर साटन की चादरे थी। होटल वस्तुतः बड़ा भव्य और आरामदेह था। लम्बे दालानों तथा चौडी चौडी सीढियो को पार कर, छोटे-बड़े कमरों से गुज़रता मै शराब पीने के कमरे में पहुँचा। वहाँ का बैरा मेरी पहचान का था। मैं एक ऊँची तिपाई पर बैठकर नमकीन बादाम और 'पोटेटो चिप्स' खाने लगा। मार्टिनी (शराब) ठण्डी और शुद्ध प्रतीत हुई।

"आप यहाँ एक सामान्य नागरिक-वेश मे क्या कर रहे हैं?" बैरे ने दूसरी बार गिलास मे मार्टिनी भरते हुए पूछा।

"मैं छुट्टी पर हूँ। स्वास्थ्य-लाभ करने के लिए छुट्टी पर आया हूँ।"

"आजकल इस होटल में कोई नहीं है। पूरा होटल खाली पडा है। समझ में नही आता कि बेकार ही ये लोग अभी होटल खुला क्यो रखे हैं।"

"क्या इधर तुम मछलियाँ पकड़ते रहे हो?"

"हाँ, हम लोगों ने कुछ मछलियाँ पकडी हैं—काफी बडी और खूबसूरत। वर्ष के इस भाग मे यदि मछलियाँ पकड़ी जायें, तो काफी अच्छी मछलियाँ मिल जाती हैं।"

"तुम्हे मेरे द्वारा भेजी हुई तम्बाखू मिली या नहीं?"

"हाँ, क्या आपको मेरा पत्र नहीं मिला?"

मुझे हँसी आ गयी। उसके मनलायक तम्बाखू मै जुटा ही नहीं सका था। उसे पाइप मे रखकर पीने की अमरीकन तम्बाखू चाहिए थी। किन्तु मेरे सम्बन्धियों ने उसे मेरे पास भेजना ही बन्द कर दिया था। सम्भव है, उसे राह मे कहीं किसीने रोक लिया हो। कुछ भी हो, तम्बाखू मेरे पास कभी नहीं आई।

"मै कहीं-न-कहीं से तुम्हारे लिए थोड़ी तम्बाखू जरूर ला दूँगा।" मै बोला—"हाँ, एक बात तो बताओ। क्या तुमने शहर मे दो अंग्रेज लड़कियों को देखा है? वे परसों ही यहाँ आयी हैं।"

"होटल मे तो नहीं हैं।"

"नहीं, वे परिचारिकाएँ हैं।"

"हाँ, दो परिचारिकाओ को देखा है। जरा एक मिनट ठहरिये। मै अभी पता लगाता हूँ कि वे कहाँ ठहरी हैं।"

"उनमे से एक मेरी पत्नी है।" मै बोला—"मै उसी से मिलने यहाँ आया हूँ।"

"और दूसरी मेरी औरत है।"

"मै तुमसे मजाक नहीं कर रहा हूँ।"

"तब इस मूर्खतापूर्ण परिहास के लिए कृपया मुझे क्षमा कीजिए।" उसने कहा—"आपकी बात ठीक से समझ नहीं सका मै।" वह कुछ देर के लिए बाहर चला गया। मै जैतून, नमकीन बादाम और 'पोटेटो-चिप्स' का स्वाद लेता रहा। शराब पीने के उस कमरे मे लगे आइने मे मैने नागरिक वस्त्रो में सज्जित अपने शरीर को देखा। बैरा लौट आया। "वे स्टेशन के पास, एक छोटे होटल मे ठहरी हुई हैं—" उसने बताया।

"कुछ सैंडविच मिल सकेंगे?"

"है तो नहीं; पर मै मंगा देता हूँ। आप तो जानते ही हैं कि यहाँ कुछ भी नहीं है। कोई ठहरा भी तो नहीं है यहाँ आजकल।"

"क्या सचमुच यहाँ कोई नही है?"

"है, परन्तु बहुत कम व्यक्ति।"

सैंडविच आ गये। तीन सैंडविच खाने के बाद मैंने दो गिलास मार्टिनी और पी। उसके समान बढिया और ठडी शराब का स्वाद मैंने आज तक नहीं चखा था। उसे पीने के बाद मुझे लगा कि मै सचमुच सभ्य-जगत् मे रह रहा हूँ। लाल शराब, पावरोटी, पनीर, बेस्वाद कॉफी और ग्रेप्पा पीते-पीते मै थक गया था। पर अब मै शराबघर के खूबसूरत महोगनी के (अमेरिका का एक वृक्ष) काउटर, पीतल की छड़ों और आइने के सामने एक ऊँची तिपाई पर बैठा था। चिन्ताएँ मुझ से कोसो दूर भाग चुकी थी। इतने में बेरा ने मुझ से कोई प्रश्न पूछा।

"युद्ध के विषय में कोई बात मत करो।" मैं बोला। युद्ध मुझसे मीलों दूर था। हो सकता है, युद्ध बद हो गया हो। कम-से-कम जहाँ मै बैठा था, वहाँ तो युद्ध नाम की कोई चीज नहीं थी। और तब मुझे अनुभव हुआ कि मेरे लिए सचमुच युद्ध का अंत हो चुका था। फिर भी मै यह विश्वास नहीं कर सका कि सही अर्थों में युद्ध का खात्मा हो गया था। मेरे हृदय मे उस समय ठीक उस विद्यार्थी की-सी भावनाएँ उठ रही थीं, जो किसी खास मौके पर बिना अनुमति के पाठशाला से अनुपस्थित रहे और यह जानने का इच्छुक हो कि उस विशिष्ट अवसर पर पाठशाला मे क्या हुआ!

जब मै कैथरीन और हैलेन फर्ग्यूसन के होटल में पहुँचा, तो वे खाना खा रही थीं। दालान मे खडे होकर मैंने उन्हे मेज पर खाना खाते हुए देखा। कैथरीन का मुख मुझसे कुछ दूर था। मैंने उसकी लटों को देखा, उसके कपोलो पर दृष्टि दौडाई और उसकी ग्रीवा तथा कधो को निहारता रहा। फर्ग्यूसन बातो मे खोयी थी। जब मैं कमरे के भीतर पहुँचा, तो वह चुप लगा गयी।

"हे भगवान्! तुम!" वह चकित-सी बोली।

"हेलो!" मैंने कहा।

"ओह!—तुम!" कैथरीन अकचकाकर बोली। उसका मुखड़ा दमक उठा। मुझे अपने सामने पा वह अपार सुख का अनुभव कर रही थी। मैंने झुककर उसका चुम्बन ले लिया। वह आरक्त हो उठी। मै मेज के पास ही बैठ गया।

"तुम भी एक अजीब मुसीबत हो!" फर्ग्यूसन ने कहा—"यहाँ क्या कर रहे हो तुम? खाना खा लिया है?"

"नहीं।" तभी खाना परोसनेवाली नौकरानी भीतर आई और मैंने उसे अपने लिए खाना लाने का आदेश दे दिया। कैथरीन टकटकी लगाकर मुझे देखती रही। उसके नेत्रो से अवर्णनीय सुख झाँक रहा था।

"तुम इस असैनिक वेश मे यहाँ क्या करने आये हो?" फर्ग्यूसन ने पूछा।

"मै अब मत्रिमडल मे आ गया हूँ।"

"नहीं, तुम जरूर किसी झँझट मे फँस गये हो।"

"कैसी बाते करती हो, फर्गी! तुम्हे तो खुश होना चाहिए।"

"मै तुम्हे देखकर खुश नहीं हो सकती। मै जानती हूँ कि तुमने इस गरीब लडकी को किस गढ़े मे ढकेल दिया है। तुम्हारी मनहूस सूरत देखकर मुझे जरा भी प्रसन्नता नहीं होती।"

कैथरीन मेरी ओर देखकर मुस्कराई। मेज के नीचे मेरा पैर दबाकर उसने मुझे चुप रहने का सकेत किया।

"मुझे किसी ने गढ़े मे नही ढकेला है, फर्गी! मै स्वयं ही अपने जाल मे फँस गयी हूँ।"

"मै इसकी सूरत भी नही देखना चाहती।" फर्ग्यूसन ने कहा—"इसने अपनी नीचतापूर्ण इटालियन चालबाजियों द्वारा तुम्हे बरबाद करने के सिवा और क्या किया है? अमरीकी तो इटालियनों से भी अधिक अधम होते हैं।"

"और स्कॉच सचमुच बडे नैतिक व्यक्ति होते हैं!" कैथरीन बोली।

"मेरा मतलब यह नहीं है। मै तो इस व्यक्ति की इटालियन नीचता की बात कह रही हूँ।"

"क्या मै सचमुच नीच हूँ, फर्गी?"

"हाँ, हाँ, तुम नीच हो! नीच से भी नीच—अधम से भी अधम। तुम एक सर्प हो—इटालियन सैनिक-वेश मे छिपे हुए विषैले नाग! एक लबादा ओढकर अपने आपको ढँक लेनेवाले साँप।"

"किन्तु अब तो मै इटालियन सैनिक के वेश मे नहीं हूँ।"

"यह तुम्हारी नीचता का दूसरा उदाहरण है। गर्मी के मौसमभर तुम प्रेम करते रहे। इस मासूम लडकी को तुमने गर्भवती बनने के लिए बाध्य कर दिया। और अब, अब मैं समझती हूँ कि तुम इसे अकेली छोड़कर चोर के समान भाग जाओगे।"

मै कैथरीन की ओर देखकर मुस्कराया। वह भी मुस्करा पडी।

"हम दोनो ही चोरो की तरह भागनेवाले है।" वह बोली।

"तुम दोनो एक ही धातु के बने हो।" फर्ग्यूसन ने कहा—"मै तो तुम्हारे कारण, शर्म से पानी-पानी हुई जाती हूँ, कैथरीन! लज्जा और सम्मान नाम की वस्तु तो तुममें है ही नहीं। तुम भी उतनी ही छिछली हो, जितना यह है।"

"नही फर्गी, नही।" कहते हुए कैथरीन ने प्यार से उसका हाथ थपथपाया—"मुझ पर इस प्रकार दोप मत लगाओ। तुम जानती हो कि हम एक-दूसरे को चाहते हैं।"

"हटाओ अपना हाथ यहाँ से।" फर्ग्यूसन बोली। उसका मुख क्रोधावेश में लाल हो रहा था—"यदि तुम्हे थोड़ी भी शर्म होती, तो आज बात ही दूसरी होती। किन्तु तुम्हारे, ईश्वर जाने, कितने महीने का गर्भ है, और फिर भी तुम इसे मजाक समझती हो! आज अपने कौमार्य नष्ट करनेवाले के लौट आने पर, तुम मुस्करा रही हो। तुम्हारी शर्म मर चुकी है—तुम्हारी भावनाएँ नष्ट हो चुकी है।" वह रोने लगी। केथरीन ने उसके पास जाकर उसके गले मे बाँहे डाल दी। वह उसे सात्वना दे रही थी। मैने उसकी ओर देखा, किन्तु मुझे उसके शरीर मे कोई अन्तर नहीं दिखाई दिया।

"मुझे इसकी परवाह नहीं।" फर्ग्यूसन ने सिसकते हुए कहा—"मै समझती हूँ—यह सब बड़ा भयानक है।"

"चुप हो जाओ, फर्गी।' कैथरीन उसे समझाते हुए बोली—"क्यो शर्मिंदा कर रही हो। रोओ मत। आँसू पोछ लो, फर्गी!"

"नहीं, मै रो नहीं रही हूँ।" हिचकियाँ भरते हुए फर्ग्यूसन बोली—"रोती नहीं हूँ मै। दुःख तो मुझे इस बात का है कि तुमने अपने-आपको कितनी भयानक परिस्थिति मे डाल लिया है।" उसने मेरी ओर देखा—"मै तुमसे घृणा करती हूँ—हार्दिक घृणा!" वह बोली—"और यह लड़की मुझे तुमसे घृणा करने से नही रोक सकती। नीच, अधम, अमरीकन-इटालियन कहीं के!" उसके नेत्र और नाक रोते-रोते बिलकुल लाल पड़ गए थे।

कैथरीन मुझे देखकर मुस्कराई।

"मेरे गले मे बाँहे डाल तुम उसकी ओर मुँह करके मुस्करा नहीं सकती।"

"तुम्हारा इतना क्रोध अनुचित है, फर्गी।"

"मै जानती हूँ।" सिसकियाँ भरते हुए फर्ग्यूसन बोली—"मेरी बातों का

कोई खयाल मत करो। तुम दोनो मेरे आवेग को मन में मत लाओ। अपने आपे मे नहीं हूँ मै—समझ खो बैठी हूँ—जानती हूँ यह सब। किन्तु मै तुम दोनो को सुखी देखना चाहती हूँ।"

"सुखी तो हैं ही हम।" कैथरीन ने कहा—"तुम कितनी अच्छी हो, फर्गी!"

फर्ग्यूमन पुनः रो पडी—"जिस तरह तुम आज सुखी हो मै तुम्हें उस तरह सुखी नहीं देखना चाहती। तुम दोनो शादी क्यो नही कर लेते? तुम्हारी कोई और पत्नी तो नही है न?"

"नही।" मैने उत्तर दिया। कैथरीन हँस पड़ी।

"हँसने की कोई बात नहीं है—" फर्ग्यूसन बोली—"तुम नहीं जानती, इनमें से अधिकाश की दूसरी पत्नी होती है।"

"यदि तुम इसी मे प्रसन्न हो, फर्गी" कैथरीन ने कहा—"तो हमारा विवाह भी हो जायेगा।"

"मुझे प्रसन्न करने के लिए नहीं, तुम्हे स्वय अपनी मर्जी से विवाह कर लेना चाहिए।"

"अब तक तो हम काफी व्यस्त थे।"

"हॉ, हॉ, मुझे मालूम है। तुम्हारी व्यस्तता अच्छी तरह समझती हूँ मै। बच्चा पैदा करने के प्रयास मे व्यस्त थे न!" मुझे लगा, वह फिर से रोने-वाली है, किन्तु उसके स्थान पर इस बार वह बडी कटु हो गई—"मेरा खयाल है, अब तुम आज रातको मुझे छोडकर इसके साथ चल दोगी।"

"हॉ," कैथरीन बोली—"यदि इनकी इच्छा हुई, तो।"

"और, मेरा क्या होगा?"

"क्या तुम यहॉ अकेली रहने से डरती हो?"

"हॉ, डरती हूँ।"

"तब, मै तुम्हारे साथ यहीं रहूँगी।"

"नहीं, तुम इसी के साथ जाओ। अभी, इसी क्षण चली जाओ। उठो, जाओ यहॉ से। मै तुम दोनो को यहॉ देखना तक नही चाहती।"

"कम-से-कम हम अपना भोजन तो समाप्त कर लें।"

"नहीं, तुम लोग अभी जाओ।"

"फर्गी, कुछ तो बुद्धि से काम लो।"

"मै कहती हूँ, चले जाओ यहॉ से! दोनो-के-दोनो निकल जाओ—एक मिनट भी यहॉ ठहरने की आवश्यकता नहीं है।"

"चलो, हम चलें" मैं बोला। फर्गी के व्यवहार से मैं तंग आ गया था।

"तुम स्वयं जाने के इच्छुक हो। देखा तुमने, तुम लोग चाहते हो कि मैं खाना तक अकेली खाऊँ। इटालियन झीलों पर घूमना मुझे शुरू से पसंद है। तुम अभी ही मुझे अकेली छोड़कर जा रही हो! तुम्हारा मेरे साथ यही व्यवहार है! ओह!" वह फिर सिसक पड़ी। उसने कैथरीन की ओर देखा। उसका गला रुंध आया था।

"हम लोग भोजन समाप्त होने तक रुक जाते हैं।" कैथरीन ने कहा—"यदि तुम चाहती हो कि मैं यहीं रहूँ, तो मैं तुम्हें अकेली छोड़कर नहीं जाऊँगी, फर्गी।"

"नहीं, नहीं, मैं स्वयं चाहती हूँ कि तुम चली जाओ। अवश्य जाओ तुम। ओह, मैं भी कितनी विवेकहीन हूँ! मेरी बातों पर ध्यान मत देना!" उसने आँसू पोंछते हुए कहा।

यह रोना-धोना देखकर भोजन परोसनेवाली लड़की बड़ी उलझन में पड़ गई थी। दुबारा खाना लाते समय जब उसने देखा कि परिस्थिति सुधर गई थी, तो उसने संतोष की साँस ली।

रात्रि का समय—ग्रैण्ड होटल का मेरा अपना कमरा और बाहर सूना-लम्बा बरामदा—एक शान्त-एकान्त कक्ष में बैठे थे हम दोनों। कमरे के सामने हमारे जूते पड़े थे। फर्श पर मोटी-सी दरी बिछी थी। खिड़की के बाहर वर्षा की मधुर रिमझिम सुनायी दे रही थी। कमरा प्रकाश से जगमगा रहा था—एक अनोखा आनन्द और उत्साह! कुछ देर बाद बत्तियाँ बुझा दी गयीं। चिकनी चादरों और आरामदायक गद्दे तथा तकियों पर एक अपूर्व सुख का अनुभव हो रहा था। हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि हम अपने घर लौट आये हैं। रात में जब भी हमारी नींद खुली, हमने स्वयं को एक दूसरे के समीप पाया—कोई किसी से दूर नहीं हुआ—कोई किसी को छोड़कर नहीं गया। हमारे जीवन का सूनापन अब हमसे सदा के लिए विदा हो चुका था। जो-कुछ हमारे सामने था, वही सत्य था। शेष सब असत्य था—अप्रत्यक्ष। जब हम थक जाते, तो सो जाते। बीच में यदि हममें से किसी एक की नींद उचट जाती, तो दूसरा भी जाग जाता और फिर कोई अकेला नहीं रह पाता। पुरुष प्रायः एकाकी रहना चाहता है, नारी भी एकान्त की कामना करती है। यदि वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो उस प्रेम में ही एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या की भावना पैदा हो जाती है। किन्तु हमारे साथ सच तो यह है कि हम दोनों ने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया। एक-दूसरे के साथ रहकर भी हम एकान्त का अनुभव कर सकते थे। सम्पूर्ण

विश्व सेअलग—ऐसा एकान्त, जिसमें केवल हम दो थे—अन्य कोई नहीं था। हाँ बिलकुल अकेलेपन का अनुभव मुझे अपने जीवन मे एक बार हुआ है। उससमय बहुत-सी लडकियो से घिरे रहने पर भी मैने स्वय को अकेला महसूस किया था। निरे एकाकीपन का अनुभव ऐसी ही परिस्थिति मे तो होता है। किंतु जब हम दोनो साथ थे, तो अकेलेपन और भय या मनहूसियत का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। मै जानता हूँ कि रात बिलकुल वैसी ही नहीं होती, जैसा दिन हुआ करता है। दोनो मे अंतर होता है। रात में जो-कुछ होता है, उसे दिन मे समझाया भी नहीं जा सकता, क्योकि दिन के समय उसका अस्तित्व ही नही होता। एकाकी व्यक्तियों के लिए—अगर उनका सूनापन जाग उठा—तो रात कभी-कभी बडी भयावह हो उठती है। किन्तु कैथरीन के साथ रहने पर मुझे दिन और रात मे कोई अन्तर नहीं दिखायी देता था। अंतर था भी तो इतना ही कि रात का समय दिन की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह कटता था। मनुष्य, इस डरावनेपन के विरुद्ध यदि अपनी निर्भयता का परिचय देता है और यदि उसकी निर्भयता सिर उठाने लगती है, तो दुनिया उसे जीने नही देती—उसे तोडमरोड़ कर रख देती है। दुनिया के लिए उसकी मौत के सिवा शायद और कोई मार्ग शेष नहीं रह जाता है। वह तो प्रत्येक व्यक्ति को झुकने के लिए मजबूर करती है। बाद में, बहुत-से मनुष्य इस हालत मे भी अपनी शक्ति बढ़ा लेते हैं। किन्तु जो झुकना नहीं जानते, उन्हे तो मरना ही पड़ता है।

दुनिया तो इस मामले मे पक्षपात नहीं करती। नम्र, सज्जन और शूरवीर—बिना किसी भेदभाव के—सबका यही अंत होता है। यदि आप इन व्यक्तियों की श्रेणी में नहीं है, तो आप निश्चिन्त रह सकते हैं। मृत्यु तो आपकी भी होगी, किन्तु आपकी मौत के लिए दुनिया को कोई जल्दी नहीं है।

दूसरी सुबह जब मै उठा, तो कैथरीन सो रही थी। सूर्य की किरणें खिड़की से कमरे मे झाँक रही थी। वर्षा बन्द हो गई थी। मै बिस्तर से उतरा और खिडकी के निकट जा कर खड़ा हो गया। खिड़की के नीचे ही बगीचा था। यद्यपि उस समय बगीचे में फूल नहीं थे, किन्तु बगीचा बड़े कलात्मक ढंग से बनाया गया था। ककरीले रास्ते, वृक्षों की कतार और झील के किनारे तक पत्थर की दीवार—झील के उस ओर एक-दूसरे से जुड़ी हुए पर्वत-शृंखलाएँ और झील के नीले जल पर सूर्य की थिरकती हुई स्वर्ण-रश्मियाँ—मै खड़ा-खडा मुग्ध भाव से निहारता रहा। ज्योंही मैं मुड़ा, मैने देखा कि कैथरीन की नींद टूट चुकी थी। वह मुझे ही देख रही थी।

"कैसे हो प्राण ?" उसने कहा—"आज का दिन बड़ा सुन्दर है—है न ?"

"तुम्हे कैसा लग रहा है ?"

"बहुत अच्छा। हमारी रात बड़ी प्यारी रही।"

"नाश्ता करोगी ?"

वह नाश्ता करना चाहती थी। मै भी नाश्ता करना चाहता था। हमने वहीं, बिस्तर पर ही नाश्ता किया। नवम्बर मास की कोमल-स्निग्ध रवि-किरणें खिडकी की राह कमरे मे प्रवेश कर रही थीं। मेरी गोद मे नाश्ते की तश्तरी रखी थी और हम नाश्ता कर रहे थे।

"क्या आज तुम समाचारपत्र नही पढ़ोगे ? जब तुम अस्पताल में थे, तब तो हमेशा समाचारपत्र पढ़ते थे।"

"हॉ," मै बोला—"पर अब मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है।"

"क्या युद्ध वास्तव में इतना भयानक था कि तुम उसके विषय में पढ़ना भी नहीं चाहते ?"

"मैं उन समाचारो पर नजरें भी नहीं डालना चाहता।"

"काश ! मै भी तुम्हारे साथ युद्धक्षेत्र मे होती—मैं भी उसके भीषणस्वरूप से परिचित हो सकती।"

"यदि किसी दिन मै अपने मस्तिष्क मे उसका स्पष्ट चित्र खींच सका, तो तुम्हें अवश्य बताऊँगा।"

"तुम्हे सैनिक-वेश में न पाकर कही अधिकारी-वर्ग तुम्हे गिरफ्तार तो नहीं कर लेगा ?"

"वे कदाचित् मुझे गोली ही मार देंगे।"

"तब हमे यहॉ नहीं रहना चाहिए। हमें इस देश से बाहर चले जाना चाहिए।"

"मैने भी यही सोचा है।"

"हमें यह देश छोड ही देना चाहिए, प्रियतम ! मूर्खों की तरह बैठकर अवसर की प्रतीक्षा करने से कोई लाभ नही। तुम मेस्त्रे से मिलान कैसे पहुँचे थे ?"

"गाडी से। उस समय मै सैनिक-वेश मे था।"

"क्या तुम्हें उस समय किसी विपत्ति की आशंका नहीं थी ?"

"बहुत कम। मेरे पास इधर-उधर जाने का एक पुराना आदेशपत्र था। मेस्त्रे में मैंने उसकी तारीख बदल दी थी।"

"प्रियतम, तुम किसी भी क्षण गिरफ्तार किये जा सकते हो। मै ऐसा

खतरा मोल नहीं लेना चाहती। यह तो निरी मूर्खता होगी। यदि अधिकारी लोग तुम्हे पकड़कर ले गए तो, सोचो तो, हमारी क्या हालत होगी?"

"हमे इस विषय मे कुछ सोचना ही नहीं चाहिए। मै तो सोच-सोच कर थक गया हूँ।"

"पर यदि कोई तुम्हे गिरफ्तार करने आया, तो तुम क्या करोगे?"

"मैं उसे गोली मार दूँगा।"

"देखा, कितने पागल हो तुम! जब तक हम यहाँ से अन्य स्थान के लिए रवाना न हो जाये, मै तुम्हे होटल से बाहर नहीं निकलने दूँगी।"

"कहाँ जानेवाले है हम?"

"नाराज मत हो, प्राण? जहाँ तुम कहोगे, हम वहीं जायेंगे। पर कृपा कर यह अभी तय कर लो कि हम कहाँ जायेगे।"

"इस झील के उस पार स्विट्जरलैण्ड है। हम लोग वहाँ जा सकते हैं।"

"तब तो बड़ा आनन्द आयेगा।"

बाहर बादल उमड़ रहे थे। झील पर कालिमा छाती जा रही थी।

"कहीं ऐसा न हो कि हमे सदा इसी तरह छिप कर रहना पड़े—अपराधियों का जीवन बिताना पड़े।" मै बोला।

"ऐसा मत सोचो, प्रियतम। तुम कोई बहुत दिनो से तो इस तरह छिप कर रह नहीं रहे हो—और अपराधियो के समान हम कभी रहेगे भी नहीं। बड़े अच्छे दिन आनेवाले हैं हमारे।"

"कभी-कभी मुझे लगता है, मै सचमुच अपराधी हूँ। मै सेना से भाग खड़ा हुआ हूँ।"

"समझदारी से काम लो, प्रिय। दया करो मुझ पर। तुम सेना से नहीं भागे हो, केवल इटालियन सेना से भागे हो।"

मुझे हँसी आ गई। "तुम सचमुच बड़ी प्यारी लड़की हो!" मैने कहा—"चलो, बिस्तर पर चले। मुझे बिस्तर पर पड़े रहने में बड़ा आनन्द आता है।"

थोड़ी देर बाद कैथरीन अचानक पूछ बैठी—"तुम अपने-आपको अपराधी तो नहीं मानते न?"

"नहीं।" मै बोला—"जब मै तुम्हारे साथ होता हूँ, तो मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"कितने पागल हो तुम भी।" उसने कहा—"किन्तु मैं तुम्हें सँभाल

लूँगी। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है प्राण, कि मुझे सुबह उठने में तनिक भी आलस्य नही मालूम देता!"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

"क्या तुम इसे अपना सौभाग्य नही समझते कि तुम्हें कितनी योग्य पत्नी मिली है। किन्तु मुझे इसकी चिता नही। मैं तुम्हे किसी ऐसे स्थान में ले जाऊँगी, जहाँ तुम्हें कोई गिरफ्तार न कर सके, और तब हम सुखपूर्वक अपने दिन बितायेंगे।"

"तब चलो, हम इसी क्षण वहाँ चल दे।"

"चलेगे प्रिय, अवश्य चलेगे। जब आर जहाँ तुम जाना चाहोगे, वहीं मै तुम्हारा साथ दूँगी।"

"छोड़ो, अब हमे किसी भी सम्बन्ध मे नही सोचना चाहिए।"

"अच्छी बात है!"

-३५-

कैथरीन, झील के किनारे-किनारे, फर्ग्यूसन से मिलने उसके होटल चली गई। मै शराब पीने के कमरे में जाकर समाचारपत्र पढने लगा। कमरे मे चमड़े की आरामदेह कुर्सियाँ पड़ी थी। उन्ही में से एक पर बैठकर मैं उस समय तक समाचारपत्र उलटता रहा, जब तक कि बैरा भीतर नही आया। अखबारो मे मैने पढा कि इटालियन सेना टैग्लिआमेण्टो नदी पर बुरी तरह पराजित हुई थी और अब वह पिआवे की ओर पीछे हट रही थी। मुझे पिआवे का स्मरण हो आया। सॉन डोना के पास पिआवे नदी को पार करता हुआ एक रेल-मार्ग मोर्चे की ओर जाता था। उस स्थान पर नदी गहरी और संकरी थी। वहाँ उसका बहाव भी बहुत धीमा था। नीचे के इलाको मे बहुत सी नहरें तथा मच्छरों से भरे दलदल थे। वहाँ कुछ आकर्षक बगले भी थे। युद्ध के पहले, एक बार, कोर्टिना-द-आम्पेज़ो जाते समय, पहाड़ियों के बीच, इस नदी के किनारे मैने घण्टो यात्रा की थी। उस स्थान से कुछ ऊपर, नदी की तीव्र गति से बहनेवाली धारा ऐसी लगती थी, मानो मछलियो की एक लम्बी पक्ति बढती चली आ रही हो। बीच-बीच में उसका जल-प्रवाह छिछला होकर फैल गया था। चट्टानों के नीचे जलकुण्ड बन गए थे। केडोर के पास, रास्ता नदी के

तट से मुडकर दूर चला गया था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि आखिर वहाँ जो सैन्यदल था, वह नीचे कैसे उतरेगा? तभी बैरा अंदर आया।

"काउण्ट ग्रेफी आपके विषय में पूछ रहे थे।" उसने कहा।

"कौन?"

"काउण्ट ग्रेफी! आपको स्मरण होगा, पिछली बार जब आप यहाँ आये थे, तो आपसे एक बूढ़ा व्यक्ति मिला था—वही।"

"क्या वे यहाँ हैं?"

"जी हाँ, वे अपनी भतीजी के साथ यहीं ठहरे हुए है। मैंने उन्हें बताया कि आप भी यही है। वे आप के साथ बिलियर्ड्स खेलना चाहते है।"

"वे हैं कहाँ इस समय?"

"टहल रहे हैं।"

"उनका स्वास्थ्य कैसा है?"

"उनकी उम्र पहले से भी कम दिखाई देती है और वे हमेशा की भाँति युवा प्रतीत होते है। पिछली रात खाना खाने के पहले वे तीन गिलास शैम्पेन पी गये।"

"उनके बिलियर्ड-खेल का क्या हाल है?"

"ठीक है। उन्होने मुझे हरा दिया। जब मैंने उनसे कहा कि आप यहाँ हैं, तो वे बडे प्रसन्न हुए। उनके साथ खेलनेवाला यहाँ कोई है भी तो नहीं।"

काउण्ट ग्रेफी की उम्र इस समय चौरानवे वर्ष थी। वे मेट्टरनिच के समकालीन थे। उनके सिर के बाल तथा मूँछे सफेद हो चुकी थी। वे बड़े व्यवहारकुशल थे। आस्ट्रिया और इटली, दोनो देशों मे वे एक सफल कूटनीतिज्ञ के रूप मे काम कर चुके थे। उनके जन्म-दिवस पर दिये जानेवाले प्रीतिभोजो को मिलान के सामाजिक-जीवन मे बड़ा महत्त्व प्राप्त था। वे सौ वर्षों तक जीना चाहते थे। वे बिलियर्ड बहुत सुदर खेलते थे। चौरानवे वर्ष की इस वृद्धावस्था में वे जिस कुशलता और धैर्य के साथ बिलियर्ड खेलते थे, वह वस्तुतः सराहनीय था। एक बार इसके पहले जब मै स्ट्रेसा आया था, तब उनसे मेरी भेट हुई थी। उसी समय हमने बिलियर्ड खेलते-खेलते साथ-साथ शैम्पेन पी थी। शैम्पेन पीने का यह ढग मुझे बहुत पसन्द आया था। उन्होने उस खेल मे सौ मे से पन्द्रह नम्बर देकर मुझे हरा दिया था।

"तुमने मुझे अभीतक क्यो नहीं बताया कि वे यहाँ है?"

"मैं भूल गया था।"

"यहाँ और कौन ठहरा है?"

"आपसे परिचित तो और कोई नही है। सब मिलाकर इस समय यहाँ केवल छः ही व्यक्ति है।"

"इस समय तुम क्या कर रहे हो?"

"कुछ नही।"

"तब चलो, मेरे साथ—कुछ मछलियाँ मार लायें?"

"लेकिन घण्टा-भर से अधिक मै आपके साथ नहीं रह सकूँगा।"

"कोई बात नहीं। जाओ, मछली पकड़ने की बंसी तो ले आओ।"

बैरा ने कोट पहना और हम लोग चल दिये। नीचे जाकर हमने एक नाव ली और मै नाव खेने लगा। बैरा पीछे की ओर बैठ गया। उसने झील की ट्राउट मछलियाँ फँसाने के लिए बसी की गिर्री घुमाई और छोर पर बँधे हुए वजन के साथ रस्सी पानी मे फेंक दी। हम लोग किनारे के पास ही नाव खेते हुए आगे बढते गये। बैरा हाथ मे बसी पकड़े हुए बैठा रहा। बीच-बीच मे वह उसे आगे की ओर झटका दे देता था। झील से स्ट्रेसा शहर बड़ा सूना-सूना दिखायी दे रहा था। उसकी पत्रविहीन लम्बी वृक्ष पक्तियाँ, विशाल होटले तथा बन्द बगले—एक अजीब-सी उदासी और सूनेपन से व्याप्त थे। नाव खेते खेते हम लोग आइसोला-बेला को पार कर गये। वहाँ से हम उन दीवारों के पास पहुँचे, जहाँ पानी बहुत गहरा हो गया था। झील के स्वच्छ नीले जल मे पत्थर की दीवारों की आकृतियाँ तिरछी दिखाई दे रही थीं। हमारी नाव आगे बढ़ती गई और हम मछुआ द्वीप पहुँच गए। सूर्य बादलो मे छिप गया था और झील के पानी पर अंधेरे का साया घना हो उठा था। पानी बड़ा ठडा था और उसकी सतह चिकनी दीख रही थी। मछलियो के, पानी की ऊपरी सतह पर आने के समय पर उठनेवाले वृत्त हमने अवश्य देखे, किन्तु हम एक भी मछली नहीं पकड़ सके।

मछुआ-द्वीप की विरुद्ध दिशा मे खेते हुए मै नाव को उस स्थान पर ले गया, जहाँ कुछ अन्य नावे बँधी थी और कुछ व्यक्ति जाल सुधार रहे थे।

"यदि हम यहाँ थोडी शराब पी लें, तो अच्छा रहेगा।"

"क्यो नहीं, चलिये।"

मै नाव को पत्थर के घाट के निकट ले आया। बैरा ने नाव के एक ओर के लकडी के तख्ते की ऊपरी कोर मे बसी की गिर्री अटका दी और धागा लपेटते हुए उसने उसे ऊपर खीच लिया। नाव से उतरकर मैने उसे घाट से बाँध

दिया। हमलोग कॉफे में पहुँचे और एक लकडी की मेज़ के पास बैठ गए। नौकर को मने वरमाउथ (शराब) लाने का आदेश दिया।

"आपनाव खेते-खेते थक तो नही गए?"

"नहींतो।"

"लौटती बार मै खे लूँगा।" उसने कहा।

"नहीं, मुझे नाव खेना अच्छा लगता है।"

"हो सकता है, आपके बंसी डालने से हमारा भाग्य पलट जाये।"

"अच्छी बात है।"

"युद्ध कैसा चल रहा है?"

"बिलकुल वाहियात ढंग से!"

"मुझे युद्ध मे नहीं जना पड़ेगा। मै अब काफ़ी बूढा हो चुका हूँ—काउण्ट ग्रेफ़ी की तरह।"

"हो सकता है, तुम्हे अभी भी युद्ध मे जाना पड़े।"

"अगले वर्ष वे मुझ जैसे व्यक्तियो को भेजनेवाले हैं। किन्तु मै नही जाऊँगा।"

"और यदि जाना ही पडा, तो क्या करोगे?"

"मै देश छोड़कर कहीं बाहर चला जाऊँगा, पर युद्ध मे नही जाऊँगा। एक बार मै अबीसीनिया की लडाई मे गया था। बिलकुल बेकार है वहाँ जाना। आप क्यो फँसे इस युद्ध के चक्कर मे?"

"क्या बताऊँ। मेरी मूर्खता ही समझो।"

"और मँगाऊँ वरमाउथ?"

"मँगाओ।"

लौटती बार बैरा नाव खेने लगा। हम झील में चक्कर लगाते हुए स्ट्रेसा से आगे निकल गये और वहाँ से पुनः किनारे-किनारे ही वापस आये। मै बसी की तनी हुई रस्सी को थामे रहा। नवम्बर का महीना था। मै झील के पानी और सूने निर्जन तट पर नजरे गडाये बसी की गिर्री के घूमने के धीमे कम्पन का अनुभव करता रहा। बैरा तेजी से डॉड़ चलाता हुआ नाव खे रहा था। पतवार की छपछपाहट के साथ नाव ज्योही आगे बढती, त्योही बसी की रस्सी बहुत हौले से हिल उठती। बीच में एक बार मुझे ऐसा लगा, जैसे मछली ने बसी पर झपट्टा मारा और तब अचानक रस्सी मे तनाव पैदा हुआ और वह एक झटके के साथ पीछे खिच गयी। रस्सी खीचते समय मैने ट्राऊट मछली के भार का अनुभव किया, किन्तु तभी रस्सी हिली और मछली निकल भागी।

"क्या बडी मछली लग रही थी?"
"काफी बडी।"
"एक बार मैं अकेला मछली मार रहा था। बसी मैंने अपने दाँतों से पकड रखी थी। अचानक एक मछली का इतने जोर का धक्का लगा कि मुझे मालूम हुआ, मानो मेरा पूरा मुँह ही बाहर निकल आयेगा।"
"सबसे अच्छा तरीका है बंसी को जाँघ पर रखना।' मै बोला—"वैसी हालत में मछली फँसने का पता भी लग जाता है और दाँत टूटने का डर भी नहीं रहता।"
मैंने पानी में हाथ डाला। वह बहुत ठंडा था। उस समय हम लोग लगभग होटल के सामने पहुँच चुके थे।
"मुझे होटल मे जाना है।" बैरा बोला— "ग्यारह बजे के कॉकटेल-रूम में मेरा वहाँ होना आवश्यक है।"
"अच्छी बात है।"
मैंने रस्सी खीचकर उसे लकडी पर लपेट लिया। लकडी के सिरे दाँतदार थे। बैरा ने नाव किनारे लगा दी और पत्थर की दीवार के एक नन्हे कटाव के बीच उसे खडा कर दिया। फिर एक साँकल और ताले द्वारा उसने नाव में ताला लगा दिया।
"आप जब भी चाहे"—उसने कहा—"मै आपको इसकी चाबी दे दूँगा।"
"धन्यवाद!"
हम होटल पहुँचे और शराब पीने के कमरे में गये। मैं इतने सबेरे दुबारा शराब नहीं पीना चाहता था, अतः सीधा ऊपर, अपने कमरे को चला गया। नौकरानी ने अभी-अभी कमरे की सफाई की थी। कैथरीन उस समय तक लौटकर नहीं आई थी। मै बिस्तर पर लेट गया। उस वक्त मै चुपचाप पड़ा रहना चाहता था—कुछ सोचने की भी इच्छा नहीं थी।
जब कैथरीन लौटी, तो मैं अपनी स्वाभाविक हालत में आ चुका था। कैथरीन ने मुझे बताया कि नीचे फर्ग्यूसन बैठी थी। वह हम लोगों के साथ ही भोजन करनेवाली थी।
"मुझे विश्वास था कि तुम इसका बुरा नहीं मानोगे।" कैथरीन बोली।
"बुरा मानने की तो बात ही नहीं है।" मैंने कहा।
"क्या बात है, प्रिय? तुम कुछ परेशान-से दीखते हो।"
"नहीं तो!"

"मै समझ गई। तुम्हे कोई काम नहीं है न। तुम्हारे पास जो कुछ है—वह मै हूँ और मै भी तुम्हे अकेला छोडकर चली गयी थी।—है न?"

"हॉ, है तो सच।"

"मुझे इसका बहुत दुःख है, प्रियतम। मै जानती हूँ कि अचानक ही सब-कुछ खो बैठने पर मनुष्य के मन मे कैसी गहरी उदासी छा जाती है।"

"मेरा जीवन सदा भरा-पूरा था।" मैने कहा—"और अब यदि तुम मेरे पास नहीं रहती, तो दुनिया मे मेरे लिए मानो कुछ भी नहीं रह जाता।"

"किन्तु मै तो तुम्हारे पास ही हूँ—पास ही रहूँगी। दो ही घण्टे के लिए तो तुमसे अलग हुई थी मै। क्या तुम अकेले मे और कुछ नहीं कर सकते?"

"मै बैरा के साथ मछली मारने गया था।"

"मजा नही आया तुम्हे उसमे?"

"क्यो नहीं।"

"देखो, जब मै यहॉ नहीं रहूँ, तब मेरे विषय मे मत सोचा करो।"

"मोर्चे पर मैने यही तरीका अपनाया था। किन्तु तब मेरे पास करने लायक कुछ काम भी तो था।"

"अरे, अरे, बेचारा 'ओथेलो' अपने काम से ही गया!" वह मुझे चिढाते हुए बोली।

"ओथेलो था हबशी।" मैने कहा—"और फिर मुझे किसी से ईर्ष्या तो है नही। मै तो तुम्हारे प्रेम मे इस कदर खो गया हूँ कि मेरे पास और कुछ रहा ही नहीं!"

"तुम फर्ग्यूसन के साथ भद्रता और अच्छाई से तो पेश आओगे न?"

"मै तो फर्ग्यूसन से हमेशा अच्छा व्यवहार करता हूँ। हॉ, यदि वह मुझे गालियॉ देने लगे, तो बात दूसरी है।"

"देखो, उसे अपनी किसी बात से दुःख मत पहुँचाना। ज़रा सोचो तो, अपने जीवन मे हमने कितना अधिक पाया है जब कि उस बेचारी ने कुछ भी नहीं पाया।"

"मै नहीं समझता कि जो हमारे पास है, उसकी उसे भी कामना है।"

"तुम इस सम्बन्ध मे ज्यादा नहीं जानते, प्रियतम!"

"अच्छा-अच्छा, मै उसके साथ नम्र व्यवहार करूँगा।"

"मै जानती हूँ, तुम उसे दुःख नहीं पहुँचाओगे। कितने अच्छे हो तुम!"

"भोजन के बाद तो वह यहॉ नहीं ठहरेगी न? या ठहरेगी?"

"नहीं, मै उसे किसी प्रकार यहॉ से विदा कर दूँगी।"

"और तब हम यहॉ, ऊपर चले आयेंगे।"

"अवश्य! और भला हम करेंगे भी क्या?"

हम फर्ग्यूसन के साथ भोजन करने के लिए नीचे गए। वह उस होटल से बड़ी प्रभावित हुई। भोजन करने के कमरे की तडक-भडक का भी उस पर कम प्रभाव नहीं पडा। सफेद काप्री (शराब) की दो-एक बोतलो ने हमारे खाने मे आनद ला दिया। इसी बीच काउण्ट ग्रेफी भी वहॉ आ पहुंचे। हमे देखकर विनम्रतापूर्वक झुकते हुए उन्होने हमारे प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। उनके साथ उनकी भतीजी भी थी। वह बहुत-कुछ मेरी दादी के समान दिखायी देती थी। मैने कैथरीन और फर्ग्यूसन से उनके विषय मे बताया। फर्ग्यूसन पर इसका बड़ा असर पड़ा। होटल काफी बडा और भव्य था; किन्तु वह खाली पड़ा था।—फिर भी वहॉ का खाना बड़ा अच्छा था। शराब भी बड़ी सुदर थी। उसे पीने के बाद हमने एक नयी ताजगी का अनुभव किया। कैथरीन को तो इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी। वह योही बहुत खुश थी। हॉ, फर्ग्यूसन पूर्णतः प्रसन्न हो गई। स्वय मुझे भी बहुत अच्छा लगा। भोजन के बाद फर्ग्यूसन अपने होटल लौट गयी। भोजन करने के बाद अब वह कुछ देर के लिए आराम करना चाहती थी।

तीसरा पहर बीतते-बीतते किसी ने आकर दरवाजा खटखटाया।

"कौन है?" मैने पूछा।

"काउण्ट ग्रेफी जानना चाहते हे कि क्या आप उनके साथ बिलियर्ड्स खेलेगे?"

मैने अपनी घडी पर नजर दौड़ाई। घड़ी मेरे तकिये के नीचे रखी थी। मैने उतारकर उसे वहॉ रख दिया था।

"क्या तुम्हें वहॉ जाना है, प्रियतम?" कैथरीन फुसफुसाई।

"यदि चला जाऊॅ, तो ठीक होगा।" घड़ी में उस समय सवा चार बजे थे। मैने जोर से उस व्यक्ति से कहा—"काउण्ट ग्रेफी से कह दो, मै पॉच बजे बिलियर्ड खेलने के कमरे में पहुॅच जाऊँगा।"

पौने पॉच बजे मैने कैथरीन का चुम्बन लेते हुए उससे विदा ली और कपड़े पहनने के लिए स्नानागार में चला गया। अपनी टाई लगाते हुए मैने स्वय को दर्पण में देखा। इस नागरिक वेशभूषा मे स्वय मुझे बड़ा विचित्र लग रहा था। फिर भी मैंने कुछ और क़मीज़ तथा मोजे ख़रीदने का निश्चय किया।

"क्या तुम काफी देर तक बाहर रहोगे?" कैथरीन ने पूछा। बिस्तर में लेटे हुए वह बड़ी आकर्षक प्रतीत हो रही थी—"जरा मुझे वह ब्रश देना।"

वह अपने बालो पर ब्रश फेरने लगी। मै खडा-खड़ा उसे देखता रहा। अपना सिर एक ओर झुकाये वह ब्रश कर रही थी। बाहर अंधेरा छाया हुआ था। बिस्तर के सिरहाने पड़नेवाले धूमिल प्रकाश मे उसके बाल, ग्रीवा तथा कधे चमक रहे थे। उसके पास पहुँचकर मैंने उसे फिर चूम लिया। उसके ब्रशवाले हाथ को मैंने अपने हाथ मे ले लिया और उसका सिर पीछे की ओर तकिये पर लुढक गया। मैंने उसकी ग्रीवा तथा कधो पर चुम्बनो की वर्षा कर दी और मुझे ऐसा लगा, मानो मै अपना आपा खोता जा रहा हूँ।

"मै बाहर नहीं जाना चाहता।"

"मै भी तुम्हे बाहर नहीं जाने देना चाहती।"

"तब मै नहीं जाऊँगा।"

"नही, नहीं। चले जाओ। थोड़ी ही देर के लिए तो जा रहे हो तुम। उसके बाद तो लौट ही आओगे।"

"शाम को हम अपने कमरे मे ही खाना खायेंगे।"

"जल्दी जाओ और जल्दी लौटना।"

काउण्ट ग्रेफ़ी बिलियर्ड-कक्ष मे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे बिलियर्ड-टेबल पर अपने निशाने का अभ्यास कर रहे थे। मेज पर पडते हुए प्रकाश मे वे बहुत सुकुमार-से दिखाई दे रहे थे। प्रकाश से कुछ दूर, एक मेज़ पर बर्फ से भरी चादी की एक बाल्टी रखी थी। उसमें रखी हुई शैम्पेन की दो बोतलो के डाट दिखाई दे रहे थे। जब मै मेज की ओर बढा, तो काउण्ट ग्रेफी सीधे खड़े हो गए और मेरे पास आये। अपना हाथ बढाते हुए उन्होने कहा— "मुझे बडी प्रसन्नता है कि आप यहाँ आए। मेरे साथ खेलने के लिए यहाँ आने का कष्ट उठाकर आपने बडी उदारता दिखाई है।"

"और मुझे खेलने का निमत्रण देकर आपने मुझ पर बड़ी कृपा की है।"

"आप अच्छी तरह तो हैं न? मैने सुना था कि आप इसोन्जो की लडाई मे बहुत घायल हो गए थे। मै आशा करता हूँ, अब आप पुनः स्वस्थ हो गये होगे।"

"बिलकुल स्वस्थ हूँ मै अब। आप तो ठीक हैं न?"

"अरे साहब, मै तो हमेशा ही ठीक रहता हूँ। लेकिन हाँ, अब मै बूढा होता जा रहा हूँ। मुझमे अब वृद्धावस्था के चिह्न नजर आने लगे हैं।"

"मुझे विश्वास नहीं होता।"

"मानिए तो आप। एकाध प्रमाण दूँ आपको? देखिये, इटालियन भाषा मै सरलता से बोल सकता हूँ, पर मै इसके प्रयोग के विषय में बडा सतर्क रहता हूँ—उसका अधिक प्रयोग नहीं करता। किन्तु मैने अनुभव किया है कि जब मै थक जाता हूँ, तो इटालियन भाषा मे ही बोलना मुझे अच्छा लगता है और इसका अर्थ है कि मै बूढ़ा होता जा रहा हूँ।"

"तब हम इटालियन मे ही बात करेगे। मै भी कुछ थक गया हूँ।"

"ओह, किन्तु जब आप थक गये हैं, तो आपको अंग्रेजी में बातचीत करना अधिक आसान मालूम होगा।"

"अंग्रेज़ी नहीं, अमरीकी।"

"हॉ-हॉ, अमरीकी ही। आप कृपया अमरीकी में ही बात कीजिये। बडी मजेदार भाषा है।"

"बड़ी मुश्किल से, कभी-कभी ही किसी अमरीकी से मेरी मुलाकात हो पाती है।"

"आपको उनका न मिलना निश्चय ही, बडा अखरता होगा। प्रत्येक व्यक्ति को, अपने देशवासियो से, विशेषतः स्त्रियो से भेट न होना, अखरता है। मै जानता हूँ, कैसा अनुभव होता है उस वक्त। फिर, खेल शुरू करें हम या आप बहुत थक गए हैं?"

"नहीं-नहीं, मै बिलकुल नहीं थका हूँ। वह तो मैंने आपसे मजाक किया था। आप मुझे कितने अंको की रियायत देंगे?"

"क्या आप बिलियर्ड्स बहुत अधिक खेलते रहे हैं?"

"नहीं तो, बिलकुल नहीं।"

"खेलते तो बहुत अच्छा हैं आप। सौ में दस अंको की रियायत पर्याप्त होगी?"

"आप तो व्यर्थ ही मेरी प्रशसा कर रहे हैं।"

"पन्द्रह की?"

"बड़ा सुन्दर होगा वह तो। किन्तु आप मुझे हरा अवश्य देंगे।"

"क्या हम कोई दॉव लगाकर खेले? आप हमेशा दॉव लगाकर खेलने की इच्छा व्यक्त करते रहे हैं।"

"हॉ, यही ठीक भी रहेगा।"

"अच्छी बात है। मै आपको प्रारम्भ में अठारह अंक देता हूँ। हम लोग एक अंक के लिए एक फ्रेंक के हिसाब से खेलेगे।"

काउण्ट ग्रेफी बहुत अच्छा बिलियर्ड्स खेलते थे। पचास अंक पूरे होते समय, अपने रिआयती अंको के साथ मैं उनसे केवल चार अंक आगे था। पचास पर पहुँचकर उन्होने दीवार में लगा हुआ बटन दबा कर बैरा को बुलाया। "एक बोतल खोलकर रख दो।" उन्होने बैरा को आदेश दिया। तब मेरी ओर मुड़ते हुए वे बोले—"हम थोडी शराब लेगे, जिससे हम स्फूर्ति अनुभव कर सके।" शराब बर्फ-सी ठण्डी और अच्छी थी।

"यदि हम इटालियन मे बातचीत करे, तो आपको बुरा तो नहीं लगेगा? क्या करूँ, आजकल यह मेरी बडी कमजोरी हो गयी है।"

हम लोग खेल मे खो गए। हम बीच-बीच मे शराब के घूँट भी ले लिया करते थे। कभी-कभी इटालियन मे बाते भी कर लेते, किन्तु बहुत कम। हमारा ध्यान अधिकतर खेल मे ही था। काउण्ट ग्रेफी ने अन्ततः अपना सौवॉ अंक बना लिया। अपने रिआयती अंको को मिलाकर, उस समय भी मै चौरानवे अंक ही बना पाया था। मुस्कराते हुए उन्होंने मेरा कन्धा थपथपाया।

"अब हम दूसरी बोतल खतम करेगे और आप मुझे युद्ध के विषय में कुछ बतानेका कष्ट करेगे।" वे मेरे बैठने की प्रतीक्षा करने लगे।

"युद्ध के विषय में नही, हम किसी और विषय पर बाते करेगे।" मैने कहा।

"आप युद्ध के विषय में बात नहीं करना चाहते? ठीक। आपने इधर कुछ नयी पुस्तके पढी हैं?"

"कोई खास नहीं।" मै बोला—"मै इस मामले मे बड़ी मंद बुद्धि वाला आदमी हूँ।"

"नही, नही। किन्तु आपको कुछ-न-कुछ पढते रहना चाहिए।"

"युद्ध के दिनों मे लिखा ही क्या गया है?"

"वाह, एक फ्रासीसी लेखक ने एक पुस्तक लिखी है—'लॅ-फीड'। लेखक का नाम है बारबुसे। एक और पुस्तक प्रकाशित हुई है—'ब्रिट्लिग सीज़ थ्रू इट' (ब्रिट्लिग उसके पार देखते हैं)"

"नहीं, वे नहीं देखते।"

"क्या मतलब?"

"ना, वे उसके पार नही देखते। ये पुस्तके अस्पताल में थी।"

"तब आप पढते अवश्य रहे हैं—है न?"

"हॉ; किन्तु कोई अच्छी पुस्तक नहीं।"

"मैं तो समझता हूँ कि श्री ब्रिट्लिंग ने अपनी पुस्तक में मध्यम वर्गीय अंग्रेजों की आत्मा का बड़ा सुदर चित्रण प्रस्तुत किया है।"

"मै आत्मा के विषय में कुछ नहीं जानता।"

"मेरे भोले मित्र! आत्मा के विषय मे, हम मे से कोई भी व्यक्ति, कुछ नहीं जानता। आप आस्तिक हैं क्या?"

"हॉ, किन्तु केवल रात मे।" काउण्ट ग्रेफ़ी मुस्करा उठे। उनकी उँगलियाँ गिलास से खेलने लगी।

"मैने आशा की थी कि ज्यो ज्यो मैं बूढा होता जाऊँगा, त्यों-त्यों ईश्वर के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती जायेगी। किन्तु किसी तरह ऐसा नहीं कर सका मै।" —उन्होने कहा—"कितनी करुणाजनक बात है यह।"

"क्या आप मृत्यु के बाद भी जीवित रहना चाहते हैं?"

मैंने पूछा और तभी मुझे प्रतीत हुआ कि मृत्यु का नाम लेकर मैंने कितनी बड़ी मूर्खता की है! किन्तु उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"यह तो जीवन के ऊपर निर्भर रहेगा। यह जीवन बड़ा आनन्दमय है। इतना आल्हादक कि मै अनन्तकाल तक जीवित रहना चाहूँगा।" एक मधुर मुस्कान में वे बोले—"सच पूछा जाये, तो मैं जीवन के आनद का वर्पा उपभोग कर चुका हूँ।"

हम चमड़े की आरामदेह कुर्सियो में बैठे थे। बर्फ से भरी बाल्टी में शैम्पेन रखी थी। हम दोनों के बीच मे मेज थी और उस पर हमारे गिलास रखे हुए थे।

"यदि आप मेरी आयु तक जीवित रहे, तो आप जीवन मे अनेक विचित्रताएँ देखेगे।"

"बूढे तो आप कभी दिखायी ही नहीं देते।"

"यह तो मेरा शरीर है, जो बूढा हो गया है। कभी-कभी तो मुझे इतना अधिक भय लगता है कि मेरी उँगली एक दिन ठीक उसी प्रकार टूट जायेगी, जैसे कोई खड़िया चटाक से टूट जाती है। और मेरी चेतना न तो शरीर से अधिक वृद्ध ही है, न अधिक बुद्धिमान।"

"आप सचमुच बुद्धिमान हैं।"

"नहीं, कोरी भ्राति है यह। वृद्ध पुरुष और बुद्धिमत्ता—भ्रम है केवल। आयु बढने के साथ ही मनुष्य अधिक बुद्धिमान भी हो जाये, ऐसी बात नहीं है। वह केवल अधिकाधिक सावधान होता जाता है।"

"कदाचित् इसी का नाम बुद्धिमत्ता हो।"

"तब इस प्रकार की बुद्धिमत्ता बड़ी अनाकर्षक है। आप अपने जीवन में सबसे अधिक महत्त्व किसे देते हैं?"

"उसे, जिससे मैं प्रेम करता हूँ।"

"मेरे साथ भी ऐसा ही है। इसे बुद्धिमानी नहीं कह सकते। क्या आप अपने जीवन को महत्त्व देते हैं?"

"अवश्य।"

"जीवन को मै भी महत्त्व देता हूँ। मेरे पास जो कुछ है, वही तो सब कुछ है। और हॉ, एक बात और है—जन्मदिन पर बडे-बडे भोज देना।" उन्होंने हॅसते हुए कहा—"आप कदाचित् मुझसे अधिक बुद्धिमान हैं। आप अपने जन्मदिन पर भोज नहीं दिया करते।"

हम दोनो शराब पीते रहे।

"युद्ध के विषय में आपका क्या खयाल है?" मैने पूछा।

"मै तो इसे निरी मूर्खता मानता हूँ।"

"पर जीतेगा कौन?"

"इटली!"

"क्यो?"

"वह एक नवोदित राष्ट्र है।"

"क्या नवोदित राष्ट्र सदा विजयी हुआ करते हैं?"

"एक निश्चित काल तक उनके विजयी होने की सम्भावना रहती है।"

"और उसके बाद क्या होता है?"

"उसके बाद वे नव-राष्ट्र नहीं रहते, पुराने हो जाते हैं।"

"आप तो कह रहे थे कि आप बुद्धिमान नहीं हैं।"

"भाई मेरे, बुद्धिमानी इसे नहीं कहते। यह तो केवल छिद्रान्वेषण है।"

"मुझे तो यह बड़ी बुद्धिमानी की बात मालूम होती है।"

"कोई खास बुद्धिमानी नहीं है, इसमे। मै इसके विराध मे भी उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूँ। फिर भी यह कुछ बुरा नहीं है। हमारी शैम्पेन समाप्त हो गई क्या?"

"करीब-करीब।"

"थोड़ी और पीएँगे क्या? उसके बाद मुझे कपड़े पहनकर तैयार भी होना है।"

"हमे अब और नहीं पीनी चाहिए।"

"आप सच कह रहे हैं? और नहीं चाहिए आपको?"

"जी नहीं, सचमुच ही नहीं चाहिए मुझे।" वे खड़े हो गये।

"मेरी कामना है कि, आप बड़े भाग्यशाली बनें, सदा सुखी रहें और आपका स्वास्थ्य दूसरो के लिए ईर्ष्या की वस्तु हो!"

"धन्यवाद! मुझे आशा है कि आप अनंत काल तक जीवित रहेगे।"

"धन्यवाद! जीवित तो मै रह चुका हूँ। हॉ, यदि कभी आपके हृदय मे ईश्वर-भक्ति की भावना जगे और मेरी मृत्यु हो जाये, तो मेरी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना कीजियेगा। अपने बहुत-से मित्रों से मै यही अनुरोध करता आ रहा हूँ। मुझे स्वय ही ऐसी आशा थी कि कभी न-कभी मुझमें भी श्रद्धा उत्पन्न होगी, किन्तु वह क्षण अभी तक नहीं आया।" मुझे ऐसा आभास हुआ कि काउण्ट के मुख पर एक विषादयुक्त मुस्कान फैल गई, फिर भी मै निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सका। वे इतने वृद्ध थे कि उनका पूरा मुख झुर्रियों से भरा हुआ था। फलतः उनकी एक मुस्कराहट का निर्माण इतनी अधिक झुर्रियो से होता था कि उनमें भावो के उतार-चढाव ही खो जाते थे।

"कदाचित् मै कभी ईश्वर का बड़ा भक्त बन जाऊँ।" मैने कहा—"कुछ भी हो, मै आपके लिए प्रार्थना अवश्य करूँगा।"

"मेरी सदा यही कामना रही कि परमात्मा के प्रति श्रद्धा और भक्ति का उदय मुझमे भी हो। मेरा सारा परिवार भगवान् की भक्ति मे लीन होकर ही मरा। किन्तु मेरे जीवन में वह स्थिति अभी तक पैदा नहीं हुई है।"

"उस स्थिति के उत्पन्न होने मे अभी काफी समय है।"

"यह भी तो हो सकता है कि समय बीत चुका हो। कदाचित् मैं इतने अधिक काल तक जीवित रह चुका हूँ कि मेरी धार्मिक भावनाएँ मुझसे अब मेल नहीं खाती।"

"स्वय मुझे भी रात्रि के समय ही परमात्मा की याद आती है।"

"तब आप भी किसी से प्रेम करते हैं। भूलिये मत कि वह भी आपके धर्म में विश्वास करने की भावना का ही प्रतीक है।"

"क्या आप इस पर विश्वास करते हैं?"

"क्यों नहीं!" उन्होने मेज की ओर बढ़ते हुए कहा—"मेरे साथ खेलकर आपने सचमुच बड़ी कृपा की।"

"आपके साथ खेलने मे मुझे भी बड़ा आनद आया।"

"आइये, हम साथ ही ऊपर चलें।"

.३६.

उस रात तूफान आया। मै जाग गया और खिडकियों के कॉचों से टकराती हुई वर्षा की बौछारो की आवाज सुनता रहा। खुली हुई खिडकी की राह पानी के छीटे भीतर आ रहे थे। अचानक दरवाजे पर थपथपाहट सुनाई दी। कैथरीन की नींद न टूटने पाये, इसलिए दबे-पॉवों दरवाजे तक पहुँचकर मैने उसे खोला। मदिरा-कक्ष का बैरा सामने खडा था। वह ओवरकोट पहने हुए था और अपना गीला टोप उसने अपने हाथ मे ले रखा था।

"मै आपसे कुछ बाते करना चाहता हूँ, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"क्या बात है?"

"बात बड़ी गम्भीर है, साहब।"

मैने अपने चारो ओर देखा। कमरे में अंधेरा छाया था। फिर खिडकी की राह फर्श पर बिखरे हुए पानी की ओर देखते हुए बोला—"भीतर आ जाओ।" उसका हाथ पकड़कर मै उसे स्नानागार मे ले गया। दरवाज़े मे भीतर से ताला लगाकर मैने बत्ती जला दी। स्नान करने के टब के एक किनारे पर बैठते हुए मैंने पूछा—"बात क्या है, एमिलो? क्या तुम किसी विपत्ति मे पड़ गये हो?"

"मै नही, आप विपत्ति में हैं, साहब?"

"अच्छा!"

"अधिकारी-वर्ग आपको सबेरे गिरफ्तार करनेवाला है।"

"अच्छा?"

"मै आपको यही बताने आया हूँ। मै जब बाजार गया था, तो वही एक कॉफे मे मैने अधिकारियों को इस सम्बन्ध मे बाते करते हुए सुना।"

"ओह!"

वह वहीं खड़ा रहा। उसका ओवरकोट भीगा हुआ था। उसके हाथ मे गीला टोप था और वह मौन खडा था।

"पर वे मुझे गिरफ्तार क्यो करना चाहते हैं?"

"युद्ध-सम्बन्धी किसी बात पर।"

"तुम्हें मालूम है, कौन-सी बात है वह?"

"जी, नहीं। किन्तु उनकी बातो से कुछ आभाम जरूर मिला है। उन्हें यह मालूम है कि आप पहले एक अफमर की हैमियत से यहाँ आये थे और अब आप एक सामान्य नागरिक के वेश मे आये है। इस बार सेना के पीछे हटने के बाद, वे इस तरह के प्रत्येक व्यक्ति को गिरफ्तार कर रहे हैं।"

मै क्षणभर कुछ सोचता रहा।

"वे लाग मुझे गिरफ्तार करने कब आयेंगे?"

"सबेरे। समय का मुझे पता नहीं।"

"तुम क्या करने के लिए कहते हो मुझे?"

उसने हाथ धोने के बर्तन मे अपना टोप रख दिया। टोप बुरी तरह भीग चुका था और उससे पानी टपककर फर्श पर गिर रहा था।

"यदि आपने कुछ किया ही नही है, तो गिरफ्तारी से घबराने का कोई कारण नही है। किन्तु हाँ, गिरफ्तार होना हमेशा बुरा होता है—विशेषतः आज की परिस्थिति मे।"

"मै भी गिरफ्तार नही होना चाहता।"

"तब आप स्विट्जरलैण्ड चले जाइए।"

"कैसे?"

"मेरी नाव में।"

"बाहर तूफान जो चल रहा है।" मैं बोला।

"नहीं, वह खत्म हो चुका है। वातावरण कुछ अशान्त अवश्य है; किन्तु उससे आपको कोई तकलीफ नही होगी।"

"कब चल देना चाहिए हमे?"

"अभी—इसी क्षण। वे लोग सम्भवतः कल बहुत सबेरे ही आ पहुँचेंगे।"

"और हमारे सामान का क्या होगा?"

"सब बाँध लीजिये। आपकी श्रीमतीजी को कपड़े पहन कर तैयार होने के लिए कह दीजिये। सामान वगैरह मै सँभाल लूँगा।"

"तुम कहाँ रहोगे?"

"यहीं ठहरूँगा। मै नहीं चाहता कि कोई मुझे बाहर हॉल में प्रतीक्षा करते देख ले।"

मैंने स्नानागार का दरवाजा खोला और बाहर निकलकर उसे बन्द कर दिया। सोने के कमरे में पहुँचा, तो कैथरीन जाग चुकी थी।

"क्या बात है, प्रियतम?"

"ऐसी कोई ख़ास बात नहीं है, केट।" मैंने उत्तर दिया—"क्या तुम इसी समय नाव में स्विट्ज़रलैण्ड जाना पसन्द करोगी?"

"तुम जाना पसद करोगे क्या?"

"बिलकुल नही।" मैने कहा—"मै तो अभी बिस्तर मे सोना अधिक पसन्द करूंगा।"

"बात क्या है आखिर?"

"बैरे का कहना है कि यहॉ के अधिकारी मुझे सबेरे गिरफ्तार करने वाले हैं।"

"बैरा कहीं पागल तो नहीं हो गया है?"

"नहीं।"

"तब जल्दी करो। चलो, कपडे पहनो, ताकि हम यहॉ से अभी चल दे।" वह उठकर पलग के एक ओर बैठ गई। उस समय भी वह ऊँघ-सी रही थी—"स्नानागार मे बैरा ही है क्या?"

"हॉ।"

"तब मैं वहॉ हाथ-मुँह धोने नहीं जाऊँगी। जग दूसरी ओर तो नजर फेर लो, प्रियतम। मै अभी मिनट-भर मे कपड़े पहनकर तैयार हो जाती हूँ।"

ज्योंही उसने अपनी रात की पोशाक उतारी, त्योंही मुझे उसकी गोरी-गोरी पीठ दिखाई दे गयी और तभी मैंने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया। गर्भावस्था के कारण अब उसका शरीर कुछ फैलने लगा था। इसी से वह नही चाहती थी कि मैं उसकी ओर देखूँ। खिड़कियों पर वर्षा का पानी 'टप टप' करते हुए गिर रहा था। मैंने अपने कपड़े पहने। अपने थैले में रखने लायक मेरे पास कोई विशेष सामान नही था।

"मेरे थैले मे अभी काफी जगह खाली है, केट। यदि तुम कुछ रखना चाहती हो, तो रख दो!"

"मैंने करीब-करीब सभी सामान रख लिया है।" वह बोली—"मै भी बड़ी पागल हूँ, प्रिय। लेकिन हॉ, यह बैरा वहॉ स्नानागार मे क्या कर रहा है?"

"शः—वह हमारा सामान नीचे ले जाने के लिए ठहरा हुआ है।"

"बड़ा भला है, बेचारा!"

"पुराना मित्र है मेरा।" मैंने कहा—"मैंने उसके पास पाइप की तम्बाखू

भेजने का वादा किया था लेकिन भेजते-भेजते रह गया।"

खुली हुई खिड़की से मैंने बाहर झाँका। सारा शहर घने अंधकार में लिपटा पड़ा था। इतना अंधेरा था कि झील मुझे दिखाई नहीं दी। चारो ओर घोर कालिमा छायी थी। दिखायी दे रहा था, तो केवल बरसता हुआ पानी। हाँ, तूफान थम चुका था।

"मैं तैयार हूँ, प्रियतम।" कैथरीन बोली।

"अच्छी बात है।" कहते हुए मैं स्नानागार के द्वार पर पहुँचा। "थैले यहीं रखे हुए हैं, एमिलो—" मै बोला। बैरा ने दोनों थैले उठा लिये।

"तुमने वास्तव मे हम पर बडा उपकार किया है!" कैथरीन ने कहा।

"नहीं देवीजी, मै भला किस लायक हूँ।" बैरा बोला—"मैंने तो आपकी सहायता केवल इसलिए की है कि मै स्वय किसी विपत्ति मे न फँस जाऊँ। देखिये—" उसने मुझसे कहा—"मै नौकरों के आने-जाने वाली सीढी से इन थैलों को होटल के बाहर ले जाऊँगा। फिर मै इन्हें नाव पर रख दूँगा। आप लोग यहाँ से इस तरह बाहर निकलिये, मानो घूमने जा रहे हो।"

"हाँ, घूमने के लिए तो बड़ी सुन्दर रात है, यह।" कैथरीन ने कहा।

"रात बड़ी वाहियात है, इसमे शक नहीं।"

"खुशी की बात है कि मेरे पास छाता है।" कैथरीन बोली।

बरामदा पार करते हुए, हम मोटी दरियो से ढँकी चौड़ी सीढ़ियों पर होकर नीचे उतरे। सीढ़ियाँ जहाँ खत्म होती थीं, वहाँ दरवाज़े के निकट, एक डेस्क के पीछे दरबान बैठा था।

हमे देखकर उसने आश्चर्य प्रकट किया।

"आप बाहर जा रहे हैं, महाशय?" उसने पूछा।

"हाँ," मैंने उत्तर दिया—"हम लोग झील पर तूफान का दृश्य देखने जा रहे हैं।"

"आपके पास छाता नही है, क्या साहब?"

"नहीं।" मैने कहा—"छाते की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। मेरा यह कोट पानी से भी बचाव करता है।"

उसने अविश्वासकी नज़रोंसे उस कोट की ओर देखकर कहा—"मै आपके लिए एक छाता ला देता हूँ।" वह गया और तुरन्त ही एक बड़ा छाता लेकर लौट आया। "छाता जरा बड़ा है, हुजूर!" उसने कहा। मैंने उसे दस लिरा का एक नोट थमा दिया। "ओह, आप बड़े कृपालु हैं, महाशय।" वह बोला—

"बहुत-बहुत धन्यवाद!" और दरवाजा खोलकर खड़ा हो गया। हम लोग बाहर बरसात मे आगे बढने लगे। वह कैथरीन को देखकर मुस्कराया। कैथरीन भी उसे देखकर मुस्करा दी। "तूफान मे अधिक समय तक बाहर मत रहिये।" वह बोला—"आप भीग जायेंगे, हुजूर और आपकी श्रीमतीजी भी।" वह वहॉ का छोटा दरबान था। अंग्रेजी उसे अधिक नहीं आती थी और जो भी वह अंग्रेजी मे कहता, वह उसकी मातृभाषा का अक्षरशः अनुवाद हुआ करता था।

"हम शीघ्र वापस आ जायेंगे।" मैं बोला। उस दैत्याकार छाते में अपने सिर को छिपाए हम आगे बढ़े। हमने वर्षा से तर तथा अंधकार मे लिपटे बगीचे को पार किया और सड़क पर निकल आये। चलते-चलते हम झील की राह पर पहुँच गये। रास्ता लताकुंजों से आच्छादित था और झील के किनारे-किनारे दूर तक चला गया था।

हवा अब झील के किनारे की विपरीत दिशा में बह रही थी—नवम्बर मास की हड्डियॉ-कपानेवाली ठण्डी गीली हवा। पहाडों पर निश्चय ही बर्फ गिरता रहा होगा। हम झील के किनारे बधी हुई नावो को पीछे छोडते हुए उस स्थान पर पहुँचे, जहॉ हमे बैरा की नाव मिलने की आशा थी। पत्थरों की पृष्ठभूमि मे झील का पानी और भी काला दिखाई दे रहा था। बैरा वृक्षों की कतार के पीछे से निकलकर बाहर आया।

"आपके थैले मैंने नाव मे रख दिए हैं।" उसने कहा।

"मैं तुम्हारी नाव की कीमत चुका देना चाहता हूँ।" मैं बोला।

"आपके पास कितने पैसे हैं?"

"बहुत तो नहीं है।"

"तब रहने दीजिये, बाद मे भेज दीजियेगा। वही ठीक रहेगा।"

"कितना भेजूं?"

"जितना आप चाहें।"

"नहीं, नहीं, बताओ, कितना?"

"यदि आप सकुशल पहुँच जायें, तो पॉच सौ फ्रैंक भेज दीजियेगा। सुरक्षित पहुँच जाने की खुशी मे आपको यह कीमत अखरेगी नही।"

"अच्छी बात है।"

"ये कुछ सैण्डविच हैं। आपके लिए लाया हूँ।" उसने मुझे एक पैकेट देते हुए कहा—"होटल के मदिरा-कक्ष में जो कुछ था, मैं सब यहॉ ले आया हूँ। यह ब्राण्डी की बोतल है और यह आपकी प्रिय शराब!" मैंने

उन्हें थैले में डाल लिया। "इनकी कीमत तो तुम ले ही लो—" मैं बोला।

"जैसी आपकी इच्छा। पचास लिरे दे दीजिये।"

मैंने उसे पैसे दे दिये। "ब्राण्डी बड़ी अच्छी है।" वह बोला—"आप बेफिक्र होकर इसे अपनी श्रीमतीजी को भी दे सकते हैं। अब ये नाव में बैठ जायें, तो अच्छा है।" उसने पत्थर की दीवार से टकराती हुई लहरों के उतार-चढ़ाव पर ऊपर-नीचे डगमगानेवाली नाव को पकड़ लिया और कैथरीन को सवार होने में सहायता दी। कैथरीन नाव के पिछले हिस्से में बैठ गयी और उसने अपना लबादा अपने चारों ओर लपेट लिया।

"क्या आप जानते हैं कि आपको कहाँ जाना है?"

"झील के चढाव की ओर।"

"मालूम है, कहाँ तक?"

"लुइनो से आगे।"

"हाँ, लुइनो से आगे, कॅन्नेरो, कॅन्नोबिओ और ट्रान्जानो। जब तक आप ब्रिस्सागो न पहुँच जायें, तब तक आप स्विट्जरलैण्ड की सीमा में नहीं पहुँचेंगे। आपको माण्टे टॅमारा के पार जाना है।"

"क्या बजा है अभी?" कैथरीन ने पूछा।

"सिर्फ ग्यारह।" मैंने उत्तर दिया।

"यदि आप लगातार नाव चलाते जायें, तो सात बजे सबेरे तक आप वहाँ पहुँच जायेंगे।"

"क्या स्विट्जरलैण्ड की सीमा यहाँ से इतनी दूर है?"

"हाँ, लगभग बाईस मील है।"

"पर हम जायेंगे कैसे? इस बरसात में तो दिशासूचक यंत्र का होना बड़ा आवश्यक है।"

"ऐसी कोई बात नहीं। यहाँ से नाव खेते हुए पहले आइसोला-बेला जाइये। वहाँ से आइसोला-माद्रे की दूसरी ओर पहुँचकर वायु के प्रवाह के साथ आगे बढ़िए। वायु आपको पालान्जा पहुँचा देगी। आपको वहाँ बत्तियाँ दिखाई देंगी। बस, वहाँ से फिर आप झील के किनारे-किनारे आगे बढ़ते जाइये।"

"हवा की दिशा बदल भी तो सकती है!"

"नहीं—" वह बोला—"हवा अभी इसी प्रकार तीन दिन तक एक ही दिशा में बहती रहेगी। वह सीधे मोट्टेरोने की ओर से आ रही है। और देखिये, नाव से पानी बाहर निकालने के लिए उसमें पीपा रखा हुआ है।"

"नाव का थोड़ा-बहुत मूल्य तो मुझे अभी चुका देने दो।"

"नहीं। मुझे भी तो सेवा का एकाध मौका दीजिए। यदि आप निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच जायें, तो जो आप दे सकें, भेज दीजियेगा।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

"घबराइयेगा नहीं, आप लोगो के डूबने की कोई आशंका नहीं है।"

"तब तो बड़ा अच्छा है।"

"हवा के साथ-साथ ही, झील के चढ़ाव की ओर चल दीजिये।"

"ठीक है!" कहते हुए मै नाव मे चढ गया।

"क्या आप होटल का बिल चुकाने के लिए वहाँ पैसा छोड़ आये हैं?"

"हॉ, अपने कमरे में, एक लिफाफे में रख आया हूँ।"

"अच्छी बात है। भाग्य आपका साथ दे, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"ईश्वर तुम्हें सुखी रखे, एमिलो! तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद!"

"इस तूफानी रात मे यदि आप कहीं डूब गये, तो धन्यवाद देने के स्थान पर मुझे कोसेंगे।"

"क्या कह रहा है यह?" कैथरीन ने पूछा।

"अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट कर रहा है।"

"हमारी ओर से भी तुम्हें शुभकामनाएँ।" कैथरीन बोली—"और अनेक धन्यवाद भी!"

"क्या आप लोग तैयार हैं?"

"हॉ।"

वह नीचे झुका। उसने हमारी नाव को गहरे पानी की ओर ढकेलना शुरू किया। मैंने पानी मे पतवार डाली और अपना एक हाथ हिलाया। बैरा ने भी अपना हाथ हिलाकर हमें विदा किया। क्षणभर तक होटल की बत्तियों को देखने के बाद मै झील की छाती पर नाव खेने लगा। सीधे सामने की ओर पतवार चलाते हुए मै होटल से दूर होता गया। धीरे-धीरे एक-एक करके होटल की बत्तियॉ छिपने लगी और अन्ततः सब ऑखों से ओझल हो गई। हमारे सामने अब केवल असीम जल-सागर हिलोरें मार रहा था और हवा के साथ-साथ हम उसकी छाती पर बढ़ते चले जा रहे थे।

. ३७ .

उस घोर अन्धकार में अपने मुख पर हवा के थपेड़े सहते हुए मैं नाव खेता गया।

वर्षा बन्द हो चुकी थी। बीच बीच मे हवा के झोंकों के साथ कुछ बौछारें भी आ जाती थी। अंधेरा इतना अधिक था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। बड़ी ठण्डी हवा बह रही थी। नाव के पिछले हिस्से मे बैठी हुई कैथरीन को मै देख रहा था, किन्तु जहॉ पतवारों के चौड़े फल गहराई मे डूबते थे, वहॉ का पानी मुझे दिखाई नही देता था। पतवार लम्बे थे और उन्हे फिसलने से बचाने के लिए उन पर चमड़े की पट्टियॉ नहीं लगी थी। मै पतवार खीचता, उसे ऊपर उठाता, आगे झुकता, जल की थाह लेता और पतवार को पुनः पानी मे डुबाकर खींचता। इस प्रकार जहॉ तक सम्भव था, बिना किसी अधिक मेहनत के मै नाव खे रहा था। हवा हमारा साथ दे रही थी, अतः नाव की चाल मे तेजी लाने के लिए मुझे पतवारो को अपने दोनो ओर बहुत ऊपर तक नहीं उठाना पड़ता था। मैं जानता था कि पतवार चलाते-चलाते मेरे हाथों मे छाले पड़ जाएँगे, किन्तु जहॉ तक हो सकता था, मै अधिक-से-अधिक समय तक यह नौबत नहीं आने देना चाहता था। नाव हलकी थी और बड़ी आसानी से आगे भागती जा रही थी। गहरे काले जल और सर्वत्र फैले अंधकार में मुझे कुछ दिखाई नहीं देता था; फिर भी मुझे उम्मीद थी कि हम शीघ्र ही पालान्जा पहुँच जाएँगे।

किन्तु पालान्जा के दर्शन हमे बिलकुल नहीं हुए। वायु के तीव्र प्रवाह के बीच अनजाने ही हम उस स्थान को पार कर गये, जहॉ अधेरे की ओट मे दिन-भर की दौड़-धूप के बाद पालान्जा थक कर सो रहा था। वहॉ की बत्तियॉ हमें दिखाई भी न दी। अन्त मे सामने की ओर काफी दूरी पर, हमने कुछ बत्तियॉ देखीं। बत्तियॉ झील के बिलकुल किनारे पर थीं। निकट आने पर ज्ञात हुआ कि वे बत्तियॉ इन्ट्रा नामक स्थान की थीं। किन्तु उससे पहले हमे काफी समय तक कहीं कोई रोशनी नहीं दिखाई दी थी। यहॉ तक कि झील का तट भी नहीं दीख पड़ा था। पानी की लहरों पर हिचकोले खाते हुए हम तेजी से आगे बढ़ते गए। पतवार चलाते हुए, कभी-कभी लहरे हमारी नाव को ऊपर उछाल

देतीं और तब पतवारें पानी में गहराई तक जाने के बदले उसकी सतह से ऊपर ही रह जाती। नाव खेने-खेने हम अचानक ही उस अंधेरे मे एक नुकीली चट्टान से टकराते-टकराते बचे। झील का पानी उस चट्टान से टकरा रहा था। वह बडे वेग से टकराता, लहरे ऊपर उठतीं और पीछे लौटकर गिर जातीं। इससे पहले कि हम चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जायें, मैने पूरी शक्ति लगाकर दाहिनी पतवार के सहारे नाव मोडी और बायीं से पानी को पीछे ढकेलना आरम्भ किया। थोड़े प्रयास से ही चट्टान से बचकर हम पुनः झील में पहुँच गये। चट्टान की आगे की ओर निकली नोक धीरे-धीरे हमारी दृष्टि से ओझल हो गयी। हम झील मे अपने लक्ष्य की ओर बढते गये।

"हम झील के दूसरे तट की ओर जा रहे हैं।" मैंने कैथरीन से कहा।

"क्या हम पालान्जा की तरफ नही जायेंगे?"

"पालान्जा तो कब का पीछे छूट गया। अंधेरे में हम उसे देख नहीं सके।"

"तुम्हे कोई कष्ट तो नहीं हो रहा है, प्रियतम?"

"नहीं, मैं बिलकुल मजे मे हूँ।"

"यदि तुम कहो, तो थोड़ी देर के लिए पतवार मै सॅभाल लूॅ।"

"नहीं-नहीं, मुझे कोई तकलीफ नही हो रही है।"

"बेचारी फर्ग्यूमन!" कैथरीन बोली--"सबेरे वह हमारे होटल पहुँचेगी और तब उसे पता लगेगा कि हम वहॉ से चले गये हैं।"

"उसकी मुझे अधिक चिन्ता नहीं है।" मै बोला—"चिन्ता है इस बात की कि सूर्योदय से पहले, चुगी के सिपाहियो से बचकर हम इस झील के स्विट्जरलैण्ड वाले हिस्से मे कैसे प्रविष्ट हो।"

"क्या स्विट्जरलैण्ड की सीमा काफी दूर है?"

"यहॉ से करीब उन्नीस मील होगी।"

मै रातभर नाव खेता रहा। धीरे-धीरे मेरे हाथों में इतनी सूजन आ गयी कि पतवारो को पकडना भी मुझे भारी प्रतीत होने लगा। कई बार हम तट से टकराते-टकराते बचे। मै डर रहा था कि झील के बीचोबीच चलने से कहीं ऐसा न हो कि मुझे दिशा का ज्ञान न रहे और व्यर्थ ही समय नष्ट करना पडे। अतः मै किनारे-किनारे ही नाव खेता जा रहा था। कभी-कभी हम किनारे के इतने पास पहुँच जाते कि हमे वहॉ के वृक्षों की कतार और उससे लगा हुआ रास्ता उस अंधेरे मे भी स्पष्ट दिखायी दे जाता था। रास्ते के पीछे दूर खडी पर्वत-श्रेणियॉ भी कभी-कभी दिखायी दे जाती थीं। वर्षा बिलकुल बन्द हो चुकी थी।

छाता खोला। एक 'फटाक्' की आवाज के साथ वह खुला और मैंने उसे दोनों ओर से पकड़ लिया। उसकी मूठ बैठक में फँसा दी और उसे अपने पैरो के बीच दबाकर बैठ गया। छाते मे खूब हवा भर गयी। अपनी पूरी शक्ति से मैं उसके दोनों छोर पकड़े रहा और तभी मुझे ऐसा लगा कि नाव आगे खिंचती जा रही थी। वह सचमुच तेजी से आगे बढ़ रही थी।

"हम बडे मजे मे आगे बढ़ते जा रहे हैं।" कैथरीन ने कहा। मुझे छाते की तीलियों को छोड़कर और कुछ नहीं दीख रहा था। हवा भर जाने के कारण छाता फूलकर तन गया और मुझे अपनी ओर खींचने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि हम उसी के साथ खिंचे चले जा रहे हैं। मैंने अपने पैर जमाये और उसे कमपर पकड़े रहा। किन्तु तभी, अचानक ही, उसकी तनी हुई तीलियाँ ढीली पड़ने लगी और एक तीली चटाक से मेरे सिर पर पड़ी। मैंने उसके ऊपरी सिरे को, जो हवा के जार से उलटता जा रहा था, दबाकर पकड़ने की कोशिश की। इतने ही मे उसकी सभी तीलियाँ ढीली पड़कर बिखर गयीं। छाता बिलकुल उलट गया। कहाँ तो कुछ ही क्षण पहले मैं उस छाते को, हवा के जार से तने, नाव खीचनेवाले पाल के समान पकड़े बैठा था और कहाँ अब, उसके स्थान पर मेरे हाथ मे एक उलटे छाते की डडी भर रह गयी थी, जिसे मैंने अपनी जाँघो के बीच दबा रखा था। मैंने बैठक के बीच से उसकी मूठ बाहर निकाल ली और छाते को मोड़-माड़ कर नाव के अगले हिस्से मे पटक दिया। पतवार स्वय चलाने के विचार से जब मैं कैथरीन के पास पहुँचा, तो वह हँस रही थी। मेरा हाथ अपने हाथ मे लेकर वह बड़ी देर तक हँसती रही।

"क्या बात है?" पतवार पकड़ते हुए मैंने पूछा।

"उस छाते को पकड़े हुए तुम बड़े अजीब दिखायी दे रहे थे।" वह बोली।

"मेरा भी कुछ ऐसा ही अनुमान है।"

"नाराज मत हो, प्राण! वह दृश्य सचमुच बड़ा मजेदार था। तुम करीब बीस फुट चौडे दीख रहे थे। उस छाते के दोनों छोरों को पकडे हुए तुम बड़े प्यारे दिखाई दे रहे थे...।" हँसते-हँसते उसका गला रुँध गया।

"लाओ, अब मै नाव खेता हूँ।"

"नहीं, कुछ देर आराम कर लो। थोड़ी शराब पी लो। देखो तो सही, कितनी सुहानी रात है और हम काफी दूर आ भी गये हैं।"

"नहीं, मुझे अभी इन भँवरों से नाव को बचा ले चलना है।"

"ठहरो, मै तुम्हारे लिए शराब ले आती हूँ। थोड़ी देर आराम तो कर लो, प्रिय।"

मैने पतवार चलाना रोक दिया। हम लोग लहरो के साथ-साथ आगे बढने लगे। कैथरीन ने थैला खोला और ब्राण्डी की बोतल निकालकर मेरे हाथ मे पकड़ा दी। मैने जेब मे से चाकू निकाला, बोतल का डाट खोला और काफी शराब पी गया। शराब अच्छी और गर्म थी। मेरी नस-नस मे गरमी दौड़ गई। मैंने नयी स्फूर्ति तथा आनन्द का अनुभव किया। "बड़ी सुन्दर ब्राण्डी है—" मैंने कहा। चॉद पुनः बादलों मे छिप गया था, फिर भी किनारा स्पष्ट दीख रहा था। तभी मुझे ऐसा आभास हुआ कि आगे एक और चट्टान की नोक है, जो झील मे काफी दूर तक धॅसती चली आयी है।

"तुम ठड तो महसूस नहीं कर रही हो?"

"नही तो! बिलकुल ठीक हूँ मैं। हॉ, कुछ अकड़ जरूर गई हूँ।"

"नाव मे भरा हुआ पानी जरा बाहर फेंक दो जिससे तुम अपने पैर नीचे रख सको।"

मै फिर नाव खेने लगा। पतवारें चलाते हुए मैं उनकी खड़खड़ाहट सुनता रहा। पतवारो के पानी मे डूबने का स्वर और नाव के पिछले भाग की सीट के नीचे पड़े हुए, पानी फेकने के टीन के डिब्बे की रगड़ से पैदा होनेवाली आवाज मेरे कानों में आती रही।

"जरा वह पानी फेकने का डिब्बा तो दो।" मैंने कहा—"मुझे बड़ी प्यास लगी है।"

"वह तो बड़ा गंदा है।"

"कोई हर्ज नहीं। मैं धोकर उसे साफ़ कर लूॅगा।"

मैंने कैथरीन द्वारा डिब्बा धोये जाने की आवाज सुनी। उसने डिब्बा भरा और मेरे हाथ में दे दिया। ब्राण्डी पीने के बाद मेरी प्यास जाग गई थी। पानी बर्फ़ के समान ठण्डा था—इतना ठण्डा कि मेरे दॉतों मे सिहरन-सी पैदा हो गयी। मैंने किनारे की ओर नजर दौड़ाई। हम लोग चट्टान की उस लम्बी नोक के काफ़ी पास पहुॅच चुके थे। सामने दूर, खाड़ी मे बत्तियॉ जगमगा रही थीं।

"धन्यवाद!" टीन का डिब्बा कैथरीन को लौटाते हुए मैं बोला।

"मै तुम्हारे लिए कुछ भी करने को सदा तैयार हूँ।" कैथरीन ने कहा—"यदि तुम्हें चाहिए, तो मेरे पास अभी भी खाने को बहुत-कुछ शेष है।"

"क्या तुम कुछ नहीं खाना चाहती?"

"नहीं। अभी मुझे भूख नहीं है। भूख लगने तक यदि हम खाना बचाये रखे, तो अच्छा हो!"

"अच्छी बात है।"

दूर से जिसे हम किसी चट्टान की नोक समझ रहे थे, वह वास्तव में, एक लम्बा और ऊँची सतहवाला अन्तरीप निकला। उससे बच कर निकलने के लिए मैं नाव को हटाकर झील मे काफी दूर ले गया। झील की चौड़ाई अब बहुत कम हो गयी थी। चॉद फिर बादलों से बाहर आ गया था। चुगी के सिपाही यदि पहरा देते होते, तो पानी पर तैरते हुए काले धब्बे के समान हमारी नाव को उस प्रकाश मे वे अच्छी तरह देख सकते थे।

"कैसी हो केट?" मैने पूछा।

"बिलकुल ठीक हूँ मै। हम कहॉ हैं इस वक्त?"

"मेरी समझ से अब हमे सिर्फ आठ मील की दूरी और पार करनी है।"

"नाव खेने के लिहाज से तो यह दूरी काफी है, मेरे भोले प्रियतम! तुम तो थककर चूर हो गये होगे—है न!"

"नहीं-नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ है। केवल मेरे हाथों में दर्द है। बाकी सब ठीक है।"

हम झील में आगे बढ़ते गए। दाहिने किनारे की वह लम्बी-सी पर्वत-शृंखला एक स्थान पर टूट-सी गयी थी। किनारा बहुत नीचा हो गया था। पहाड़ो की शृंखला जहॉ टूट गयी थी, वहॉ से एक सपाट-भूखण्ड बाहर निकल आया था, जो किनारे के साथ-साथ काफी दूर तक चला गया था। मेरे खयाल से वह स्थान कैन्नोबिओ था। किसी पहरेदार अथवा सिपाही से हमारी भेट हो जाने का सबसे अधिक भय यहीं था, अतः मैने अपनी नाव तट से काफ़ी दूर रखी। दूसरे तट पर, सामने की ओर, काफी दूर, गुम्बज के आकार की चोटीवाला एक पहाड़ दिखाई दे रहा था। मैं अब तक थक गया था। अब हमे कोई बहुत दूर नहीं जाना था—नाव खेने के लिए भी दूरी अधिक नहीं थी; किन्तु मनुष्य जब अपनी स्वाभाविक स्थिति में नहीं रहता, तो थोडा-सा अंतर भी उसे बहुत लगता है। मै जानता था कि स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा पर पहुँचने से पहले, हमे उस पहाड़ को पार करने के बाद, कम-से-कम पॉच मील की दूरी और तय करनी है। चॉद अब करीब-क़रीब ढल चुका था। किन्तु उसके डूबने से पहले ही आकाश मे फिर बादल छा गये और साथ ही छा गया घोर अंधेरा। मै

किनारे से काफी दूर रहते हुए नाव चलाता रहा। पतवार चलाते-चलाते, बीच-बीच मे मै कुछ समय के लिए आराम करने लगता। उस वक्त मै पतवारे चलाना बन्द करके उन्हें ऊपर खींच लेता, जिससे उनके चप्पुओं से हवा टकराती रहे और नाव खुद ब-खुद बढ़ती जाये।

"कुछ देर मुझे भी नाव खेने दो।" कैथरीन ने कहा।

"मैं तुम्हें नाव चलाने की सलाह नहीं दे सकता।"

"बेकार की बात है। मेरे लिए तो यह अच्छा ही होगा। नाव चलाने से मै गर्मी महसूस करूँगी और मेरा शरीर ज्यादा अकड़ने से बच जाएगा।"

"पर नाव चलाना तुम्हारे लिए उचित नहीं है, केट—वह भी ऐसी हालत मे!"

"फिर वही बेकार की बात। एक गर्भवती स्त्री के लिए तो धीरे-धीरे नाव चलाना फायदेमद होता है।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। किन्तु धीरे-धीरे ही चलाना। मै पीछे चला जाता हूँ और तब तुम आगे आ जाना। जब तुम आगे आओ, तो नाव के दोनो किनारों का सहारा लेते हुए आना।"

मैं अपना कोट पहनकर नाव की पिछली ओर बैठ गया। मैंने अपनी कॉलर ऊपर उठा ली और नाव खेती हुई कथरीन को देखने लगा। वह बड़ी कुशलता से नाव चला रही थी, किन्तु पतवारे बहुत लम्बी थीं और इससे उसे असुविधा हो रही थी। मैंने थैला खोला और उसमे से सैण्डविच निकालकर खाने लगा। दो सैण्डविच खाने के बाद मैंने एक गिलास ब्राण्डी पी। ब्राण्डी ने मेरी हालत मे काफ़ी सुधार ला दिया। मैं एक गिलास ब्राण्डी और पी गया।

"जब तुम थक जाओ, तब मुझसे कह देना, केट!" मै बोला। कुछ देर तक चुप्पी रही और फिर मैंने उससे कहा—"जरा खयाल रखना। पतवार कहीं तुम्हारे पेट पर न लग जाये।"

"पेट पर लग भी गयी, तो क्या!"—पतवारों की छपछपाहट के बीच कैथरीन बोली—"तब तो जीवन शायद बड़ा आसान हो जायेगा।"

मैंने तीसरी बार गिलास भर कर ब्राण्डी पी।

"कैसा लग रहा है तुम्हें, केट?"

"बहुत अच्छा।"

"जब तुम पतवार नहीं चलाना चाहो, मुझे बता देना।"

"अच्छा।"

मैंने एक गिलास ब्राण्डी और पी। उसके बाद नाव के दोनों किनारों को पकडकर आगे की ओर बढा।

"नहीं-नहीं, तुम अभी मत आओ। मै बड़े मजे में नाव चला रही हूॅ।" कैथरीन ने मुझे रोकने की चेष्टा की।

"उठो भी, पीछे जाओ तुम। मैं काफ़ी आराम कर चुका हूॅ।"

ब्राण्डी के नशे में कुछ देर मै बड़ी आसानी से नाव चलाता रहा, किन्तु उसके बाद मेरी पतवारें उलटी-सीधी पड़ने लगी और पानी पीछे हटाने के बदले वे पानी मे ही फॅसकर रह गयीं। किसी तरह मैंने फिर जैसे-तैसे पानी काटना आरम्भ किया। शराब पीकर बडी मेहनत से नाव चलाने के कारण मेरे मुॅह में पतले पीले पित्त का-सा कडवा स्वाद पैदा हो गया।

"मुझे थोड़ा पानी पिलाओ। पिलाओगी न?" मैंने कहा।

"क्यो नहीं? अभी लायी!" कैथरीन ने उत्तर दिया।

सबेरा होने से पहले ही वर्षा के फुहारे आरम्भ हो गई। हवा का वेग धीमा हो गया था। कदाचित् ऐसा भी हो कि झील के मोड़ को घेरकर खडे हुए पहाड़ों के कारण हवा के तीव्र झोंकों का हम अनुभव नहीं कर पा रहे थे। यह देख कर कि सबेरा होनेवाला है, मै अपने स्थान पर जमकर बैठ गया और पूरी शक्ति से नाव खेने लगा। हम कहॉ तक पहुॅचे थे, इसका मुझे बिलकुल पता नहीं था। मै किसी प्रकार झील के स्विट्जरलैण्ड—स्थित भाग मे पहुॅच जाना चाहता था। सूर्य की किरणे जब धरती पर उतरने की तेयारी करने लगीं, तो मैंने देखा कि हम किनारे के बिलकुल पास थे। झील का पथरीला तट तथा उसके वृक्ष दिखाई देने लगे थे।

"जरा देखो तो, क्या है वह?" कैथरीन ने कहा। मैंने पतवारें चलाना बंद कर दिया और कान लगाकर कुछ सुनने का प्रयत्न करने लगा। तभी मुझे एक मोटर बोट की आवाज सुनाई दी। अपने नन्हें-से इजन की फट-फट की आवाज के साथ वह झील का चक्कर लगा रही थी। मैंने नाव को बिलकुल किनारे से लगा दिया और चुपचाप लेट गया। मोटर-बोट की आवाज हमारे पास आती गई। बरसते पानी मे हमने देखा कि वह हमारी नाव के पिछले भाग के करीब आ गयी थी। मोटर-बोट के पिछले हिस्से मे चुगी-विभाग के सिपाही बैठे थे। उन्होने अपने पहाडी टोप उतार लिये थे और उनके कोट की कॉलरें ऊपर उठी हुई थीं। उनकी पीठ पर उनकी छोटी बन्दूकें (कारबाइन) लटक रही थी। इतने सबेरे वे ऊॅघते-से प्रतीत हो

रहे थे। उनके टोपो की पीली पट्टियाँ तथा उनके कोट की कॉलरो पर लगे हुए पीले निशान मै अच्छी तरह देख सकता था। बरसते पानी मे ही वह मोटर-बोट इजन की घरघराहट के साथ धीरे-धीरे आगे बढी और अदृश्य हो गयी।

मै पुनः अपनी नाव झील के वक्ष पर ले आया। जब हम स्विस सीमा के इतने समीप पहुँच गए थे, तो मै नहीं चाहता था कि किनारे से लगी हुई सड़क पर तैनात कोई सतरी हमे देख ले। मै अपनी नाव झील में इतनी दूर ले गया, जहाँ से किनारा दिखाई-भर देता था। तट से उतनी दूरी बनाए रख-कर उस बरसात मे ही मै लगभग पौन घण्टा नाव चलाता रहा। एक बार फिर हमे मोटर-बोट की घरघराहट सुनाई दी। जब तक उसके इजन का स्वर झील के पार, हमसे पर्याप्त दूरी पर जाकर विलीन नहीं हो गया, तब तक हम नाव रोककर मौन बैठे रहे।

"मै समझता हूँ केट—कि हम स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा में पहुँच गए हैं।" मैने कहा।

"सच?"

"सच या झूठ, इसका पता लगाने का तो उस समय तक कोई रास्ता नहीं है, जब तक हम स्विस सैनिको को न देख ले।"

"या स्विस नौ-सैनिकों को। है न?"

"स्विस नौ-सेना के सैनिको का दिखायी देना हमारे लिए बड़ा महँगा पडेगा। पिछली बार हमने जो मोटर-बोट देखी थी, वह सम्भवतः स्विस नौ सेना की ही थी।"

"यदि हम सचमुच स्विट्ज़रलैण्ड पहुँच चुके हैं, तो बड़ा मज़ा आयेगा। सबसे पहले हम बढिया नाश्ता करेंगे—यहाँ के रोल्स (एक खाद्य विशेष), मक्खन और मुरब्बा बड़े स्वादिष्ट होते हैं।"

प्रकाश अब पूर्णतः व्याप्त हो चुका था। वर्षा की नन्हीं-नन्हीं फुहारें पड़ रहीं थीं। झील के ऊपर की ओर अभी तक हवा चल रही थी। उस ओर हमसे काफ़ी दूर पर झील की लहरे चाँदी-सी चमक रही थी। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि अब हम स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा में प्रवेश कर चुके हैं। तट के वृक्षों के पीछे बहुत-से मकान बने थे। एक ओर एक गाँव भी नजर आता था। उसके मकान पत्थरो के बने थे। वहीं पहाडियों पर कुछ बंगले भी थे। एक गिरजाघर भी दिखायी देता था। मै इस डर से कि कहीं कोई पहरेदार न खडा हो, किनारे को घेरती हुई सड़क पर नजर जमाए रहा। किन्तु मुझे वहाँ कोई पहरेदार नहीं दिखाई दिया। सड़क, अब, झील के

बिलकुल किनारे-किनारे आगे बढ़ रही थी। तभी पास ही के एक कॉफे से एक सैनिक निकला और सड़क पर आया। वह भूरे-हरे रंग की वर्दी पहने था। उसके सिर पर जर्मनो-जैसा लोहे का एक टोप था और वह बड़ा स्वस्थ दीख रहा था। दॉत साफ़ करने के ब्रश के समान उसकी छोटी-छोटी मूँछे थीं। उसने हम लोगों की ओर देखा।

"जरा उसकी ओर हाथ हिलाकर मैत्री प्रदर्शित करो तो।" मैंने कैथरीन से कहा। उसने हाथ हिलाया। जवाब मे सैनिक ने बड़े सकोच के साथ मुस्कराकर हाथ हिलाते हुए कैथरीन के अभिनन्दन का उत्तर दिया। मैं कुछ निश्चित होकर नाव चलाने लगा। अब हम गॉव के सामने के घाट को पार कर रहे थे।

"मेरा ख़याल है कि हम अब स्विस सीमा के काफी भीतर आ गये हैं।" मैने कहा।

"पहले हमे इस बात का पूरा-पूरा निश्चय कर लेना चाहिए, प्रियतम! कही ऐसा न हो कि हमे मोर्चे पर लौटने के लिए बाध्य किया जाए।"

"मोर्चा यहा से काफ़ी पीछे छूट चुका है। मै तो समझता हूँ कि यह चुंगी-नगर है। निश्चय ही, यह स्थान ब्रिस्सागो होना चाहिए।"

"क्या यहॉ इटालियन पहरेदार नहीं हैं? चुगी-नगर मे तो दोनो देशों के पहरेदार रहते हैं न?"

"ना, युद्ध के जमाने में नहीं। स्विस लोग तो शायद इटालियनो को सीमा के इस ओर आने भी नही देते होगे।"

वह एक छोटा-सा सुन्दर शहर था। खाड़ी मे मछली मारने की बहुत सी नावें पडी हुई थी। ऊपर मछली पकड़ने के जाल फैले हुए थे और नवम्बर मास की बरसात के बीच भी वह शहर बड़ा साफ़-सुथरा दिखाई दे रहा था—प्रसन्नता वहॉ जैसे बिखरी हुई थी।

"तब हम यहॉ उतर कर नाश्ता कर ले, क्यों?"

"हॉ, यही ठीक रहेगा।"

मैंने बायीं पतवार को घुमाते हुए पूरी शक्ति से खीचा और हम लोग किनारे के पास आ गये। खाडी के नजदीक पहुँचकर मैने नाव खाड़ी के मुख की ओर घुमाकर सीधी कर दी और उसे तट से लगा दिया। पतवारें खींच कर भीतर रखी लोहे का एक कडा पकडा और गीले पत्थरो की सीढ़ियों से होते हुए मैंने स्विट्ज़रलैण्ड की धरती पर पॉव रखा। फिर मैने तट से नाव बॉध दी और केथरीन को सहारा देने के लिए हाथ बढ़ाया।

"ऊपर आ जाओ, केट। हमारे लिए यह बड़े आनन्द का समय है।"

"और इन थैलो का क्या होगा?"

"उन्हे वहीं नाव में पड़ा रहने दो।"

कैथरीन भी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गयी। अब हम दोनो स्विट्ज़रलैण्ड में थे। वह भी एक साथ।

"कितना सुन्दर देश है।" वह बोली।

"और भव्य भी, है न?"

"चलो, कहीं चलकर नाश्ता करे।"

"क्या सचमुच यह देश भव्य नहीं है? इस देश की धरती पर कदम रखने मे मुझे जो आनन्द आ रहा है—मेरे हृदय में जो भव्य भावना तरंगित हो रही है—उसी भव्यता को तो मै प्यार करता हूँ।"

"मेरा बदन तो इतना अकड़ गया है कि मै अभी उस भव्यता का अनुभव नहीं कर पा रही हूँ। किन्तु निस्सन्देह यह देश है बड़ा सुन्दर। क्या तुम्हें यह अनुभव नहीं हो रहा है, प्रियतम! कि अब हम इस सुरम्य देश मे हैं—इटली के उस भयावह स्थान से हमे सदा के लिए छुटकारा मिल चुका है?"

"अनुभव क्यों नहीं होता केट, अवश्य होता है। इससे पहले मैंने कभी इतनी खुशी महसूस नही की थी।"

"ज़रा इन मकानो पर दृष्टि डालो। देखो, कितना सुन्दर मैदान है यह! और यहाँ हम नाश्ता भी कर सकते हैं।"

"यह बरसात कितनी सुखद है! इटली मे ऐसी बरसात नहीं होती। यहाँ की वर्षा में एक आल्हाद है—मस्ती है।"

"और हम इस खूबसूरत मौसम में यहाँ मौजूद हैं। कितना सुंदर है, यह सब, प्रियतम!"

कॉफे के भीतर पहुँचकर हम लकड़ी की एक साफ सुथरी मेज पर बैठ गए। किसी मूर्ख के समान ही चकित दृष्टि से हम इधर-उधर देख रहे थे। तभी साफ सुथरे कपड़ों में, एप्रॉन (पोशाक के ऊपर लपेट कर पहना जाने वाला कपड़ा) लपेटे, एक लड़की हमारे पास आयी और उसने हमसे पूछा कि हम क्या खाना पसंद करेंगे।

"रोल्स, मुरब्बा और कॉफी ले आओ।" कैथरीन ने आदेश दिया।

"मुझे दुःख है, लड़ाई के कारण, इन दिनों रोल्स हमारे यहाँ नहीं बनते।"

"तब रोटी (ब्रेड) ही ले आओ।"

"आप लोग कुछ टोस्ट खाना पसंद करेंगे ?"

"अच्छी बात है, टोस्ट ही ले आओ।"

"मुझे कुछ उबले हुए अंडे भी चाहिए।"

"कितने अडे लाऊँ ?"

"तीन।"

"चार ले लो, प्रियतम।"

"अच्छा, चार अंडे ले आओ।"

लड़की लौट गई। मैंने कैथरीन का चुम्बन लिया और खूब कसकर उसका हाथ अपने हाथ मे दबा लिया। हमने एक-दूसरे की ओर देखा, और फिर कॉफे की ओर देखने लगे।

"प्रियतम, कितना सुन्दर—कितना आकर्षक है—यह सब !"

"बहुत ही सुंदर—बहुत ही मोहक!" मैंने कहा।

"रोल्स हमे नही मिले, कोई बात नहीं।" कैथरीन बोली—"यद्यपि रातभर मै उन्हीं के विषय मे सोचती रही हूँ, फिर भी उनके न मिलने का मुझे जरा भी दुख नहीं है।"

"मेरा अनुमान है कि कुछ ही देर में हमे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।"

"कोई परवाह नहीं, प्रियतम। अभी तो हम नाश्ता करेंगे। उस के बाद यदि कोई हमे गिरफ्तार भी कर ले, तो चिन्ता की बत नहीं। फिर गिरफ्तार करके कोई हमारा कर भी क्या सकता है ? हम लोग तो सम्भ्रात घराने के अंग्रेज और अमराकी नागरिक हैं।"

"तुम्हारे पास प्रवेश-पत्र है न ?"

"क्यो नहीं। पर छोडो यह सब। इसके सम्बन्ध मे हमे बात ही नहीं करनी चाहिए। हमे तो सब-कुछ भूल कर अभी खुशियाँ मनानी चाहिए।"

"इससे बढकर प्रसन्नता की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है !" मैं बोला। ठीक इसी समय भूरे रग की एक मोटी-सी बिल्ली आयी। उसकी पूँछ किसी पख के समान ऊपर उठी हुई थी। फर्श पार कर के वह हमारी मेज के पास आ गयी। अपने शरीर को कमानी के समान मोड़ते हुए वह मेरे पैरों से सटकर खड़ी हो गयी और बार-बार अपनी पीठ रगड़ने लगी। जब-जब वह पीठ रगड़ती, प्रसन्नता से गुर्राती। नीचे झुक कर मैंने उसे थपथपाया। कैथरीन मुझे देखकर मुस्कराई—उसकी आँखो से सुख बरस रहा था।

"लो कॉफी आ गयी।" उसने कहा।

नाश्ते के बाद ही हमे गिरफ्तार कर लिया गया। हम थोड़ी देर तक गॉव में इधर-उधर घूमते रहे और फिर जब नाव से अपना सामान लाने के लिए खाड़ी मे पहुँचे, तो हमारी नाव का पहरा देते हुए एक सैनिक खड़ा था।

"यह आपकी नाव है?"

"हॉ।"

"आप लोग कहॉ से आ रहे हैं?"

"झील के उस पार से।"

"आपको मेरे साथ चलना होगा।"

"और इन थैलो का क्या होगा?"

"आप इन्हें अपने साथ ले चल सकते हैं।"

मैंने दोनो थैले उठा लिये। कैथरीन मेरी बगल में चलने लगी। सैनिक हम लोगों के साथ ही, किन्तु हमारे पीछे-पीछे चल रहा था। हम लोग चुंगी-घर पहुँचे और वहॉ हमे एक लेफ्टिनेण्ट के सामने खड़ा कर दिया गया। लेफ्टिनेट बड़ा दुबला-पतला था और वह सैनिक-वेश मे था। उसने हम लोगो से पूछा—"आप दोनों किस राष्ट्र के नागरिक हैं?"

"हम अंग्रेज और अमरीकी हैं।"

"ज़रा मुझे अपने प्रवेशपत्र तो दिखाइए।"

मैंने उसे अपना प्रवेशपत्र निकालकर दे दिया। कैथरीन ने भी अपने बटुए से प्रवेशपत्र निकाला। वह बड़ी देर तक उनका निरीक्षण करता रहा।

"आप इस प्रकार नाव मे बैठकर स्विट्जरलैंड क्यों आये?"

"मैं एक खिलाड़ी हूँ।" मैंने कहा—"नाव खेने का मुझे बड़ा शौक है। जब भी अवसर मिलता है, मै नाव खेता हूँ। ऐसे मौके मैं कभी नहीं चूकता।"

"आप यहॉ क्यों आये हैं?"

"शरत्कालीन खेलों के लिए। हम लोग घूमने के शौकीन हैं—और यहॉ शरत्कालीन खेल खेलना चाहते हैं।"

"पर यह जगह तो शरत्कालीन खेलों के उपयुक्त नहीं है।"

"यह तो हम भी जानते हैं। पर हम तो यहॉ से उन स्थानों को जाना चाहते हैं, जहॉ ये खेल हुआ करते हैं।"

"आप इटली में क्या करते थे?"

"मैं वहॉ शिल्पकारी सीखता था। मेरी यह चचेरी बहन वहॉ कला का अध्ययन करती थी।"

"आप लोगों ने इटली क्यो छोड़ा?"

"इसलिए कि हम शीतकालीन खेलों मे भाग लेना चाहते हैं और युद्ध-काल मे शिल्पकला का अध्ययन तो किया नहीं जा सकता!"

"आप यही ठहरे रहें।" लेफ्टिनेण्ट बोला। वह हमारे प्रवेश-पत्र लेकर मकान के भीतर घुस गया।

"तुम वस्तुतः बड़े अद्भुत हो, प्रियतम—" कैथरीन ने कहा—"बस, इसी बात पर अड़े रहो अब, कि तुम शीतकालीन खेलों में भाग लेना चाहते हो।"

"क्या तुम कला के विषय मे कुछ जानती हो?"

"हॉ, हॉ, जानती क्यों नही?"

"कुछ प्रसिद्ध कलाकारो के बारे मे बताओ।"

"सुनो, रयूबा!" कैथरीन ने कहा।

"लम्बा और मोटा।" मै बोला।

"तितियन।" कैथरीन बोली।

"तितियन के समान सुनहले केशोंवाला।" मैंने कहा—"और मान्तेन्यॉ?"

"देखो, कठिन सवाल मत पूछो।" कैथरीन ने कहा—"यद्यपि जिसके विषय मे मै जानती हूॅ कि वह बडा कटु स्वभाववाला था।"

"बहुत कटु।" मैने समर्थन किया—"बड़ी भद्दी थी उसकी कला।"

"देखा तुमने। तुम्हारे लिए मै निश्चय ही योग्य पत्नी सिद्ध होऊँगी।" कैथरीन ने कहा—"मैं तुम्हारे ग्राहकों से कला के विषय मे बात कर सकूँगी।"

"लो, वह आ गया।" मै बोला। वह दुबला-पतला लेफ्टिनेण्ट लौट आया। उसके हाथ मे हमारे प्रवेशपत्र थे।

"मुझे आपको यहॉ से लोकार्नो भेजना पड़ेगा।" वह बोला—"आप एक गाड़ी किराये पर ले लीजिए। आपके साथ एक सैनिक भी जायेगा।"

"ठीक है।" मैने उत्तर दिया—"किन्तु हमारी नाव का क्या होगा?"

"नाव जब्त कर ली गई है। आपके इन थैलों मे क्या है?"

उसने दोनो थैलों की अच्छी तरह तलाशी ली और ब्राण्डी की बोतल निकाल ली। बोतल मे केवल एक-चोथाई शराब बची थी।

"यदि आपको कोई एतराज न हो, तो आइए, हम बैठकर थोड़ी देर शराब पीएँ।" मैने कहा।

"नहीं, धन्यवाद !" वह सीधा खडा हो गया—"आपके पास कितना पसा है ?"

"दो हजार पॉच सौ लिरे।"

मेरे इस कथन से वह प्रभावित हुआ—"और आपकी चचेरी बहन के पास ?"

कैथरीन के पास भी बारह सौ से ऊपर लिरे थे। लेफ्टिनेंट बहुत प्रसन्न हुआ। हमारे प्रति उसके अकड़-भरे व्यवहार में थोडी नम्रता आ गयी।

"यदि आप शीतकालीन खेलो के लिए ही आये हैं—" वह बोला—"तो बेन्जेन इसके लिए उपयुक्त स्थान है। बेन्जेन में मेरे पिता का एक बड़ा सुन्दर होटल भी है। वह बारहों मास खुला रहता है।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।" मैंने कहा—"क्या आप हमें उस होटल का पता बतायेंगे ?"

"मै आपको एक कार्ड पर लिख देता हूँ।" उसने पता लिखकर बड़ी नम्रता से कार्ड मेरे हाथ में दे दिया।

"सैनिक आपको लोकार्नो ले जायेगा। आपके प्रवेशपत्र उसीके पास होंगे। इस प्रकार की कार्यवाही करने के लिए मुझे दुःख है, किन्तु यह आवश्यक है। मुझे पूरी आशा है कि लोकार्नो के अधिकारी आपको अस्थायी प्रमाण-पत्र (विमा) या पुलिस का अनुमति-पत्र दे देंगे।"

उसने हमारे दोनो प्रवेशपत्र उस सैनिक को दे दिये। हमने दोनों थैले उठाये और किराये की गाड़ी खोजने के लिए गॉव में चल पडे। "ए!" लेफ्टिनेण्ट ने सैनिक को पुकारा। उसने उससे जर्मन भाषा में कुछ कहा। सैनिक ने अपनी राइफल पीठ पर लटका ली और हमारे हाथो से थैले ले लिए।

"सचमुच, यह एक महान देश है।" मैने कैथरीन से कहा।

"और पूर्णतः व्यावहारिक।"

"आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।" मैने लेफ्टिनेण्ट से कहा। उत्तर मे उसने हमें विदा देते हुए अपना हाथ हिलाया।

"यह तो हम लोगो का कर्तव्य है।" वह बोला। हम उस सैनिक पहरेदार के पीछे-पीछे गॉव मे चले गये।

गाडी मे बैठकर हम लोकार्नो चल पड़े। हमारे साथ वह सैनिक पहरेदार भी था। वह सामने की सीट पर चालक के पास बैठा था। लोकार्नो मे हमें कोई कठिनाई नहीं हुई। अधिकारियों ने हमसे कुछ प्रश्न अवश्य पूछे; किन्तु उनका

व्यवहार बड़ा विनम्र रहा; क्योंकि हमारे पास प्रवेशपत्र थे और अच्छी रकम भी। जहाँ तक मेरा अनुमान है, हमारी कहानी के एक शब्द पर भी उन्होंने विश्वास नहीं किया। उनकी सारी कार्यवाही मूर्खतापूर्ण थी; किन्तु वहाँ तो सब कुछ एक क़ानूनी न्यायालय के समान था। कथन के औचित्य का वहाँ प्रश्न ही नहीं था। प्रश्न था केवल यह कि जो-कुछ कहा जाये, वह कानूनन ठीक हो और आप अपने कथन पर अड़े रहे। हमारे पास प्रवेशपत्र थे। पैसा खर्च करने की हममे शक्ति थी। अतः उन्होंने हमें अस्थायी प्रमाणपत्र दे दिए। ये प्रमाणपत्र किसी भी समय रद्द किए जा सकते थे। हमे यह आदेश भी हुआ कि हम जहाँ जाये, वहाँ की पुलिस को अपने आगमन की सूचना दे दे।

"हम जहाँ चाहें, वहाँ जा सकते है?"

"हाँ। आप लोग कहाँ जाना चाहते हैं?"

"क्यों केट, तुम कहाँ चलना पसद करोगी?"

"मॉन्ट्रयूज।"

"बडा सुंदर स्थान है!" एक अफ़सर ने कहा—"आप निश्चय ही उसे पसंद करेग।"

"लोकार्नो स्वयं बहुत सुंदर जगह है।" दूसरे अफसर ने कहा—"मुझे विश्वास है कि आपको यहाँ, लोकार्नो मे ही, बड़ा आनद आयेगा। लोकार्नो बड़ा आकर्षक स्थान है।"

"हम किसी ऐसे स्थान को जाना चाहते हैं, जहाँ शरत्कालीन खेल-कूदों का आनद उठा सके।"

"मॉन्ट्रयूज तो शरत्कालीन खेल-कूदो के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।"

"क्षमा कीजिये।" पहले अफसर ने कहा—"मैं मॉन्ट्रयूज का ही रहने वाला हूँ। मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मॉन्ट्रयूज ओबरलेण्ड–बॅरनॉइस रेलमार्ग पर शरत्कालीन खेल-कूद के लिए बडी ही उपयुक्त और प्रसिद्ध जगह है। इसे गलत कहना सत्य का गला घोटना होगा।"

"मै इसे गलत नहीं कहता। मैने तो केवल यह कहा है कि स्वय मॉन्ट्रयूज मे ऐसी कोई जगह नहीं है।"

"मै इसे नहीं मानता।" पहले अफ़सर ने कहा—"आपके इस कथन से मैं सहमत नहीं हूँ।"

"पर मैने जो कहा है, वह सही है।"

"मै इसे नहीं मानता। मैं स्वयं बर्फ़ पर फिसलनेवाले छोटे-छोटे पटियो

पर चढकर मॉन्ट्रयूज की सड़को पर फिसला हूँ। और एक बार नहीं, बल्कि सौ बार घूमा हूँ। लूजिग [बर्फ़ पर फिसलने का खेल] निश्चय ही शीतकालीन खेल है।"

दूसरा अफसर मेरी ओर मुडा—"शीतकालीन खेल-कूद से आपका मतलब क्या लूजिग से है? मै कहता हूँ कि आप यहीं, लोकार्नो मे ही, बड़े मजे में रहेंगे। यहाँ का जलवायु आपके स्वास्थ्य के लिए बड़ा लाभदायक होगा। यहाँ के आसपास का वातावरण भी आपको आकर्षक प्रतीत होगा। यह नगर आपको काफी पसद आयेगा।"

"इन्होंने तो पहले ही मॉन्ट्रयूज जाने की इच्छा व्यक्त कर दी है।"

"यह 'लूजिग' क्या होता है?"

"देखा आपने, इन्होने उस खेल का नाम तक नहीं सुना।"

दूसरे अफ़सर को मेरे प्रश्न से बड़ा सहारा मिला। वह बडा प्रसन्न हुआ।

"अरे साहब, लूजिग माने छोटे-छोटे पटियों द्वारा बर्फ़ पर फ़िसलना—" पहले अफसर ने कहा—"बिलकुल वैसे ही, जैसे अन्य देशो मे, लोग बर्फ़ पर फिसलते हैं।"

"क्षमा कीजिये, मैं आपसे सहमत नहीं हूँ।" पहले अफ़सर ने इनकार में सिर हिलाते हुए कहा—"साधारण तरीके से बर्फ पर फिसलने मे और लूजिग मे बहुत अतर है। 'टोबोगेनिग' [बर्फ पर फिसलने का खेल, जो अमेरिका मे बहुत प्रचलित है] के पटिये कैनेडा में बनाये जाते है। वे चौड़े तख्तों से बनते हैं। 'लूज' तो साधारण पटियों की बनी होती है।"

"तो क्या हम 'टोबोगेन' नहीं खेल सकते?" मैंने पूछा।

"क्यो नहीं, अवश्य खेल सकते हैं।" पहले अफ़सर ने उत्तर दिया—"खूब अच्छी तरह खेल सकते है, आप। मॉन्ट्रयूज मे कैनेडा से निर्यात किए गए 'टोबोगेन' के पटिये मिलते हैं, सुन्दर और मजबूत पटिये। ये वहाँ 'ऑक्स ब्रदर्स' की दूकान पर मिलते हैं। वे लोग कैनेडा में, अपने कारखाने में, उन्हें तैयार कराते हैं और वहाँ से मॉन्ट्रयूज मॅगवा लेते हैं।"

दूसरे अफसर ने अपना मुँह फिरा लिया। "टोबोगेन के लिए—" वह बोला—"खास किस्म की जगह चाहिए। मॉन्ट्रयूज की सडको पर आप यह खेल नहीं खेल सकते। खैर, आप लोग यहाँ ठहरे कहाँ हैं।"

"यह तो अभी हम भी नहीं जानते।" मैंने कहा—"ब्रिस्सागो से हम सीधे यहीं आए हैं। हमारी गाड़ी बाहर खड़ी है।"

"आप मॉन्ट्र्यूज जाने मे कोई गलती नहीं कर रहे हैं।" पहले अफ़सर ने कहा—"आप स्वयं जान जायेंगे कि वहाँ का जलवायु कितना सुन्दर और स्वास्थ्यकर है। शीतकालीन आमोद-प्रमोद के लिए भी आपको वहाँ से कहीं और नहीं जाना पड़ेगा।"

"यदि आप सचमुच शीतकालीन खेलो के शौकीन हैं—" दूसरा अफ़सर बोला—"तो आप एन्गेडाइन अथवा म्यूरेन जाइये। शीतकालीन खेलो के लिए आपको मॉन्ट्र्यूज जाने की गलत सलाह दी गई है। मैं वहाँ जाने की सलाह आपको नहीं दे सकता।"

"मॉन्ट्र्यूज से ऊपर की ओर लॅ एवान्ट्स मे हर प्रकार के शरत्कालीन खेलो की सुविधा है।" मॉन्ट्र्यूज का पक्ष लेनेवाले अफसर ने विजयी की भाँति अपने सहयोगी की ओर देखा।

"देखिये—" मैने कहा—"मुझे भय है, हम यहाँ अब ज्यादा देर तक नहीं रुक सकेंगे। मेरी चचेरी बहन काफ़ी थक गयी है। फिलहाल हमने मॉन्ट्र्यूज जाने का ही निश्चय कर लिया है।"

"आपके इस निश्चय पर मैं आपको बधाई देता हूँ।" कहते हुए पहले अफसर ने मुझसे हाथ मिलाया।

"मुझे विश्वास है कि लोकार्नो छोड़कर आप पछ्तायेंगे।" दूसरा अफसर बोला—"खैर, हर हालत में आप मॉन्ट्र्यूज जाकर वहाँ की पुलिस को अपने आगमन की सूचना जरूर दे दीजियेगा।"

"वहाँ की पुलिस से आपको कोई परेशानी नहीं होगी।" पहले अफसर ने मुझे विश्वास दिलाया—"वहाँ के प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार शिष्ट और मित्रतापूर्ण होगा।"

"आप दोनो को बहुत-बहुत धन्यवाद!" मैने कहा—"हम लोग आप दोनो की नेक सलाह के लिए आपके बहुत आभारी हैं।"

"अच्छा नमस्ते।" कैथरीन बोली—"आप दोनो को कोटिशः धन्यवाद।"

उन्होने सम्मानपूर्वक सिर झुकाया और हमें दरवाजे तक पहुँचाने आये। लोकार्नो का पक्ष लेनेवाले अफसर के सम्मान-प्रदर्शन मे कुछ उदासी-सी थी। हम सीढियो से नीचे उतरे और गाड़ी मे बैठ गये।

"हे भगवान्!" कैथरीन बोली—"प्रियतम, क्या हम इनसे जल्दी पीछा नही छुड़ा सकते थे?" मैंने गाड़ीवान को एक अफसर क द्वारा बताये गए एक होटल का पता दे दिया। उसने घोड़ो की रास सँभाल ली।

"तुम तो उस सैनिक पहरेदार को बिलकुल ही भूल गये।" कैथरीन ने कहा। सैनिक पहरेदार गाडी के पास ही खडा था। मैंने उसे दस लिरा का नोट दिया और कहा—"मेरे पास अभी स्विट्जरलैण्ड के सिक्के नही है।" उसने मुझे धन्यवाद दिया, फौजी सलामी दी और चला गया। कोचवान ने गाड़ी चलायी और हम होटल की ओर चल पडे।

"तुमने मॉन्ट्रयूज का नाम कैसे लिया?" मैंने कैथरीन से पूछा—"क्या तुम सचमुच वहाँ जाना चाहती हो?"

"वही पहला स्थान था, जो मेरे दिमाग में उस वक्त आया।" उसने उत्तर दिया—"जगह बुरी नहीं है। हम लोग वहाँ, पहाड़ों मे, अपने लिए कोई-न-कोई उपयुक्त स्थान खोज ही लेगे।"

"नींद आ रही है क्या?"

"आ नहीं रही है, आ गयी।"

"मेरी भोली केट, अब हम बड़े इतमीनान से सुख की नींद सो सकेंगे। तुम्हें रात बड़ी तकलीफ उठानी पडी न!"

"नहीं, नहीं; बड़े आनन्द से बीती है, मेरी रात!" कैथरीन ने कहा—"और जब तुम छाता खोलकर नाव चला रहे थे तब तो, बस मजा आ गया।"

"क्या तुम यह महसूस कर रही हो कि हम आज स्विट्जरलैण्ड में हैं?"

"नहीं। मैं डरती हूँ, कहीं यह ऐसा स्वप्न न हो कि मेरी नींद खुली और सब गायब!"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"पर यह सच है, है न प्राण? यह कोई मिलान तो है नहीं कि मैं विदा देने के लिए बग्घी मे बैठकर स्टेशन जा रही हूँ। है न?"

"तुम ठीक कह रही हो।"

"ऐसा मत कहो। इससे मुझे डर लगने लगता है। कहीं ऐसा न हो कि हम वहीं जा रहे हों।"

"मै तो जैसे एक नशे में हूँ। मुझे यही नहीं मालूम कि हम कहाँ जा रहे हैं।" मैं बोला।

"जरा मुझे अपने हाथ तो दिखाओ।"

मैंने अपने दोनो हाथ उसके सामने कर दिये।

छालों के कारण वे सूजकर कड़े पड़ गए थे।

"घबराओ मत—नाव चलाने से मेरी बगल में कहीं छेद नहीं हुआ है।" मैंने कहा।

"बेकार की बातें मत करो।"

मेरे दिमाग मे एक धुँधलका छाता जा रहा था और मै बडी थकावट अनुभव कर रहा था। मेरा सारा उल्लास समाप्त हो चुका था। गाड़ी सड़क पर चली जा रही थी।

"हाय—तुम्हारे हाथ!" कैथरीन बोली।

"आह! मत छुओ उन्हें।" मैंने कहा—"ईश्वर की सौगन्ध, मुझे बिलकुल पता नहीं, हम लोग कहाँ हैं। हम लोग कहाँ जा रहे हैं, कोचवान?" कोचवान ने घोड़ा रोक दिया।

"होटल मेट्रोपोल में, हुजूर! क्या आप वहाँ नहीं जाना चाहते?"

"हाँ, हाँ; क्यो नहीं?" मैं बोला—"सब ठीक है, केट!"

"हाँ, सब ठीक है, प्रियतम। व्यर्थ ही परेशान मत होओ। आज हमें बड़ी अच्छी नीद आयेगी और कल तक तुम्हारी सारी थकावट जाती रहेगी।"

'मैंने तो जैसे काफी शराब पी ली हो—ऐसा नशा है मुझे।" मैंने कहा—"ऐसा लग रहा है, मानो, मै किसी ऑपेरा (थियेटर) मे कोई मजेदार खेल देखता रहा हूँ। यह भी हो सकता है कि मुझे भूख लगी हो और .।"

"तुम्हे कुछ नहीं हुआ है, प्रियतम! तुम केवल थक गए हो। बिलकुल ठीक हो जाओगे तुम।" गाड़ी होटल के सामने जाकर खड़ी हो गयी। हमारा सामान उतारने के लिए होटल से कोई वहाँ आया।

"मुझे अब कुछ कुछ अच्छा मालूम हो रहा है।" मैंने कहा। हम लोग अब तक होटल के प्रवेश द्वार को जानेवाले रास्ते पर खड़े थे।

"मै जानती हूँ कि तुम शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जाओगे। थकभर गए हो तुम—काफी मेहनत भी तो की है तुमने।"

"खैर, किसी तरह हम यहाँ पहुँच तो गये।"

"हाँ, सचमुच ही हम यहाँ पहुँच गये हैं।"

हमारे थैले उठाकर ले चलनेवाले लड़के के पीछे पीछे हमने होटल में क़दम रखा।

पंचम-खण्ड

. ३८ .

उस वर्ष बहुत देर से बर्फ़ गिरना आरम्भ हुआ। हम लोग पहाड़ की ओर, चीड़ के वृक्षों से घिरे हुए, लकड़ी के एक मटमैले रग के घर मे रह रहे थे। रात मे खूब बर्फ़ गिरी। सबेरे रसोईघर की चौकी पर रखे हुए दो बर्तनों के पानी की सतह पर बर्फ की पतली तह-सी जम गई। सुबह श्रीमती गटिंगेन खिड़की बन्द करने के लिए हमारे कमरे मे आई। उसने चीनी मिट्टी की बनी ऊँची अँगीठी मे आग जलायी। उसमें पड़ी हुई चीड़ की लकड़ियाँ चटचटाने लगी। उनमे से चिनगारियाँ फूट पडी। फिर वे बड़े जोर से जल उठी। श्रीमती गटिंगेन दुबारा कमरे मे आई। आग मे जलाने के लिए उसके हाथ मे लकड़ी के बड़े-बडे और काफ़ी मोटे टुकडे थे। पानी गर्म करने का एक बर्तन भी साथ में था। जब कमरा गर्म हो गया तो उसने हमारे सामने सुबह का नाश्ता लाकर रख दिया। हम लोग बिस्तर में बैठे-बैठे नाश्ता करने लगे। सामने की ओर हमें झील दिखाई दे रही थी। उसके उस ओर, फ्रान्स की दिशा में, पहाड़ खडे थे। पहाड़ की चोटियों पर बर्फ़ जमी थी। झील धूसर, लोहित और नीलवर्ण दीख रही थी।

हमारे घर के सामने से एक रास्ता ऊपर की ओर पहाड़ पर जाता था। पाला पड़ने से सड़क लोहे-सी सख्त हो गयी थी। सड़क, जगल के बीच से होती हुई, धीरे-धीरे पहाड़ पर चली गई थी। वहाँ से चक्कर काटती हुई वह उस इलाके मे प्रवेश करती थी, जहाँ चरागाह थे। जगल की सीमा से सटे हुए उन चरागाहो मे, किसानों के खलिहान तथा छोटे छोटे घर थे, जहाँ से घाटी के उस पार का दृश्य दिखाई देता था। घाटी बडी गहरी थी। उससे होकर एक नदी बहती थी, जो झील में जाकर मिल जाती थी। घाटी के ऊपर से जब हवा चलती, तो चट्टानों के बीच से बहती हुई नदी की हरहराहट अच्छी तरह सुनाई देती थी।

कभी-कभी हम सड़क से दूर निकल जाते। चीड़-वन को पार करके हम

किसी पगडण्डी पर चल देते। जंगल की मिट्टी बहुत नरम थी। उस पर चलने में तनिक भी कष्ट नहीं होता था। पाला पड़ने पर भी वह सड़क के समान सख्त नहीं हुई थी। यो तो सडक के सख्त होने का भी हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था; क्योंकि हमारे जूतो के तलों मे कीले ठुकी थीं। जूतों की एड़ियों तथा उनमे लगी कीलों से सड़क की बर्फीली भूमि कट जाती और हम आसानी से आगे बढ जाते। कील लगे जूते पहनकर सड़क पर चलना हमे बड़ा भला लगता। हम उत्साहित-से हो उठते। किन्तु इन सबसे अधिक आकर्षक और आह्लादक था, वन में विचरण करना।

हमारे घर के सामने का पहाड़ बिलकुल ढलुवॉ था। वह झील के किनारे-किनारे ढालू होता हुआ एक छोटे से मैदान तक चला गया था। हम लोग धूप का आनद लेते हुए घर के ओसारे मे बैठ जाते और पर्वत के ढाल पर उतरती हुई चक्करदार सडक के घुमावो को देखा करते। निचले पहाड़ के एक ओर अंगूर के छतदार खेत थे। ठण्ड के कारण अंगूर की सभी बेले मर गई थीं। प थर की दीवारें बनाकर उन खेतों को एक-दूसरे से अलग कर दिया गया था। खेतों के नीचे, झील के तट पर स्थित, सकरे मैदान मे बसे हुए शहर के घर भी हम ओसारे मे बैठे बैठे देखा करते। झील पर एक छोटा सा द्वीप भी था। द्वीप पर दो पेड़ थे, जो ऐसे दिखाई देते, मानो मछली मारनेवाली नाव के दो पाल हो। झील के दूसरे तट पर स्थित पहाड़ बिलकुल सीधे और काफ़ी ऊँचे थे। उनके नुकीले शिखर मानो आकाश को छूने का प्रयास करते थे। जहाँ झील खतम होती थी, वहीं से रोन की घाटी में स्थित मैदान आरम्भ होता था। मैदान चौरस था और दो पर्वत शृंखलाओं के मध्य फैला हुआ था। घाटी की ऊपरी तरफ एक और पहाड़ था। वह पहाड घाटी के बीचों-बीच दीवार की तरह खड़ा था और उसे दो भागो मे विभक्त करता था। पहाड़ का नाम था डैण्ट-ड्यू-मीडी। बड़ा ऊँचा पहाड़ था वह। उस पर सदा बर्फ़ जमी रहती थी। सारी घाटी उसकी विशालता के नीचे दबी-सी प्रतीत होती थी, किन्तु वह हमसे इतनी दूर था कि हमे उसका आभास भी नहीं होता था।

जब धूप तेज़ होती, तब हम अपना दोपहर का खाना ओसारे मे ही खाते। अन्यथा, ऊपरी मंजिल के छोटे–से कमरे में हमारा भोजन होता। कमरा लकड़ी की सपाट दीवारों का बना था। उसके एक कोने मे एक बड़ी-सी अँगीठी थी। हम शहर से बहुत-सी पुस्तके तथा पत्रिकाएँ खरीदकर ले आते थे। 'होयले' पत्र की प्रति भी हम ख़रीद लेते और उसके सहारे दो

व्यक्तियों द्वारा खेले जानेवाले ताश के खेलों का अभ्यास किया करते। अँगीठीवाला वह छोटा कमरा ही वास्तव मे, हमारे रहने का कमरा था। उसमें दो आरामकुर्सियाँ तथा एक मेज़ रखी थी। मेज पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ रखने के काम आया करती थी। भोजन की मेज साफ हो जाने के बाद हम उसी पर ताश खेलते। गटिंगेन-परिवार नीचे ही रहता था। पति पत्नी दोनो बड़े सुख से रह रहे थे। कभी-कभी सन्ध्या समय हम उनकी बातचीत सुना करते। गटिंगेन किसी समय एक होटल में बड़े खानसामा का काम करता था। श्रीमती गटिंगेन उसी होटल में नौकरानी थी। अपनी नौकरी के दिनो मे ही कुछ पैसा बचाकर उन्होने यह घर खरीद लिया था। उनका एक लड़का भी था, जो इस समय बड़े खानसामा का काम सीख रहा था। इस समय वह ज्यूरिच के एक होटल मे था। घर की निचली मंजिल पर एक बैठक थी, जहाँ वे शराब तथा बीअर बेचते थे। किसी-किसी दिन शाम मे हम लोग बाहर, सड़क पर, गाड़ियो के रुकने की आवाज सुनते। गाड़ियों से उतरकर लोग सीढ़ियाँ चढते हुए सुनाई देते। वे शराब पीने के लिए उस बैठक मे आते थे।

हमारे कमरे के सामने की दालान मे जलावन रखने की पेटी थी। मै उसमें से लकड़ियाँ निकाल-निकालकर कमरे में जलनेवाली आग को बुझने नहीं देता था। उस कमरे मे हम ज्यादा देर तक नही ठहरते थे और शीघ्र ही अपने विशाल शयन-कक्ष मे चले जाते थे। उस अंधेरे कमरे में अपने दिन के कपड़े उतारकर, मै खिड़कियाँ खोल देता, कुछ समय तक खिड़की के निकट खड़ा अंधेरी रात को देखता रहता तथा आकाश मे छिटके तारा और नीचे के चीड़-वृक्षों पर नज़रें दौड़ाता। जब ठंड लगने लगती, तो दौड़कर बिस्तर मे घुस जाता। खिड़की के बाहर फैली हुई रात को जब स्नेह से स्पर्श करती ठंडी हवा बहने लगती, तो बिस्तर पर लेटे रहने मे हमे बड़ा आनंद आता। हम बड़ी गहरी नींद सोते थे। यदि रात मे मेरी नींद खुल जाती, तो उसका केवल एक ही कारण होता। मुझे ठंड लगती और मै जाग पड़ता। परों-जैसे हलके लिहाफ को मैं अपने ऊपर ओढ़ लेता। ऐसा करते समय मैं काफ़ी सावधानी बरतता था ताकि कैथरीन की नींद न खुलने पाये। पतले और हल्के लिहाफो की उष्णता का स्पर्श पा मैं शीघ्र ही फिर सो जाता। ऐसा प्रतीत होता था, मानो युद्ध वहाँ से काफी दूर हो—वहाँ साया भी न पड़ा हो युद्ध का! किन्तु समाचारपत्रों से यह स्पष्ट था कि लड़ाई अभी चल रही थी। पर्वतीय क्षेत्र में अभीतक बर्फ़ गिरना आरम्भ नहीं हुआ था, अतः लड़ाई जारी थी।

कभी कभी पहाड़ से नीचे उतरकर हम लोग मॉन्ट्रयूज चले जाते। वहाँ से एक पगडण्डी भी नीचे जाती थी, किन्तु वह बिलकुल ढाल थी। अतः हम बडी सडक का ही उपयोग करते। चौड़ी सख्त सड़क पर चलते हुए पहले हम खेतों को पार करते। फिर निचली सतह पर लगाये गये अंगूर के बगीचों की पत्थर की बनी हुई दीवारों के बीच आगे बढते और फिर ढाल पर उतरते हुए गॉव के छोटे छोटे घरो के बीच से अपना रास्ता तय करते। रास्ते में तीन गॉव पड़ते थे—चरनेक्स, फॉण्टेनिवान्ट तथा एक और गॉव, जिसका नाम मुझे याद नहीं। उन ग्रामो को पार करके हम पहाड की उस दिशा मे पहुँच जाते थे, जहॉ अंगूर के छतदार खेत थे। पहाड के अगले हिस्से से बाहर निकली हुई एक चट्टान पर पत्थर से बना हुआ एक चौकोर मकान था। खेतों मे अगूर की बेलें लकडियों के सहारे खडी कर दी गई थी। वे बिलकुल सूख चुकी थी और उनका रंग भूरा पड़ गया था। खेता से आगे, नीचे, लोहित मटमैले रग के समान समतल झील फैली हुई थी। चट्टान पर बसे हुए मकान के बाद, सडक काफी दूर तक सीधी चली गई थी। उसके बाद दाहिनी ओर मुड़कर वह एक ढलान के साथ मॉण्ट्रयूज पहुँच जाती थी। सड़क ककड़ो से पाट दी गयी थी।

मॉण्ट्रयूज में हमारा किसी से परिचय नहीं था। हम झील के तट पर घूमते रहते। वहाँ पर हमे हसो, समुद्री पक्षियों तथा लम्बी फटी पूँछवाली एक अन्य समुद्री चिड़िया के झुण्ड-के-झुण्ड दिखायी दे जाते। जब हम उनके पास से निकलते, तो वे सब-के-सब तेजी से उड़ जाते और आकाश मे उड़ते हुए जब वे झील के जल की ओर देखते, तो बड़े जोर से चिल्लाते। झील के तट की ओर छोटी-छोटी, काले रग की पनडुब्बी चिड़ियो के झुण्ड थे। जब वे पानी पर तैरतीं, तो उनके पीछे झील की सतह पर एक लम्बी रेखा-सी खिंच जाती। नगर में पहुँचकर हम वहाँ की मुख्य सड़क पर घूमा करते। बीच-बीच मे दोनो ओर स्थित दूकानो मे भी झॉक लेते। सड़क पर बहुत-से होटल थे। परन्तु सरदी का मौसम होने से वे बद थे। हॉ, दूकाने प्रायः सभी खुली थी। हमे देखकर वहॉ के लोगो को बड़ी प्रसन्नता होती। वहॉ केश सॅवारने की भी एक बडी सुन्दर दूकान थी। कैथरीन अपने केश ठीक करवाने के लिए वहाँ जाया करती। दूकान की मालकिन बड़े हँसमुख स्वभाव की औरत थी और वही एक ऐसी औरत थी, जिसे हम मॉण्ट्रयूज मे पहचानते थे। कैथरीन जब वहा अपने केश ठीक करवाती, तब मै एक शराबघर मे पहुँच जाता। वहा बैठकर मै काले रग की म्यूनिक शराब

पिया करता और समाचारपत्र पढ़ता। समाचारपत्रों में "कोरिएर डेला सॅरा" तथा पेरिस से आनेवाले अंग्रेजी और अमरीकी पत्र मुझे प्रिय थे। पत्रों मे इन दिनों विज्ञापन बिलकुल बन्द कर दिये गये थे। सम्भवतः इसलिए कि विज्ञापन के नाम पर किसी सांकेतिक भाषा मे कोई शत्रु से सम्बन्ध स्थापित न कर सके। समाचार पढने में मुझे कोई आनन्द नहीं आता था। सभी ओर से बुरे समाचार ही पढने को मिलते थे। एक दिन मै वहाँ एक कोने मे बैठा था। मेरे सामने काले रंग की बीअर से भरा हुआ एक बड़ा बर्तन रखा था। मैने चमकीले कागज मे बँधे हुए बिस्कुट निकाले। शराब के साथ साथ मैं उन छोटे छोटे, नमकीन, गोल और खस्ता बिस्कुटों का स्वाद लेने लगा। बिस्कुटों के खारेपन के कारण शराब के स्वाद मे एक नई लज्जत आ गई। शराब पीते हुए मै युद्ध के समाचारो पर नजरे दौड़ाने लगा। मैने सोचा था कि केश सॅवारने की दूकान से कैथरीन शीघ्र ही लोट आयेगी, किन्तु वैसा हुआ नहीं। समाचारपत्रों को कटहरे पर रखकर मैने शराब के पैसे चुकाए और कैथरीन को देखने के लिए सड़क पर निकल आया। दिन बड़ा ठंडा था। चारो ओर धुंध और सरदी छायी थी। घरो की दीवारो में लगे पत्थर तक सर्द हो गये थे। कैथरीन उस समय भी केश सॅवारने की दूकान मे बैठी थी। दूकान की मालकिन उसके केश घुंघराले बनाने मे व्यस्त थी। मै बैठा यह सब देखता रहा। कैथरीन को इस प्रकार देखकर मैं बिलकुल मदहोश-सा हो गया। वह मुझे देखकर मुस्कराई और बाते करने लगी। उत्तेजना के कारण मेरी आवाज़ कुछ भारी हो गयी। बीच-बीच में बाल सॅवारने की चिमटियों का मृदुल शब्द मेरे कानों में सुख बरसाता रहा। मै उस सुखद एव गर्म छत के नीचे बैठा-बैठा दूकान में लगे हुए तीन दर्पणों में कैथरीन के प्रतिबिम्बों को मुग्ध सा निहारता रहा। दूकान की मालकिन ने अन्ततः कैथरीन के बाल सॅवार दिए। कैथरीन ने दर्पण मे देखा और पिनो को ठीक करते हुए अपनी इच्छानुसार उसने उनमे कुछ फेर-फार किया। फिर वह उठ खड़ी हुई—"मुझे दुःख है कि काफ़ी समय लग गया इसमे।"

"श्रीमान् को भी इसमे बड़ा आनन्द आ रहा था। है न श्रीमान्?" दूकान की मालकिन मुस्कराते हुए बोली।

"हाँ, हाँ।" मैने उत्तर दिया।

दूकान से निकलकर हम बाहर सड़क पर आ गये। हवा चल रही थी। बाहर काफ़ी ठंड थी। "ओह, प्रिये, मै तुम्हे कितना प्यार करता हूँ।" मैंने कहा।

"क्या हमारे दिन बड़े सुख से नहीं बीत रहे हैं, प्रियतम?" कैथरीन बोली—"सुनो, हम कहीं चलकर चाय के बदले बीअर पियें। बीअर पीने से नन्हीं कैथरीन (गर्भस्थ बच्चे) को भी लाभ होगा। उससे वह अधिक बढ़ेगी नहीं।"

"नन्हीं कैथरीन?" मैंने पूछा—"वह शैतान!"

"ऐसा मत कहो। बड़ी भली है बेचारी।" कैथरीन ने उत्तर दिया—"बहुत ही कम तकलीफ देती है मुझे। डॉक्टर का कहना है कि बीअर पीने से मुझे तो फायदा होगा ही और शिशु भी ज्यादा नहीं बढ़ेगा।"

"यदि लड़का हुआ और अधिक न बढ़ा, तो हो सकता है, कि उसे कहीं जॉकी का काम करना पड़े।"

"मैं सोचती हूं कि यदि सचमुच बच्चा पैदा हुआ, तो हमें अवश्य विवाह कर लेना चाहिए।" कैथरीन ने कहा। बातें करते-करते हम बीअर की दूकान में आ गये और कोने की एक मेज पर बैठ गए। बाहर अंधेरा घिरने लगा था। यद्यपि साँझ अभी दूर थी, फिर भी दिन-भर अंधेरा-सा बना रहा था और अब समय से पहले ही सान्ध्य-वेला निकट आती जा रही थी।

"चलो, हम अभी विवाह किये लेते हैं।" मैं बोला।

"नहीं।" कैथरीन ने कहा—"इस समय शादी करना तो बड़ा लज्जास्पद प्रतीत होगा। मुझे देखकर कोई भी कह सकता है कि मैं गर्भवती हूँ। ऐसी स्थिति में मैं न तो किसी के सामने ही निकलना चाहती हूँ और न शादी करना!"

"यदि हम पहले ही विवाह कर लेते, तो कितना अच्छा होता!"

"हाँ, किन्तु उतना समय ही कहाँ मिला हमें, प्रियतम?"

"क्या बताऊँ मैं?"

"मैं तो एक बात जानती हूँ। इस गर्भावस्था में, जब कि मुझमें और एक विवाहित स्त्री में कोई अन्तर नहीं है, मैं शादी नहीं कर सकती।"

"किन्तु तुम विवाहित तो नहीं हो!"

"नहीं-नहीं; मैं विवाहित ही हूँ, प्रियतम! अभी-अभी उस केश सँवारने वाली स्त्री ने मुझसे पूछा था कि क्या यह हमारा पहला ही बच्चा है। और जवाब में मेरे मुँह से आप-ही-आप निकल पड़ा—कि मेरे दो लड़के और दो लड़कियाँ और भी हैं।"

"हमारी शादी होगी कब आखिर?"

"बच्चा होने के बाद किसी भी समय। मै चाहती हूँ कि हमारा विवाह बड़ी धूमधाम से हो—हर कोई हम देखकर कहे कि वाह, कितनी सुदर जोड़ी है।"

"और, तुम्हें किसी भी बात की चिन्ता नहीं है?"

"कैसी चिन्ता? चिता करे ही क्यो हम, प्रियतम? आज तक के जीवन में मेरे साथ केवल एक ही बार ऐसा मौका आया है, जब मुझे बड़ा बुरा लगा था। तुम्हें याद है, हम दोना मिलान के होटल में ठहरे थे—उस रात मुझे ऐसा प्रतीत हुआ था कि मुझमें और एक वेश्या मे कोई अन्तर नहीं है। कुछ देर के लिए—सिर्फ सात मिनट के लिए—मेरे मन मे यह भावना उठी थी। पर उसमे मेरा कोई दोष भी तो नहीं था। कमरे की सजावट ही उस ढग की थी। क्या तुम्हारी नजर में मै एक सुयोग्य पत्नी नहीं हूँ?"

"तुम बड़ी सुन्दर पत्नी हो।"

"फिर इन सब लोकाचारो पर ध्यान मत दो, प्राण! विवाह के अर्थ में विवाह की चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं। बच्चा होने पर शीघ्र ही हमारा विधिवत् विवाह भी हो जाएगा।"

"अच्छी बात है।"

"एक गिलास बीअर और पी लूँ मै? क्या राय है तुम्हारी? डाक्टर ने कहा था कि मेरे कूल्हे बहुत कम चौड़े हैं, अत. पेट के भीतर बच्चे का अधिक नहीं बढ़ना ही अच्छा होगा।"

"और क्या कहा था उसने?" मै चिन्तित हो उठा।

"कुछ नहीं। मेरा रक्त-चाप बड़ा सुन्दर है, प्रिय! डाक्टर ने इसकी बड़ी प्रशसा की थी।"

"तुम्हारे कूल्हो के कम चौड़े होने के बारे में उसने और क्या कहा था?"

"अरे, कुछ भी तो नहीं। कोई खास बात नहीं कही उसने। हाँ, यह जरूर कहा था कि मुझे बर्फ पर नहीं फिसलना चाहिए।"

"बिलकुल ठीक कहा उसने।"

"उसने मुझे बताया कि यदि मैं पहले कभी बर्फ पर नहीं फिसली हूँ, तो अब, ऐसी अवस्था में, यह खेल खेलना मेरे लिए ठीक नहीं है। हाँ, उसने यह भी कहा था कि यदि मुझे गिरने-पड़ने की कोई आशका न हो, तो म फिसल सकती हूँ।"

"बड़ा मज़ाकिया डाक्टर मालूम होता है।"

"सचमुच, बड़ा अच्छा डाक्टर है बेचारा! बच्चा पैदा होने के समय हम उसीको बुलाएँगे।"

"तुमने उससे यह नहीं पूछा कि तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए या नहीं?"

"नहीं! मैंने तो उल्टे यह कहा कि मेरी शादी चार वर्ष पहले हो चुकी है। सुनो प्रिय, तुमसे शादी होने पर मैं भी अमरीकी नागरिक बन जाऊँगी और अमरीकी विधान के अंतर्गत चाहे किसी भी समय विवाह हो—शादी, बच्चा होने के पहले हुई हो या बाद में—बच्चा जायज माना जायेगा।"

"यह विधान तुमने कहाँ पढ़ा?"

"वाचनालय में। न्यूयॉर्क से प्रकाशित वार्षिक विश्व-पंचाग से मालूम हुआ है मुझे।"

"बड़ी विचित्र लड़की हो तुम।"

"अमरीकी नागरिक बनकर मुझे वस्तुतः बड़ी प्रसन्नता होगी। हम लोग अमेरिका जाएँगे। है न? मैं नियागरा-जल-प्रपात देखने की बड़ी इच्छुक हूँ, प्रियतम!"

"तुम सचमुच बड़ी भली लड़की हो।"

"मैं अमेरिका में और भी कुछ देखना चाहती हूँ, किन्तु मुझे अभी याद नहीं आ रहा है कि वह क्या है।"

"पशुओं को रखने के लम्बे-चौड़े बाड़े तो नहीं?"

"नहीं, कुछ ओर—मैं बिलकुल भूल गई हूँ अभी।"

"वूलवर्थ भवन?"

"ना।"

"ग्रैण्ड कैनियन (महान जल-घाटी)?"

"नहीं; किन्तु मैं उसे भी देखना चाहूँगी।"

"तब आखिर है क्या वह?"

"हाँ याद आया मुझे—'गोल्डन गेट'—स्वर्ण-द्वार! यही देखना चाहती हूँ मैं। कहाँ है यह?"

"सॅनफ्रान्सिस्को में।"

"तब हम वहीं चलेंगे। मैं सॅनफ्रान्सिस्को देखने के लिए बड़ी उत्सुक हूँ।"

"अच्छी बात है। हम लोग वहाँ चलेंगे।"

"अब हमें पहाड़ के ऊपर चल देना चाहिए। क्यों, है न? बस नहीं मिल सकती क्या?"

"पाँच बजकर कुछ मिनट पर एक रेलगाड़ी छूटती है यहाँ से।"

"तब उसी को पकड़ें।"

"अच्छी बात है। मैं पहले एक गिलास शराब और पी लूँ।"

जब हम बाहर निकलकर सड़क पर आये और कुछ दूर चलकर स्टेशन की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे, तो बड़े ज़ोर की ठंड पड़ रही थी। रोन-घाटी की ओर से ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। दूकानों की खिड़कियों में बत्तियाँ चमक रही थीं। हम ऊपर तक सीधी चली गई पत्थर की सीढ़िया पार करते हुए ऊँची सड़क पर पहुँचे। वहाँ से दूसरी सीढ़ियों पर चढ़कर स्टेशन में घुसे। स्टेशन पर बिजली से चलने वाली गाड़ी तैयार खड़ी थी। उसकी सब बत्तियाँ जल रही थीं। स्टेशन पर गाड़ी छूटने का समय बताने वाला एक समय-सूचक यंत्र (इंडी-केटर या डायल) लगा था। उसके काँटों के निर्देशानुसार गाड़ी पाँच बजकर दस मिनट पर छूटनेवाली थी। मैंने स्टेशन की घड़ी की ओर देखा। गाड़ी चलने में अभी पाँच मिनट शेष थे। ज्योंही हम दोनों डिब्बे में प्रवेश करने लगे, त्योंही मैंने गाडी के ड्राइवर और कंडक्टर को स्टेशन में बनी शराब की दूकान से बाहर निकलते हुए देखा। हम डिब्बे में बैठ गए। खिड़की हमने खोल दी। बिजली के जरिये डिब्बे को गर्म रखा गया था; पर साथ ही कुछ घुटन भी लगती थी। खिड़की खोल देने से डिब्बे में ताज़ी-ठंडी हवा आने लगी।

"थक तो नहीं गयी, केट?" मैंने पूछा।

"नहीं तो, बड़ा अच्छा लग रहा है मुझे।"

"हमें गाडी में देर तक थोड़े ही बैठना है।"

"गाड़ी में बैठना पसन्द है मुझे।" वह बोली—"मेरे विषय में कोई चिन्ता मत करो, प्रियतम! मैं बिलकुल भली चंगी हूँ।"

क्रिसमस के तीन दिन पहले तक बर्फ गिरना आरम्भ नहीं हुआ था। एक दिन प्रातःकाल उठकर अचानक हमने देखा कि हिमपात हो रहा था। हमारे कमरे की अँगीठी में ज़ोरों से आग जल रही थी। हम अपने बिस्तर में ही दुबके पड़े रहे और वहीं से बर्फ का गिरना देखने लगे। श्रीमती गटिंगेन ने अँगीठी में कुछ और लकड़ियाँ डाल दीं और प्रातःकालीन नाश्ते की खाली प्लेटें उठाकर ले गईं। बर्फ़ का वह तूफान बड़ा भयानक था। श्रीमती गटींगेन ने बताया कि तूफान आधी रात से आरम्भ हुआ था। खिड़की पर पहुँच कर मैंने बाहर झाँका; किन्तु सड़क से आगे मुझे कुछ नहीं दिखाई दिया। हवा बड़े भीषण रव के साथ बह रही थी और साथ ही बर्फ़ भी जोरों से गिर रहा था।

म पुनः आकर बिस्तर पर लेट गया। लेटे-लेटे हम लोग बातें करने लगे।

"मेरी बडी इच्छा हो रही है कि मैं बर्फ पर फिसलूँ।" कैथरीन बोली—

"यह बिलकुल बेकार बात है कि मै बर्फ पर नहीं फिसल सकती।"

"हम बर्फ पर चलने वाली एक छोटी गाड़ी ठीक किये लेते हैं और तब सड़क के ढाल पर फिसलने चलेगे। तुम्हारे लिए वह मोटर की सवारी से कम आरामदेह नहीं रहेगी।"

"कोई कष्ट तो नहीं होगा।"

"तुम स्वय ही देख लेना।"

"आशा है, अधिक तकलीफ नहीं होगी।"

"थोड़ी देर बाद हम बर्फ पर घूमने चलेंगे।"

"पर खाना खाने से पहले—" कैथरीन बोली—"जिससे लौटकर आने पर हमें जोरों की भूख लग जाये।"

"मुझे तो हमेशा ही भूख लगी रहती है।"

"यही हाल तो मेरा भी है।"

कुछ देर बाद हम बाहर आ गये। पर बर्फ़ एक स्थान पर न जमकर इधर-उधर बह रहा था, अतः हम उसपर अधिक दूर नहीं जा सके। हम लोगो ने स्टेशन की दिशा मे फिसलना प्रारम्भ किया। किन्तु जब हम नीचे पहुँचे, तो स्टेशन से काफी दूर आ गये थे। बर्फ हवा के साथ-साथ उड़ रहा था, अतः बड़ी मुश्किल से हमें कुछ दिखाई देता था। हम स्टेशन के पास की एक छोटी-सी सराय मे घुस गये। एक झाड़न द्वारा हमने एक–दूसरे के शरीर पर से बर्फ साफ किया और एक बेंच पर बैठकर वरमाउथ (शराब) पीने लगे।

"तूफान बहुत भारी है।" नौकरानी ने कहा।

"हाँ।"

"इस वर्ष काफी देर से बर्फ़ गिरना शुरू हुआ है।"

"हाँ।"

"क्या मैं कुछ चॉकलेट खा सकती हूँ?" कैथरीन ने पूछा—"या हमारे खाना खाने का समय हो गया है? क्या बताऊँ, मुझे हमेशा भूख सताया करती है।"

"तो खा लो न एकाध चॉकलेट—" मैं बोला।

"मैं तो फ़िलबर्ट (जैतून की जाति के एक पेड़ का सुपारी-जैसा फल) मिली हुई चॉकलेट लूँगी।" कथरीन ने कहा।

"बड़ी स्वादिष्ट होती है।" सराय की नौकरानी बोली—"मैं स्वयं भी उसे बहुत पसन्द करती हूँ।"

"मेरे लिए एक गिलास बरमाउथ और लाओ।" मैंने कहा।

वापस आने के लिए हम सराय से बाहर निकले। सड़क पर चढ़ते हुए हमने देखा कि हमारे नीचे उतरते समय जो निशान बने थे, वे सब अब बर्फ से ढँक गए थे। सड़क पर जहाँ-जहाँ छिद्र थे, उन स्थानों पर, अब उनके कुछ धुँधले-से चिह्न ही बच थे। हमारे चेहरों पर बर्फ की थपेडे पड़ रही थी, अतः हम बड़ी कठिनाई स कुछ देख सकते थे। घर मे पहुँचकर हमने अपने ऊपर पड़ा हुआ बर्फ़ साफ़ किया और भोजन करने बैठे। गटिंगेन ने भोजन परोसना शुरू किया।

"कल यहाँ बर्फ पर फिसलने का खेल होगा।" उसने कहा—"आप खेलते हैं या नहीं, हैनरी साहब?"

"नहीं, पर मैं उसे सीखना अवश्य चाहता हूँ।"

"बड़ी आसानी से सीख जायेंगे आप। क्रिसमस मनाने के लिए मेरा लड़का यहाँ आने वाला है। वह आपको सिखा देगा।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है। कब आ रहा है वह?"

"कल रात को।"

खाना खाने के बाद, हम अपने छोटे कमरे मे अँगीठी के पास बैठकर, खिड़की से, बर्फ का गिरना देखने लगे। एकाएक कैथरीन पूछ बैठी—"क्या कभी तुम्हारी ऐसी इच्छा नहीं होती प्रियतम, कि तुम अकेले कहीं सैर करने जाओ, लोगो से मिलो और उनके साथ बर्फ पर फिसलो?"

"नहीं तो। ऐसी इच्छा भला करूँगा ही क्यों मैं?"

"मैं सोचती हू, कभी-कभी तो तुम्हारे मन मे मेरे सिवा अन्य व्यक्तियों से मिलने की इच्छा होती ही होगी।"

"तुम्हारे मन मे ऐसी इच्छा उठती है क्या?"

"नहीं।"

"मैं भी किसीसे मिलना नहीं चाहता।"

"जानती हूँ मै। किन्तु मुझमे और तुममे अन्तर है। मेरे पेट में बच्चा है। मैं गर्भवती हूँ, और इस विचार के मन मे उठते ही, कोई काम किए बिना ही मैं सन्तुष्ट हो जाती हूँ। मुझे मालूम है कि आजकल मै बिलकुल पागल-सी हो गई हूँ। बहुत बातें करने लगी हूँ मै। इसीलिए तो सोचती हूँ कि तुम मुझसे कहीं दूर चले जाओ, जिससे मेरी बातें सुन-सुनकर ऊबने की नौबत न आये तुम्हारे सामने।"

"क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें छोड़कर कहीं चला जाऊँ ?"

"नहीं, मै तो चाहती हूँ कि तुम सदा मेरे ही पास बने रहो।"

"वही तो कर रहा हूँ मै, पगली!"

"जरा, मेरे पास खिसक आओ।" वह बोली—"मैं तुम्हारे सिर पर उभरे हुए गूमड़े को देखना चाहती हूँ। ओह, यह तो बडा-सा गूमडा है।" उसके ऊपर उगली फिराते हुए उसने कहा—"सुनो, दाढी रखना पसन्द है तुम्हे ?"

"क्यो ? क्या तुम चाहती हो कि मै दाढी रखूँ ?"

"यदि तुम रखो, तो बडा मजा आये। मै देखना चाहती हूँ कि तुम दाढी में कैसे लगते हो ?"

"अच्छी बात है। मै दाढी बढा लूँगा। अभी, इसी क्षण से, दाढी बढाना शुरू कर देता हूँ मै। बडा अच्छा सुझाव है तुम्हारा। दाढ़ी रखने मे मुझे कम-से-कम कुछ काम तो करने को मिल जायगा।"

"क्यो ? क्या कुछ काम न होने से तुम्हें चिन्ता हो रही है ?"

"नहीं नहीं। मुझे स्वय ही यह सब बड़ा पसन्द है। बड़े सुख से तो बीत रहे हैं मेरे दिन। तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"मेरे दिन भी बड़ा सुन्दरता से कट रहे है। भय केवल इतना ही है कि अब मै बहुत बड़ी हो गई हूँ—अतः डरती हूँ, तुम्हें भार न लगने लगूँ।"

"ओह, तुम नहीं जानती केट, कि मैं तुम्हारे पीछे कितना पागल हूँ—कितना प्यार करता हूँ तुम्हे मै!"

"इस हालत मे भी!"

"तुम जैसी भी हो, मुझे प्रिय हो। कितने सुख में बीत रहे हैं हमारे दिन! क्यों, क्या हमारा जीवन सुखी नहीं है ?"

"क्यों नही ? बहुत सुखी है। किन्तु मैं देखती हूँ कि कभी-कभी तुम बहुत परेशान हो उठते हो!"

"नहीं तो, ऐसी कोई बात नहीं है। कभी-कभी मुझे युद्ध के मोर्चे की याद आ जाती है और मैं अपनी जान-पहचान के व्यक्तियों के बारे मे सोचने लगता हूँ। पर मै इस विषय मे चिन्ता नही करता। आजकल मै किसी भी चीज़ को लेकर अधिक नहीं सोचता।"

"तुम किसके विषय में सोचा करते हो ? कौन है वह ?"

"उन अनेक व्यक्तियों के विषय मे, जिन्हें मैं जानता था—रिनाल्डी, पादरी और अन्य बहुत-से परिचित व्यक्ति! किन्तु मै उनके बारे मे बहुत तो नहीं

सोचता। युद्ध सम्बन्धी कोई भी बात सोचने की मेरी इच्छा नहीं होती। मैं तो उस भयानक युद्ध से सदा के लिए मुक्त हो चुका हूँ।"

"इस समय तुम क्या सोच रहे थे भला?"

"कुछ तो नहीं।"

"ना, कुछ सोच अवश्य रहे थे तुम। बताओ न, क्या सोच रहे थे?"

"मै सोच रहा था कि क्या रिनाल्डी को सचमुच उपदंश की बीमारी थी?"

"बस, इतना ही?"

"बस, इतना ही!"

"क्या वह सचमुच उपदंश रोग से पीड़ित था?"

"कह नहीं सकता मैं।"

"मुझे बड़ी खुशी है कि तुम उस रोग से बचे हो। क्या तुम्हें कभी कोई ऐसा रोग हुआ है?"

"हाँ, एक बार मुझे सूज़ाक हुआ था।"

"बस-बस, मैं उस विषय मे सुनना नहीं चाहती। क्या तुम्हें उससे बहुत तकलीफ होती थी, प्रियतम?"

"बेहद!"

"काश, मुझे भी सूज़ाक हो जाता!"

"नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं करते।"

"क्यों नहीं? मैं चाहती हूँ कि यदि मुझे भी वही रोग हो जाता, तो मैं बिलकुल तुम जैसी हो जाती। काश, मैं मोर्चे पर तुम्हारी उन सब लड़कियों के साथ होती, जिनसे तुम मिला करते थे! तब मैं तुम्हारे सामने उनका खूब मजाक उड़ाया करती।"

"कल्पना तो बड़ी सुन्दर है, तुम्हारी!"

"नहीं, तुम्हारे सूज़ाक से पीड़ित होने की बात जानते हुए सुन्दर नहीं कही जा सकती।"

"हाँ, यह तो मैं भी समझता हूँ। जरा उधर, बाहर गिरते हुए बर्फ़ की ओर तो देखो—कितना सुन्दर दृश्य है!"

"उसकी अपेक्षा तुम्हारी ओर देखना मुझे अधिक प्रिय है। प्रियतम, तुम अपने सिर के बाल क्यों नहीं बढा लेते?"

"बोलो, कितने लम्बे बाल रखूँ?"

"बस यों ही, थोड़े-से बाल और।"

"मेरे बाल तो अभी भी काफी लम्बे हैं।"

"नहीं, तुम अपने बाल थोड़े और बढा लो। मैं अपने बाल कुछ छोटे करवा लूँगी और तब हम दोनों बिलकुल एक जैसे हो जायेंग। अंतर केवल इतना ही होगा कि हममे से एक होगा सुन्दर गौरवर्ण और दूसरा होगा कुछ सॉवला-सलोना!"

"नहीं, मैं तुम्हें अपने बाल नहीं कटवाने दूँगा।"

"क्यो ? अरे बड़ा मजा आएगा उसमें। मै तो तग आ गई हूँ, इन बालों से। रात को बिस्तर मे सोते समय ये बड़ी तकलीफ देते हैं।"

"मुझे तो बड़े अच्छे लगते हैं ये।"

"यदि ये छाटे करा दिए जायें, तो तुम्हें अच्छे नहीं लगेगे ?"

"शायद लगने लगे। पर मुझे तो वे जैसे हैं, वैसे ही बहुत पसंद हैं।"

"छोटे हो जाने पर वे कदाचित् और सुन्दर दिखेंगे। तब हम दोनो एक-जैसे हो जाएँगे। ओह, प्रियतम, मैं तुम्हें इतना अधिक चाहती हूँ कि मैं पूर्णतः 'तुम' बन जाना चाहती हूँ—बिलकुल एकात्म हो जाना चाहती हूँ।"

"तुम मुझसे अलग हो ही कब! हम दोनों एक ही तो हैं।"

"मुझे मालूम है। रात मे हम दोनों एक हो जाते हैं।"

"हमारी रातें सचमुच बड़ी सुहानी होती हैं।"

"मेरी बड़ी इच्छा है कि हम दानों घुल-मिल कर बिलकुल एक हो जाएँ—एक-रूप बन जाएँ। मैं तुम्हें स्वयं से अलग नहीं देखना चाहती—तुम्हारे मुझसे दूर चले जाने की कल्पना ही मुझे पागल बना देती है। वैसे यदि तुम कहीं जाना चाहते हो, तो जा सकते हो। किन्तु उल्टे पैरों ही वापस आ जाना। जानते हो प्रियतम, क्यों ? जब तुम मेरे पास नहीं होते तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मानो मुझमें प्राण ही नहीं है।"

"मैं तुमसे कभी विलग नहीं हूँगा।" मैंने कहा—"तुम्हारे पास न होने पर मुझमें जैसे कुछ रह ही नहीं जाता—मेरी सॉसों का स्पदन ही समाप्त हो जाता है।"

"मैं चाहती हूँ कि तुममें जीवन हो—ऐसा जीवन जिसमे सुख हो, सौदर्य हो। किन्तु हम दोनों ही मिलकर उसका उपभोग करेंगे। है न ?"

"अच्छा, अब यह बताओ कि मैं अपनी दाढ़ी बढ़ाना बन्द कर दूँ या बढ़ाता जाऊँ उसे ? क्या इच्छा है तुम्हारी ?"

"चलने दो, बढ़ाओ दाढी। सच, मज़ा आ जायेगा। हो सकता है, तुम्हारी लम्बी दाढ़ी नये वर्ष में हमारे लिए एक नवीनता लेकर आये।"

"तुम थोडी देर शतरंज खेलोगी क्या ?"
"मै तो तुमसे खेलना अधिक पसन्द करूगी।"
"चलो, थोडी देर शतरंज ही खेले।"
"और उसके बाद हम दोनो आपस मे खेलेगे।"
"अच्छा।"
"ठीक है तब।"
मैंने शतरंज की तख्ती निकाली और उस पर मोहरे जमा दिए। बाहर अभी तक, बड़े जोरो से बर्फ गिर रहा था।
रात मे एक बार मेरी नींद उचट गयी। मैंने देखा कि कैथरीन भी जाग रही थी। खिडकी मे से चॉद चमक रहा था। उसके प्रकाश मे, खिड़की के चौखटो मे लगी हुई लोहे की छड़ों की परछाई हमारे बिस्तर पर पड़ रही थी।
"अरे, तुम जाग गए, प्रियतम!"
"हॉ, क्यों तुम्हे नींद नही आती?"
"अभी-अभी खुली है मेरी नींद। मै सोच रही थी कि जब हमारा प्रथम मिलन हुआ था, तब मैं किस प्रकार तुम्हारे पीछे करीब-करीब पागल हो गई थी। कुछ याद है तुम्हे?"
"हॉ, कुछ सनक-सी ज़रूर नज़र आती थी तुममे!"
"किन्तु अब मै जरा भी ही वैसी नहीं हूॅ। अब तो मैं पागल नहीं, बड़ी सुन्दर हूॅ। 'सुन्दर' शब्द का उच्चारण तुम बड़ी मिठास से करते हो। बोलो तो एक बार ज़रा—सुन्दर—।"
"सुन्दर!"
"ओह! कितने प्रिय हो तुम! और देखो अब मै तनिक भी पागल नहीं हूॅ। अब तो मैं बस, बहुत, बहुत—बहुत ही सुखी हू।"
"सो भी जाओ अब।" मैंने कहा।
"अच्छी बात है। आओ, हम दोनो एक ही क्षण, ठीक एक ही समय पर, एक साथ सो जाये!"
"बहुत अच्छा!"
किन्तु हम दोनों को एक साथ नींद नहीं आई। मै बड़ी देर तक इधर-उधर की बाते सोचता हुआ जागता रहा। बीच बीच मे मैं अपने पास सोई हुई कैथरीन पर स्नेह-भरी दृष्टि डाल लेता। चन्द्रिका उसके मुखचन्द्र पर प्रतिबिम्बित हो रही थी। मै उसे देखता रहा—देखता रहा और जाने कब मुझे नींद आ गयी।

आधा जनवरी मास बीतने-बीतते मेरी दाढ़ी अच्छी तरह उग आई। शरद ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर थी। दिन में आकाश बिलकुल साफ रहता और वातावरण मे नमी होती। रात को कड़ी ठंड पड़ती। सड़क पुनः चलने योग्य हो गई थी। बर्फ पर फिसलने वाली घास और लकड़ी की गाड़ियो तथा पहाड़ो पर से नीचे लुढ़काए गए लकड़ी के लट्ठो के कारण बर्फ अपनी जगह पर जमकर कठोर और चिकना हो गया था। आसपास के समस्त क्षेत्र मे, यहाँ तक कि मॉण्ट्रयूज़ तक, बर्फ ही-बर्फ बिखरा हुआ था। झील के उस पार के सभी पहाड़ बर्फ के कारण सफेद हो गए थे। रोन घाटी बर्फ से बिलकुल ढँक-सी गयी थी। हम पहाड़ की दूसरी तरफ़ बड़ी दूर तक घूमने जाया करते और बेन्स द-एलाइज पहुँच जाते। कैथरीन कील ठुके भारी जूते पहना करती। उसका शरीर लबादे मे लिपटा होता और उसके हाथ मे लोहे की नोकवाली एक छड़ी होती थी। लबादे मे वह कोई अधिक मोटी नहीं दिखाई देती थी। पर हम तेज चाल से नहीं चलते थे। जब कैथरीन चलते-चलते थक जाती, तो हम रुक जाते और सड़क की बगल में पड़े हुए लकड़ी के लट्ठो पर बैठकर आराम करने लगते।

बेन्स द-एलाइज पर वृक्षों की झुरमुट मे एक सराय थी। वहाँ एक क्षण रुक कर लकड़हारे शराब पिया करते थे। हम उसी सराय के भीतर चले जाते और आग तापते हुए अँगीठी के पास बैठ जाते वही पर कुछ सुगंधित मसाले तथा नीबू मिलाकर हम लाल रंग की गरम शराब पिया करते। वहाँ के लोग उस शराब को 'ग्ल्यूव्हाइन' के नाम से पुकारते थे। शरीर मे उष्णता बनाए रखने तथा आनन्द मनाने की दृष्टि से वह बड़ी अच्छी शराब थी। सराय भीतर से बिलकुल अंधकारमय तथा धुएँ से भरी थी। हम जब सराय से बाहर आते, तो वहाँ की ठण्डी हवा बड़े वेग के साथ हमारे फेफड़ो मे घुस जाती। ज्योंही हम सांस भीतर खींचते, बर्फ जैसी वायु हमारी नाक को चेतना-शून्य कर देती। चलते-चलते हम पीछे मुड़कर सराय की ओर देखते। हमें उसकी खिड़कियों से बाहर आता हुआ प्रकाश दिखाई देता। वहीं बँधे हुए, लकड़हारों के घोड़े अपने शरीर को गरम बनाए रखने के लिए बार बार अपनी टॉगें फटकारते और अपनी गर्दन को झटका देते। उनके थूथनों के बालों पर बर्फ़ जम जाता। जब वे साँस लेते, तो आसपास के बर्फ़ के परों के समान

हलके गाले हवा में उड़ा करते। घर की ओर लौटते समय थोड़ी दूर तक हमारी राह चिकनी और फिसलनदार होती। सराय की घुड़साल से लेकर लकड़ी के लट्ठे लुढ़काये जानेवाली सड़क के मोड़ तक बर्फ का रग नारगी-जैसा दिखाई देता था। उसके बाद हमारा रास्ता जगलों से होकर गुजरता और उसपर स्वच्छ श्वेत बर्फ की तह जमी रहती। साँझ को घर लौटते समय रास्ते में एक-दो बार हमें लोमड़ियाँ भी दिखायी पड़ीं।

बड़ा सुन्दर इलाका था वह—अतः जब भी हम बाहर घूमने निकलते, हमें बड़ा आनन्द आता।

उस दिन भी हम उस पर्वतीय इलाके का चक्कर लगाकर बातें करते हुए वापस आ रहे थे।

"अब तो तुम्हारे चेहरे पर काफी सुंदर दाढ़ी उग आई है।" कैथरीन ने कहा—"बिलकुल ऐसी ही लगती है, जैसे किसी लकड़हारे की दाढी हो। क्या तुमने उस आदमी को देखा था, जिसके कानों में सोने की नन्हीं-नन्हीं बालियाँ थी।"

"हाँ, वह साँभर का शिकारी है।" मै बोला—"साँभर का शिकार करने वाले लोग यहाँ ऐसी ही बालियाँ पहना करते हैं। उनका विश्वास है कि बालियाँ पहनने से वे अधिक स्पष्ट सुन सकते हैं।"

"सच? मै इस पर विश्वास नहीं करती। मेरी समझ से वे उन्हें इसलिए पहनते हैं, जिससे लोगों को दिखा सकें कि वे साँभर मारने वाले शिकारी हैं। क्या यहाँ आसपास किसी इलाके मे साँभर पाये जाते हैं?"

"हाँ, डेण्ट-ड्यू जमान से आगे के इलाके मे।"

"मुझे उस लोमड़ी को देखकर बड़ा मज़ा आया आज।"

"जानती हो? जब लोमड़ी सोती है, तो अपने शरीर में उष्णता बनाए रखने के लिए अपनी पूँछ चारों ओर लपेट लेती है!"

"तब तो उसे बड़ा आनद आता होगा!"

"मेरी सदा यही इच्छा रही है कि मेरे भी एक वैसी ही पूँछ होती! तुम्हीं बताओ, यदि हमारे शरीर पर भी लोमड़ी के समान ही पूँछ हो, तो मज़ा नहीं आयेगा?"

"किन्तु तब, हमें कपड़े पहनने में बड़ी तकलीफ होगी।"

"क्यों, उस अवस्था में, हम अपने लिए खास ढग के कपड़े बनवा लेंगे अथवा किसी ऐसे प्रदेश मे जाकर रहने लगेगे, जहाँ कपड़े पहनना और न पहनना, दोनों बराबर होगा।"

"वास्तव मे, हम ऐसे ही प्रदेश में रह रहे हैं, जहाँ चाहे कोई कुछ भी करे, कोई फर्क नहीं पड़ता। क्या यह मजे की बात नहीं है कि यहाँ हमारी कभी किसी से भेट नहीं होती ? तुम भी तो लोगों से मिलना-जुलना नहीं चाहते, है न प्रियतम ?"

"हाँ, मैं किसी से नहीं मिलना चाहता।"

"यदि हम लोग पल-भर यहाँ बैठ जायें, तो कैसा रहेगा ? मैं कुछ थक-सी गई हूँ।"

हम दोनों लकड़ी के लट्ठो पर एक-दूसरे से सटकर बैठ गये। हमारे सामने का रास्ता जगल को पार करता हुआ ढाल पर उतरता जा रहा था।

"यह नन्हीं बच्ची (गर्भस्थ शिशु) हम दोनो के बीच मे बाधक तो नहीं बनेगी न, प्रियतम ?"

"नहीं, हम उसे ऐसा नहीं करने देंगे।"

"हमारे पास पैसा कितना है, इस समय ?"

"बहुत है ! पिछली बार आई हुई दर्शनी हुंडी को बैंकवालो ने स्वीकार कर लिया है।"

"तुम्हारे परिवारवालो को यह तो पता लग ही गया है कि तुम स्विट्जर-लैण्ड मे हो। क्या वे अब तुम्हें लौटा ले जाने का प्रयत्न नहीं करेंगे ?"

"ऐसा हो सकता है। पर मै उन्हें कुछ उल्टा सीधा लिख दूँगा ?"

"क्या तुमने उन्हें अभी तक कुछ नहीं लिखा ?"

"नहीं ! केवल पैसा भेजने के विपय मे ही लिखा था।"

"भगवान् का लाख-लाख शुक्र, कि मैं तुम्हारे परिवार मे नहीं हूँ।"

"मैं उन्हें तार द्वारा अपने समाचार भेज दूँगा।"

"क्या तुम अपने परिवारवालों की बिलकुल परवाह नहीं करते ?"

"करता था कभी, किन्तु एक बार हम लोगों में इतना झगड़ा हो गया कि परवाह करने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

"मैं तो सोचती हूँ कि मेरी उनसे अच्छी निभेगी। कदाचित्, मै उन्हें बहुत अधिक चाहने लगूँ।"

"छोड़ो, उनके विपय मे हम कोई बात ही न करें, अन्यथा मैं व्यर्थ ही उनके विपय में चिन्ता करने लगूँगा।"

कुछ समय बाद मैंने कहा—"यदि तुमने आराम कर लिया हो, तो अब हम आगे बढ़ें।"

"चलो, मैं अपनी थकान मिटा चुकी हूँ।"

हम सड़क की ढाल पर उतरने लगे। अब तक चारो ओर अंधेरा फैल चुका था। बर्फ़ हमारे जूतों के नीचे दबकर टूटने लगा। आकाश साफ़ था और वातावरण मे ठंड थी।

"मै तो तुम्हारी दाढ़ी से प्रेम करती हूँ।" कैथरीन बोली—"कितनी घनी और भयानक दीखती है यह; पर है कितनी कोमल। और कितना आनंद आता है इसे छूने मे!"

"जब मेरे दाढ़ी नही थी, उस समय से ज्यादा अच्छा लगता हूँ मैं तुम्हें?"

"मुझे तो ऐसा ही लगता है। एक बात बताऊँ, प्रियतम? मैं अपने केश नन्ही कैथरीन के पैदा होने तक नहीं कटवाऊँगी। मैं अब बहुत फूली हुई लगती हूँ न—बिलकुल माँ लगती हूँ न! किन्तु प्रसव के बाद मैं पुनः दुबली हो जाऊँगी और तब मैं बाल कटवा लूगी। उसके बाद मैं तुम्हारे लिए अपने उस रूप मे सर्वथा नवीन और सुंदर युवती बन जाऊँगी–है न? पर केश कटवाने के लिए हम दोनों ही चलेंगे। या मैं अकेली ही चुपचाप खिसक जाऊँगी और लौटकर तुम्हे आश्चर्य मे डाल दूँगी।"

मै मौन सुनता रहा।

"तुम कहीं यह तो नहीं कह दोगे कि मैं ऐसा नहीं कर सकती—बोलो, कहोगे?"

"नहीं। मेरा तो खयाल है कि इसमे और भी मजा आयेगा।"

"ओह, तुम कितने अच्छे हो। और हाँ, तब मैं शायद और भी आकर्षक लगूँगी। मै बड़ी दुबली हो जाऊँगी। तुम मुझे देखकर इतने उत्तेजित हो जाओगे—इतने—कि मुझमे नये सिरे से प्रेम करना प्रारम्भ कर दोगे।"

"तुम्हारा सिर!" मैं बोला—"मै तुमसे आज भी बहुत प्रेम करता हूँ। आखिर तुम चाहती क्या हो? मुझे बरबाद करने की इच्छा है क्या?"

"हाँ, मै तुम्हें बरबाद ही करना चाहती हूँ।"

"तब यही सही।" मैने कहा—"मैं भी यही चाहता हूँ।"

४०.

बड़ा सुखी जीवन था हमारा। जनवरी और फरवरी मास कैसे और कब बीत गए, हमें मालूम भी न पड़ा। सरदी का वह मौसम सचमुच बड़ा सुहावना

था। हम वस्तुतः बडे सुखी थे। बीच-बीच में वहाँ कभी-कभी गर्म हवा चलने लगती और तब कुछ समय के लिए बर्फ पिघलने लगता। हिम के कठोर स्तर मे कुछ कोमलता आती और ऐसा प्रतीत होता, मानो वसंत-वायु बह रही हो। किन्तु कुछ दिनो के बाद ही कडी ठण्ड पड़ने लग जाती और सरदी का मौसम फिर लौट आता। मार्च के महीने मे, पहली बार, सरदी का मौसम समाप्त होने का आभास हुआ। उसी रात वर्षा भी आरम्भ हो गई। प्रातःकाल भी पानी बरसता ही रहा। चारो ओर फैला बर्फ़ कीचड मे बदल गया। पूरा पर्वतीय क्षेत्र उदासीन दिखाई देने लगा। झील तथा रोन की घाटी पर मेघ छाए हुए थे। पर्वत-शिखरों पर जोरो की वर्षा हो रही थी। कैथरीन ने अपने भारी लम्बे जूते पहने। मैंने गटिंगेन के रबर के जूते पहन लिये और एक ही छाते मे अपने सिर छिपाए हम दोनो स्टेशन की ओर चल पडे। कीचड और सड़क पर के बर्फ़ को बहाकर ले जाने वाली वर्षा के पानी मे फिसलते-फिसलाते हम ज्यों-त्यो करके आगे बढ़ते गये—और अन्त मे वरमाउथ (शराब) पीने की इच्छा से हम एक शराबघर में घुस गये। बाहर होनेवाली वर्षा की आवाज हमें भीतर सुनाई दे रही थी।

"तुम्हारी क्या राय है? हमें अब शहर मे चले आना चाहिये?"

"तुम क्या सोचते हो?" कैथरीन ने पूछा।

"यदि सरदी का मौसम खत्म हो गया हो और वर्षा इसी प्रकार होने वाली हो, तो यहाँ रहने मे कोई आनन्द नहीं आयेगा। बच्चा होने मे अभी और कितने दिन शेष हैं?"

"प्रायः एक मास या सम्भवतः कुछ अधिक।"

"तब तक हम नीचे, मॉण्ट्र्यूज मे आकर रह सकते हैं।"

"हम लॉसने ही क्यों न चलें? अस्पताल भी तो वही है।"

"अच्छी बात है। मैंने सोचा कि वह बहुत बड़ा शहर है—शायद वहाँ इतना अच्छा न लगे।"

"हम बड़े शहर मे भी तो इसी प्रकार अकेले रह सकते हैं। फिर लॉसेने शायद शहर भी अच्छा हो।"

"कब चलें तब?"

"इसकी चिन्ता मुझे नहीं। जब तुम चाहो, तभी चल देंगे। यदि तुम्हारी इच्छा यहाँ से जाने की न हो, तो मैं भी नही जाऊँगी।"

"ज़रा पहले दो चार दिन यह तो देखने दो कि मौसम कैसा रहता है!"

और खेतो के बीच आगे बढती हुई हमारी गाड़ी अन्ततः लॉसेने पहुँची। गाडी से उतर कर हम शहर आये और एक होटल मे ठहर गये। स्टेशन से होटल पहुँचने तक पानी लगातार बरसता रहा।

एक लम्बे काल तक गटिंगेन-परिवार के घर में रहने के बाद होटल का वातावरण बड़ा अजीब सा लगा। कोट के कॉलरो पर पीतल की चाबियों का गुच्छा लटकाए हुए दरबान, लिफ्ट, फ़र्श पर फले हुए गलीचे, हाथ-मुँह धोने के सफेद बर्तन और पीतल के चोखटो वाला पलग और एक लम्बा-चौड़ा सुखद शयनकक्ष—सब बड़ा आरामदेह प्रतीत होता था। हमारे कमरे से होटल का बगीचा दिखाई देता था। वर्षा में नहाये बगीचे का सौन्दर्य निखर आया था। उसके सामने ही दीवार थी। दीवार पर लोहे की जाली लगा दी गयी थी। उस ओर एक सड़क थी, जो ढालू होती हुई चली गई थी। सड़क के उस पार ऐसा ही दूसरा होटल था। उसके सामने भी ऐसा ही बगीचा और ऐसी ही दीवार थी।

कैथरीन ने कमरे की सब बत्तियाँ जला दीं और सामान खोलने लगी। मैंने व्हिस्की और सोड़ा लाने का आदेश दिया और बिस्तर पर लेट गया। लेटे लेटे मै स्टेशन पर खरीदे गए समाचारपत्रो को देखने लगा। मार्च १९१८ के दिन थे। फ्रान्स में जर्मन हमला आरम्भ हो चुका था। मैं व्हिस्की और सोड़ा पीते हुए समाचारपत्र पढता रहा। कैथरीन सामान खोलने मे व्यस्त थी। सारी चीज़ें जमाते हुए वह कमरे मे इधर-उधर दौड़-सी रही थी।

"जानते हो प्रियतम, मुझे क्या खरीदना है?" उसने कहा।

"क्या?"

"नन्हीं बच्ची के लिए कपड़े। ऐसे बहुत कम व्यक्ति मिलेगे, जो दिन इतने पास आ जाने पर भी भावी शिशु के कपड़े न बनवाते हो।"

"तुम भी खरीद लो उन्हें।"

"वही तो करने जा रही हूँ मैं कल। कल ही बताऊँगी कि कौन-कौन-सी चीज़ की ज़रूरत है हमें।"

"यह तो तुम्हें मालूम होना चाहिए। तुम तो स्वयं परिचारिका रह चुकी हो।"

"परिचारिका तो रही हूँ; परंतु हमारे अस्पतालों में कदाचित् ही किसी सैनिक ने बच्चा जना होगा।"

"मैंने तो जना है।"

उसने मुझे तकिया फेंककर मारा। विस्की और सोडा फर्श पर बिखर गये।

"मैं अभी तुम्हारे लिए दूसरी व्हिस्की मगवा देती हूँ।" वह बोली—"मुझे बड़ा दुःख है कि वह मेरी वजह से नीचे गिर गयी।"

"कोई बात नहीं। थोड़ी-सी तो बची ही थी। आओ-आओ; ज़रा, मेरे पास बैठ जाओ।"

"नही, अभी नहीं। मुझे इस कमरे को इस तरह सजाना है, जिससे यह कुछ दिखने लगे।"

"कुछ क्या?"

"हमारे अपने घर के समान।"

"तो इसमें क्या है। मित्र राष्ट्रों के झण्डे लटका दो बाहर। दिखने लगेगा अपने घर के समान।"

"ओह, चुप भी रहो।"

"एक बार फिर तो कहो।"

"चुप रहो।"

"इतना डर-डर कर कहती हो तुम—" मैंने कहा—"जैसे तुम्हें डर हो कि कहीं किसीको इससे आघात न पहुँचे।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है।"

"तब आकर मेरे पास बैठ जाओ न।"

"अच्छी बात है।" वह आकर बिस्तर पर बैठ गई—"मुझे मालूम है प्रिय, कि मैं ऐसी स्त्री नहीं हूँ, जो तुम्हारे जीवन को आनन्दमय बना सके—उसमें उल्लास भर सके। मैं तो आटा पीसने की किसी बड़ी चक्की के समान हूँ।"

"नहीं-नहीं, वैसी नहीं हो तुम। तुम सुन्दर और बड़ी प्रिय हो!"

"मुझसे ब्याह करके तुम्हें सचमुच कोई लाभ नहीं हुआ।"

"नहीं-नहीं ऐसा मत समझो। मेरी दृष्टिमें तो तुम सदा सुन्दर हो।"

"किन्तु मैं पुनः दुबली हो जाऊँगी, प्रियतम!"

"अभी भी तुम दुबली ही हो।"

"तुम शराब पी रहे थे न?"

"हाँ, केवल व्हिस्की और सोडा।"

'और भी आ जाती है अभी।" वह बोली—"शराब पीने के बाद यदि हम अपना भोजन भी यहीं मँगवा लें, तो कैसा रहेगा?"

"यह तो बड़ा अच्छा होगा।"

"और उसके बाद हम बाहर नहीं जायेंगे। क्यों ठीक है न? आज रात हम होटल मे ही बैठे रहेंगे।"

"और खेलेंगे।" मैंने कहा।

"मै भी थोड़ी शराब पीऊँगी।" कैथरीन बोली—"नुकसान नहीं करेगी मुझे। हो सकता है, यहाँ हमे अपनी पुरानी प्रिय शराब—सफेद काप्री—मिल जाए।"

"मुझे विश्वास है, यहाँ मिल जायेगी वह। इस श्रेणी के होटल मे ये लोग इटालियन शराब जरूर रखते होंगे।"

खानसामा ने द्वार खटखटाया। वह एक गिलास मे व्हिस्की और बर्फ मिलाकर लाया था। उसके साथ ही, ट्रे मे सोडे की एक छोटी सी बोतल भी रखी थी।

"धन्यवाद।" मैंने कहा—"यहाँ रख दो उसे। क्या तुम दो व्यक्तियों का खाना और बर्फ के साथ सफेद काप्री की दो बोतले यहीं ले आओगे?"

"सबसे पहले क्या खायेंगे आप—सूप?"

"सूप लोगी तुम, कैट?"

"हाँ—हाँ।"

"एक व्यक्ति के लिए सूप ले आओ।"

"धन्यवाद, महोदय!" कहकर वह बाहर गया और उसने दरवाजा बन्द कर दिया। मै पुनः समाचारपत्रों मे युद्ध-सम्बन्धी समाचार पढने लगा। समाचारों पर नज़रें गड़ाये ही मैं धीरे धीरे बर्फ पर सोडा ढालते हुए उसे व्हिस्की मे मिलाने लगा। सोडा मिलाते हुए मैंने निश्चय कर लिया कि इन लोगो से व्हिस्की और बर्फ अलग-अलग लाने के लिए कह देना चाहिए। इस तरह कम-से कम यह तो मालूम हो सकता है कि गिलास मे व्हिस्की कितनी है। साथ ही, सोडा मिलाने पर शराब एकाएक इतनी पतली भी न होगी। भविष्य मे मै व्हिस्की की पूरी बोतल मँगा लिया करूँगा और इन लोगों को केवल बर्फ और सोडा लाने का आदेश दूँगा। यही समझदारी की बात होगी। अच्छी व्हिस्की सचमुच बड़ी आनन्ददायक होती है। उसके पीने के बाद का समय वस्तुतः हमारे जीवन का सुखद क्षण हुआ करता है।

"क्या सोच रहे हो, प्रियतम?"

"व्हिस्की के विषय में सोच रहा हूँ।"

"व्हिस्की के विषय में? क्या सोच रहे हो?"

"यही कि कितनी अच्छी होती है यह।"

कैथरीन ने मुँह बनाकर मुझे चिढ़ाया। "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी—" वह बोली।

हम पूरे तीन सप्ताह होटल में ठहरे और हमारे दिन बडे मजे में कट गये। होटल का भोजन का कमरा प्रायः खाली रहा करता था और हम अपना खाना अधिकतर अपने कमरे मे ही मॅगवा लेते थे। हम दोनों शहर मे घूमा करते, दॉतेदार पहियों वाली रेलगाडी मे बैठकर नीचे आउची जाते और झील के किनारे-किनारे टहलते। मोसम काफी गर्म हो गया था और ऐसा लगता था, मानो बसन्त आ गया हो। वापस, पर्वतो मे लौट जाने की, हमारी बड़ी तीव्र इच्छा होती। किन्तु बसन्त के समान मौसम बहुत थोड़े दिनों तक रहा। शरद् काल के पुनरागमन की सूचना देनेवाली ठड पुनः आरम्भ हो गयी।

निकट भविष्य में ही जन्म लेनेवाले बच्चे के लिए कैथरीन ने शहर से आवश्यक वस्तुएँ खरीद ली। मैं घूँसेबाजी का अभ्यास करने के लिए एक व्यायामशाला मे भरती हो गया—इसी बहाने कुछ कसरत हो जाती! वहॉ मै प्रायः प्रातःकाल ही जाया करता। कैथरीन दिन-चढे तक बिस्तर मे ही पड़ी रहती। 'झूठे' बसन्त के दिन बड़े अच्छे थे। घूँसेबाजी का अभ्यास करने के बाद नहाकर सड़कों पर घूमते हुए, वातावरण मे वसन्त का अनुभव करने में बड़ा आनद आता था! घूमते-घूमते मैं किसी कॉफे में घुस जाता। वहॅ बैठकर आते-जाते लोगों को देखते हुए समाचारपत्र पढता और वरमाउथ (शराब) पीता रहता। फिर मैं अपने होटल लौट आता और कैथरीन के साथ ही खाना खाता। जिस व्यायामशाला मे मैं घूँसेबाजी सीखता था, वहॉ का शिक्षक मूँछे रखता था। वह बडा ठिगना था। जब कोई उसके साथ घूँसेबाजी का अभ्यास करता, तो कुछ ही देर मे उसकी बुरी हालत हो जाती थी। परन्तु व्यायामशाला मे बड़ा मज़ा आता था। जगह काफ़ी प्रकाशयुक्त और हवादार थी। मै वहॉ बड़ी मेहनत से अभ्यास करता—कभी रस्सी पर उछलता, कभी घूँसेबाजी सीखता, खुली हुई खिड़की की राह भीतर आते हुए सूर्य के प्रकाश में फर्श पर लेटकर पेट का व्यायाम करता और यदा कदा उस व्यायाम-शिक्षक से घूँसेबाजी करके उसे घायल कर देता। प्रारम्भ मे लम्बे-संकरे दर्पण के सामने खड़ा होकर मैं नकली घूँसेबाजी का ठीक अभ्यास नहीं कर पाता था। अपने घनी दाढ़ीवाले प्रतिबिम्ब को दर्पण मे घूँसा चलाते देखकर मुझे बड़ा अटपटा-सा लगता। किन्तु अन्ततः मैंने सोचा कि यह भी एक मजेदार बात

थी। यों तो जिस दिन मैंने घूँसेबाजी सीखना आरम्भ किया था, उसी दिन मैं अपनी दाढ़ी मुड़वा देना चाहता था, किन्तु कैथरीन ने ऐसा नहीं करने दिया।

कभी-कभी मैं और कैथरीन घोड़ागाड़ी मे बैठकर आसपास के प्रदेश की सैर करने निकल जाते। जब दिन सुहाने होते, तो सैर मे बड़ा आनन्द आता। हमने दो ऐसे सुन्दर स्थानो का भी पता लगा लिया था, जहाँ हम वन भोजन के लिए जा सकते थे। पर उसके साथ घोड़ागाड़ी मे बैठकर आसपास के वनप्रदेश की सैर करना मुझे बहुत प्रिय था। यदि किसी दिन मौसम अच्छा होता, तो हमारा समय और भी मजे मे कटता। यों भी, रोते झीकते हमारे दिन कभी नही बीते। हम जानते थे कि प्रसव का समय बहुत करीब आ गया है। इससे हमारे मन मे एक ऐसी भावना घर कर गयी थी कि जैसे कोई हमे तेजी से कहीं खींचे ले जा रहा है और व्यर्थ कष्ट करने के लिए हम दोनो के पास एक क्षण भी नही बचा है।

-४१-

एक दिन प्रातःकाल प्रायः तीन बजे अचानक मेरी नींद खुल गयी। मैंने देखा कि कैथरीन बिस्तर मे इधर-उधर लुढक रही थी।

"क्या बात है, केट? कोई तकलीफ है तुम्हें?"

"मुझे दर्द हो रहा है, प्रियतम।"

"नियमित रूप से?"

"नहीं, पूर्णतः नियमित रूप से तो नहीं।"

"यदि दर्द नियमित होता हो तो हम अस्पताल चलेंगे।"

मुझे बहुत नींद आ रही थी, अतः मैं फिर सो गया। पर कुछ समय बाद ही मेरी नींद उचट गई।

"यदि तुम डाक्टर को बुला लो, तो अच्छा रहेगा।" कैथरीन बोली— "कदाचित् यह वही पीड़ा हो।"

मैंने फोन पर डाक्टर को बुलाया। "कितनी-कितनी देर बाद दर्द हो रहा है?"—उसने पूछा।

"दर्द कितनी-कितनी देर बाद होता है, केट?" मैंने उससे पूछा।

"अनुमानतः पन्द्रह-पन्द्रह मिनट मे।" वह बोली।

"तब आप लोगो को तुरत अस्पताल पहुँचना चाहिए।" डाक्टर ने उत्तर दिया—"मैं भी कपड़े पहनकर सीधा वहीं आ रहा हूँ।"

मैंने फिर फोन उठाया और स्टेशन के पास के गैरेज को एक टैक्सी भेजने के लिए कहा। पर बड़ी देर तक कोशिश करने पर भी उधर से कोई उत्तर नहीं मिला। अन्त मे मैने एक दूसरे आदमी को फोन किया और उसने मुझे, तुरत ही एक टैक्सी भेज देने का वायदा किया। कैथरीन कपड़े पहनने लगी। उसने अस्पताल मे उसके काम आनेवाली सभी आवश्यक वस्तुएँ तथा भावी शिशु के काम आनेवाला सामान एक थैले मे सहेजकर रख लिया। बाहर बरामदे में जाकर मैंने लिफ्ट के लिए घंटी बजाई। कोई उत्तर नहीं मिला। सीढ़ियाँ उतरकर मै नीचे पहुँचा। रात के पहरेदार को छोड़कर वहाँ और कोई नहीं था। मैं स्वयं ही लिफ्ट लेकर ऊपर आया। कैथरीन का थैला उठाकर लिफ्ट में रखा और लिफ्ट मे उसके चढने के बाद मैं लिफ्ट नीचे ले आया। पहरेदार ने दरवाजा खोला और हम बाहर आए। सीढ़ियों के पास के चौकोर पत्थरो से बने फर्श को पार करते हुए हम होटल के दरवाजे के बाहर पहुँचे और टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगे। आकाश बिलकुल साफ़ था और तारे चमक रहे थे। कैथरीन बड़ी बेचैन दिखायी दे रही थी।

"मुझे बड़ी खुशी है कि पीड़ा शुरू हो गई है।" वह बोली—"कुछ ही समय बाद यह सब कुछ समाप्त हो जायेगा।"

"तुम एक चतुर और निडर युवती हो, केट!"

"हा, डरती नहीं हूँ मैं। काश, यह अभागी टैक्सी आ जाती!"

तभी हमे सड़क पर मोटर के आने की आवाज सुनाई पड़ी। क्षणभर बाद ही उसकी आगेवाली बत्तियाँ दिखाई दीं और वह हमारे सामने आकर रुक गयी। मैंने कैथरीन को सहारा देकर भीतर बैठाया। ड्राइवर ने थैला सामने की सीट पर रख लिया।

"अस्पताल चलो!" मैंने उसे आदेश दिया।

हम अस्पताल पहुँचे। मैंने कैथरीन का थैला उठाया और हम दोनों भीतर पहुँचे। कमरे मे एक डेस्क के निकट एक स्त्री बैठी थी। उसने एक रजिस्टर में कैथरीन के सम्बन्ध मे सारी बाते लिख ली—नाम, पता, सगे-सम्बन्धी तथा धर्म इत्यादि। धर्म के विषय मे पूछने पर कैथरीन ने कहा कि उसका कोई धर्म नहीं है और उस स्त्री ने धर्म के खाने के खाली स्थान पर एक लकीर खींच दी। अपना नाम, उसने, कैथरीन हैनरी लिखवाया।

"चलिए, आपको आपके कमरे मे पहुँचा दूँ।" उस स्त्री ने कहा और हम लिफ्ट द्वारा ऊपर गए। स्त्री ने लिफ्ट रोका। हम बाहर आये और बरामदा पार करते हुए उसके पीछे-पीछे चले। कैथरीन ने कसकर मेरी बाँह पकड़ ली।

"यह रहा आपका कमरा।" स्त्री बोली—"क्या आप अपने कपड़े उतारकर बिस्तर पर लेट जाने की कृपा करेंगी? आपके पहनने के लिए यह रात का लबादा रखा है।"

"मेरे पास है, रात का लबादा।" कैथरीन ने कहा।

"नहीं, आपके लिए यही अच्छा होगा कि आप अस्पताल का ही लबादा पहनें।" वह स्त्री बोली।

मैं बाहर आकर बरामदे में पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

"अब आप भीतर आ सकते हैं।" स्त्री ने दरवाजे से झाँकते हुए कहा। मैं भीतर पहुँचा। कैथरीन अस्पताल का सादा लबादा पहनकर एक सँकरे-से पलंग पर लेटी थी। ऐसा लगता था, मानो वह लबादा किसी मोटी चादर का बना हो। कैथरीन मेरी ओर देखकर मुस्कराई।

"बड़े जोरों का दर्द हो रहा है, अब।" उसने कहा। वह स्त्री उसकी कलाई पकड़े हुए थी और एक घड़ी लेकर दर्द की अवधि निश्चित कर रही थी।

"इस बार, काफी देर तक दर्द होता रहा।" कैथरीन बोली। मुझे उसके मुखपर पीड़ा के चिह्न स्पष्ट दिखाई दे गये।

"डाक्टर कहाँ है?—" मैंने स्त्री से पूछा।

"नीचे सो रहे हैं। जब उनकी आवश्यकता होगी, वे यहाँ आ जायेंगे।"

"अब मुझे इन श्रीमतीजी के लिए कुछ न कुछ करना चाहिए।" वहाँ की परिचारिका बोली— "क्या आप पुनः कमरे से बाहर जाने का कष्ट करेंगे?"

मैं फिर बरामदे में आ गया। बरामदा बिलकुल सादा था और उसमे सजावट नाम की कोई चीज नहीं थी। बरामदे के एक छोर पर, दो खिड़कियाँ और बन्द दरवाज़े थे। देखते ही अस्पताल का आभास हो जाता था। मै कुर्सी पर बैठकर वहाँ का फर्श निहारने लगा। मन-ही-मन कैथरीन के लिए मैं भगवान् से प्रार्थना कर रहा था।

"भीतर आ जाइए।" परिचारिका ने कहा और मै कमरे में आ गया।

"आओ, प्रियतम।" कैथरीन ने कहा।

"कैसा है दर्द?"

"अब तो बड़ी जल्दी-जल्दी दर्द उठ रहा है।" कष्ट के मारे उसके मुख पर बल पड गए और तभी वह मुस्करा दी।

"इस बार का दर्द बड़ी तकलीफ़ दे रहा था। क्या तुम फिर मेरी पीठ सहला दोगी, नर्स ?"

"यदि आपको इससे कुछ आराम मिलता हो, तो अवश्य।" परिचारिका ने कहा।

"तुम जाओ, प्राण!" कैथरीन बोली—"जाओ और जाकर कुछ खा-पी लो। नर्स का कहना है कि मेरा यह दर्द काफ़ी देर तक चल सकता है।"

"प्रथम प्रसव के समय की पीड़ा सामान्यतः बडी देर तक बनी रहती है।" परिचारिका बोली।

"जाओ प्रियतम, कुछ खालो जाकर।" कैथरीन ने दुहराया—"मैं बिलकुल ठीक हूँ, सच!"

"मै कुछ देर यहीं ठहरूँगा, केट!" मैंने कहा।

पीडा नियमित रूप से उठ रही थी। कुछ देर बाद उसमें कुछ कमी हुई। कैथरीन बड़ी उत्तजित प्रतीत हो रही थी। भयानक कष्ट होने पर भी वह उसे सामान्य कहकर टाल देती और जब पीड़ा कम होने लगती, तो उसे बडी लाज लगती।

"तुम जाते क्यों नहीं, प्राणेश ?" उसने कहा—"तुम्हारे यहाँ रहने से मैं अपने-आपके प्रति सजग हो उठती हूँ—सकुचा जाती हूँ।" उसने होठ दबा लिये—"हाँ, देखो; ठीक, अब की उठ रहा है जमकर दर्द। मै किसी प्रकार की मूर्खता का प्रदर्शन किए बिना एक योग्य गृहिणी बनना चाहती हूँ और शिशु को जन्म देना चाहती हूँ। तुम जाकर थोड़ा नाश्ता कर लो, प्रियतम! नाश्ता करके ही लौटना। तुम्हारी अनुपस्थिति खलेगी नहीं मुझे। मेरे प्रति परिचारिका का व्यवहार बडा ही उदार है।"

"समय काफ़ी है। आप निश्चिंत होकर नाश्ता कर सकते हैं।" परिचारिका बोली।

"तब मैं जाता हूँ। विदा, प्रिये।"

"विदा, प्रियतम!" कैथरीन ने कहा—"मेरे हिस्से का नाश्ता भी कर लेना। खूब अच्छी तरह, समझे।"

"कहाँ मिल सकता है यहाँ, नाश्ता ?" मैंने परिचारिका से पूछा।

"चौक में सड़क पर एक काफे है।" उसने उत्तर दिया—"इस समय तक निश्चय ही खुल गया होगा वह।"

बाहर पौ फट रही थी। मैं सूनी सड़क पर कॉफे की ओर चला। कॉफे की खिड़की में से छनकर प्रकाश बाहर निकल रहा था। मैं भीतर घुसा और मदिरा पीने की जगह जाकर खड़ा हो गया। बूढ़े खानसामा ने मुझे सफेद शराब से भरा गिलास और ब्रीओचे नामक खाद्य पदार्थ पकड़ा दिया, जो कल का बना था। मैं उसे शराब में डुबा-डुबाकर खा गया। फिर मैंने एक गिलास कॉफी पी।

"आप यहाँ इतने सबेरे कैसे आये हैं?" बूढ़े ने पूछा।

"मेरी पत्नी प्रसव के लिए अस्पताल आयी है।"

"ओह, ईश्वर आपकी सहायता करे!"

"मुझे एक गिलास शराब और दो।"

उसने बोतल से शराब उड़ेलकर गिलास भर दिया। उड़ेलते समय कुछ शराब बाहर छलक आयी और नीचे बिखर गयी। मैंने गिलास खाली किया, पैसे चुकाये और बाहर चला आया। बाहर, सड़क पर, आसपास के घरों के कचरा इकठ्ठा करनेवाले डब्बे रखे थे और वे सब अब उन भंगियों की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो उनकी गंदगी बटोर कर ले जाते। एक कुत्ता उनमें से एक डब्बे को सूँघ रहा था।

"क्या चाहिए तुझे?" कहते हुए मैंने डब्बे में दृष्टि दौड़ाई, जिससे मैं उसमें से कुछ बाहर निकालकर उस कुत्ते को दे सकूँ। डब्बे के ऊपर की ओर कॉफी की तलछट, धूलकण और कुछ मुरझाए हुए फूलों के सिवा कोई चीज़ नहीं थी।

"इसमें कुछ नहीं है दोस्त।" मैं बोला। कुत्ते ने भी मानो मेरी बात समझ ली और सड़क पार करता हुआ चला गया। अस्पताल की सीढ़ियाँ चढ़कर मैं उस मंजिल पर पहुँचा, जहाँ कैथरीन थी। वहाँ से बरामदे में चलता हुआ, मैं उसके कमरे के सामने जाकर खड़ा हो गया। मैंने दरवाज़ा थपथपाया, पर कहीं कोई नहीं बोला। दरवाज़ा ढेलकर मैं भीतर गया; पर कमरा सूना पड़ा था। केवल, एक कुर्सी पर कैथरीन का थैला रखा था। दीवार की एक खूँटी पर उसका लबादा लटक रहा था। मैं बाहर आया और किसी व्यक्ति की खोज में बरामदे का चक्कर लगाने लगा। तभी एक परिचारिका से मेरी भेंट हो गयी।

"क्या आप जानती हैं कि श्रीमती हैनरी कहाँ हैं?"

"अभी-अभी एक महिला प्रसूति-कक्ष में ले जायी गयी है।"

"कहाँ है वह?"

"आइए, मैं दिखा देती हूँ।"

वह मुझे बरामदे के अंतिम छोर पर ले गयी। प्रसूति कक्ष का दरवाजा कुछ खुला हुआ था। मैंने देखा कि एक चादर में लिपटी हुई कैथरीन मेज पर पड़ी थी। उसके एक ओर परिचारिका खड़ी थी और दूसरी ओर डाक्टर था। पास ही प्राणप्रद वायु (गैस) के वर्तुलाकार बेलन (सिलिंडर) रखे थे। डाक्टर के हाथ में एक नली से सम्बद्ध रबर का एक मॉस्क (नकाब) था।

"मैं आपको एक चोगा ला देती हूँ। उसे पहनकर आप भीतर जा सकते हैं।" नर्स ने कहा—'इधर आइए।"

उसने मुझे एक सफेद चोगा पहना दिया और गर्दन के पिछले भाग में पिन लगा दी।

"अब जा सकते हैं, आप।" वह बोली। मैं कैथरीन के पास पहुँचा।

"ओह, प्रियतम!" कैथरीन ने थकान-भरे स्वर में कहा—"अभी तक कोई विशेष सफलता नहीं मिली है मुझे।"

"आप ही श्री हैनरी हैं?" डाक्टर ने पूछा।

"जी हाँ, क्या हाल है, डाक्टर?"

"सब ठीक चल रहा है।" उसने उत्तर दिया—"हम लोग यहाँ चले आए; क्योंकि पीड़ा के समय गैस आदि देने की यहाँ विशेष सुविधा है।"

"गैस दो मुझे।' कैथरीन कराही। डाक्टर ने उसके मुख पर रबर का मॉस्क रख दिया और एक डायल घुमाया। मैंने कैथरीन को जल्दी-जल्दी गहरी साँस खींचते हुए देखा। उसके बाद उसने मॉस्क दूर हटा दिया और डाक्टर ने गैस की नली का मुँह बद कर दिया।

"इस बार की पीड़ा गहरी नहीं थी। कुछ समय पहले जो दर्द उठा था, वह प्राणलेवा था। डाक्टर साहब ने मुझे उससे बचा लिया। है न डाक्टर-साहब?" उसके स्वर में अस्वाभाविकता आ गई थी। बोलते समय 'डाक्टर' शब्द पर उसने काफ़ी जोर दिया।

"फिर चाहिए गैस।" कैथरीन कराही। उसने बड़े जोर से रबर का मॉस्क पकड़ कर अपने मुख पर दबा लिया और तेजी से साँस खींचने लगी। मैंने उसे दबी हुई आवाज में कराहते सुना। फिर उसने मॉस्क अलग हटा दिया और फीकी मुस्कान मुस्करायी।

"यह भी बड़ा जानलेवा दर्द था," वह बोली—"बड़ा भयानक! पर तुम चिन्ता मत करो प्रियतम—चिन्ता की कोई बात ही नहीं है। जाओ तुम। जाओ, दुबारा नाश्ता कर आओ।"

"नहीं, मैं यहीं रहूँगा—तुम्हारे पास!" मैं बोला।

हम प्रातःकाल लगभग तीन बजे अस्पताल पहुँचे थे और अब दोपहर हो चुकी थी। इस समय भी कैथरीन प्रसूति-कक्ष में ही थी। पीड़ा मे कुछ कमी आ गई थी और वह बहुत थकी हुई प्रतीत होती थी। फिर भी वह प्रसन्न थी।

'मै किसी काम की नहीं हूँ, प्राण!" वह बोली—"बड़ा दुःख है मुझे। मैंने सोचा था कि मेरा प्रसव बड़ी सरलता से सम्पन्न हो जाएगा। किन्तु, किन्तु अब—नही—आह, फिर उठी—पीड़ा—" उसने मॉस्क की ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसे अपने मुख पर रख लिया। डाक्टर ने डायल घुमाया और कैथरीन का निरीक्षण करने लगा। कुछ समय बाद दर्द कम हो गया।

"अधिक दु:खदायी नहीं था।" वह बोली। उसके मुख पर मुस्कान लौट आयी—"मै भी कैसी पागल हो गयी हूँ इस गैस के पीछे! पर बड़ी आश्चर्य-जनक वस्तु है यह।"

"हम अपने घर ले चलेंगे कुछ गैस!" मैंने कहा।

"लो, फिर उठा दर्द।" कैथरीन शीघ्रतापूर्वक बोली। डाक्टर ने यंत्र का डायल घुमाकर अपनी घड़ी मे देखा।

"अब कितनी देर बाद पीड़ा उठ रही है?" मैंने पूछा।

"करीब एक मिनट के अन्तर से।"

"क्या आप खाना खाने नहीं जायेंगे?"

"अभी नहीं, पर शीघ्र ही मै कुछ खा-पी लूँगा।" वह बोला।

"आपको खाने के लिए कुछ-न-कुछ मँगा लेना चाहिए, डाक्टर!" कैथरीन ने कहा—"प्रसव मे इतना अधिक समय लग रहा है, इसका मुझे दुःख है। क्या मेरे पति मुझे गैस नहीं दे सकते?"

"यदि आप चाहें, तो दे सकते हैं।" डाक्टर ने मुझसे कहा—"आप दो के अंक पर सुई घुमाइए।"

"समझा।" मैंने कहा। डायल पर एक सुई थी, जो हैण्डल के साथ ही-साथ घूमती थी।

"गैस दो मुझे, गैस!" कैथरीन बोली। उसने मॉस्क अपने मुँह पर कसकर रख लिया। मैंने दो के अंक पर सुई घुमाई। कैथरीन ने जब मॉस्क वापस रख दिया, तो मैंने गैस बन्द कर दी। वास्तव मे डाक्टर की यह बड़ी कृपा थी कि उसने मुझे अपनी कैथरीन के लिए कुछ करने का मौका दिया।

"मुझे तुमने गैस दी, प्रियतम?" कैथरीन ने पूछा। उसने मेरी कलाई पकड़ ली।

"हाँ—हाँ।"

"ओह, तुम कितने प्रिय हो!" उस पर गैस का कुछ नशा-सा चढ़ गया था।

"मने अपना खाना यहीं मँगा लिया है। बगल के कमरे मे खाने बैठ रहा हूँ मैं।" डाक्टर ने कहा—"आपको जिस क्षण आवश्यकता हो, उसी क्षग बुला सकते हैं मुझे।" समय बीतता गया। मै खुले दरवाजे से डाक्टर को भोजन करते हुए देखता रहा। कुछ समय बाद मैंने देखा कि वह लेटे लेटे सिगरेट पी रहा था। कैथरीन धीरे-धीरे और भी थकती जा रही थी।

"तुम्हारा क्या ख़याल है? कभी यह बच्चा मेरे पेट के बाहर भी आयेगा?" उसने पूछा।

"इसमें भी कोई शक है क्या?"

"मै बड़ी चेष्टा कर रही हूँ। उसे यथा सम्भव नीचे ढकेलती हूँ मैं; किन्तु वह खिसक जाता है। हाँ—फिर आरम्भ हुई पीड़ा। गैस दो मुझे।"

दो बजे मैंने बाहर जाकर खाना खाया। कॉफे मे बहुत कम व्यक्ति बैठे थे। उनकी मेजो पर जगली बेरो तथा अन्य फलों से बनी शराब के गिलास रखे थे। मै एक मेज़ पर बैठ गया। "क्यों, खाना मिल सकता है क्या?" मैंने खानसामा से पूछा।

"खाने का समय तो बीत गया साहब!" उसने उत्तर दिया।

"क्या ऐसी कोई चीज नहीं है, जो यहाँ हमेशा मिल सके?"

"जर्मन तरीके से बनाई हुई मसालेदार गोभी मिल सकती है?"

"अच्छा मसालेदार गोभी और बीअर ले आओ।"

"साधारण पीली बीअर अथवा गहरे काले रग की तेज बीअर?"

"बस साधारण पीली बीअर ही लाओ।"

खानसामा ने एक रकाबी मे गोभी लाकर रख दी। गोभी शराब में डुबाई गई थी और गर्म थी। उसके भीतर डब्बो में बन्द माँस रख दिया गया था। ऊपर भूने हुए माँस का एक टुकड़ा था। मैंने उसे खाकर बीअर पी। मुझे, वास्तव में, बड़ी भूख लगी थी। मैंने कॉफे की मेज पर बैठे हुए व्यक्तियों पर नज़रें दौड़ाई। एक मेज पर कुछ लोग ताश खेल रहे थे। मेरे समीप की मेज़ पर दो व्यक्ति धूम्रपान करते हुए गप्पे मार रहे थे। सारा

कॉफे धुएँ से भर रहा था। शराब पीने की उस जगह पर, जहॉ मैने प्रातःकाल जलपान किया था, अब तीन व्यक्ति मौजूद थे। वे तीनो होटल के कर्मचारी थे। एक तो वही बूढा था, जिससे मैने सबेरे शराब लेकर पी थी। दूसरी थी एक मोटी स्त्री। उसके कपड़े काले थे। वह काउटर के निकट बैठी थी। ग्राहको मे किसको क्या दिया जा रहा है, इसका भी वह ध्यान रखती थी। उन दोनो के अलावा होटल का एप्रान पहने हुए एक लड़का भी वहॉ था। मै उधर देखते हुए सोच रहा था कि उस औरत के कितने बच्चे होगे और उन्हे जन्म देते समय उसने कैसा महसूस किया होगा?

मसालेदार गोभी खा चुकने पर मै अस्पताल लौट आया। सड़क अब साफ हो गई थी। उस पर अब कचरे का कोई डब्बा नही दिखाई देता था। आकाश मेघाच्छन्न था, किन्तु सूर्य बादलो के बीच से झॉकने का प्रयास कर रहा था। लिफ्ट द्वारा मै अस्पताल की ऊपरी मजिल पर पहुँचा, लिफ्ट से बाहर आया और बरामदा पार करता हुआ उस कमरे मे घुसा, जहॉ कैथरीन पहले रखी गयी थी। वही मेरा सफेद चोगा रखा था। मैने उसे पहन लिया और गर्दन के पीछे की ओर उसमे पिन लगा दी। तब मैंने शीशे मे अपना चेहरा देखा। अपनी दाढी के साथ मै एक नकली डाक्टर-सा लग रहा था। वहॉ से पुनः बरामदे से होता हुआ मैं प्रसूति-कक्ष मे गया। दरवाजा बन्द था। मैने खटखटाया, पर भीतर से कोई उत्तर नहीं मिला। हैंडल घुमाकर मैने द्वार खोल लिया और भीतर चला गया। डाक्टर कैथरीन के पास बैठा हुआ था। कमरे के दूसरे छोर पर परिचारिका कुछ कर रही थी।

"लीजिए, आपके पति आ गए।" डाक्टर ने कहा।

"ओह! तुम आ गए, प्राण। ये डाक्टरसाहब भी सचमुच अद्भुत व्यक्ति हैं।" कैथरीन ने बड़े अस्वाभाविक स्वर मे कहा—"सुना तुमने कुछ, ये मुझे न-जाने कहॉ-कहॉ की बडी अजीबो-गरीब कहानियॉ सुनाते रहे हैं। और हॉ, ज्योंही मुझे प्राणघातक पीडा हुई, इन्होने मुझे उसका अनुभव भी नहीं होने दिया। ये सचमुच बडे अद्भुत हैं। हैं न आप अद्भुत, डाक्टर?"

"तुम नशे में हो, कैट।" मैने कहा।

"हॉ-हॉ, जानती हूँ मै।" कैथरीन बोली—"किन्तु तुम्हे ऐसा नहीं कहना चाहिए।" और तभी "लाओ, दो मुझे। जल्दी लाओ।" कहते हुए उसने मॉस्क अपने दोनों हाथो मे दबाकर मुँह पर रख लिया। वह जल्दी-जल्दी

हॉफते हुए गहरी सॉस लेने लगी। उसके सॉस खीचते समय बीच-बीच मे सॉस लेनेवाली हवा को शुद्ध करने वाले यंत्र के चटखने की आवाज होती रही। कुछ समय बाद उसने एक दीर्घ निःश्वास खींचा। डाक्टर ने अपने बायें हाथ से उसके मुख पर रखा हुआ मॉस्क हटा दिया।

"बड़ी प्राणघातक पीड़ा थी।" कैथरीन ने कहा। उसके स्वर मे अब और भी अस्वाभाविकता आ गई थी—"अब मै नहीं मरूंगी, प्रियतम! नहीं मरूंगी मै, अब। मै उस स्थिति को पार कर चुकी हूॅ, जहॉ मेरे मरने का भय था। मेरी जान बच गयी, क्या इससे तुम खुश नहीं हो?"

"पगली कहीं की! अब वैसी स्थिति पैदा मत होने देना, जिसमे तुम्हारी जान पर आ बने।"

"नहीं, अब ऐसा नहीं होगा। यों मैं मृत्यु से नहीं डरती—वैसी स्थिति से डरती नहीं हूॅ मै। फिर भी विश्वास रखो, मै मरूंगी नहीं, प्राण।"

"नासमझी की बाते मत कीजिये।" डाक्टर बोला—"हॉ, आप नहीं मर सकती—अपने पति को अकेला छोडकर नहीं जा सकतीं! ऐसा नहीं हो सकता —नहीं होगा ऐसा!"

"नही होगा ऐसा। सचमुच नहीं होगा। मै नहीं मरूंगी। मर ही नहीं पाऊंगी। कोरी मूर्खता होगी यह तो। फिर उठी पीड़ा। गैस, गैस दो मुझे!"

कुछ समय बाद डाक्टर बोला— "आप कृपया कुछ समय के लिए बाहर चले जाइए, मि० हैनरी। मुझे इनकी जॉच करनी पड़ेगी।"

"ये देखना चाहते हैं कि मेरे गर्भ की क्या स्थिति है।" कैथरीन ने कहा —"बाद मे तुम लौट आना, प्रियतम। क्यो डाक्टरसाहब, लौटकर आ सकते हैं न ये?"

"हॉ, हॉ; क्यो नहीं?" डाक्टर ने उत्तर दिया—"मै इन्हे स्वयं सूचित करूंगा और तब ये भीतर आ सकते है।"

मै कमरे से बाहर निकला। बरामदा पार करता हुआ मै उस कमरे मे पहुॅचा जहॉ प्रसव के बाद कैथरीन रखी जानेवाली थी। मैं एक कुर्सी पर बैठ गया और कमरे के चारो ओर देखने लगा। दोपहर को जब मै खाना खाने गया था, तो मैंने एक समाचारपत्र खरीदा था। वह मेरे कोट के जेब में ही रखा था। मै उसे निकालकर पढ़ने लगा। बाहर अन्धकार की कालिमा ने अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया था। मैने कमरे की बत्तियॉ जला दी, जिससे अखबार पढ सकूं। कुछ देर तक अखबार पढने के बाद मैंने बत्तियॉ बुझा दी और कमरे

की ओर बढते हुए अन्धकार को चीरकर बाहर झाँकने लगा। मुझे लगा, जैसे काफी समय बीत गया हो और मुझे आश्चर्य भी हुआ कि डाक्टर ने मुझे अभी तक क्यों नही बुलाया। सोचा, कदाचित् मेरा केथरीन से दूर रहना ही अच्छा था। डाक्टर, शायद यही चाहता था कि मै कुछ समय के लिए उससे दूर ही रहूँ। मैन अपनी घडी देखी और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यदि दस मिनट के भीतर मुझे कोई बुलाने नहीं आया, तो मै स्वय ही वहाँ चला जाऊँगा।

रात्रि के उस बढते अंधकार मे मेरे मन मे आने वाली भावनाएँ भी जोर पकडती गयी—कैथरीन—बेचारी भोली बालिका। मेरे हृदय की धडकन केट—आज तुम्हारी पीड़ा का अन्त नहीं। हम दोनो के सहवास का यह फल मिला है तुम्हे! हमारे सहवास का इतना बडा मूल्य चुकाना पड़ रहा है तुम्हें! मेरे प्रणय-बन्धन का तुम्हारे जीवन मे इस प्रकार अन्त हो रहा है! क्या एक दूसरे को प्यार करने का यही परिणाम होता है? मन ने क्षणभर के लिए दिशा बदली—शुक्र है भगवान् का! यदि आज गैस न होती, तो क्या होता, कौन जाने? मनुष्य को चेतनाशून्य कर देने वाली औषधियों के आविष्कार के पहले अभाग रोगियों को कितना भयकर कष्ट होता रहा होगा? एक बार कष्ट आरम्भ होते ही न जाने कितनी गर्भवती स्त्रियाँ चक्की के दो पाटो के बीच अनाज की तरह पिस जाती होंगी। गर्भ की अवस्था मे कैथरीन के दिन बडे सुख से बीते थे। उसे कोई कष्ट नहीं हुआ था। वह कभी बीमार नहीं पडी थी। सिर तक नहीं दुखा था उसका। दिन पूरे होने तक उसने कभी भयानक बेचैनी अथवा अस्वस्थता का अनुभव नहीं किया था। इसीलिए क्या विधाता ने अन्त में, उससे बदला लेने के लिए सब कष्टों का उसके पीछे छोड़ दिया है? प्रारब्ध का कोई नहीं टाल सकता। और टालना कैसा? व्यर्थ है सब—निरर्थक! एक बार तो क्या, यदि पचास बार भी हम विवाह करते, तो भी यही परिणाम होता। किन्तु यदि कैथरीन मर गयी तो? नही—नहीं, वह नहीं मरेगी। आजकल प्रसव-पीडा से कोई स्त्री नहीं मरती। कम-से-कम, मर्द तो यही समझते हैं। हाँ, ठीक है; किन्तु यदि केथरीन मर गई तो? नहीं—नहीं, ऐसा नही होगा। यह तो कुछ देर की तकलीफ है, जिससे वह मुक्त हो जाएगी। प्रथम प्रसव सामान्यतः दीर्घकाल तक कष्ट देता ही है। कथरीन का बस पीड़ा हो रही है और कुछ नहीं। यह पीडा समाप्त हो जायगी और तब सब लोग कहेंगे कि ओह, कैसी भयकर आपत्ति आई थी, कैथरीन के ऊपर! उत्तर मे केथरीन स्वय ही कहेगी—'अरे, नही—नही, ऐसी कोई

खास बात तो थी नहीं।" और इस पीड़ा ने यदि उसके प्राण ही ले लिये तो? पर नहीं, वह मर नहीं सकती। हाँ, नहीं मर सकती। और यदि वह मर गयी तो—तो क्या होगा? क्या होगा तब? पर वह मरेगी ही नहीं। मैं जानता हूँ, वह मुझे छोड़कर नहीं जा सकती। पर मैं भी कैसा पागल हूँ? अरे, यह तो केवल कुछ देर की तकलीफ है—प्रकृति उसे कुछ काल के लिए सता रही है। बस, प्रथम प्रसूति का कष्ट है यह तो। प्रथम प्रसूति का कष्ट, जो प्रायः सदैव दीर्घकालीन होता है। यह सब तो ठीक है; पर कहीं वह मर ही गई तो? फिर वही बात—नहीं—नहीं—वह नहीं मर सकती। क्यों मरेगी वह? किस अपराध पर वह मृत्युदण्ड भोगेगी? केवल एक बच्चा ही तो पैदा हो रहा है उसे—प्रसव ही तो कर रही है वह। प्रसव—एक शिशु का जन्म—उस शिशु का जन्म, जो मिलन में व्यतीत की गयी हमारी सुखद और प्रणययुक्त रातों का परिणाम है—उनकी देन है! वे ही सुन्दर रातें तो शिशु के रूप में पुनर्जन्म ले रही हैं। कष्ट देकर ही तो जन्म लेता है शिशु और—उसके जन्म के बाद लोग उसे पालते-पोसते हैं और उस पर अपना प्यार उड़ेलने लगते हैं। किन्तु कैथरीन मर गयी तो? नहीं, वह नहीं मरेगी। नहीं—नहीं, ऐसा नहीं हो सकता—वह मर ही नहीं सकती। वह बिलकुल ठीक है अब—उसे कोई कष्ट नहीं है। पर वह मर जाये, तो? ना, वह मर नहीं सकती। लेकिन यदि वह सचमुच मर गई तो? हे भगवन्! तब क्या होगा? किन्तु मैं भी क्या सोच रहा हूँ?

तभी डाक्टर अंदर आया।

"क्या प्रगति है, डाक्टर?"

"कोई प्रगति नहीं।" उसने कहा।

"क्या मतलब?"

"मतलब स्पष्ट है। मैंने अभी परीक्षण किया था।" उसने मुझे परीक्षण-विषयक सारी बातें विस्तार में बतायीं—"परीक्षण के बाद मैं कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा कि देखें, आगे क्या होता है; किन्तु उसका कोई नतीजा नहीं निकला। गर्भ नीचे आता ही नहीं।"

"फिर आपकी क्या सलाह है?"

"देखिये दो मार्ग हैं। एक मार्ग तो यह है कि लम्बी सडसी डालकर प्रसव कराया जाए। किन्तु यह माँ और शिशु दोनों के लिए घातक है। इसमें शिशु को हानि पहुँचने की आशंका तो है ही, साथ ही, गर्भाशय फट जाने का भी खतरा है। दूसरा मार्ग है पेट की शल्यक्रिया द्वारा बच्चे को बाहर निकालना।"

"शल्यक्रिया मे क्या डर है?" मन मे पुनः वही विचार उठा—और यदि वह मर गई तो?

"सामान्य प्रसव मे जो डर होता है, वही शल्यक्रिया द्वारा प्रसव कराने में भी है। उससे अधिक नहीं।"

"आप स्वय शल्यक्रिया करेंगे?"

"हॉ। शल्यक्रिया की तैयारी करने में लगभग एक घण्टा लगेगा। कदाचित् इससे कुछ कम लगे।"

"आपके विचार से क्या ठीक रहेगा?"

"मै तो आपको पेट की शल्यक्रिया कराने की ही सलाह दूंगा। यदि मेरी पत्नी की ऐसी हालत होती, तो मै शल्यक्रिया ही करता।"

"बाद मे, क्या प्रभाव होता है इसका?"

"कोई खास प्रभाव नहीं। शल्यक्रिया का निशान-भर रह जाता है।"

"कोई दूषित प्रभाव?"

"उसका भय शल्यक्रिया मे उतना नहीं है, जितना सडसी द्वारा प्रसव कराने मे।"

"और जो चल रहा है, वही चलने दिया जाये तो?"

"देखिये, हमे कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा। यो भी श्रीमती हैनरी की शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। अब हम जितने जल्दी उनकी शल्य-क्रिया करेंगे, उतनी ही ज्यादा वे सुरक्षित रहेंगी।"

"तब जितनी जल्दी हो, आप शल्यक्रिया कर डालिए।" मैने कहा।

"ठीक है। मैं अभी आवश्यक आदेश दे देता हूँ।"

मै प्रसूति-कक्ष मे पहुँचा। कैथरीन मेज पर लेटी थी। चादरो में लिपटी हुई वह बहुत बडी दिखायी दे रही थी। उसका मुख मुरझा गया था और वह बिलकुल पीली और थकी थकी नजर आ रही थी। उसके निकट ही परिचारिका बैठी थी।

"क्या तुमने डाक्टर को शल्यक्रिया करने के सम्बन्ध मे अपनी सम्मति दे दी?" उसने धीमे स्वर मे पूछा।

"हॉ।"

"बड़ा अच्छा किया तुमने। बहुत सुन्दर। अब एक घण्टे के भीतर ही सारे कष्ट का अन्त हो जायेगा। मुझमे अब कुछ भी शेष नहीं रह गया है, प्रियतम! मेरी समस्त शक्ति क्षीण हो चुकी है—मेरा धैर्य समाप्त हो चुका

है। थोड़ी गैस दो मुझे। अब तो वह भी काम नहीं करती—यह भी नहीं, आह!"

"जरा गहरी साँस खींचो।"

"वही कर रही हूँ। ओह, कोई उपयोग नहीं। व्यर्थ है—काम ही नहीं कर रही है गैस!"

"दूसरा बेलन लाइए गैस का।" मैंने परिचारिका से कहा।

"यह नया ही बेलन है।"

"मैं बड़ी नासमझ हूँ, प्रियतम!" कैथरीन बोली—"किन्तु मैं भी क्या करूँ। यह गैस अब बिलकुल काम नहीं करता।" कहते हुए वह रोने लगी—"ओह, मैं चाहती थी कि मेरे इस नन्हें शिशु से मेरा गोद भर जाये और मुझे कोई कष्ट न हो। किन्तु उसके बदले आज मेरा सारी शक्ति समाप्त हो गयी है—हिम्मत पस्त हो चुकी है—फिर भी प्रसव नहीं हो रहा है—हाय, प्रियतम! कोई फल नहीं—कोई अन्त नहीं इसका। यदि इसका कहीं अन्त हो सके, किसी प्रकार यदि यह पीड़ा रुक सके—मेरी मृत्यु से भी यदि यह बंद हो सके तो मुझे मरने की भी परवाह नहीं। प्रियतम, ओह, किसी भी तरह इस पीड़ा को रोको, प्राण! दया करो मेरे ऊपर। आफ, मैं मरी! फिर उठी पीड़ा। फिर आयी वह। आह, हाय, हाय रे!" मॉस्क में मुँह ढँके वह सिसकियाँ भरती हुई साँस खींचने लगी—"ना, कोई उपयोग नहीं—कोई लाभ नहीं इस गैस का—यह काम ही नहीं करती अब। मेरी बातों का खयाल मत करो, प्राण। रोओ मत। कोई ध्यान मत दो मेरी इस बकवास पर। बिलकुल छलनी हो चुका है मेरा शरीर। कुछ भी शेष नहीं रहा अब इसमें। मेरे भोले जीवनसाथी! मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ। तुम्हारे इसी प्यार का सम्बल पा मैं पुनः तुम्हारी 'मधुर केट' बन जाऊँगी—बिलकुल स्वस्थ हो जाऊँगी मैं। मेरी पीड़ा का अन्त करने के लिए क्या ये लोग मुझे कोई अन्य औषध नहीं दे सकते? काश, वे मुझे और कुछ दे सकते? मेरे लिए कुछ कर सकते, ओह!"

"देखता हूँ, यह गैस कैसे प्रभाव नहीं डालती। मैं अभी डायल चारों ओर घुमाता हूँ।"

"लाओ, दो मुझे।"

मैंने चारों ओर डायल घुमाया और वह तीव्र तथा गहरी साँसें खींचने लगी। साँस खींचते-खींचते मॉस्क पर उसके हाथों की पकड़ ढीली पड़ गयी। मैंने तुरत गैस बंद कर दी और उसके मुँह पर से मॉस्क उठा लिया। वह अचेत

हो चुकी थी। बड़ी देर बाद उसकी चेतना लौटी।

"बड़ा मज़ा आया इस बार, प्रियतम। ओह, तुम कितने उदार हो मेरे प्रति!"

"हिम्मत मत हारो, धैर्य से काम लो। मै हर बार तुम्हारे लिए ऐसा नहीं कर सकता। इस प्रकार गैस देने से कदाचित् तुम्हारी जान पर आ बने।"

"अब मुझमे हिम्मत शेष नही रही है, प्राण। धैर्य छूट चुका है मेरा। इस पीड़ा ने मुझे खत्म कर दिया— इन अस्पतालवालो ने भी कोई कसर बाकी नहीं रखी है। सब समझ गई हूँ अब मै।"

"ऐसा तो हर एक के साथ होता है, केट!"

"किन्तु कितना भीषण है यह—कितना भयानक! ये लोग उस समय तक कुछ नहीं करते, जब तक यह प्राणलेवा दर्द बिलकुल परास्त नहीं कर देता है—मरीज की हिम्मत नही तोड़ देता है!"

"घबराओ मत, एक घण्टे मे ही सब ठीक हो जाएगा—इस पीडा से तुम मुक्ति पा लोगी।"

"कितना अच्छा होगा तब! है न, प्रियतम! मै मरूँगी तो नहीं न?"

"नहीं, मै तुम्हें मरने नही दूँगा।"

"मैं मरना नहीं चाहती, तुम्हें छोड़कर जाना नहीं चाहती, प्राण! परन्तु मैं इस असह्य पीड़ा से इतनी थक गई हूँ कि मुझे लगता है, अब मै बचूँगी नहीं—मर जाऊँगी।"

"पागल हो तम— बिलकुल नासमझ! अरे, प्रसव के पूर्व सभी औरतों को ऐसी पीडा होती है।"

"कभी कभी तो मुझे अपने मरने के सम्बन्ध मे तनिक भी शका नहीं रह जाती।"

"नहीं, तुम नहीं मरोगी। तुम नहीं मर सकती।"

"किन्तु यदि मै मर गयी तो?"

"मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा।"

"ओह, गैस दो, जल्दी करो। गैस, गैस दो मुझे।" और, कुछ समय बाद वह बड़बड़ायी—"नहीं, मै नहीं मरूँगी। मैं स्वय को मृत्यु के इन भयावह पजो से बचाऊँगी— मरूँगी नही मैं!"

"केट मेरी, तुम मरोगी नही, प्रिये।" मैने उसे ढाढ़स बंधाया।

"शल्यक्रिया के समय तुम मेरे पास ही रहोगे न?"

"मैं उसे देख नहीं सकूँगा।"

"कम-से-कम वहाँ रहोगे तो?"

"निश्चित रूप से। आरम्भ से अन्त तक मैं वहीं रहूँगा।"

"तुम मुझे कितना प्यार करते हो। आह, लाओ। फिर लाओ गैस। कुछ और दो। कोई असर नहीं हो रहा है।"

मैंने डायल घुमाया। धीरे-धीरे सुई तीन पर पहुँच गयी और अन्त में, मैंने चार के अङ्क पर सुई घुमा दी। मै सोच रहा था कि डाक्टर आ जाता, तो अच्छा होता। दूसरे अंक के बाद सुई घुमाने मे मुझे बड़ा भय लग रहा था।

और अंततः दो परिचारिकाओं के साथ एक नए डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। उन्होंने एक पहियेदार टिकठी पर कैथरीन को लिटा दिया। हम लोग बरामदा पार करने लगे। शीघ्रता से बरामदा पार करते हुए टिकठी लिफ्ट पर पहुँचाई गई। टिकठी का लिफ्ट के भीतर जाने का मार्ग देने के लिए आसपास के लोग दीवार से सटकर खडे हो गए। लिफ्ट द्वारा हम लोग ऊपरी मज़िल पर पहुँचे, लिफ्ट का द्वार खोलकर बाहर आए और बरामदा पार करते हुए आपरेशन-थियेटर (शल्यक्रिया-कक्ष) मे पहुँचे। सिर पर टोपी लगाए और मुँह ढँके डाक्टर को मैं पहचान भी न सका। कमरे मे एक अन्य डाक्टर तथा कुछ और परिचारिकाएँ थी।

"उन्हें मुझे कोई अन्य ओषध देना चाहिए।" कैथरीन बड़बड़ा रही थी—"कोई और औषधि देनी पड़ेगी उन्हें। ओह, डाक्टर, दया करो मरे ऊपर। मुझे पर्याप्त मात्रा मे कुछ दो, जिससे मुझे कुछ लाभ हो।"

तभी एक डाक्टर ने उसके मुख पर मास्क रख दिया। मै दरवाजे से दूसरी ओर झाँकने लगा। शल्यक्रिया-कक्ष के प्रकाशयुक्त तथा नन्हें मच पर मेरी नज़रें घूमने लगीं।

"आप उस द्वार से जाकर वहाँ बैठ जाइए।" एक परिचारिका ने मुझे संकेत किया। एक रेलिंग के पीछे कुछ बेंचें रखी थीं। वहाँ से शल्यक्रिया की श्वेत मेज तथा बत्तियाँ दिखाई देती थीं। वहीं बैठकर मैं कैथरीन को देखने लगा। उसके मुख पर मॉस्क रखा हुआ था और अब वह बिलकुल शान्त थी। अस्पताल के नौकरों ने उसकी पहियोंवाली टिकठी को आगे बढ़ाया। मैं लौट पड़ा और बरामदे की ओर चल दिया। मैंने देखा कि दो परिचारिकाएँ बरामदे

के प्रवेशद्वार की ओर भागी-भागी-सी जा रही हैं।

"पेट की शल्यक्रिया की जा रही है।" एक ने कहा—"शल्यक्रिया द्वारा प्रसव कराया जा रहा है।"

दूसरी हँस पड़ी—"चलो, हम ठीक समय पर पहुँच गयीं। भाग्यशाली हैं हम। हैं न?"

वे बरामदे के प्रवेशद्वार को पार करती हुई कमरे की ओर बढ गयीं। तभी एक दूसरी परिचारिका दिखाई दी। वह भी आपरेशन-थियेटर की ओर भागी जा रही थी।

"आप सीधे वहाँ चले जाइए। भीतर चले जाइए सीधे, आपरेशन-थिएटर में।" उसने मुझसे कहा।

' नहीं, मैं बाहर ही ठहरूँगा।" मै बोला।

वह शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ गई। मै बरामदे मे चक्कर लगाने लगा। भीतर जाने मे मुझे भय सा लग रहा था। मैंने खिडकी से बाहर झाँका। घना अधेरा छाया हुआ था। किन्तु खिड़की से उस ओर पडते हुए प्रकाश मे मैंने देख लिया कि वर्षा हो रही है। मैं बरामदे के दूसरे छोर पर स्थित कमरे में पहुँचा और वहाँ एक कॉच की आलमारी मे रखी हुई बोतलों पर चिपके हुए लेबलो को पढने लगा। कुछ समय बाद मै उस कमरे से बाहर निकला और सुनसान बरामदे मे खड़ा होकर दरवाजे से शल्यक्रिया-कक्ष के भीतर झाँकने लगा।

इसी बीच वहाँ से एक डाक्टर बाहर निकला। उसके पीछे एक परिचारिका भी बाहर आई। डाक्टर के दोनों हाथो में नवजात और कोमल झिल्लीदार खरगोश के बच्चे की भाँति कोई वस्तु थी। वह उसे लेकर जल्दी-जल्दी बरामदा पार करते हुए दूसरे कमरे मे घुस गया। मै भी उसके पीछे-पीछे उसी कमरे मे पहुँचा। मैंने देखा कि वे दोनो मेरे नवजात शिशु के साथ कुछ कर रहे थे। मुझे दिखाने के लिए डाक्टर ने उसे ऊपर उठाया। फिर उसने उसकी एड़ियाँ पकडकर उसे थपथपाया।

"ठीक तो है न, बच्चा?"

"बडा प्रतापी है। ग्यारह-बारह पौंड वजन होगी इसका।"

उस नन्हें शिशु के प्रति मेरे हृदय मे तनिक भी प्यार नहीं जागा। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है। मुझमें उसके प्रति पिता की भावना पैदा ही नहीं हुई।

"क्या आपको अपने इतने सुन्दर पुत्र पर अभिमान नहीं है?" परिचारिका ने पूछा। वे उसे स्नान कराने के बाद किसी चीज में लपेट रहे थे। मैंने बच्चे का नन्हा-सा साँवला-सलोना मुख देखा, उसके सलोने हाथ देखे, किन्तु न तो वह हिल डुल रहा था और न रो रहा था। डाक्टर पुनः उसके साथ कुछ करने लगा। वह बड़ी उलझन में पड़ा दिखाई दे रहा था।

"नहीं, मुझे इस पर कोई अभिमान नहीं है।" मैं बोला— "इसने अपनी माँ को करीब करीब मार ही डाला।"

"किन्तु इसमें इस बेचारे नन्हे-मुन्ने का क्या दोष है? क्या आपको पुत्र की इच्छा नहीं थी?"

"नहीं।" मैंने कहा। डाक्टर बच्चे को लेकर व्यस्त था। उसने उसके पैर पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया और पुनः थपथपाने लगा। पर यह सब देखने के लिए मैं वहाँ खड़ा नहीं रहा। मैं बरामदे में निकल आया। अब मैं शल्यक्रिया कक्ष में जाकर कैथरीन को देख सकता था। मैं दरवाजे से भीतर घुसा और घेरे के पास रखी हुई बेन्चों की ओर बढ़ा। कुछ परिचारिकाओं ने, जो वहीं बेन्चों पर बैठी थीं, संकेत से मुझे अपनी ओर बुलाया, पर मैंने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। मैं जहाँ था, वहीं से, जो-कुछ चल रहा था, उसे भली भाँति देख सकता था।

मुझे लगा कि कैथरीन मर चुकी है। वह बिलकुल मृत दिखाई दे रही थी। उसका मुख सफेद पड़ गया था। कम-से-कम जितना भाग मैं देख सकता था, उतना तो सफेद ही दिखाई दे रहा था। मेरे सामने, बत्ती के ठीक नीचे, डाक्टर चिरे हुए पेट के लम्बे तथा मोटी कोरोंवाले घाव को सी रहा था। मॉस्क पहने पास ही खड़ा हुआ एक दूसरा डाक्टर बेहोशी की दवा दे रहा था। दो परिचारिकाएँ आवश्यक वस्तुएँ देती जा रही थीं। उनके मुख पर भी मॉस्क थे। देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो वहाँ किसी के भाग्य का निर्णय करने के लिए पंचायत बैठी हो। टाँके लगते हुए देखकर मुझे लगा कि मैं शुरू से ही पूरी-की-पूरी शल्यक्रिया भी देख सकता था, किन्तु मुझे इस बात से प्रसन्नता ही हुई कि मैंने उसे नहीं देखा। कैथरीन का पेट काटे जाते समय वहाँ खड़ा रहकर मैं उसे देख सकता था—इसमें मुझे स्वयं सन्देह था। किन्तु उस घाव को, मैं मौन, सिलते हुए देखता रहा। किसी कुशल चमार द्वारा लगाए गए टाँकों के समान ही, बड़ी फुर्ती और चतुराई से, डाक्टर द्वारा लगाये गये टाँकों ने घाव को बड़ी खूबी से बन्द कर दिया। चीरने का निशान किसी कपड़े पर लगी हुई

गोट की तरह ही दीख रहा था। घाव बन्द होते देखकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ। जब टाके लग गये, तो मै बाहर बरामदे में आ गया और उसके एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर काटने लगा। कुछ समय बाद डाक्टर बाहर आया।

"कैसी है अब वह?"

"अच्छी तरह है। आपने शल्यक्रिया देखी?"

डाक्टर थका-सा लग रहा था।

"मैने आपको घाव सीते हुए देखा था। बड़ा लम्बा घाव था।"

"क्या आपको ऐसा लगा?"

"हाँ। उसका निशान तो फैलकर बराबर हो जायगा न?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं।"

कुछ देर बाद वह पहियोंवाली टिकठी बाहर निकाली गयी। शीघ्रतापूर्वक बरामदा पार करते हुए, अस्पताल के कर्मचारी उसे लेकर लिफ्ट के पास पहुँचे। मैं भी टिकठी के साथ-साथ चला। कैथरीन कराह रही थी। नीचे की मंजिल पर कैथरीन के कमरे मे पहुँचने पर उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया। मै बिस्तर के पायताने एक कुर्सी पर बैठ गया। कमरे मे एक परिचारिका थी। मैं उठकर बिस्तर के पास खड़ा हो गया। कमरे मे अँधेरा छाया था। कैथरीन ने अपना हाथ बाहर निकाला। "प्रियतम!" वह बोली। उसका स्वर बड़ा क्षीण था। बड़ी अशक्त और थकी हुई आवाज थी उसकी।

"क्यों अब कैसी हो, प्राण?"

"कैसा बच्चा है हमारा?"

"श्-श्—बातें मत कीजिए।" परिचारिका ने कहा।

"लड़का है। हृष्ट-पुष्ट—लम्बा-चौड़ा और साँवला सलोना।"

"ठीक तो है न वह?"

"हाँ।" मैने उत्तर दिया—"बहुत स्वस्थ है।"

मैंने देखा कि परिचारिका मेरी ओर अकचकाकर देख रही थी।

"मैं बुरी तरह थक गयी हूँ।" कैथरीन बोली—"और मेरा घाव भी कुछ कम गहरा नहीं है। तुम तो अच्छी तरह हो न, प्रियतम?"

"हाँ, मैं तो बिलकुल अच्छा हूँ। तुम बोलो मत, हूँ!"

"तुम शुरू से मुझसे बहुत प्यार करते रहे हो। आह, प्राण! बड़ा भयकर आघात पहुँचा है मुझे। बच्चा कैसा दिखता है?"

"शरीर तो उसका किसी भिज्नीगर खरगोश के समान है और मुँह ऐसा दिखाई देता है, मानो किसी बूढ़ का झुर्रियों से भरा चेहरा हो।"

"आप बाहर चले जाइए।" परिचारिका ने आदेश दिया—"श्रीमती हैनरी को इस समय एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिए।"

"मै बाहर ही ठहरूँगा।" मैंने कैथरीन से कहा।

"जाओ और जाकर कुछ खा लो।"

"नहीं, मै यहीं बाहर रहूँगा, तुम्हारे पास ही।" मैने कैथरीन का चुम्बन लिया। वह बिलकुल सफेद, अशक्त और थकी प्रतीत हो रही थी।

"जरा सुनिए तो।" मैंने परिचारिका से कहा। वह मेरे साथ बाहर निकलकर बरामदे मे आ गई। मै कमरे से कुछ दूर जाकर रुक गया।

"यह, बच्चे के साथ क्या गडबडी है?" मैंने पूछा।

"क्यो? आपको नहीं मालूम?"

"नहीं तो।"

"वह जीवित नहीं था।"

"मरा हुआ था?"

"हाँ, डॉक्टर उसकी श्वास-संचालन-क्रिया आरम्भ नहीं करा सके। उसके गले के आसपास नाल लिपट गया था या ऐसी ही कुछ बात हुई थी, जिससे साँस रुक गई।"

"तो, वह मर गया!"

"हाँ। बड़ी लज्जा की बात है यह हमारे लिए। कितना सुन्दर और हृष्टपुष्ट बालक था! मै तो समझती थी कि आपको यह सब मालूम होगा।"

"नहीं।" मैने कहा—"अब आप जाकर कैथरीन के पास ही रहिये।"

मै एक मेज के सामने पडी हुई कुर्सी पर बैठ गया। मेरे पास ही परिचारिकाओ द्वारा लिखित, रोगियों के सम्बन्ध मे आवश्यक विवरण क्लिपों के सहारे दीवार पर लटके हुए थे। मैंने खिडकी की राह बाहर देखा, पर अन्धकार को छोडकर मुझे और कुछ नहीं दीख पड़ा। हाँ, खिड़की से बाहर जाती हुई प्रकाश किरणों के बीच बरसते हुए पानी की झलक भी मुझे मिली। हूँ, तो यह बात थी—मैंने सोचा—बच्चा मर गया। इसीलिए डाक्टर इतना थका हुआ लग रहा था। किन्तु फिर उसने कमरे मे उसे थपथपाया क्यों? शायद यह सोचकर कि वैसा करने से वह ठीक हो जाएगा, साँस लेने लगगा। मेरा अपना कोई धर्म नही है।

मैं किसी धर्म मे विश्वास नहीं रखता, तो भी इतना मैं जानता हूँ कि उसका जन्म-संस्कार होना चाहिए था। परन्तु जब उसने अपने जीवन की पहली साँस तक नही ली, तो फिर जन्म-संस्कार का महत्त्व ही क्या होता? एक साँस भी नहीं चली उसकी। क्षणभर भी जीवित नही रहा वह। हाँ, कैथरीन के गर्भ में वह अवश्य जीवित था। मैंने उसे कई बार गर्भ मे पैर फटकारते हुए महसूस किया था। किन्तु गत एक सप्ताह से कदाचित् गर्भ मे भी उसकी हलचल बन्द हो गई थी। हो सकता है, इन सात दिनों तक गर्भ मे ही उसकी साँस घुटती रही हो। बेचारा अभागा नन्हा शिशु! मेरे मन मे एक विचित्र-सी इच्छा उठी कि ठीक इसी प्रकार मेरा भी दम घुटे, मेरी भी साँस रुके—मै भी तडपूँ। किन्तु, नहीं-नहीं, मै ऐसा नहीं चाहता। और यदि ऐसा हुआ भी, यदि मेरी साँस भी ऐसे ही रुक गई, तो मुझे इस प्रकार मृत्यु की असह्य यातना तो नहीं भुगतनी पडेगी। बच्चा मर गया! अब कथरीन मर जाएगी! सब के साथ—समस्त विश्व के साथ—यही तो होता है। प्रत्येक व्यक्ति मरता है—मैं, आप, सभी मर जाते हैं। आप मर जाते हैं और आपको पता भी नहीं चलता कि आप क्यों मर गए? आपको इतना समय भी नहीं मिलता कि आप अपनी मौत का कारण जान सके। संसार मे आपको ढकेल दिया जाता है, जीवन के सभी नियमों से आपको अवगत करा दिया जाता है और जब आप पहली बार ही चूके, कि बस, आपकी मौत हुई। या फिर आयमो की भाँति निष्कारण ही आपका मरना पडता है अथवा रिनाल्डी के समान उपदंश रोग से भी आप असह्य यातना सहते हुए मर सकते हैं। जैसे भी हो, यह तो निश्चित है कि अन्ततः आपको मृत्युदण्ड मिलेगा ही। यह निश्चित समझिए, इस पर विश्वास रखिए—प्रतीक्षा कीजिए और देखिए कि यह दुनिया आपकी जान लेती है या नहीं!

एक बार सैन्य-शिविर मे मैंने आग मे एक लकड़ी का ठूँठ रख दिया था। उस ठूँठ मे चींटियाँ-ही-चींटियाँ भरी थीं। लकड़ी का वह ठूँठ जलने लगा। चींटियाँ झुण्ड-के-झुण्ड मे रेंगती हुई पहले उस के मध्यभाग पर पहुँचीं, जहाँ से वह आग मे जल रही थी। उसके तुरत बाद ही जब सब-की-सब चींटियाँ इकट्ठी हो गई, तो वे आग में गिर पडी। उनमे से कुछ बाहर भी निकल आई। उनके शरीर आग मे झुलसकर चपटे हो गए? वे बिना समझे-बूझे जिसे जहाँ राह मिली, उसी ओर भागने लगीं। किन्तु बहुत-सी चींटियाँ आग की ओर ही भागीं। वे फिर वहाँ से लौटी और लकडी के उस ठूँठ के सिरे की ओर भागीं। अन्त मे ठूँठ के ठण्डे छोर पर इकट्ठी होकर वे नीचे गिर गईं

और आग मे जल मरी। मुझे अब भी याद है कि उस समय मेरे दिमाग में कैसे विचार उठे थे। मैने सोचा था कि अब विश्व का अन्त आ पहुँचा है। मसीहा बनने का एक सुन्दर मौका मिला है मुझे—और उसी धुन में मैंने इरादा किया कि ठूँठ को आग से निकालकर बाहर फेंक दूँ, जिसमे चीटियाँ उसमें से निकलकर जमीन पर चली जायें। किन्तु मैंने ऐसा किया नही। किया केवल इतना ही कि अपने टीन के डब्बे का पानी ठूँठ पर फेंक दिया। मेरे इस कार्य में भी ठूँठ को बुझाकर, चीटियो को बचाने की इच्छा नहीं थी; बल्कि डब्बा खाली करके उसमे व्हिस्की उड़ेलने की इच्छा थी, जिससे मैं पानी मे शराब मिलाने के स्थान पर शराब मे पानी मिला सकूँ। मेरी समझ मे धधकते हुए ठूँठ पर पानी डालने से चीटियों के प्राण बचने के बदले वे उस पानी की भाप में और भी भुन गई होंगी।

हाँ, अब मै बरामदे में बैठा हुआ इस समाचार की प्रतीक्षा कर रहा था कि कैथरीन कैसी है। परिचारिका कोई समाचार लेकर न आयी, अतः कुछ समय के बाद मै स्वयं द्वार पर पहुँचा। धीरे से द्वार खोलकर मैंने भीतर झाँका। क्षणभर तो मै कुछ भी न देख सका; क्योंकि मै बरामदे से कमरे मे आया था। बरामदे मे तीव्र प्रकाश था, किन्तु कमरे मे अँधेरा छाया था। आँखों के अभ्यस्त होते ही मैंने देखा कि बिस्तर के पास परिचारिका बैठी थी। चादर में लिपटी हुई कैथरीन बिछौने पर चित होकर लेटी थी। उसका सिर एक तकिये पर रखा था। मुझे देखकर परिचारिका ने होठों पर उँगली रखते हुए मुझे चुप रहने का संकेत किया और चुपचाप उठकर दरवाज़े पर आ गई।

"कैसी है वह?" मैंने पूछा।

"ठीक है।" नर्स बोली—"आप जाकर खाना खा लीजिये और उसके बाद यदि आपकी इच्छा हो, तो यहाँ चले आइये।"

बरामदा पार कर सीढ़ियाँ उतरता हुआ, मै अस्पताल के दरवाजे से बाहर आया और बरसात की झड़ी के बीच काली-अंधियारी सड़क को पार करते हुए कॉफे मे घुसा। तीव्र प्रकाश मे कॉफे का कोना-कोना जगमगा रहा था। मेजों के आसपास बहुत से व्यक्ति बैठे थे। मुझे बैठने के लिए कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। तभी एक खानसामा ने आकर मेरा गीला कोट और टोप ले लिया। उसने मुझे एक प्रौढ मनुष्य के पास एक मेज के निकट बैठने का स्थान दिखाया। मैं वहाँ पहुँचा। प्रौढ व्यक्ति बीअर पीते हुए सायंकालीन दैनिकपत्र पढ़ रहा था। मै वहीं बैठ गया।

"आज का विशेष पदार्थ क्या है?" मैंने खानसामा से पूछा।

"धीमी ऑच मे पकाया हुआ बछड़े का मॉस—किन्तु वह खतम हो चुका है।"

"खाने के लिए और क्या मिल सकता है?"

"रान और अंडे, अंडे और पनीर या मसालेदार गोभी।"

"मसालेदार गोभी तो मै दोपहर को खा चुका हूँ।" मैंने कहा।

"हॉ।" वह बोला—"ठीक कहते हैं आप। दोपहर मे आपने मसालेदार गोभी खाई थी।" खानसामा एक प्रौढ व्यक्ति था। उसके सिर का ऊपरी भाग गजा था। उस गजे भाग पर उसके छिटपुट केश चमक रहे थे। उसके मुख से उदारता टपक रही थी।

'आपको क्या चाहिए? रान और अण्डे अथवा अण्डे और पनीर?'

"रान और अण्डे लाओ।" मैंने कहा—"और बीअर भी।"

"साधारण पीले रगवाली?"

"हॉ।" मैंने कहा।

"मुझे याद है।" वह बोला—"दोपहर को भी आपने साधारण पीले रंगवाली बीअर ली थी।"

मैंने रान का मॉस और अण्डे खाना शुरू किया। उसी के साथ मैं बीअर भी पी रहा था। रान और अण्डे एक गोल रकाबी मे लाए गए थे—नीचे रान का टुकड़ा था और उसके ऊपर थे अण्डे। दोनो वस्तुएँ बहुत गरम थी। पहला ग्रास मुँह मे रखते ही मेरा मुँह जल गया। उसे ठडा करने के लिए मुझे बीअर पीनी पड़ी। मैं बहुत भूखा था, अतः मैंने तब तक खानसामा को अन्य वस्तुएँ लाने का आदेश दिया। बीअर के कई गिलास मैंने बैठे बैठे खाली कर दिए और अपने-आपको कुछ समय के लिए चिन्तामुक्त कर लिया। खाते-खाते, मै अपने सामने बैठे हुए उन प्रौढ महानुभाव का दैनिक पत्र पढता रहा। समाचार ब्रिटिश मोर्चे के टूट जाने के सम्बन्ध मे था। जब उन प्रौढ महाशय को अनुभव हुआ कि मै पीछे से उनका दैनिकपत्र पढ रहा हूँ, तो उन्होने उसे मोड़ लिया। मैंने खानसामा को पत्र लाने का आदेश देना चाहा, किन्तु मेरा मन बड़ा अस्थिर था, अतः मै दत्तचित्त होकर पत्र नहीं पढ सकता था। कॉफे मे बड़ी उमस थी। वहॉ बैठे हुए बहुत-से व्यक्ति एक-दूसरे से परिचित थे। जहॉ-तहॉ लोग ताश खेल रहे थे। खानसामे शराब पीने के कमरे से अलग-अलग मेजों पर शराब लाने मे व्यस्त थे। इसी बीच, दो व्यक्ति और आये। उन्हें

बैठने के लिए कोई स्थान नहीं मिला, अतः वे मेरे सामने की मेज के पास आकर खड़े हो गए। मैने खानसामा को और बीअर लाने के लिए कहा। मै अभी कॉफे छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहता था। इतने शीघ्र अस्पताल लौट जाने की मेरी बिलकुल इच्छा नहीं थी। मैने चिताओ से दूर रहने का प्रयत्न किया। मै चाहता था कि कुछ क्षण बिलकुल शान्तिपूर्वक स्थिरचित्त होकर बैठा रहूँ। दोनो नवागत व्यक्ति मेज के पास खड़े रहे, किन्तु उन्हें किसी भी व्यक्ति के उठकर जाने के लक्षण नहीं दिखाई दिये, अतः वे स्वय ही बाहर चले गए। मैने एक गिलास बीअर और पी। मेज पर मेरे सामने अब रकाबियो का एक बड़ा ढेर इकट्ठा हो गया था। मेरे सामने बैठे हुए व्यक्ति ने अपना चश्मा उतारकर उसे चश्मा रखने के डिब्बे मे रख लिया। अखबार मोड़कर उसने उसे अपनी जेब मे ठूँस लिया और शराब का गिलास लेकर इतमीनान से बैठ गया। बैठे-बैठे वह कमरे मे चारो ओर दृष्टि दौड़ाता रहा। अचानक मुझे खयाल आया कि मुझे लौटना है। मैने खानसामा को बुलाया, पैसे चुकाए, कोट पहना, टोप लगाया और द्वार से बाहर निकला। वर्षा मे पैर बढाते हुए मै अस्पताल पहुँचा।

ऊपर चढते ही बरामदे मे, परिचारिका से मेरी भेट हो गई। वह मेरी ही ओर बढी चली आ रही थी।

"मैने अभी आपके होटल मे फोन किया था।" वह बोली। सुनकर, मेरा हृदय बैठ गया।

"क्या बात है?"

"श्रीमती हैनरी को अभी-अभी रक्तस्राव होने लगा है।"

"क्या मैं भीतर जा सकता हूँ?"

"नहीं, अभी नहीं। डाक्टर उनकी जॉच कर रहे हैं।"

"क्या इसमें कोई खतरा है?"

"बहुत बड़ा खतरा है।" और वह कमरे मे घुस गई। उसने द्वार बन्द कर लिया। मै बाहर बरामदे में बैठ गया। मेरे सारे शरीर मे मानो कुछ रहा ही नहीं—एक शिथिलता सी व्याप्त हो गयी। मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था। मै कुछ नहीं सोच पा रहा था। मैं समझ गया कि कैथरीन अब नहीं बचेगी—मर जाएगी, अब मेरी केट। मै मन-ही-मन प्रार्थना करने लगा कि वह मरने न पाये। मूक स्वर मे मेरी आत्मा विनती करने लगी—"भगवान्, उसे जीवन दान दे। हे प्रभु, उसे मृत्यु के मुख से बचा। यदि तू मेरी केट को जीवित रहने

देगा, तो मैं तेरे प्रत्येक आदेश का पालन करूँगा। जगत्पिता, मेरे ऊपर कृपा कर। दया, दया, मेरे प्रभु! मैं तुझसे दया की भीख माँगता हूँ। मेरे हृदय की धड़कन को, मेरे जीवन की श्वास को, मेरी कोमल केट को, मुरझाने से बचा ले, भगवन्! उसे मृत्यु-पथ से लौटा दे। यदि तू इस बार मुझे उसके प्राणों की भिक्षा दे देगा, तो जो तू कहेगा मैं वही करूँगा—जिस राह चलायेगा, उसी राह चलूँगा। तूने हमारे नन्हें मृगशावक-जैसे लाल को हमसे छीन लिया। अब उसकी माँ पर रहम कर मसीहा, उसे मुझसे मत छीन। तूने बच्चे को अपने पास बुला लिया, किन्तु अब मेरी जीवनसंगिनी को मुझसे मत छीन! कृपा कर मसीहा—दया कर मुझ पर! मेरी कैथरीन को मृत्यु से छुटकारा दिला—उसे मरने से बचा!"

अचानक परिचारिका ने द्वार खोला। उसने इशारे से मुझे भीतर बुलाया। मै उसके पीछे-पीछे कमरे मे घुसा। जब मै भीतर पहुँचा, तो कैथरीन मेरी ओर आँख उठाकर देख भी नहीं सकी। मैं उसके पास पहुँचा। पलग के दूसरी ओर डाक्टर खडा था। धीरे-धीरे कैथरीन ने मेरी ओर देखा और उसके होंठो पर एक फीकी मुस्कान बिखर गई। मै उसके सिरहाने झुक गया। मेरे दुःख का बाँध टूट गया और मै जोर से रो पड़ा।

"पागल कहीं के—भोले प्राण मेरे!" कैथरीन बड़े कोमल स्वर में बुदबुदाई। वह किसी मुरझाई हुई कली के समान निष्प्राण प्रतीत हो रही थी।

"तुम ठीक हो, केट।" मैं सिसका—"तुम ठीक हो जाओगी—बिलकुल।"

"नहीं प्राण, मैं अब नहीं बचूँगी।" वह बोली। उसकी साँस फूल गई। कुछ रुककर उसने फिर कहा—"मैं मृत्यु से घृणा करती हूँ—नफ़रत करती हूँ उससे।"

मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया।

"मुझे छुओ मत।" वह बोली। मैंने उसका हाथ छोड़ दिया। वह मुस्कराई—"नहीं, नहीं, मेरे निस्सहाय प्रियतम! तुम जहाँ चाहो, वहाँ मुझे छू सकते हो—जितना चाहो, उतना स्पर्श कर सकते हो मेरा।"

"तुम ठीक हो जाओगी, केट मेरी। मैं जानता हूँ तुम स्वस्थ हो जाओगी।"

"यदि कुछ हो जाता, तो मैं अपनी स्मृति-स्वरूप तुम्हारे लिए एक पत्र लिखकर रखनेवाली थी, किन्तु मैंने ऐसा नहीं किया।"

"क्या तुम चाहती हो कि मै तुम्हें देखने के लिए किसी पादरी अथवा किसी अन्य व्यक्ति को बुलाऊँ?"

"नहीं, केवल तुम्हीं रहो मेरे पास। बस, तुम --अन्य कोई नहीं!" क्षणभर मौन रहने के बाद उसने पुनः कहा—"मैं मृत्यु से डरती नहीं हूँ—उससे केवल घृणा करती हूँ—तीव्र घृणा।"

"आपको इतना अधिक नहीं बोलना चाहिए।" डाक्टर ने कहा।

"ठीक है।" कैथरीन ने एक ठंडी साँस छोड़ी।

"मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ, केट? क्या इच्छा है तुम्हारी? बोलो, मैं उसे हर सम्भव-असम्भव उपाय से पूरा करूँगा।"

वह मुस्करायी—"कुछ नहीं, प्रियतम। कुछ नहीं।"

क्षणभर के लिए फिर स्तब्धता छा गई। कैथरीन ने क्षीण स्वर में कहा—"मुझे वचन दो कि तुम किसी अन्य लड़की के साथ उसी प्रकार की प्रेम-क्रीड़ाएँ नहीं करोगे, जैसी हम दोनों ने की हैं या उन्हीं बातों को नहीं दुहराओगे जो हमारे-तुम्हारे बीच हुई हैं। बोलो, कर सकोगे इतना?"

"मैं वचन देता हूँ। मेरे जीवन में कभी कोई लड़की तुम्हारा स्थान नहीं पा सकेगी।",

"यद्यपि मैं यह चाहती हूँ कि लड़कियाँ तुम्हारे जीवन में आती रहें।"

"ना, मुझे इस जीवन में अब किसी लड़की के सम्पर्क की कामना नहीं है।"

"आप बहुत बातें कर रहे हैं।" डाक्टर बोला—"इस तरह आप बातें नहीं कर सकते। आपको बाहर चले जाना चाहिये, श्री. हैनरी! यदि आप चाहें, तो बाद में, फिर आ सकते हैं। आप मरेंगी नहीं, श्रीमतीजी। ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें नहीं करनी चाहिए आपको।"

"अच्छा है।" कैथरीन बुझे हुए स्वर में बोली—"मैं रात्रि की निस्तब्धता में सदा तुमसे मिलने आया करूँगी, प्राण।" उसे अब बातें करने में बड़ी तकलीफ हो रही थी।

"कृपया आप इसी क्षण कमरे से बाहर चले जाइये।" डाक्टर ने मुझे डाँटते हुए कहा। कैथरीन ने मुझे आँखों के द्वारा जाने का संकेत किया। उसका चेहरा धूमिल हो गया था। "मैं बाहर कमरे के पास ही रहूँगा।" मैं बोला।

"चिन्ता मत करो प्राण!" कैथरीन बोली—"मैं मृत्यु से तनिक भी भयभीत नहीं हूँ। तनिक भी नहीं डरती उससे। मौत तो बस एक घृणास्पद छलावा है।"

"मेरी प्रियतमा—मेरी निर्भीक मधुर केट!"

मै बाहर दालान मे जाकर प्रतीक्षा की घडियॉ गिनता रहा। न-जाने कब तक मै उसी प्रकार बैठा रहा। एक लम्बे समय के बाद परिचारिका द्वार से निकल कर मेरे पास आयी।

"मुझे भय है कि श्रीमती हैनरी की तबीयत बहुत खराब है। कहीं वे. "

"क्या हुआ! मर गई वह?"

"नहीं, किन्तु इस समय वे बेहोश पडी हैं।"

कदाचित् उसे बार-बार रक्तस्राव होता रहा। अस्पताल के डाक्टर उस रक्तस्राव को बन्द नहीं कर सके। मै कमरे मे पहुँचा और कैथरीन की अन्तिम सॉस टूटने तक उसके पास ही रहा। मृत्यु-पर्यन्त उसकी चेतना नही लौटी, पर उसकी मृत्यु में अधिक देर नहीं लगी।

कमरे के बाहर बरामदे मे आकर मैने डाक्टर से पूछा—"क्या आज रात मेरी यहॉ जरूरत है?"

"नही, अब कुछ करने को बाकी नहीं रह गया है। क्या मै आपको आपके होटल तक पहुँचा दूँ?"

"जी नही, धन्यवाद। मै कुछ समय तक यहीं ठहरूँगा।"

"मै जानता हूँ कि कहने के लिए भी अब कुछ नहीं बचा है। मै आपसे क्या बताऊँ कि .।"

"नहीं।" मैने कहा—"कुछ बताने लायक है ही नहीं अब।"

"अच्छा, मै चलूँ फिर।" उसने कहा—"होटल तक पहुँचा दूँ आपको?"

"जी नहीं, धन्यवाद।"

"प्रसव का बस एक यही रास्ता था।" वह बोला—"शल्यक्रिया तो . ।"

"मै उस विषय मे बात नहीं करना चाहता।" मै झुँझलाया।

"मै आपको अपने होटल तक छोड़ आना चाहता था।"

"जी नहीं। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!"

वह बरामदा पार करता हुआ चला गया। मै कमरे के द्वार पर पहुँचा।

"अब आप भीतर नहीं आ सकते।" एक परिचारिका ने कहा।

"क्यों नहीं, अवश्य आ सकता हूँ।" मै बोला।

"मै कहती हूँ कि आप भीतर नही आ सकते अभी।"

"मै कहता हूँ निकल जाओ तुम। हटो, जाओ बाहर।" मै चिल्लाया—

"और तुम भी! चलो, भागो यहाँ से।" मै दूसरी परिचारिका पर बिगडा।

दोनो परिचारिकाओं को कमरे से बाहर निकालने के बाद मैंने कमरे के द्वार बन्द कर लिए। मैंने सभी बत्तियाँ बुझा दी। किन्तु अब इस सब से क्या लाभ था? कैथरीन तो चली गयी थी। उसका मृत शरीर-भर मेरे सामने था। उससे विदा लेना किसी प्रस्तर-मूर्ति से विदा लेने के समान ही था। मै कुछ क्षणों तक कमरे के उस गहन अन्धकार मे अपने मन की शान्ति—अपनी मधुर केट को—खोजता रहा। फिर मै बाहर निकल आया और अस्पताल की ओर एक नजर डाल, उस बरसते हुए पानी में ही अपने होटल की ओर चल पडा—।